कवित्तावलीसटीक

श्रीमहाराज गोस्वामितुलसी
दास विरचित

जिसमें

श्रीमहाराज राजराजेन्द्ररामचंद्रजी का समस्त जीवनचरित्र सातकांडों में अत्युत्तम कवित्तों में वर्णितहै

जिसको

श्रीरामोपासकभक्तानन्याज़िलाबारहब-
ङ्कीमौज़ेमानपुरनिवासि बैजनाथकुरमी
नेअतिकठिनजान श्रीरामानन्य भक्तोंके
आनन्दार्थ अत्युत्तमनागरिकभाषामेंअ-
त्यन्तसरलपदों सेभूषिततिलककिया
आर्यावर्त्तनिवासिभक्तजनोंकेउपकारार्थ

दूसरी बार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ानेमें छपी
मार्च सन् १८८७ ई०

विज्ञप्ति ॥

प्रकट हो कि कारख़ाने अवध अख़-
बार में बहुत प्रकारों की तुलसीदास व
अन्य कविकृत रामायण मूल व तर्जुमा
भाषा में होकर छपी हैं जिनका ब्योरा
नीचे लिखा जाता है ॥

श्रीगोस्वामी तुलसीकृत रामायण मूल और भाषाटीका रामचरणसहित ॥

इसमें रामायण के सातों काण्डों में अयोध्या
निवासि श्री महन्त रामचरणजी ने भाषा टीका
किया इस बिस्तृत और सर्वालंकार युक्त टीका को
टीकाकार ने सर्व पुराणों के उचित श्लोक और वेद
की ऋचाओं से भी किया है और यह किताबनुमा है
और सनाभि पत्रेनुमा भी छपरही है क़ीमत७)

श्रीतुलसीकृत रामायण मूल टीका शुकदेवलालरचित ॥

यह टीका मैनपुरी निवासि शुकदेवलालजी ने
संवत्१९२५ ई० में रचना की मुख्यकर इस टीका में
यह गुण है कि श्री तुलसीकृत रामायण के परिपूर्ण
आशय को ठेठबोली में अक्षरार्थ लेकर उल्था किया



कवित्तावली रामायण सटीक ॥

बन्दना ॥

श्रीवैदिव्यकिरीटमच्छममलं गण्डस्तलेकुण्डलं श्यामाभामरविन्दकोमलतनं पीतांबरालंकृतं ॥ पाणौकार्मुकशायकंकटितटे तूणीरभारान्वितं । कीर्त्ति पापभयापहंसुखकरं तंजानकीशंभजे १ नगाग्न्यंकच न्द्रेसितेषाढ़मासे त्रिदश्यंरवौरोहिणीमध्यकाले वि- देहात्मजानाथपादाब्जयाहं कवित्तावलीरत्नदी क- रोमि २ ॥ दोहा ॥ श्रीजानकिजानकिरमण गुरुपद करोंप्रणाम ॥ जिनकी कृपाकटाच्छते सब पूरण मन काम ३ गुरुसियबल्लभ शरणकहि बैजनाथपितुधा- म ॥ रसिकलता सियकल्पतरु सेवितआठौयाम ४ कीरति सुयश प्रतापगुण प्रभुकेवेदसुगाव ॥ सबकेरूप उदाहरण बरणौं सहितसुभाव ५ ॥ कीरति यथा ॥ होतजुअस्तुतिदानते कीरति ताहिबखान ॥ दीनन

जीतिदानहै गुरुजनकरिसनमान ६ ॥ यशयथा ॥ धर्मनीतिबलबाहुते प्रकटतयशकीथोक ॥ वाणन ते जीतिबली सत्याननसोलोक ७ ॥ प्रतापयथा ॥ शत्रु डरैसु नर्कीर्तियश ताको नामप्रताप ॥ खगसुकंठखर बालिसुनि डरैनिशाचरआप ८ ॥ गुणयथा ॥ चाहत व्यापकबशिकरनजग प्रशंसगुणसोइ ॥ विभुप्रेरकमोहन शरण पालशीलनिधिहोइ ६ तीनिभांतिलीला सगुण गायकचारिबिधान ॥ मागधबन्दीसूतअरु अर्थी चौथ प्रमान १० प्रकृतिमयोमाधुर्य है साप्रस्तीऐश्वर्य ॥ मिश्रितलीलातीसरी मिलि ऐश्वर्यमधुर्य ११ मागध मधुरीकीर्त्ति को ऐश्वर्यबन्दिप्रताप ॥ पौराणिकमिश्रितयशै सबगुणस्वारथि आप १२ चैलीलाकीरति सुयश गुणगणसहितप्रताप ॥ सबको बर्णनजासुमें रामचरितत्यहियाप १३ अथवार्तिक ॥ पौराणिक भावकरि गोसाईंजी रामचरित मानस प्रथम वर्णन करेउ॥ पौराणिकभावयथा ॥ कहौंरामकीकथासुहाई । सादरसुनहुसुजनमनलाई ॥ तहांश्रेष्ठवक्ताअधिकारी करे यथा ॥ रामचरितमुनिवर्यबखानी । सुनीमहेशपरमहितमानी ॥ पुनः ॥ भरद्वाजमुनि प्रश्नकिय याज्ञवल्क्यमुनिपाइ । याज्ञवल्क्य जोकथा सुहाई । भरद्वाजमुनिवरप्रतिगाई ॥ पुनः ॥ सुनु शुभकथाभवानि रामचरितमानसबिमल । कहाभुशुण्डिबखानि सुनाबिहँगनायकगरुड़ ॥ लीलायथा ॥ गुरुगृहगयेपढ़नरघुराई ॥ इतिमाधुर्य ॥ जाकीसहज

श्वासश्रु तिचारी ॥ इतिऐश्वर्य ॥ सो प्रभुपढ़यह कौतुकभारी ॥ इतिमिश्रित ॥ निजनिजरुचिसबलेहिंबुलाई । सहितसनेहजाहिंदोभाई ॥ इतिमाधुर्य ॥ निमिषमात्रमहँभुवननिकाया ॥ रचैजासुअनुशासन माया ॥ इतिऐश्वर्य ॥ भक्तिहेतुसोइदीनदयाला । चितवतचकितधनुषमखशाला ॥ इतिमिश्रित ॥ स्तुतितेकीरतियथा ॥गुरुआगमनसुनतरघुनाथा । अरु रामकसनअसकहहुतुम इति ॥ दानतेकीरतियथा । मुनिदुर्लभजोपरमगति तोहिंदीनभगवान ॥ इति यशयथा ॥ रिपुरणजीतिसुयशसुरगावत । इतिप्रताप यथा ॥ जबतेरामप्रतापखगेशा ॥ अरु ॥ जीतहुम नाहिंसुनीअस रामचन्द्रकेराज । इतिगुणयथा ॥ जहँतहँनररघुपतिगुणगावहिं ॥ अरु॥भजहुप्रणतपति पालकरामहिं । शोभाशीलज्ञानगुणधामहिं ॥ इति ॥ अरु सिद्धान्त यह है नामरूप लीलाधाम परात्पर है ताप्रभुको भक्तिबिना जीवको कल्याण नहीं नाम यथा ॥ राकारजनीभक्तितव रामनामसोइसोम । अपरनामउडगणबिमल बसहुभक्तउरव्योम । इति रूपयथा ॥ शंभुबिरंचिविष्णुभगवाना । उपजहिंजा सुअंशतेनाना ॥ इतिलीलायथा ॥ विधिहरिशंभुनचावनहारा । तेउनहिंजानहिंमरमतुम्हारा ॥ इति धामयथा ॥ अवधसरिसप्रियमोहिंनसोऊ ॥ इति भक्तियथा ॥ भक्तिहीनबिरंचिकिनहोई । इति मानसरामायण रोजनामा रामचरित को है ताके

खाता बिनयपत्रिका गीतावली कवित्तावली हैं तहां कुन्दनसे जिनके मन निर्मल प्रेमापरा भक्तिमें प्रौढ़ तिन के अनुराग युत माधुरी अवलोकन हेतु रूप की माधुरी माधुर्य लीला माधुर्य गुण मधुर कीरति मंगलीक मागध गायक भावकरि गोसाइं जी गीतावली गानकरै हैं तहां श्रेष्ठ गायक अधिकारी हैं शृङ्गाररस है गायक भाव यथा ॥ तुलसिदासप्रभुसो हिलोगावत उमँगिउमँगिअनुराग ॥ इति श्रेष्ठगायक अधिकारीयथा ॥ गावतविबुधबिमलवरवानी । इति रूपकीमाधुरी यथा ॥ रहे यकटकनरनारिजनकपुर लागतपलककलपबितयेरी । अरुनिरखहुतजिपलक सफलजीवनलेखौरी । माधुर्यलीलायथा ॥ माधुरी बिलासहास गावतयशतुलसिदास । इतिमधुरगुण यथा ॥ याशिशुकेगुणनामवड़ाई औरूपशालगुण धामराम ॥ इतिमधुरकीरतियथा ॥ कलकीरतिगा वततुलसिदास ॥ इति शृङ्गाररसयथा ॥ ललितलता जालहरतिछबितानकी अरु मधुकर पिकवरहिमुखर इतिविभाव। निजकरराजीवनयन पल्लवदलरचनसैन इतिअनुभाव । सियअंगलिखैधातुराग सुमननभूष णबिभाग ॥ इति ंचरी ॥ प्यासपरस्पर पियुषप्रेम पानकी ॥ इतिअस्थाई ॥ प्रभुके अनूपरूपकी माधुरी की अवलोकन सिद्धांतहै यथा ॥ सखिरघुनाथमुख छबिदेखु । सखिरघुनाथरूपनिहारु ॥ इतिगीतावली ॥ अथ विनय ॥ मध्या भक्तनकी आश पूर्ण करिबेको

अरु कलियुग को भय निवारण अर्थ स्वारथी भाव
करि गोसाईंजी गुणन को गान युत बिनती करै हैं
तामें श्रेष्ठ स्वारथो अधिकारी करे हैं वात्सल्य अरु
शांत रसको अधिकारता है नवधा भक्ति शरणागत
हेतु है स्वारथी भाव यथा ॥ कबहुंक कर कृपाल
रघुनायक धरिहो नाथ शीश पर मेरे ॥ इति अधि-
कारी यथा ॥ जाके चरण विरंचि सेइ सिधि पाई
शंकरहू ॥ इति कलियुगको भय यथा ॥ कोपि तेहि
कलिकाल कायर मोहिंघालत घाइ । इतिदादिपाइ-
बो यथा ॥ दईदीनहिं दादिसोसुनिसुजनसदनबधाइ
इति इहां सात भूमिका में बिनय कीन्ही यथा ॥
दीनता १ केहिविधिदेउँ नाथहिखोरि । इतिमानम-
र्षता २ काहेतेहरिमोहिंबिसारे । इतिभयदर्श ३ राम
कहत चल । इतिभर्त्स ४ ऐसीमूढ़तायामनकी ।
इतिआश्वासन ५ ऐसेरामदीनहितकारी । इतिमनो
राज ६ कबहुंकहौंयहिरहनिरहौंगो ॥ इतिविचारना
७ केशवकहिनजाइकाकहिये । इति । अथगुणउदार॥
ऐसोकोउदारजगमाहीं । सौहर्द । जानतप्रीतिरीति
रघुराई । दया । देवदूसरोको दीनकोदयाल । प्रीति ।
पुनीत परिहरि पावरण पर प्रीति । सौशील । सुनि
सीता पतिशील सुभाऊ । इतिनवधा यथा ॥ श्रवण
कथा मुखसाम हृदयहरिशिरप्रणाम सेवाकरअनुसरु ।
इतिहेतु यथा ॥ कसमनमूढ़रामबिसराये । वात्सल्य
रसयथा ॥ सुतकीप्रीति प्रतीतिमित्रकी । इतिशांतरस

यथा । जोनिजमनपरिहरैविकार । इतिसिद्धांतयथा ॥ हरिहिहरिता विधिहिविधिता शिवहिशिविता जेहिं दई । सोजानकीवर मधुरमूरति । इतिविनयपत्रिका । अथ कवितावली तहां मुग्धा भक्तनको मन दृढ़ता हेतु नाम प्रताप रूप प्रताप गुणन को प्रताप भक्ति को प्रताप ऐश्वर्य लीलामें बन्दी भावकरि कवित्तावली में कहे तहां उत्तम कवि अधिकारी कहे वीर रसको अधिकार है बंदीभाव यथा ॥ जयजयजयजानकीरमण । जयजयकार बंदीजनको संप्रदाय है ॥ आशीर्वाद यथा ॥ रंककेनिवाजरघुराजराजाराजनिके उमिरिदराजमहाराज तेरीचाहिये । इति कवि अधिकारी यथा ॥ वाणी विधि गौरि हरशेषहू गणेशकही सहीभरीलोमस भुशुण्डि बहुवारषो । दशचारिभुवन निहारिनरनारिदेखे नारदकोपरदाननारदसोपारषो । तिनकहेउजगमें जगमगातजोड़ीएक दूजोकोकहैया कोसुनैयाचखचारषो । कहेउरमारमणसुजानहनुमान कही सियासीनतिया न पुरुषरामसारषो । इतिशोभा को प्रताप ऐश्वर्ययथा ॥ रामविरोधनराखिसकैंतुलसी विधिश्रीपतिशंकरसौरे । इतिनाम को प्रतापयथा ॥ रामनामरावरोदामचामकीचलाई है । अरुस्वारथको परमारथको कलिरामकोनाम प्रतापबलो है । इति रूपको प्रताप यथा ॥ लायकहैंभृगुनायकसे धनुशायक सौंपिसुभायसिधाये । इति गुणन को प्रतापयथा ॥ मतिभारतिपंगुभईजोनिहारि बिचारिफिरी उपमान

फबै । याही कवित्तमें गुणन को प्रताप कहब ताते इहां उदाहरण नाहीं लिखे भक्तिको प्रतापयथा ॥ जनकोप्रणरामनराखेकहा । इतिवीररसयथा ॥ युद्ध वीरयथा रामशरासनतेचलेतीर । इतिदानवीरयथा॥ सोसमाजमहाराजजीके एकदिनदानभो । इतित्याग वीरयथा ॥ राजिवलोचनरामचले तजि बापको राज बटाऊकीनाई । इतिदयावीरयथा ॥ तौलौं न दाप दल्यो दशकन्धर जौलौंविभीषण लातनमारे । इति हेतुयथा ॥ जोपैजानकीनाथसोंप्रीतिनलाई । अरु ग- रीबनिवाजनदूसरऐसो । औ कृपाल न दूजो सिद्धांत यथा ॥ मनसोंप्रणरोपि कहैतुलसी रघुनाथबिना दुख कौनहरै । अथ चारिउ ग्रंथन की प्रयोजन गोसाईं जी को मानसको यथा ॥ मोसमदीननदीनहित तुम समानरघुवीर । असविचारि रघुवंशमणि हरहुविषम भवपीर । गीतावलीयथा ॥ तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भक्तिदान तब मांगि लियो । बिनययथा ॥ मुदितमाथनावत बनी तुलसी अनाथकी परीरघुनाथ सहीहै । कवित्तावली यथा ॥ तुलसीनिहारिकरिदिये सरखत है ॥ इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियव- ल्लभ शरणागत बैजनाथकृत कवित्तावली रत्नदीपिका टीकायां भूमिकासमाप्ता ॥

दशस्यंदनांकेस्थितानंदधामस्फुरन्नीरगात्रेतड़िद्वा भवासः ॥ किरीटप्रभारत्नकेयूरहारश्शरण्योदयागार रामप्रसीद १ कवित्त ॥ धूमउड़िअगरअबीरअ.समान

भानु भांपिगेविमानन सवारडरडारिभे । अमरमुनीश नाग मनुजसुजान साधु अनलअनिलव्योम भूमिमोद वारिभे । अघउनपातकर्मतामस अनीतिद्वैत मिटिगै असाधुतामलिनदैतधारिभे । धूमधामबैजनाथ आजु कौशलेश द्वार सुघरी सुवारमें कुमार सुनि चारिभे २ इहां बस्तु निर्देशात्मक मंगलाचरण है या ग्रन्थ में प्रताप ऐश्वर्य लीलाको अधिकार ताते बाललीला पंचवर्ष छांड़ि कुमार अवस्था सो बर्णन करै कवि की उक्तिते सरस्वतीजी गईं अर्थात् सखी प्रतिसखी की उक्ति ॥

अवधेशकेद्वारसकारगई सुत गोदकै भूपतिलैनिकसे । अवलोकिहौंशोचवि- मोचनकोठगिसीरहिजेनठगेधिकसे । तु- लसीमनरंजनरंजितअंजन नयनसुखंजन जातकसे । सजनीशशिमेंसमशीलउभय नवनीलसरोरुहसेविकसे १ ॥

हे सखी मैं प्रभात गई आजु महाराज कुमार के द्वार दरशावन की शुभ मुहूर्त है ताको जानि प्रभातही अवधेश महाराज के द्वारपर गई ताही समय भूपति श्रीचक्रवर्ती जी श्रीरघुनन्दन को गोद लै मन्दिरते निकसे शोच विमोचन हारे श्रीरघुनंदन की छबि देखतही ठगीसी रहिगई अर्थात् जेन कहे

जिन रघुनंदनने मोहिनी चितवनि चितै दृगन सों ठगे कैसेहैं नेत्र तुलसीके मनरंजन कहे मनको आ-नंद दायक अंजन करिकै रंजित कहे बिराजमान हैं यथा खंजनके बालक पच्छिनके बालक शोभाय मान नहीं होत ताते नवीन अवस्थाके खंजन ऐसे अथवा हे सजनी सम शीलके भरे दोऊ नयन मुख चन्द्र में कैसे शोभित होत यथा नील कमल नवीन कहे प्रभात कालके ऐसे लहलहे प्रफुल्लित से यामें अव-धेश शब्द प्रथम कहि ऐश्वर्य प्रतापको दर्शायो यथा॥ अयोध्यामाहात्म्ये ॥ श्रूयतेर्महिमातस्याः मनोदत्वा चपार्वती ॥ अकारोबासुदेवः स्याद्यकारस्तुप्रजापतिः १ उकारोरुद्ररूपस्तुतान्ध्यायंतिमुनीश्वराः॥ सर्वोपपातकै र्युक्तैर्ब्रह्महत्यादिपातकैः २ नयोऽध्यासर्वतोयस्मा तामयोध्यांततोविदुः ॥ ऐसी जो अयोध्या ताके ईश कहि प्रताप सूचित करे सो प्रताप यश कीर्ति ते होत यथा ॥ होतजु अस्तुति दानते कीरति क-हियेसोइ ॥ होत बाहुबलते सुयश धर्म नीति सह होइ १ कीरति सों अरु सुयश सों होत शत्रु उर ताप ॥ जग डरात सब आपही कहिये ताहि प्र-ताप २ द्वार आयेते प्रतापवान् प्रसिद्ध सबको देखि परे पिताकी गोद कहिबो दास भावउपासिकन को ध्यानकी संप्रदाय है ॥ यथा सनत्कुमार संहितायां ॥ पितुरंकगतंराम मिन्द्रनील मणि प्रभं इहां मन चित्तादि की बासना सोई शोच ताको सौंदर्यता

बलते प्रभु छँड़ाइ दियो अरु नेत्रनकी चितवनि ठ-
गौरीडारि मनको ठगि लियो ताते शोच विमोचन
को अवलोकन ठगीसो रहिगई जेना ठगे जे या रूप
में मनको न लगाये ते धिक्कार योग्य अभागी हैं
इहां जीवनपर दया करि शोच शत्रु को बिमोचन
करे यहिबलते सुयश भयो तुलसी मनरंजन तुलसी
के मनको आनंददान देवे ते कीरति भई मु-
खकी उपमा न शशि याते कहे कि चन्द्रमा शीतल
है समशील कहे शत्रु मित्र दोऊपै शील मान यथा
निर्व्वाण दायक क्रोध जाकर भक्ति वश अवसहक-
री यह सौशील ताते स्तुति सूचित करि कीर्त्तिभई
इत्यादि कीर्त्ति यशसुनि शरणागत जीवन के शत्रु
काम क्रोधादि आपही दबिजाइँ याते प्रताप वर्णन
भयो अंजन अंजित नयन खंजन जातक से नयम
उपमेय खंजन उपमानसे बाचक याते धर्म लुप्तोप-
मालंकार है मुखको शशि केवल उपमा न कहे
याते अतिशयोक्ति रूपकालंकार है उभय नवनील
सरोरुह से बिकसे सरोरुह उपमान से बाचक
नवलील विकसे धर्म याते उपमेय लुप्तोपमालंकार
है प्रथम खंजन से नेत्र कहि पीछे कमल से
कहे द्वै उपमा याते दिये कि यश में बल चाहिये
ताके हेत खंजन की उपमा दिये भाव नख चोंच
पक्षनकरि समर्थहै कीर्त्तिमें दान सुशीलता चाहिये
ता हेतु मकरंद सुगन्ध दायक कोमल कमल की

उपमादिये याही हेतु प्रथम अवधेश फिरि भूपति भाव अयोध्या पातकादि जीतिबे में प्रबल ताकेईश यह बली नाम सुयश हेतु पृथ्वी सब पदार्थ की दानि क्षमावान् ताते भूपति नाम कीर्ति हेतु कहे या कवित्त विषे नाम रूप लीलाधाम चारिहू प्रतापवान् कहे तहां अवधेशनाम रघुनाथहू जीकोहै सो सुनतही में प्रतापवान् है धाम में मुख्यद्वार काहि धाम प्रतापवान् कहे शोच विमोचन यहलीला प्रतापवान् कहे सूर्य प्रतापवान् ते प्रभुके नेत्र हैं ताते नेत्र कहिरूपको प्रतापवान् करि वर्णन करे यामें रूप माधुरी गुण है १ ॥

पगनूपुरऔपहुंचीकरकंजनिमंजुबनी मणिमालहिये । नवनीलकलेवरपीत झँगाझलकैंपुलकैंनृपगोदलिये । अरविन्दसोआननरूपमरन्दअनन्दितलोचनभृङ्गपिये । मनमोनबस्योअसबालक जोतुलसीजगमेंफलकौनजिये २ ॥

कविकी उक्तिहै पगन में सुन्दरि मणिन जड़ित पौटा कर कमलसे कोमल अरुण तिनमें मनोहर पहुंची मञ्जु मणि कहे गजमुक्तनकी माल हियेपर कैसीबनी है जो चित्त चोरे लेत जरतारी कोर किरणी सोहत पीतरंगकी झंगुली में नवकहे कोमल श्या-

मल शरीर मेघ दामिनी से झलकि रही है प्रेमते पुलकांग सहित गोद में लिहे श्रीरघुनन्दन के मुख कमलको रूप जो मकरंदकहे रस ताको नेत्रभृङ्गन सों कहे आनन्द सों पानकरत भावनेत्र रूप में आसक्तहै गोसाईं जी कहत कि ऐसो मनोहर बालरूप श्रीरघुनन्दन जाके मनमें न बस्यो ताको जीवन जन्म मिथ्याहै भाव जगत् फल असार दुखदायी है इहां करकंजमें नेत्रकंजमें रूपमकरंद उपमान उपमेय ते रूपकहै मुख उपमेय कंज उपमानसों बाचक यह धर्म लुप्तोपमालंकारहै इहां सर्वांग सुभग सुठौर वर्णनते सौंदर्यगुण वर्णनहै २॥

तनकीद्युतिश्यामसरोरुहलोचनकंजकीमंजुलताईहरैं । अतिसुन्दरसोहत धूरिभरेछबिभूरिअनंगकीदूरिकरैं । दम कैंदँतियांद्युतिदामिनिज्यों किलकैंकलबालविनोदकरैं । अवधेशकेबालकचारिसदातुलसीमनमन्दिरमेंबिहरैं ३॥

कवि की उक्ति कोमल सचिक्कन सौगन्धित श्याम कमलसी द्युति श्यामशरीरकी है अरु नेत्रआपनी शोभाके आगे कमलकी सुन्दराईको हरतहैं अथवा अन्त में चारिउ बालक कहे ताते श्रीरघुनाथ जी औ भरतजी के तनकी द्युति श्याम कमलसीहै अरु

लक्ष्मण जी शत्रुहनजीके तनकी द्युति श्वेत कमलके सुन्दराईको हरतहै अरु नेत्र कमलसे चारिहू भाइन केहैं बालकेलि ते देह धूरिसों भरी है ताहूपर काम की समूह छबिको दूरिधरत भाव धूरिकरिके शोभ मूंदतीनहीं काहेते अति सुन्दर हैं ताते धूरहू भरे शोभितहैं बालक्रीड़ा में आनन्दितह्वै जब किलकत हैं तब मुख ते दँतियन की ज्योति दामिनि सी दमकिजात ऐसे अवधेश महाराज के चारीबालक तुलसी के मनरूप मन्दिर में सदा विहार करी तन उपमेय श्याम धर्मसरोरुह उपमान बाचक लुप्तोपमा है नेत्र उपमेय ते कंज उपमान को निरादर औ शोभा ते काम की शोभा को निरादर याते तीसरो प्रतीपालंकार है दंतियां उपमेयदामिनि उपमानद्युति धर्म ज्यों बाचक ते पूर्णोपमालङ्कारहै कांतिगुणहै ३॥

कबहूंशशिमांगतआरिकरैंकबहूंप्रतिबिम्बनिहारिडरैं । कबहूंकरतालबजाइकैनाचतमातुसबैमनमोदभरैं । कबहूंरिसिआइकहैं हठिकैपुनिलेतसोई जेहिलागिअरैं । अवधेशकेबालकचारिसदा तुलसीमनमंदिरमें बिहरैं ४ ॥

कवि की उक्ति कबहूं खेलिबे हेतु शशि मांगत हठि करिके मचलात भावकि जाकोमें चाहत ताको

छांड़तनहीं कबहूं परछाहीं देखि डरतयाको भाउ कि यथा परछाहीं तैसे जो कोऊ सदा मेरे समीप रहत ताको मैं याही भांति डरत हौं कबहूं हाथन सों तारीबजाइ नाचत तबसब मातन के मनमों आनन्दनहीं अमातहै यामें भक्तवत्सलता देखावत किजो मेरोसेवकहोत ताकेमैं सदा आधीनहौं जो कहै सोई करौं यथाभगवद्वाक्यदुर्बासाप्रति । अहंभक्तपराधीनोह्यस्वतंत्रइवद्विज । साधुभिर्ग्रस्तहृदयोभक्तैर्भक्तजनप्रिय ॥ कबहूंरिसाइ हठि करिकै जो मांगत सो मचलाइकै लेलेत हैं एक समय बांदर को बच्चा मांगे तब महाराज जीने बहुत बच्चा मँगाइ दिये सो नालिये सो तब बशिष्ठजी बताये कि अञ्जनी पुत्र को मांगत हैं तब हनुमान्जी को मँगाइ दिये तब प्रसन्न भये यह पद्म रामायण में प्रसिद्धहै यामें सत्य प्रतिज्ञा गुण है जो कहैं सोई करैं ऐसे चारो बालक अवधेश के तुलसी के मनरूपी मन्दिरमें सदा विहार करैं व गोसाईं जी कहत कि अवधेश के चारो बालक मणिमय मन्दिरमें सदा विहरतहैं ४॥

बरदंतकीपंगतिकुन्दकली अधराधर पल्लवखोलनकी। चपलाचमकैंघनबीच जगैछबिमोतिनमालअमोलनकी। घुंघुरारिलटैलटकैमुखऊपर कुण्डललोलक-

पोलनकी । निछावरिप्राणकरैतुलसी बलिजाउँललाइनबोलनकी ५ ॥

अरुण कोमल मधुर दोऊ अधर नबीन पल्लवसे ताकेबीच समशोभायमान सचिक्कन चमकदार दंतन की पांति यथा कुन्दकली निअरी है गोल आवदार अमोल गजमुक्तनकीमाल बिशाल मनोहर उरश्याम पै कैसी छबिजागत यथा सजल घनमें चपलाचमकत अरु चटकीली चमकीली रसीली श्यामली घुंघुवारी लटुरियां शोभा प्रकाशमान मुखचन्द्र पै लटकि रहीं हैं अरु रूप पानिके भरे मैन आरसीसे चमक दार अमोल गोल कपोलनपै प्रकाशमान मकराकृत कुंडल चञ्चल ह्वै चमकत हैं अधर दंत उर मोतिनमाल मुख लटुरिया कुण्डल कपोल इत्यादि चारि अंगन की छबि सहित श्री राम ललाकी तोतरी बोलनपर तुलसी बलिजाइ कै प्राण निछावरि करत है तहां प्राण पांच हैं प्राण अपान उदान समान व्यान ताते पांचप्रकार की छबिपै वारन कहे वाज्ञानेन्द्रिय पांचौ वा कर्मेन्द्रिय पांचौ इनको विषय रोंकि पांच जगह पर लगाये तब प्राण वारन भये वा पंच भूतात्मा सहित प्राण वारे बलिजाउँ यामें देहवारे निछावरि प्राणकरे यामें रूपक अलंकार तीनि हैं ५ ॥

पदकंजनिमंजुबनीपनहींधनुहीशरपंकजपाणिलिये । लरिकासँगखेलत

डोलतहैंसरयूतटचौहटहाटहिये। तुलसी अस बालकसो नहिंनेहकहाजपयोग समाधिकिये। नरवैखरशूकरश्वानसमान कहौजगमेंफलकौनजिये ६॥

अब पौगंडअवस्था बयान तातें पगमें पनहींआदि कहे यथा लहलहे ललित चटकीले चमकदार चोकनेबट गुलाबके कोमल आबदार दलसे अमल कमलसेसुंदरपांयन में पनहीं मंजुबनीकहैरेशमी मखमलपर सलमा सितारा कलाबत्तू तार गुखुरु डंक के बीजनयुतकारचोपी लदाऊ कामते बेलिबूटेनकेबीच रंग रंगकी मणी जटित ऐसी बनी मनोहर पनहीं पांयनमें शोभित हैं तैसे ललित ललाम काम तरुवार अमलकर कमलन में जगमग विचित्र रंगदार बहु रंगयुत रोदा चढ़ा गोसन में किरणि मोतिन के गुच्छा सहित ऐसो धनुहीं कहे अवस्था अनुहारि छोटा धनुष अरु शुद्ध चढ़ा उतार विचित्र रंगदार मनोहर पच्छचार गजदंत फोकवार तीखीफर चमकदार ऐसे मनोहर बाण धनुष लिहे शीश पै दिव्य मनोहर चौतनी भाल उच्चपै गोरोचन को तिलक काननमें प्रकाशमान कुण्डल अमल कपोलन पै श्यामली रसीली अलकैं झलकि रहीं सुधरकंबु कंठमें मोतिनकी माला जरकसी जामा कटि में पटुका सुन्दर [illegible] शोभित तैसे सम बय के

सलोने काम कैसे छौने सिंहठवने गज गवने डारत सेटोने सजे बसन मणिहारन धनुबाण कर धारन ऐसे स्वबंधु राजकुमारनको साथ लीन्हे तीनिउबंधु युत श्री रघुनंदन सरयूतटमें बजार चौहटमें बि-विध खेल खेलत फिरत हैं जे सुंदर सुहायक दरश जीवन फलदायक भुक्तिमुक्तिद सबलायकऐसे रघुनायक नृपबालक खलघालक जनपालकमें जिन ने नेह नहींकरे अरु जप योग समाधिमें मनलगाये तौ का प्रयोजन भयो गोसाईंजी कहत कि ते नर कैसे हैं खर शूकर श्वान के समान अपावन जीवन मिथ्या है यथाजप कहे ऋणी धनी सिद्ध साध्य सुसिद्धि अरि बिचारि कूर्मचक्रते भूमि शोधि आसन शुभ मुहूर्त में छिन्न रुद्ध शक्तिहीनादि निवारणार्थ जनन जीवन ताड़नादि संसकार करि जितेन्द्रिय ह्वै पुरश्चरण करनेवाले कर्मकांडी श्रीरघुनाथ जी में बिना स्नेहकरे खरकी तुल्य है भावत्रिगुणात्मक बासना रस्सीमें बांधे संसार भार बाहक बिना भक्ति अपावन है योगकहे यम नेम आसन प्राणायाम प्र-त्याहारध्यान धारणा समाधि इति अष्टांग योगकरि चित्तकी वृत्ति रोकि सातौ प्रश्नन को त्यागि अपने निरुपाधिकस्वरूपमें स्थित इत्यादिक योगकेप्रत्या-हार करनेवाले बिना रघुनंदन के स्नेह शूकरसमहैं भाव आपनो कर्तव्यता अभिमान मल भक्षण देह सिद्धिकरना पुष्टांग योगबिगरे तलफायके रोग

मारत तथा शूकरभी मारेजात समाधि कहे वैराग्य विवेकमुमुक्षुताशम दम उपरतितितिक्षा श्रद्धा समाधानादि साधनकरि शांतचित्त जितेन्द्रिय श्रद्धावान ह्वै व्यष्टि असारको त्यागि समष्टिसारको ग्रहणकरि ब्रह्म सत्य और सर्व असत्यमानि मायाको आवरणत्यागि ब्रह्म में लीन होना समाधि है ऐसे जो ज्ञानी हैं बिना रघुनाथ जी में स्नेह श्वान सम हैं भाव मतबाद करि अकारण भूकना ज्ञान बल मुख ते बरजोर देवादिकनको निरादर जीव हिंसक सवासिकं होतहो टूकार्थ घरघर मायाके ठोकरखाना विषय भोग में परे तो ऐसा फँसे जो श्वानकीरति प्रसिद्ध है विषय ते छूटना मुसकिल है ६ ॥

सरयूबरतीरहितीरफिरैंरघुवीरसखा अरुवीरसबै । धनुहींकरतीरनिषंगकसे कटिपीतदुकूलनवीनफबै । तुलसीत्यहि औसरलावनिता दशचारिनौतीनिइकी सबैं । मतिभारतिपंगुभईजोनिहारिविचारिफिरीउपमानफबै ७ ॥

सरयू इति यामें किशोर अवस्था बर्णन तहां सखा चारिभांति यथा अधिक बयस के सुहृद सखा समबयस के प्रियसखा कछु न्यून बयसके मधुर सखा कम बयस के नर्म सखाबीर यथा दयाबीर त्यागबीर

दानबीर युद्धबीर ऐसे बीरन को अरु सबभांति के सखा साथलीन्हे बिज्जु छटासों चमक दार नवीन पीताम्बर अरु मनोहरजरीको तरकस कटिमें शोभित करकमलन में शोभायमान धनुबाण धारण हरण जनपीरधीरबीर श्रीरघुबीरश्रेष्ठ सरयूके तीरतीरघूमिरहे तामें प्रतापवान् निशंकता दरशाये गोसाईं जी कहत कि ता समय रूप की लावण्यता सबांग गुणन की अपार है दश यथा रूप जो बिना भूषणै भूषितहै १ लावण्यता यथा मोती को पानी २ सौंदर्य सबांग सुठौर ३ माधुर्य देखनहार तृप्त न होइ ४ सौकुमार्य सुकुमारता ५ नौयौवन ६ सौगन्धित अङ्ग ७ सौबेष ८ भाग्यवान ९ स्वच्छता नैर्मल्यता शुद्धता सुषमा दीप्ति प्रसन्नता इतिषड़ांग औ जलत्व उज्ज्वलता१० इति दशगुण । माधुरीके चारि यथा ॥ ऐश्वर्यवान्१ बीर्यवान् २ तेजवान्३बलवान् ४ इतिचारिगुण प्रताप के ॥ नौयथा ॥ आदभ्र अनन्त १ नियतात्मा प्रेरक २ बशीकरण ३बाग्मीसहज पराबाणी जाकी ४ सर्वज्ञ ५ संहनन अजीत ६ स्थैर्य थिरता ७ धैर्य ८ व दान्य सत्य बचन ९ इति नौगुण॥ ऐश्वर्य के तीनियथा ॥ सौम्य समिता १ रमन सबमें २ व्यापक ३ इतितीन गुण ॥ सहज इक्कीस यथा ॥ सौशील्य शीलवान बात्सल्य २ सौलभ्य सरल ३ गांभीर्य अगाध ४ क्षम१ ५ दया ६ करुणाजन दुखमें दुखी ७ आर्द्रवजन दुखी देखि द्रैउठै ८ उदार ९ आर्जव स पूजनीय १० भर-

ययत्व शरणपाल ११ सौहार्द्द मित्रको अधिकमानना १२ चातुर्य १३ प्रीतिपालक १४ कृतज्ञ सलूकमानिबो १५ ज्ञान१६ नीति १७ लोकप्रसिद्ध १८ कुलीन १९ अनुराग २०निर्बहणा लोकविजयो २१ इति इक्कीस गुण यश कीर्ति के इत्यादि दशगुण माधुरी के चारिगुण प्रताप के नौगुण ऐश्वर्यके तीनिगुण सहजके इक्कीस गुण यश कीर्तिके इत्यादि सब गुणनके भरे श्रीरघुनन्दन को निहारि समान उपमा देबे योग विचार में न आयो तब शारदा की मति भोरी भई ताते फिरि गईगुणनको प्रमाण ॥ शिवसंहितायां ॥ तत्रहेतुस्त्वदीयंतु रूपंसौंदर्यमुत्तमम् ॥ माधुर्य्यंयौबनारंभः सौगन्ध्यंसुकुमारता १ लावण्यंपरमाकांतिःसौशील्यं खलसौहृदं ॥ सौलभ्यंपरबात्सल्यं प्रसन्नंतंस्वभावतः२ शक्तिर्नानाविधासर्वं कलाप्रावीण्यमाश्रमं ॥ अन्येपिते स्युःकल्याणगुणाःसर्वत्रपूजिताः ३ पुनः बाल्मीकीये॥ इक्ष्वाकुवंशप्रभवोरामोनामजनैःश्रुतः ॥ नियतात्मा महावीर्योद्युतिमान्धृतिमान्वशी १ बुद्धिमान्नीतिमान्वाग्मीश्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः ॥ विपुलांशोमहावाहुः कम्बुग्रीवोमहाहनुः २ महोरस्कोमहेष्वासोगूढजत्रुरिंदमः ॥ आजानबाहुसुशिराः सुललाटःसुविक्रमः ३ समःसमविभक्तांगः स्निग्धवर्णःप्रतापवान् ॥ पीनवक्षा बिशालाक्षो लक्ष्मीवांच्छुभलक्षणः ४ धर्मज्ञःसत्यसंधश्चप्रजानांचहितेरतः ॥ यशस्वीज्ञानसंपन्नःशुचिर्वश्यः समाधिमान् ५ प्रजापतिसमःश्रीमान्धातारिपुनिषूदनः

रचिताजीवलोकस्यधर्मस्यपरिरचितः६ रचितास्वस्यध र्मस्य स्वजनस्यचरचिता॥वेदवेदांगतत्वज्ञो धनुर्वेदेच निष्ठितः७सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञःस्मृतिमान्प्रतिभानवान्॥ सर्वलोकप्रियःसाधुरदीनात्माविचक्षणः ८ सर्वदाभिग तःसद्भिः समुद्रइवसिन्धुभिः ॥ आर्यःसर्वसमश्चैव सदैवप्रियदर्शनः ९ सचसर्वगुणोपेतः कौशल्यानन्दव र्द्धनः ॥ समुद्रइवगांभीर्येधैर्येनहिमवानिव १० विष्णु नासदृशोवीर्येसोमवत्प्रियदर्शनः ॥ कालाग्निसदृशःक्रो धे क्षमयापृथिवीसमः ११ धनदेनसमस्त्यागेसत्यधर्मइ वापरः ॥ त्वमेवगुणसंपन्नं रामंसत्यपराक्रमं१२इतिबा लकांडपूर्वार्द्धं ७॥

छोणीमेकेछोणी पतिछाजैजिन्हैंछत्र छायाछोणीछोणी छायेछितिआयेनि मिराजके । प्रबलप्रचराडबरिबंडबरबेष बपुबरबेकोबोलेवैदेहीबरकाजके । बोले बन्दीबिरदबजाइबरबाजनेऊ बाजेबाजे बीरबाहुधुनतसमाजके । तुलसीमुदित मनपुरनरनारिजेतेबारबारहेरैंमुखअौधमृ गराज के ८ ॥

छोणी कहे भूमि में केते भूपति हैं जिनपैसदैव छत्रकी छाया शोभितते सब आइकै निमिराज की जोहै छोणी श्रीजनकपुरी ताके चारोंतरफ छछो-

हिणी २ सेना लिहे वाहाण चोणी कहे ठौर ठौर छाय रहेहैं ते कैसे कैसे राजा हैं प्रबलकहे बलवान हैं प्रचण्ड कहे प्रतापवान हैं वरिवंड कहे तेज-मान हैं ते बर वेष वपु कहे देहीं ते सर्वांग सुठौर उत्तम अरु निज जाति के वेद धर्म अनकूल वेषौ उत्तम कीन्हे अथवा देहमें बरवेष कहे दूलह वेष किहे आयेहैं काहेते उत्तम जो काजहै वैदेही को बिवाहब ताकेहेतु बुलाये आये हैं ताते वरवेष सजे आये ता समाज में बन्दीजन जोहैं ते राजनकी वा विदेहजीकी विरदावली उच्चारण करि रहेहैं अरु उत्तम बाजा जोहैं दुन्दुभी आदिते बाजिरहे समाज में बाजे बाजे बीर बाहु धुनत अर्थात् ताल ठोंकि रहेहैं इत्यादि समाज को विभव कोऊ नहीं दे-खत गोसाईंजी कहत कि पुरके जे हैं नर नारीते श्रीलषण लालयुत श्रीरघुनाथके मुखको बार बार सब हेरत भाव प्रतापवान रूपवान सबते ज्यादाहैं वा जानकी योग्य येई हैं ८ ॥

सीयकेस्वयम्बरसमाजजहँराजनको राजनकेराजामहाराजाजानै नामको । पवनपुरन्दरकृशानुभानुधनदसेगुणाकेनि धानरूपधामश्शोभाकामको । बाणबल-वानयातुधानपैसरी खेशराजनकेगुमान

सदासालिमसंग्रामको । तहँदशरत्थके समत्थनाथतुलसीकेचपरिचढ़ायोचाप चन्द्रमाललामको ९ ॥

श्रीजानकीजीके स्वयंबर में जहां राजनकी समाज में राजनके राजा अरु महाराजा जुरेहैं राजा एक मण्डलके मालिक ऐसे चालिस पचास राजन जु ऊपर जाकोअमलते राजनके राजा जिनको अनेकन राजन पर अमलते महाराजा इत्यादि अनेक नेके तिनके नामको जानै जे पवन से बलवान् इंद्र सम ऐश्वर्यवान् अग्नि सूर्यसे प्रतापवान् चन्द्रमा सों गुणमान् रूपधाम ऐसे जिनके आगे कामदेव कौनहै बाणासुर ऐसो बलवान् यातुधानपर रावण ऐसो शूर जाके सालिम कहे कठिन संग्राम करिबेको गुमान है भाव हमते युद्ध करि कोऊ पारना जाइगो ऐसे ऐसे बीरनकी समाज में कोऊ न धनुष टारि सक्यो गोसाइंजी कहत कि तासमाजते चपरि कहेबिलगाइ कै चन्द्रमा भूषण जो शिव तिनको पिनाक दशरथ के लाड़िले समर्थ श्रीरघुनाथजी सहजही में चढ़ाइ लिये यामें अद्वितीय बल देखये ९ ॥

मैनमहनपुरदहनगहनजानिआनिकै सबैकोसारधनुषगाढ़ायोहै । जनकसदसि जेतेभलेभलेभूमिपालकियो बलहीनब-

लच्छापनोबढ़ायोहै । कुलिशकठोरकूर्म पीठितेकठिनअतिहठिनपिनाककाहूचपरिचढ़ायोहै । तुलसीसोरामकेसरोजपानिपरसतही टूटोमानोबारेतेपुरारि-हीपढ़ायोहै १० ॥

मैनके महन कहे नाशक शिवजीने पुर जो त्रिपुरासुरताको नाशकरिबो गहनकहे महा कठिन जानि ताके हेतु जगत्में यावत् कठोर बस्तुरही तिनसबको सारांश आनिकै पिनाक धनुषको गढ़ायो है काहेते श्रीजनकपुर रंगभूमि स्वयंबर सभामें भले भले कहे वलवान् प्रतापवान् तेजवान् दिग्विजयी जे तेराजारहे तिनसबन को बलकरिहीन करिदियो धनुषने आपनो बल ऐसो बढ़ायो कि सब हारिगयो कैसो है धनुष जो टूटबेमें बज्रतेकठोर अरु चढ़ाइबेमें कूर्मजो कच्छपताकीपीठिते अति कठिन ताको हठिकरिकै काहूने चपरि कहे समाजते निकसि शीघ्रताते चढ़ाइ न सक्यो गोसाईंजी कहत सोई कठोरधनुष श्रीरघुनाथजी के कोमलकर कमलनसों छुवतही कैसो टूटिगयो मानो शिवजीने बालपनहीं तेपढ़ाय राख्यो कि श्रीरघुनाथजीके छुवतही टूटिजायोबालको पढ़ापुष्ट रहत सरोजपाणिमें रूपक अलंकारकठोर धनुष कर कमलते छुवतही टूटिबेमें अत्यंतप्रतापवान् वर्णन करे १० ॥

छप्पै ॥ डिगतिउर्वि अतिगुर्वि सर्वपब्बै समुद्रसर। ब्याल बधिर तेहि काल बिकल दिगपाल चराचर। दिग्गयन्द लरखरत परत दशकन्ध मुखभर। सुरबिमान हिमभानु भानु संघटित परस्पर। चौंके बिरंचि शंकर सहित कोलकमठ अहि कलमल्यो। ब्रह्माण्डखंड कियो चण्डधुनि जबहिं राम शिवधनु दल्यो ११ ॥

जेहिसमय शिवजीको धनुष श्रीरघुनाथजी तोर्यो ताको कठोर घोरधुनि दशहू दिशामें ब्रह्माण्ड को फोरिगई ताते अतिगुर्वि कहे गरुई उर्वि जो पृथ्वी तापै यावत पब्बै जो पर्वत समुद्रसर इत्यादि सब डिगतकहे डोलिउठे पातालमें सर्प बधिरभये चरजे चलत अचरजे नहीं चलत अरु आठहू दिशन के दिग्पाल सब्बबिकल ह्वैगये दिग्गयंद जो दिग्गज ते लरखराइ परे दशकन्ध जो रावण सोऊ मुहुंभराभूमि में गिरा व्योममें देवनके बिमानहिम भानुकहे चन्द्रमा भानुसूर्य तिनके बिमानपरस्पर संघटतकहे ठोकर खाइरहेहैं ऊपर ब्रह्मलोक में ब्रह्मा चौंके भूमिपै कैलासमें शंकर चौंके पातालमें कोलकहे बाराह जो कमठकहे कच्छप जो अहिशेषजी इत्यादि सब्बबिकलह्वै कलमलाइ उठे याते धनुभंगकी प्रचण्डधुनि

ब्रह्माण्ड को खण्डनकहे फोरिगईयामें ब्रह्माण्डभरे में प्रतापवान् श्रीरघुनाथजी को यश भरिपूरि रह्यो सब जयजयकार करत हैं ११ ॥

लोचनाभिरामघनश्यामरामरूपशिशु सखीकहैसखीसोंतूप्रेमपयपालीरी । बालकनृपालजीकेख्यालहीपिनाकतोस्यो मण्डलीकमण्डलीप्रतापदापदालीरी । जनककोसियाकोहमारोतेरो तुलसीको सबकोभावताह्वैहैमैंजोकह्योकालीरी । कौशलाकीकोखिपरतोषितनवारियेरी रायदशरथकीबलैयालीजैआलीरी १२।

वात्सल्य रसवाली सखिनके वचन हैं नेचन के अभिराम कहे आनन्ददाता घनसदृश श्यामजो श्री रघुनन्दन को रूपसोई शिशु कहे वालभाव करिकै हे सखी प्रेमरूपी पयकहे दूधपान कराइ पालनकरी जो कठोर धनुष टूटबेको बड़ाशोच रहे तापिनाकको चक्रवर्ती जीके बालक जो श्रीरघुनाथजी सो ख्याल-हीकहे कौतुकमात्रहीमें तोरिडारे यावतभूमि मंडली ताके जेते मण्डलीक राजारहे तिनको प्रताप अरु दापकहे अहंकार ताको दलिडारे मैंजो काल्हिकह्यो रहे कि सबको मन भावतो ह्वैहै सो भयो अर्थात् बिदेहजीको जामाता ह्वैबो जानकीजीको पतिह्वैबो

हमारोतेरो नेत्रनसों सुखदेखिबो तुलसीको युगल उपासना पूर्ण ह्वैबो अबकौशल्या जी की कोखपर अपनपौ ते सन्तोष करि तनकोनिछावरि कीजै दासी हूजिये औ श्रीदशरथजीकी बलाय अर्थात् रोगदोष आपने शिरलीजै जामें अरोग्यह्वै बहुतकालजीवें १२ ॥

दूबदधिरोचनकनकथारभरिभरिआर तीसँवारिबरनारिचलींगावतीं। लीन्हेज यमालकरकंजसोहैंजानकी केपहिरावो राघोजीकोसखियांसिखावतीं । तुलसी मुदितमनजनकनगरजनझांकतीझरोखे लागीशोभारानीपावतीं । मनहुँचकोरी चारुबैठीनिजनिजनीडचंदकीकिरणि पीवैंपलकौनलावतीं १३ ॥

बरनारी कहे स्वरूपवान् युवावस्था सौभागिनी जाति अनुकूल बस्त्र भूषण धारण किहे प्रसन्न मन कंचन थारन में दूब दही हरदी फूल फल अक्षत मानिक दीप धरे ऐसी आरती सँवारि श्रेष्ठ नारी मङ्गल गान करत चलती भई जयमाल कहे मधुवाके फूल दूब पाटके डोरामें गुहा यथा रघुवंशे इन्दुमतीस्वयंबरे ॥ एवंतयोक्तेतमवेक्ष्य किंचिद्विस्त्रंसिदूर्वांकमधूकमाला ॥ ऐसी जयमाल करकमलन में लीन्हे तन तड़ित छटाधारी हंस गतिवारी सु-

कुमारी श्रीजनक कुमारी सखिन के मध्य शोभित तिनसों सखी कहती कि श्रीराघवेंद्रजी को जय-माल पहिर वो गोसाई जी कहत ता शोभा को देखि पुरबासी परमानन्द में मगन हैं सोई शोभा अवलोकन हेतु सुनयनादिरानी झरोखनते झांकत कैसी सोहत झरोखा मानों खोढ़र हैं तामें रानी मानों सुन्दरी चकोरी बैठी हैं श्रीरघुनन्दन के मुख चन्द्रकी शोभारूप किरिणि को पानकरत में पलक नहीं लावत यामें उत्प्रेक्षा अलंकार है कर कमल में रूपक १३ ॥

नगरनिशानबरबाजैंव्योमदुन्दुभीबि-मानचढ़िगानकैकैसुरनारिनाचहीं। ज-यतिजयतिहूं पुरजयमालरामउरबरषैंसु मनसुररूरेरूपराचहीं । जनककोप्रणाम्न योसबकोभावतोभयोतुलसीमुदितरोमरो ममोदमाचहीं । साँवरोकिशोरगोरीशो भापरतृणतोरीजोरीजियो युगयुगयुव तीजनयाँचहीं १४ ॥

जनक नगर में निशान जो विविधप्रकार के बाजा हैं बर कहे श्रेष्ठ उत्सव के भरे गहगहे बाजि रहेहैं अरु व्योम जो आकाश तामें बिमानन पर सवार देवता दुन्दुभी बजावत अरु देवांगना काल

स्वरते मङ्गलगान करि आनन्द वशते नृत्यकरि र-
हो हैं जा समय जयमाल श्रीरघुनाथजीके उरमें
जानकीजी पहिरायो त्यहि सुखको देखि पाताल
भूमि स्वर्ग तीनिहूं पुरमें जयजयकार शब्द ह्वै रह्यो
है फूलनकी बर्षा करि देवता हरे कही सुन्दरे श्री-
रघुनाथजीके रूप में साचही कहे मनलगाय आन-
न्द में मग्न यकटक निहारि रहेहैं गोसाईं जी कहत
कि श्रीविदेहजी की जो प्रतिज्ञा धनुतोरिबेकी रही
ताने जयपाई ताते जिनको चाह रही तिन सबके
मन भावतो भयो ताते सब हर्षित ह्वै रोम रोम
में आनन्द मचि रहाहै तासों भरि पूरि प्रेमते पुल-
कांग ह्वै सब आशीर्बाद देत कि काम छवि ल-
जावनहारो नीलकंज मेघवारो सुकुमारो अवधेश
कोदुलारो जग उजियारो ऐसो जो सांवरो किशोर
है अरु सुन्दरि सुकुमारी बय थोरी हेम तड़ितवर्ण
गोरी ऐसी जो जनक किशोरी अवधेश किशोर
ऐसो जो मनोहर जोरीकी शोभापै नजरि निवा-
रण हेत तृण तोरि युबतीजन आपने इष्टनसों यां-
चतीं कि यह जोरी युग युग जीवै १४ ॥

भलेभूपकहतभलेभदेसभूपनिसोंलोक
लखिबोलियेपुनीतरीतिमारषी । जग
दम्बाजानकीजगतपितुरामभद्रजानिजि
यजोहौजैंनलागैमुहँकारषी।देखेहैंअने

कल्याहसुनेहैं पुराणवेद बूझैहैं सुजान साधु नरनारिपारखी । ऐसे समसमधी समाजनाविराजमान रामसे न वर दुल ही न सीयसारखी १५ ॥

भदेस कहे खल जो राजा हैं तिनसों भले राजा जो साधु हैं ते भले वचन कहत कि लोक को लखिकै बोलिये अर्थात् जगत्में जेप्रतिष्ठित पुरुष हैं तिनकी रीति देखिकै औ पुनीत रीति मारषी कहे आरषी अर्थात् ऋषि प्रोक्तस्मृत्यादि इत्यादि रीति बिचारिकै बोलिये काहेते जगत्की माता श्री जानकीजी हैं जगत् के पिता श्रीरघुनाथजी भद्र कहे कल्याणरूप ऐसा जानिकै पापदृष्टि छांड़िकै पवित्र दृष्टिते देखौ जाते मुखमें स्याही न लागै हम अनेगिन ब्याह देखे हैं अरु प्राचीन प्रतिष्ठित जनन के ब्याह बेद पुराणन में सुने हैं अरु सुजान जो सुन्दरी पदार्थ के जानने वाले साधुनते बूझेहैं अरु पारषी जे विचारिकै जानि लेते हैं ऐसे नर नारिन ते बूझेहैं सो ऐसे सम समधी सहित समाज धर्मात्मा औ सुकृती ऐसो दूसरो नहींहै प्रथम दशरथजी की धर्मधुरीणता प्रमाण रघुबंशे ॥ दशरथ:प्रशशासमहा रथो यमवतामवतांचधुरिस्थित: ॥ सुकृति प्रमाण वशिष्ठ संहितायां ॥ रामादीनांकुमाराणां वात्सल्या नन्दउत्तमा: ॥ यादृशीभुज्यराज्ञा श्रीमद्दशरथेनच १

कौशल्याप्रमुखाभिश्च तथायोध्यानिवासिभिः ॥ कुत्रचित्तादृशोनास्ति नभूतोनभविष्यति २ ऐसे सहित समाज दशरथसे समधी पुनः मिथिलेशजी धर्मात्मा॥ प्रमाण वाल्मीकीये ॥ सोऽभिवाद्यशतानन्दञ्जनकंचातिधार्मिकं ॥ सुकृति को प्रमाण बृहद्विष्णुपुराणे ॥ विशेषतोजरारत्नजनकोनामनामतः । जानकीयत्रचोत्पन्नानिमिवंशप्रकाशिनी ॥ यस्यभक्तिप्रभावेन रामोदाशरथिःप्रभुः । यामातृत्वंसमापन्नोलोकोत्तरफलप्रदः॥ ऐसे मिथिलेशजी समधी तैसेही श्रीअयोध्या मिथिलापुर निवासी नित्य पार्षद ॥ प्रमाण बृहद्विष्णुपुराणे । अयोध्याकायथा नित्यःसर्वमंगलरूपिणः ॥ तथैवमिथिलाश्चैव सर्वमंगल बिग्रहः १ नित्यानन्दरसास्वादरूपिणोरामपार्षदाः ॥ श्रीरामराधिकानांच निवःसार्थंविशेषतः २ ताते सहित समाज सम समधी ऐसे दूसरो कहूं नहीं शोभित भयो जो श्रीरघुनाथ जी ऐसे वर जातिमें रघुबंश कुल उत्तम स्वरूपवान् यशकीर्त्तिमान प्रतापवान् बलवान् सत्यशौच तपादि धर्मवान् सरल सुशील दया करुणा क्षमादि अनेक गुण भरे अवतारनके अवतारी ऐसे श्रीरघुनाथजी सों बर ब्रह्मांड भरेमें दूसरो नहीं है दुलही जानकी जी पतिअनुकूल सरल चित्तक्षमावान् अत्यंत स्वरूपवान् सुकुमारी बय थोरी शक्ति शिरोमणि आह्लादिनी शक्ति ऐसी श्रीजानकीजी सी दुलही दूसरी काहू लोक में नहीं है यामें सब समाज को प्रताप वर्णनकरें १५ ॥

बाणीविधिगौरिहरशेषहूगणेशकही सहीभरी लोमस भुशुण्डि बहु बारिषो । चारिदशभुवननिहारिनरनारि सबनारद कोपरदान नारदसों पारिषो । तिनकही जगमें जगमगाति जोड़ीएकदूजोकोकहै याकोसुनैयाचषचारिषो । रमारमारमणसुजानहनुमानकही सीयसी न तीयनपुरुषरामसारिषो १६ ॥

यश प्रताप कीर्ति गुणरूप नाम सीताराम समान आन नहीं है ऐसे वचन बाणी प्रथमहीं कहे जो विद्या निधि हैं ब्रह्मा कहे ते पंडितनमें अग्रणी हैं पार्वती हरि चरित्र की श्रोता शिवजी भक्त योगि शिरोमणि शेष कविन में अग्रणी गणेश बुद्धि सदन सर्व पूजनीय इत्यादि के वचनन पर लोमस काग-भुशुण्डि बहु कालीन सर्वज्ञ साची हैं अरु नारद जी ऐसो न कोऊ पारषी है न कहूं उनको परदा है ते चौदहौ भुवन में नरनारिन को निहारि नी-की भांति देखे तिनहूं कही कि जगत में श्रीराम जानकी की एक जोड़ी प्रकाशमान है और दू-सरी नहीं है दूसरी को कहनेवाला अरु सुननेवाला अरु चषचारी कहे नेत्रन सोंदेखनेवाला दूसरा कौन है शक्तिनमें श्रेष्ठ लक्ष्मी कहे सामर्थ सर्वज्ञ विष्णुजी

कहे भक्त शिरोमणि ततत्वज्ञाता परमसुजान हनु-
मान्जी कहे कि श्रीरघुनाथजी सम और पुरुषनहीं
श्रीजानकीजी सम और नारी नहीं इहां उत्तम
कविन के मुखते नामरूप को प्रताप सर्वोपरि वर्णन
है इहां रामनाम दूलहरूप सीय नाम दुलही रूप
द्युतिलावण्यता शोभा रमणीकता कांति मधुरीको-
मलता सुकुमारता इत्यादिते रूप प्रकाशमान अरु
शीलादि गुणनते यशकीर्त्ति प्रतापादिते नाम को
प्रकाश इत्यादि प्रताप को प्रमाण वेद पुराण सं-
हिता रामायणादिकन में बहुत है यथा प्रथम वा-
णी को वचन॥ प्रमाण कालिका पुराणे॥ सर्वासामे
वशक्तीनां कारणंतमसःपरं। श्रीरामसर्वेशशौस्यदशर
नार्थिना १ पुनः ब्रह्मा के वचन को प्रमाण अथ-
र्वणवेदेउत्तरार्द्धे ॥ यस्यांशेनैवब्रह्माविष्णु महेश्वरा
पिजातामहाविष्णुर्यस्यदिव्यगुणाश्च सएवकार्यका
रणयोः परः परमपुरुषोरामोदाशरथिर्बभूव २ पुनः
पार्वती के वचन प्रमाण शक्तिरहस्ये ॥ रामेति ब्रुव
तोनिशंभुविजनस्येतावतासंचयं । पापानामतिशोध
कंखलपुनर्नान्यत्कृतंचिन्तनं ॥ मार्तण्डोदयकालमेवत
मसोनास्तिघातिस्स्याच्छ्रमं । किंकार्यंपुरुषैः प्रदीप
करणेचार्थानभिज्ञैर्वृथा ३ शिवजीके बचनन को प्र-
माणसदाशिवसंहितायां ॥ शपथंकरोमितेवत्स पाद
योश्चप्रभोर्मम: ॥ रामादन्यंनसवेद्मिपरं देवंसदीश्व
रं ४ शेषजीके वचननकोप्रमाण सदाशिवसंहितायां ॥

महाविष्णुसहस्राणां महाशंभुशतस्यच ॥ सृष्टिस्थिति लयानांचकर्ताश्रीरघुनंदनः ५ गणेशजीके वचनन को प्रमाण गणेशपुराणे ॥ रामनामपरंध्येयंज्ञेयंपेयमहर्निशं । सर्वदासद्भिरित्युक्तंपूर्वंमांजगदीश्वरैः ६ लोमस के वचननको प्रमाण लोमससंहितायां ॥ नाशोस्ति प्रत्ययोलोकेयश्चश्रीरामनामतः ॥ भिन्नंप्रतीयतेविप्र सत्यं सत्यं वदाम्यहं ७ भुशुण्डिकेवचननको प्रमाण भुशुण्डीरामायणे ॥ असंख्यकोटिलोकाना मुपादानं परात्परं ॥ तथैवसर्ववेदानांकारणंरामउच्यते ८ नारदजीके वचननको प्रमाण भविष्योत्तर पुराणे ॥ यत्प्रभावान्मयानित्यं परानंदात्मकापरं ॥ रूपंपरमयंदिव्यंदृष्टंश्रीजानकीपते ९ लक्ष्मी विष्णु के वचननको प्रमाण भविष्योत्तर पुराणे ॥ भजस्व कमले नित्यं रामसर्वेशपूजितं ॥ रामेतिमधुरं साक्षात्मयाशं कीर्तयेहृदि १० हनुमानजीके वचनन को प्रमाण शिवसंहितायां ॥ रामादन्यंपरंश्रेष्ठंयं वैपांडित्यमानतः सक्तप्रहृदयस्तस्यजिह्वांछिंद्यामहंमुने ११ इहां हनुमान्जीको सुजानयाते कहे जो श्रीरामजानकीके अंग अंग की शोभा आठहू याम देखते हैं अपरको क्षणमात्र दुर्लभ है वाल्मीक सुन्दर कांड में श्रीकिशोरीजीने प्रश्न करी कि जो तुम प्राण प्रिया जीके निकट निवासी हौ तौ गुप्त प्रकट गुण कहौ ऐसी वाणी सुनि केशरी किशोर बोले कि हे श्रीस्वामिनीजो श्रीरघुनन्दनजीके नैन मैन मददमन

कंजमीन मृगखंजन मददलनहारे हैं कजरारे अ-
यारे शीलसागर हैं अरु रूप यौवनादि संपन्न हैं
उच्च अनूप स्कन्ध हैं अजानु भुज भक्त भयहारी हैं
त्रिरेखा सम्पन्न कंबुते कलित कंठहै कोटिन कला-
धरको कमनीक ताको कतल करनहारो विशद ब-
दन सुखमा सदनहैं गूढ़ जंत्रुहै परम पावन श्रीराम
ऐसोनाम है इत्यादि सर्वांग बाल्मीकि में प्रसिद्धहै
यथा ॥ रामः कमल पत्र क्षः सर्वसत्वमनोहरः ॥ रूप
यौवनसम्पन्नः प्रसूतोजनकात्मजे १६ ॥

दूलहश्रीरघुवीरबनेदुलहीसिय सुंदर मन्दिरमाहीं । गावतिगीतसबैमिलिसुंदरिवेदयुवाजुरिबिप्रपढाहीं । रामको रूपनिहारतजानकी कंकणकेनगकी परछाहीं । यातेसबैसुधिभूलिगईकरटेकिरही पलटारतनाहीं १७ ॥

दूलह श्रीरघुवीरबने अर्थात् पगन में जावक पी-
तांबरी धोती कटिमें पटकाजरी को जामा मणिन
के माला कंठा करमें कंकण पहुंची मुद्रिका कड़ा
कानन में कुण्डल झुमका नेत्रन में अंजन शीशपर
जरकसीपाग तामें कंचन मणिन को मौर उपरादि
धारण ऐसोश्याम मनोहररूप श्रीरघुनाथ जी दूलह
हैं तैसही दुलही कहे पगन में बिछिया नूपुर जे-

हरि मह्वाउर रसना चन्द्रहार पदिकहार नागफणी
हार मणि मोतिन के हार पंचदाम पंचमणी चं-
पकली कंठी बाजू बाँक अंगद भुजवलय पछवलय
मधिवलय कंगन पहुंची चूरी आरसी अँगुस्ताना
पोरियां बाँक मुद्रिका श्रवणफूल ताटंक पट्टिका बें-
दा बेंदी मांगफूल चूड़ामणि मांगमोती सिन्दूर
अर्द्ध चन्द्र बसनसारी आदि धारण दुलहिनि रूप
श्रीजानकीजी सुन्दर मणिन जटित प्रकाशमान म-
न्दिर के मध्यमें सुन्दरी सौभागिनी स्त्री मङ्गलगान
करत अरु ब्राह्मण वेदध्वनि करत हैं दुलहा दुल-
हिनि को कोहबर को लाइ लहकवरि खवाइ जुवा
खेलाय रहीहैं ता समय कंकणके नगनमें श्रीरघुनाथ
जी के रूपकी परछाहीं देखि परत ताको श्रीजानकी
जीसप्रेम निहारतमें मन मोहित भयो लज्जादिदेह
की सुधि भूलि गई ताते हस्त चलावनो रुकि गयो
नेत्र यकटक भयो पलक चलिबो भूलिगई यह आ-
लम्बन विभाव है बिभ्रम हावहै १० ॥

भूपमण्डलीप्रचण्डचण्डीशकोदण्ड
खण्ड्यो चण्डबाहुदण्डजाकोताहीसों
कहतुहैं । कठिनकुठारधारधरिबेकी
धीरताहिवीरताविदिततताकीदेखिये च
हतुहैं।तुलसीसमाजराजतजिसोंविराजै

आजुगाज्यो मृगराजगजराज ज्योंगहतु हौं । क्षोणीमेंनछांड्योछिप्योक्षोणिप कोछौनाछोटेक्षोणिपछपनबांको वि रुदबहतुहौं १८ ॥

ताही समय शिवधनु भंगको हाल सुनि परशु-रामजी आइबोले कि प्रचण्ड जो तेजस्वी राजनकी मण्डली में चण्डीश जो हैं शिवजी तिनको धनुष जाने खण्डन करोहै ऐसे प्रचण्ड भुजदंड हैं जाके ताही सों मैं कहत हौं कि हमरे कठिन कुठार की जो पैनी धारहै ताके सहिबे को वा राजा को धीर्य धरिबोपरी जो समाजते बढ़िकै धनुष तोरकी बीर-ता वाकी विदित है सो हम देखा चाहते हैं ताते राजनकी समाजते विलग ह्वै आजु विराजै अर्थात् कुठार की घोर धार सहिबेको धीरज करिकै समाज ते बिलगाइ कै अपनी बीरता हमको देखावै यथा मृगराज गर्जि कै गजराज को गहत तैसे मैं वाको पछारि हौं काहेते चत्रिनपै मैं ऐसो निर्दयी हौं कि चोणिप जो राजा ताको छोटहू बालक भूमिपै लुकानेहूंको नहीं छाड्यों काहेते चोणिप जो राजा तिनकै छपन कहे नाश करन ऐसो बांको विरद जो बाना ताको बहत कहे धारण किहे हौं यह बाल्मीकि को मत है १८ ॥

निपटहिनदरिबोलेवचनकुठारपाणि

मानिचासस्रौनि पनमानोमौनतागही । रोषेमाषेलखनअकनि अनखोहीबातें तुलसीविनीतबानीविहँसिऐसीकही । सुयशतिहारेभरे भुवननिभृगुनाथप्रगटप्र तापआपुकह्योसोसवैसही । टूट्योसोन जुरैगोसरासनमहेशजीको रावरोपिना क मेंसरीकताकहाँरही १९ ॥

कुठार पाणि जो परशुरामजीते निपटि कै निरादर के वचन ऐसे कठोर बोले कि जाको सुनि अवनिप जेते राजा रहेते ऐसे त्रास कहे डरमानिकै चुप भये कि मानौ मौनता वर्त्तमान ह्वै जिह्वा को पकरि लई जो बोलिबे की इच्छा भयेहूपर बोलनहीं कढ़ि सकत है गोसाईंजी कहत कि अनख की भरी बाणी सुनि अपिमान अकनि कहे बिचारि कै लषण लाल माथे तब वचन उरमें लगिगये ताते रिसाइकै हँसि दिये मैं परशुराम को निरादर करिदिये औरघु नाथजी की कानि मानि नम्र बाणी ऐसो बोले कि हे भृगुनाथ आपुको सुयश भुवन में भरिपूर रहा है औ प्रताप प्रकटही देखियत कि आपके सामने सब राजा सहित गये ताते जो आपु कह्यो सो सब सांची है परंतु शिवजी को धनुष टूटो सो ना जुरि सकैगो क्योंकि जो धनुष शिवजी के पास रहि गयो तामें

तुमारी शरीकता है सो तौ टूटी नहीं या धनुष को शिवजी ने मिथिलेशजी को दैदियो तब आपुकी शरीकता कहां रहिगई १९ ॥

गर्भकेअर्भक काटनको पटु धारकुठार करालहैजाको । सोईहौंबूझतराजसभा धनुकैदलिहैदलिहौंबलताको । लघुआननउत्तरदेतबड़े लरिहै मरिहैकरिहै कछु शाको । गोरोगरूरगुमानभरो कहुकौशिकछोटोसोढोटोहैकाको २० ॥

गर्भके अर्भक कहे बालकन को काटिबे को पटु कहे चतुर है धार जाकी ऐसो कराल कहे भयानक फरसा जाके है सोई मैं परशुरामहौं सो बूझत हौं कि धनुष को काने तोरेउ है ताके बलको मैं दलौंगो हे बालक तू छोटे मुखते उतर बड़ो देतहै लरिहै युद्धमें आरुढ़ ह्वै हम पै शस्त्रास्त्र प्रहार करि शाको कहे प्रभाव प्रकट करैगो हे विश्वामित्र यह गरूर गुमान भरो गोरो छोटो सो बालक काको है इहां लक्ष्मणजी कहे कि जो गुरुके पास पदार्थ है तामें सब शिष्यों को साझा है अरु जब कोई पदार्थ गुरु काहू शिष्यको दैदियो तब औरे शिष्यन को दावा नहीं रहा तैसे या धनुष को शिवजी ने मिथिलेशजीको दैदियो यामें तुम्हारो दावा नहीं है

याते क्रोध बृथा है यहि युक्तितै बे दाये करनो यह बड़ोभारी उत्तर है अवस्था थोरीते बदन छोटो २० ॥

मखराखिबेकाजराजामेरेसंगदये दले यातुधानजेजितैयाविबुधेशके । गौतम कीतीयतारीमेटे अघभूरिभारी लोचन अतिथिभयेजनकजनेशके । चराडबाहु दराडबलचराडीशकोदंडखंड्यो ब्याही जानकीजीते नरेशदेशदेशके । सांवे गोरेशरीरधीरमहावीरदोऊनामराम लख-सराकुमारकोशलेशके २१ ॥

विश्वामित्रजी के वचन हैं कि श्याम गौर शरीर रणमें धीर्यमान सबल शत्रु मर्दन में महाधीर श्रीराम लषण ऐसो नाम ए दोऊ महाराज कौशलेश के कुमार हैं सो हमारी यज्ञकी रक्षा करिबेके काज को महाराज दशरथजी ने मेरे साथ करि दिये सो रक्षा करत में जो योधा इन्द्रको जीतन हार यातुधान मारीच सुबाहु तिनको नाश करि दिये यामें युद्ध बीरता देखाये अरु परपति रतिको जो बड़ा भारी पाप ताको मेटे गौतम की तिय अहल्या को पगधूरि दै उद्धार करे यामें ईश्वरता देखाये अरु राजा जनक ऐसे वैराग्यमान तिनके नेत्रनके अतिथि कहे प्रिय पूज्य पाहुन भये अर्थात ब्रह्मसुख त्यागि

इनके रूपकी माधुरी अवलोकनि में प्रेम वश नेत्र आसक्त ह्वै इनके प्रीति रंगमें रँगि गये यामें पर ब्रह्मरूप सूचित किये अरु प्रचंड है जिनमें बल ऐसे भुज दंडन सो चंडीश जो शिवजी तिनको दंड जो धनुष जो काहूको उठायो न उठो ताको खंडनकरि सब देशन के राजन को जीति श्रीमिथिलेश नंदिनी को बिवाहे यामें बलो प्रतापवान देखाये २१ ॥

कालकरालनृपालनकेधनु भंगसुने फरसालियधाये। लक्ष्मणरामबिलोकिस प्रेममहारिसिहाफिरिआँखिदिखाये। धीरशिरोमणिवीर बड़ेबिनयी बिजयी रघुनाथसुहाये। लायकहैंभृगुनायकसे धनुशायकसौंपिसुभायसिधाये २२॥

इतिश्रीकवित्तरामायणेबालकांडः समाप्तः ॥ १ ॥

शिवजी धनुषकोभंग कहे टूटिबो सुनि नृपालजो राजा तिनके करालकाल जोतुरतही जीवघात करने वाले परशुराम करमें फरसा लिये शीघ्रआवत भये श्रीलक्ष्मणजी श्रीरघुनाथ जीको रूप सप्रेम विलोके अर्थात् देखतेही मोहित ह्वै पुलकांग भये पर रिसिहा कहे अत्यन्त क्रोधी हैं ताते कठोर वचन कहि टेढ़ी भौंह करि आँखि दिखाये पुनः धीर्यमान

नमें शिरोमणि वीरनमें बड़ेवीर विनयी कहे नम्रता युत शीलवान् सुभाव विजयी सबके जीतने वाले प्रतापवान् ऐसे जो श्री रघुनाथ जी तिन को देख परशुरामजी के मन भावत भये परशुरामजीके डाटे पर मुखकी प्रसन्नता न गई यातेधीर शिरोमणिजाने राक्षसबध सुनि बड़ेबीरजाने प्रियवचन सुनि विनयी जाने त्रिलोक विजयी धनुष तोरेते विजयी जाने इत्यादि गुणन ते परब्रह्म रूपजानि मन भाये ताते परशुराम से लायक वीर तेज धनुष बाण फरसा दै विनती करि सहजही में चलेगये २२ ॥

सवैया ॥ माणिकमूर्द्धि धृतःमुकुटाद्भुतदीप्तप्रभा शतभानुसमः ॥ चन्द्रमुखाक्षमृगाचलकुण्डलगण्डतलं कचतुल्यतमः ॥ नीपजश्यामकलेवरमें पटपीतयथा तड़िताभ्रगमः ॥ मामकमानससंनिहितो चरणाम्बुज जानकिनाथनमः ॥

इतिश्रीरसिकजनताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदरज शरणागतबैजनाथकृतकवित्तावलीरत्नदीपि काटीकाबालकाण्डसमाप्तः ॥ १ ॥

———※———

अयोध्याकाण्ड॥

कीरकेकागरज्यों नृपचीरविभूषण उत्पलअंगनिपाई। अवधतजीमगवासके रूखज्यों पन्थकेसाथज्योंलोगलुगाई। संगसुबंधुपुनीतप्रिया मनुधर्मक्रियाधरि देहसुहाई। राजिवलोचनरामचलेतजि बापकोराजबटाऊकीनाई १॥

श्लोक॥बन्दे विदेहतनुजापतिपादपद्मंब्रह्माहरीशवरुणेंद्रसुरौघसेव्यं॥ योगीन्द्रवृन्दमनसामकरन्दलुब्धे मोहाविधत्तरणप्लवंशरणंशरण्यं १ नृपचीर कहे जर कसीपाग जरी को जामा दुशाला उरमाल पटुका धोतीआदि नृपचीर कैसे रहे यथा कीर कोरको का गरअर्थात् केचुलि त्यागे यथा कीराको देह निर्मल देखात अथवा कीर सुवाको पिंजरासे अंगकी शोभा ढकी अरु बन्धन ते मन उदासीन जबबसन उतारि डारे तब अंग को शोभा प्रसिद्ध देखपरी औ राज बन्धन ते छूटि मन प्रसन्न भयो अरु विभूषण जो हैं किरीट कुण्डल कण्ठामालाके यूरपहुंची कड़ामुद्रिका क्षुद्रघण्टकादि ते उतारेते सौभाविक अंग विभूषित

सो उपमा पाईभाव अलिकसे कच सचिक्कन चमकि रहे अर्द्ध चन्द्रसे उच्चभाल शोभित काम धनुष सी भृकुटी कञ्ज मीन खञ्जन से नयन तिल फूल सी नासिका आदरस से कपोल बिम्बसे अधर शरदपूर्ण चन्द्रसे बदन कम्बुसी ग्रीव गजसुण्ड से भुज कञ्जसे कर चलदलसों उदर भ्रमरसी नाभी तरंग सीत्रिवली सिंहसे कटि रंभसे जंघ कञ्ज से पद इत्यादि सर्वांग विना भूषणौ भूषित ताते अत्यन्त रूपवान्हैं यथा ॥ बिनभूषणभूषित युतन रूप अनूपम सोइ अरु श्री अयोध्याजी कैसे तजे यथा मार्गमें बासको रूख रूख कहिबे को यह भाव कि विना फल फूल को वृक्ष अरु अयोध्या बासी नर नारिन को कैसे छोड़े यथा पन्थ के संगी को छोड़िबे में कछुशोक नहीं होत संगमें सुबन्धु अर्थात सेवक धर्म्म अरु सखा धर्म्म अरु बंधु धर्म तीनिहूं में प्रवीण श्रीलक्ष्मणजी हैं सेवक धर्म यथा सिद्धांत मुक्तावल्यां ॥ सर्वेश्वर सर्वज्ञ प्रभु अतिशय कृपानिधान ॥ इत्यादिक गुण आश्रयण सो आलंबन जान १ आठो अंग प्रणामकै पादप्रक्षालन पान ॥ कृपादृष्टि की बांछनित सोउ-द्दीपन जान २ आज्ञा शिर धारे सदा सेवन चतुर अमान ॥ ढीठ वचन बोलैनहीं यहअनुभाव बखान ३ पुंत कहते प्रणययुत अष्ट सात्विका जान ॥ तन मन को जो क्षोभही ताहि सात्विका मान ४ हर्ष गर्व चिंता स्मृती मतिधृति अरु निरवेद ॥ तर्कशंक पुनि

दीनता सब संचारि सुवेद ५ जिय प्रभु ताको ज्ञान पुनि संभ्रम आदर दान ॥ स्वामि भाव करि प्रीति यह थाइभाव जियजान ६ प्रथमहिते सियराम को दर्शनहीं संयोग ॥ दर्शन पुनि अंतरपरै ताकहँ जानि वियोग ७ बिजुत भजुत द्वै योग यह दश दश दशा बखानि ॥ कृशता जड़ता जागरण अनालंब धृति हानि ८ ज्वर तापादिक ब्याधि पुनि जरनि अंग सो जान ॥ बाढ़ै चित उन्मतता मूर्च्छा मरण निदान ॥ ९ इति सेवक अथ सखा गुण यथा ॥ सरस सलोने नेहनिधि रघुवर बड़े सुजान ॥ इत्यादिक गुण आश्रयण सो आलंबन जान १ चपल तुरंगन फेरनी मृगतकि मारन बान ॥ करिप्रण लक्षण बेधन सब उद्दीपन जान २ धरिगल भुजबत लावनी इक संग भोजन शयन ॥ अनूभावयह सख्यके सबबिधि सुखको अयन ३ पूर्व कहेते सात्विका रोमांचादिक अत्र ॥ हर्षगर्व आदिक सकल संचारिहु जो तत्र ४ सखरसको अस्थाइ पुनि प्रणाय प्रेम अरु नेह॥ अनुराग अस जानिये मनोएक द्वै देह ५ इति सख्य गुण अरु सुब धुको गुण बाल्मीकीमें लक्ष्मणजी के वचनहैं। श्लोक। अहंतवन्महार जेघृतृत्वंनोपलक्षमे॥ भ्राताभर्ताचबन्धुश्चपितामाताचराघव: ॥ ऐसेसुबन्धु श्रीलक्ष्मणजीअरु सब बिधि अनुकूल पतिव्रतनमें शिरोमणि ऐसी पुनीत प्रिया श्रीजान की जो तिनको साथ लिहे मानो धर्म अरु क्रिया मूर्तिमान् संग में

शोभित हैं धर्म यथा सत्य शौच तप दान सत्य कहे मन वचन कर्म ते सत्य कर्तव्यता शौच कहे त्रिकाल स्नान करिये रज वीर्य्य मलिन पट स्त्री म्लेच्छ शूद्र पतित क्लीव स्पर्श न करिये रजस्वला कपाली मृतक मशानना दर्शिये तप कहे इन्द्रिन को विषय जीतना प्रथम मूलफल भोजन करि तपस्या करि स्थूल शरीर जाग्रत अवस्था दशो इंद्रिन को विषय जीतना पुनः वारि अहार करि लिंग शरीर की षट् उर्मी षट् विकार कों विषय स्वप्न अवस्था को जीतै पुनः पौन अहार करि कारण शरीरकी सुषुप्ति अवस्था में सातौ धातुन को विषय जीतै पुनः ब्रह्मानन्द ह्वै अद्वैत रूप की तुरीय अवस्था में दशौ इन्द्रिन की सूक्ष्म बासना को विषय ताको जीतै दान कहे देशकाल सुपात्र विचारि श्रद्धा आदर युत निरबासिक दान देना इति धर्म क्रिया कहे अपने वर्णाश्रम के कर्म करना यथा ब्राह्मणके सम दम तप शौच शांति दया ज्ञान विज्ञान पुनः क्षत्रीके शूरता तेजवान धीर्य्य शास्त्रमें दक्ष युद्ध में अचल दान में उदार पुनः वैश्यकी कृषी बाणिज्य गो रक्षा पुनः शूद्र त्रिवर्ण सेवा पुनः ब्रह्मचारी के विद्याध्ययन गुरुसेवा भिक्षा भोजन पुनः गृहस्थके दान स्वनारी रत हरि अर्चा पंचग्रास दान अतिथि सेवा पुनः बानप्रस्थ स्त्री युत तपस्या करि इन्द्र जीतै पुनः सन्यासी के विषय त्याग वृक्ष तर बास

भित्ता भोजन इत्यादि क्रिया औ धर्म मूर्ति मान् मानों संग लै कमल नैन श्रीरघुनाथ जी पिता की राज तजि बटाऊ राहगीर सम चले यामें त्याग बीरता देखाये १ ॥

कागरकीरज्यों भूषणचीर शरीर लस्यौतजिनीरज्योंकाई । मातुपितप्रिय लोगसबै सनमानिसुभाइसनेहसगाई । संगसुभामिनिभाइभलो दिनद्वै जनु औध हुतेपहुनाई । राजिवलोचनरामचले तजिबापकोराजबटाऊकिनाई २ ॥

राजसी भूषण बसन कैसे त्यागे यथा पिंजराको सुवा तजत इहां सुवाकी उपमा याते दिये किअपर पक्षी पालते संमोहित होत अरु सुवा ऐसोनिर्मोही होतकिजो जन्मभरिपालेरहिये तहूंजबदांवकरिपायो तबपिंजरातोरि भागजात है तथाभूषण चीरतऊपर देह कैसो शोभितभई यथा काईतजि नीरनिर्मल देखात भूषण दूषण मानितजे यह बैराग्य दशा है बसनकाई से तजे तन जलसों निर्मल देखानो यह रूपकी अधिकारता है माताकौशल्यादि पिता श्रीदशरथ महाराज अपर जे प्रिया लोग सनेहके संबन्धी रहे तिनको मोहतजि सहज सभाव सनमान करि छांड़े संग सुभामिनि पतिव्रत में प्रवीण श्रीजानकी

जी अरु अमान आज्ञाकारी सबविधिते भले भाई श्रीलक्ष्मणजी साथलिये मानों द्वैदिन श्रीअयोध्याजी में पहुनाई करिकै भाव पाहुन को एकदिन रहिबो उचित है सो दुइदिनरहि आसूदा ह्वै कै कमलनयन श्रीरघुनाथजी बापको राज तजि राही से चलेगये याते विषयते बिरक्त हैं २॥

शिथिलसनेहकहैंकौशिलासुमित्राजीसों मैंनलखीसौतिसखीभगिनीज्योंसेईहै । कहैंमोहिंमैयाकहौंमैंनमैयाभरतकीबलैयालैहौंभैयातेरीमैयाकैकेईहै । तुलसीसरलभायरघुरायमायमानी कायमनवानीहूनजानिकैमतेईहै । वामविधिमेरोसुखसिरससुमनसम ताकोछलछुरीकोकुलिशलैटेईहै ३ ॥

श्रीरघुनन्दन के सनेहते शिथिल कहे थकित ह्वै श्रीकौशल्याजी सुमित्राजी सों कहतीहैं कि हे सखी कैकेयीको मैं सवति करिकै कबहूं नहीं देखी सदा बहिनि सम पालन करी है जब रघुनन्दन मोको मैयाकहैं तब कहौं की तुम्हारी मैया मैं नहींहौं बलैयालियो मैं भरतकी मैयाहौं हे भैया तेरी मैया कैकेयी है ऐसे वचन सुनि सरल है सुभाव जिनको ऐसे श्रीरघुनन्दन कैकेयीको माता करि मानी मन

बच कर्मंहू करि मतेई कहे दूसरी माता करि नहीं जानी मतेई पश्चिमदेश की बोलीहै सिरसके फूल सम कोमल हमारो सुख अर्थात् क्षत्रियजाति तामें रघुवंश युद्ध में अचल ताके शिरोमणि धर्मधुरीण विषय ते बिरक्त ऐसे रघुबीर की माता ताको सुख पुत्र सदा संयोग कहा पुष्ट है दूसरे पतिको जीवन रामदर्श आधीन सोऊ पुष्ट नाहीं ऐसो कोमल हमारो सुख ताके काटिबे हेतु वामबिधाताने कैकेयी के छलरूप छूरीको क्रोधरूप बज्रमें पैनाई भावबज्र क्रोध कैकेयी करिदियो जाते छल ऐसो पैन भयो जो काहूके कहे गोठिल न भयो ३ ॥

कौजैकहाजीजीजू सुमित्रापरिपाँय कहैंतुलसीसहावैविधिसोईसहियतुहै। रावरोसुभायरामजन्महीतेजानियत भरतकीमातुकोकीवेसोचियतुहै। जाई राजघरव्याहिआईराजघर महाराजपूत पायेहूनसुखलहियतुहै। देहसुधागेहते ऊमृगहूमलीनकियो ताहूपरबाहुबिनराहुगाहियतुहै ४ ॥

पाँयनपरि सुमित्राजी कहती हैं कि हे जीजीजू जो बिधाता सहावै सोई सहिबेको है तामेंकाहको-

जिये आपुको तौ स्वभाव रीति रहस्य श्रीरघुनन्दन के जन्महोते जानियतु है भाव जब अनेकनकल्पस-त्कर्म करि बाहर भीतर शुद्धहोत तब श्रीरघुनाथ जीमें प्रीति भक्तिहोत यथा महारामायणे श्लोक ॥ जेकल्पकोटिसततं जपहोमयोगैर्ध्यानैस्समाधिभिरहोर तब्रह्मज्ञानात् । तेदेविधन्यमनुजाहृदिवाह्यशुद्धःभ क्तिस्तदा भवतितेषुचरामपादौ ॥ ताते तुम जो ऐसी न होतू तौ श्रीरघुनन्दन पुत्र कैसे होते हम भरत की माता को शोच करियतु है कि राजा की पुत्री भई फिरि रघुवंश कुल में चक्रवर्ती के संग व्याह भयो अयोध्या महाउत्तम राज पायो धर्म धुरीण भक्त शिरोमणि भरत से पुत्र पायो ताहू पर सुखन प्राप्तभयो यथा चन्द्रमा देह तौ सुधाको घर ताको बाहन मृगाने प्रकाश में मलीनता करिदई ताहू पर बिना बाहुन को राहु ग्रहण करि सब शोभा लोप करि देत इहां चन्द्रमा से कैकेयी तामें हरि बिमु-खता कलंक मृगासे यश मलीन कियो ताहूमें बि-धवापन राहु समग्र शोभा लोप करि दियो सोऊ बिना करको है ४ ॥

नामअजामिलसेखलकोटिअपारनदी भवबूड़तकाढ़े । जोसुमिरैरजमेरुशिला कणाहोतअजाखुरवारिदवाढ़े । तुलसी जिनकेपदपंकजतेप्रकटीतटनीजुहरैअघ

गाढ़े । तेप्रभुयासरितातरिबेकहँमाँगत नावकरारेह्वैठाढ़े ५ ॥

अपार जो भव नदी है तामें बूड़त अजामिल ऐसे करोरिन खल पातकिन को राम ऐसो नाम काढ़ि लियो जन्म मरणादि दुःख छुड़ाइ मुक्त करिदियो अरु जे रज सम रहे यमन बाल्मीकादि जो कर्म वायु बशते न मालूम कहां कहां उड़ते फिरते तेऊ नाम लैकै सुमेरु सम अचल परमधाम के अधिकारी भये अरु तिनके जो पाप रहे शिलाकहे पर्वत से गरु ते नाम लेतही कण सम ह्वै उड़िगये यथा निषाद कोलभिल्ल अरु समुद्र सों अपार दुःख जिन को रहा यथा सुग्रीवादि ते प्रभु कृपाते छागके खुर सम पारभये गोसाईंजी कहत कि जिनके पद कमलनते तटनी श्रीगंगाजी उत्पन्न भईं जो कठिन पापन को हरि लेती हैं तेई प्रभु भक्तनके आधीन ह्वै प्रसिद्ध गंगाजीके पारजावे हेतु करार परठाढ़िह्वैकै केवट ते नाव मांगत हैं ऐसे भक्तबत्सलकृपालुहैं ५ ॥

यहिघाटतेथोरिक दूरि अहै कटिलौं जलथाहदेखाइहौंजू । परसैपगधूरि त तरणी घरणीघरकोसमुझाइहौंजू । तुलसी अवलंबनऔरकछू लरिका कोहि भाँतिजिआइहौंजू । बरुमारियेमोहिं

बिनापगधोयेहौं नाथ न नाउ चढ़ाइ हौंजू ६ ॥

जब श्रीरघुनाथजी नाव मांगे तब केवट कहे कि हे महाराज यहि घाटते थोरी दूरि पर सरितायाह कटि तक जल है सो मैं देखाइ देहौं तहां उतरि जाइये भाव उतारि देबे में मोको इन्कार नहीं है काहेते आपुके पगकी धूरि लागे अहल्या सम मेरी नाउ तरि जाइ तौ घरमें जाइ घरणी को कैसे समुझाइहौं भाव नारिन को जड़ता स्वभाव होत ताहू में नीच जातिकी नारी महा प्रबल दूसरे और अवलंब जीविका की मेरे कछु नहीं है तौ लरिका कौन भांति जिवाइहौं ताते बरुकु मोको मारिये सो अंगीकार है कि सब परिवार तौ न मरैगो ताते यह सांची बात मैं कहतहौं बिना पग धोये नाव पर न चढ़ाइहौं परिवार जीवन्मुक्त करोचाहत ताते व्याजस्तुति है ६ ॥

रावरेदोषनपायँनको पगधूरिकोभूरि प्रभावमहाहै । पाहनतेबनबाहनकाठ कोकोमलहैजलखाइरहाहै । पावन पांवपखारिकैनाउ चढ़ाइहौंआयसुहो तकहाहै । तुलसीसुनिकेवटके बरबैन हँसेप्रभुजानकीओररहाहै ७ ॥

केवट कहत कि हे महाराज आपुके पद कमलन को दोष नहीं है जाते नावपर न चढ़ावौं भाव पद की प्राप्ती तौ सुकृतिनको अधिकार है ताते पग की धूरिही को महाभारी प्रभाव हमसे पातकी पतित तारिबे को है जो कहौ अहल्या तौ पाषाण रही ताको कहत कि बन कहे जल ताको बाहन नाउ काठकी सो पाहनते कोमल है ताहू में जल खाइ रहा भीजेते अति कोमलहै ताते पवित्र पांव पखारि कहै धोइकै नावपर चढ़ाइहौं हेनाथ तामें आपुकी का आज्ञा है तहां वरबैन कहे देशकाल समयसुहा-वने कही थोरेबर्ण अर्थ बड़ो बिलक्षण चातुरीहास्य युक्त श्रवणरोचक गूढ़ आशय सनेह बर्द्धक ऐसे वच-नन कोआशय बिचार श्री रघुनाथजी जानकीजीकी ओरहेरि ठठाय कै हँसे हँसिबे को यह भाव कि श्रीजानकीजी आह्लादिनी शक्तिहैं बद्ध मुक्त जीवकी ब्यवस्थाकी अधिकारी हैं विना इनकी आज्ञा भव तरन दुर्लभ है सो बर्त्तमान बरजोरी करि केवट परिवार सहित भवसागर पार जात है याते हँसे व जनकपुर में तुमहूं रजको भयमानि पदस्पर्श नहीं करतीरहौ व तुम्हारीसेवा बरबश केवट लेतहै ७॥

पातभरीसहरीसकल सुतबारेबारे केवटकीजातिकछूवेद नपढ़ाइहौं । स-बपरिवारमेरोयाहीलागिराजाजीहौंदी

नवित्तहीनकैसेदूसरोगढ़ाइहौं ॥ गौतम कीघरनीज्योंतरनीतरेगीमेरी प्रभुसों निषादह्वैकैबादनबढ़ाइहौं । तुलसीके ईसरामरावरेसोसाँचीकहौं बिनापग धोयेनाथनावनाचढ़ाइहौं ८॥

हे हरि श्री रघुनन्दनजी पाँति भारी सहित हौंभाव परिवार भारी मेरेहै तामें सब लरिका छोटे छोटे कछु मँजूरी करिबे लायक नहीं हैं अरु वेद पढ़ाइ न सकौंगो जो जामें बैठे जीविका होइ काहेते केवट नीच जातिहौं हे महाराज मेरे सब परिवारकी जीविका यही नाउकी उतराई है अरु ग़रीब द्रव्य हीन हौं ताते दूसरी नाउ न बनवा सकौंगो जो गौतमकी नारी सम मेरी नाउ तरि जाइ तौ मैं क्या करौंगो जो आपु बनवाइ देबेको योग्यहौ तौ मैं निषाद ह्वैकै बादना बढ़ाइहौं कि मोको आपु बनवाय दीजै ताते महाराज आपु ते मैं यह साँची बात कहतहौं हे नाथ बिना पगधोये नाउपर न चढ़ाइ हौं इति बाचयार्थ अथ ब्यंग्यार्थ पातनाम है दोषको शीघ्रबोध में प्रसिद्ध है हे हरि पात जो दोष सो हमारे भारीहै अरु सकल सुत-वारे कहे बालबुद्धी अज्ञानहैं अरु केवट नीचजाति वेदपढ़ाइ नहीं सकत जो अर्चादि सुधर्म करिसकैं

ताते सबपरिवार मेरो पदरज के आसरे में लागि है जो कहो आजु चूकि जाउँ तौ सुकृति रूपीद्रव्य ते हीन दीन हौं दूसरी कैसे गढ़ाइ हौं भाव ऐसो संयोग फिरिना मेरो बनायो बनैगो ज्यों गौतमकी घरणी तरी है तैसे पदरज पाय मेरो तरणी भव-सागरमें तरैगी प्रभुसो भाव आपुके पारकिहे भव-सागर पार होउँगो सो आपु भवसागर के तारक स्वामी सोमैं तुच्छ निषाद ह्वै बादन बढ़ाइहौं भाव बहुत बातैं न करोंगो सांची बात एक आपुते कहत हौं बिना पगधोये भाव बिना भवसागर पार भये नाथजी आपुको नाव पर न चढ़ाइ हौं इति विज्ञार्थ अथ लक्ष्यार्थ केवटकी जाति कछु वेद न पढ़ाइ हौं भाव हिंसे तो करेंगे तामें बालकअज्ञानी बे प्रयोजन के जीव बद्ध करते हैं ताहू में भारी कुटुम्बते अधिक पाप वृद्धि होइगी अरु सब परिवार मेरे याही लागि भावहिंसा कर्म करि जीविका है जो कहौ कि हिंसा की क्रिया न करौ ताको कहत कि दूसरी निरहिंसकी क्रिया कैसे कराइ सकौं भाव वित्तहीन दीन जो हिंसा न करैं तौ खाइँ का ताते यथा गौतमकी त्रिया तरी तैसे पदरज पाइ मेरी तरणी भव सागरमें तरैगी अरु निषाद कहे पतित जीव ह्वैके मैं प्रभु जो ईश्वर ताते बाद न बढ़ाइहौं भाव ज्ञान मार्ग अहंब्रह्म न कहौंगो हे महाराज आपुते सांची एक बात कहत हौं भावनिःछल शुद्ध

शरणागत में मेरो कल्याण है ताते हे नाथ विना पगधोये भाव विनाचरणोदक लिहे नाउ परनचढ़ाइ हौं भाव पार न उतारि हौं यामें यह अभिप्राय कि प्रथम मैं पावन ह्वैकै तब आपु की सेवा को अधिकारी होउँगो८॥

जिनकोपुनीत वारिधारैसिरपैपुरा रि त्रिपथगामिनीयशवेदकहैगाइकै। जिनकोयोगीन्द्रमुनि वृन्ददेवदेहदमिकै रत्तविविधयोगजपमनलाइकै। तुलसी जिनकीधूरिपरसिअहल्यातरीगौतमसि धारेगृहगौनोसोलेवाइकै। तेईपाँयपा इकैचढ़ायनावधोये विनुख्वैहौं नापठा वनीकै ह्वैहौंनहँसाइकै ९॥

पुरारि कहे महादेव तिनके शिरसिकहे शीशपर वहत है जा पावन को पावनबारि अर्थात गंगाजी त्रिपथ कहे स्वर्ग मृत्यु पाताल तिनको पवित्र करिबेहेतु तिहूंपुर को त्रिधारा ह्वैगई ताते त्रिपथगा नामकहि जिनको यशवेद गावतहैं पुनः जिनपावन की प्राप्ती हेतु शिवकर भजनादि योगीन्द्रसनकादि नारद अगस्त्य वाल्मीकादि मुनि बृन्द इन्द्र वरुण अग्नि रवि यमादि देवताते देहअर्थात इन्द्रिनको विषय जीतबे हेतु तपस्यादिकर देहको दमन कहे

दाउदै विविधभांति अष्टाङ्गादियोग अरु विधिपूर्वक जपपुरश्चरणादिमन लगाइकै करतहैं अरुजापदकी धूरि परसि अहल्या पवित्र ह्वै दिव्य देहभई ताको गौतमऋषि गौनो सोअर्थात् नवीन पवित्रसीमानि लेवाइकै अपनेधामको सिधारे अर्थात् जिनते त्रिलोक पावनी गंगाप्रकटीं जिनके मिलिबेको योगीन्द्रादि युक्ति करत जिनते अहल्या भई पावन तेई लोक पावन पावनको पाइ बिना धोये पादोदकलै कृतार्थ भये आपुको नावपर चढ़ाइ पारपठै ताकी पठावनी कहे मँजूरी खोइ न देहौं अरु अपनो हानिकरि हँसीकरैहौं न ऐसे वचन साहित काव्य में काकुवै सिष्ट व्यंगयकहावते हैं अरु हानि हँसी लोकप्रवाद ते लोकोक्ति अलंकार है ६ ॥

प्रभुरुखपाइकैबोलाइबालघरनिकै बन्दिकैचरणचहूंदिशबैठेघेरिघेरि । छोटोसोकठौताभरिआनिपानीगंगाजी कोधोइपांइपीवतपुनीतबारिफेरिफेरि । तुलसीसराहैताकोभागसानुरागसुरबर्षें सुमनजयजयकहैंटेरिटेरि । बिबुधसनेह सानीबानीअसयानीसुनि हँसेराघजा नकीलषणतनहेरिहेरि १० ॥

श्रीरघुनाथ की आज्ञाको रुखपाइ केवट अपने

बालकनको बुलाये ते आइकै श्रीरघुनाथजी के पद कमलन की बन्दना करि चारिहूं दिशि घेरि घेरि समीप बैठे सुन्दरे छोटे कठौता में गंगाजललै प्रभु के पदकमल धोइ तापवित्र जलको बार बार सब पानकरत गोसाईंजी कहत कि ता निषादको भाग्य के सहित अनुराग देवता सराहना करिकै फूलवर्षि जोर जोर सों टेरिकै जयजयकार करत भाव अधम उधाररूप श्रीरघुनाथजी सम और दूसरो रूप नहीं है ऐसी सनेहसानी असयानी कहे छल चतुराई रहित सांची वाणी देवतन की सुनि श्रीरघुनाथ श्री जनकनन्दिनी लषणलाल की दिशि हेरिहेरि हँसे भाव तुम्हारी सेवामें निषाद साक्षीभयो वा देवन के उच्चस्वर ते जयकार सुनि प्रेम बश जानिकै वा भक्तवत्सलता की प्रशंसा सुनि हँसे यामें हास्य रस यथा अटपटे वैनकेवटके औ कठौतामें पावँधोवत में घेरिबैठनो देवन के विह्वल वचनादि विभाव मुख अधर दृगादि को विकार अनुभाव हर्ष चपलतादि संचारीहँसीआइबो अस्थाईतातेहास्यरस सांगपूर्णहै औभक्तवत्सलतासौहर्दतागुणहैनिदर्शनालंकारहै१०॥

पुरतेनिकसीरघुवीरवधू धरिधीरदये मगमेंडगद्वै । झलकीभरिभालकनीजलकी पटसूखिगयेमधुराधरवै । फिरि बूझतिहैचलनोवकितो पियपर्णकुटी

करिहौंकितह्वै। तियकी लखिआतुरतापियकीअँखियां अतिचारुचलींजलच्वै ११॥

सुरसरि उतरि स्नान करि तट पर काहू ग्राम के निकट वृक्षतर पूजादि करत में दुपहर ह्वैगये चैत मास ताते घाम निर्मल भूमि तप्त में चले पुरते निकसतही श्रीजानकीजी अत्यन्त सुकुमार ताते डरीं परंतु श्रीरघुवीर की बधू अपना को मानि भाव वीर की अर्द्धांगी ताते धीर्य धरि मार्ग में डग कहे पग द्वै कढ़िबो लोक प्रवाद अर्थात् थोरिही दूरि में भाल कहे माथ भरे में जल पसीना की कनी निसरि झलकन लगीं वै जे मधुर अधर दोऊ पट ओटते सूखि गये ललित अरुणाई लोनाई मधुराई पै रुखाई दरशि आई इत्यादि बिवरण दशा ह्वैगई ताहू पर धीर्य धरे फिरि बूझती हैं कि अब केतनो चलनो है हे प्राणप्रिय कहां ताईं चलि ह्वैकै पर्णकुटी करिहौ तिय जो श्रीजानकीजी तिनके मन की आतुरता अर्थात् पर्णकुटी थलताईं पहुंचबे की शीघ्रता अरु तनकी सुकुमारता में श्रम की बिबरणता देखि पिय जो श्रीरघुनाथजी तिनकी अत्यन्त जो सुन्दरी अँखियां हैं तिनमें जल च्वैचले भाव अति स्नेहते करुणा बढ़ि तनमें न अँमाइ सकी ताते आंशुन की प्रवाह धार बहि चली यामें अनु-

कूलत्व दर्शाइबे ते निदर्शना अलंकार है ११ ॥

जलकोगयेलक्ष्मणहैंलरिका परिखौ पियछांहघरीकहढाढ़े । पोंछि प्रसेउ बयारिकरौं अरुपाँइपखारिहौं भूभुरि डाढ़े । तुलसीरघुवीरप्रियाश्रमजानिकै बैठिबिलंबलोकंटककाढ़े । जानकीनाह कोनेहलख्योपुलकोतनबारि बिलोचन बाढ़े १२ ॥

श्रीजानकी जी रघुनाथजीसों कहती हैं कि लघणलाल अबहीं लरिका हैं ते अकेले जल लेबे हेतु गये हैं ताते हे प्राणपति एक घरी भरि वृक्ष की छाया में ठाढ़े ह्वै कै देखि लेहु भाव लषणलाल की तके रहौ यामें भक्त वत्सलता है अरु आपुके पसेऊ कहे श्रमजल मुखपै आयो ताको पोंछिकै बयारि करि देउँ जामें तन सीरो ह्वैजाइ अरु भूभुरि कहे तप्त रज तामें चलेते आपुके कोमल चरण डाढ़े भाव तप्त ह्वैगये तिनको पखारि कहे धोइ डारौं जामें पद सीरे ह्वैजाइँ गोसाईं जी कहत कि श्री रघुनाथ जी प्रिया जो श्रीजानकीजी तिनको श्रमित जानिकै बिलम्ब कहे देर तक बैठिकै कंटक पग के कांटा निकासे अथवा कंटक कहे चलबे को श्रम गरमी थका छायामें सहताइकै निकासि डारे याते

श्रीजानकीजी नाह जो श्रीरघुनाथजी तिनको नेह अपना पै बिचारि भाव हमको थकित जानि श्री रघुनाथजी देर तक थँभे यह विचारि श्रीजानकीजी को तन प्रेमते पुलकि भरिकै न अँबानो ताते आंशू नेत्रन में भरि आयो यामें परस्पर प्रीतिको अतिशय ताते स्वाधीन पतिका अरु अनुकूल नायकतु है अरु करुणा गुण है १२ ॥

ठाढ़ेहैंनौद्रुमडारगहेधनुकाँधधरे कर शायकलै। बिकटीभृकुटीबड़रीअँखियां अनमोलकपोलनकी छबि है । तुलसी असमूरतिआनिहिये जड़डारसौंप्राण निछावरिकै। श्रमसीकरसावँरिदेहलसै मनुराशिमहातमतारकमै १३ ॥

नवद्रुम नवीन पल्लव करि सघन है छांह जामें ऐसे वृक्ष तर मार्गकी श्रम निवारण हेतु डार गहे श्रीरघुनाथजी ठाढ़े हैं तासमय कैसी शोभा है कि विकटी कहे ठेढ़ी काम धनुष सी भृकुटी मृग शाव से बड़े बड़े नेत्र अरु अमल कपोलन की छबि अ- मोल रत्ना दर्श समहै नीलमणि सजल मेघ सी सांवरी देहमें श्रमसीकर कहे पसीनाकी कनी निकसि कैसी शोभा देरही हैं मानो महातम राशि भादों अमावस की रैनिको समूह अंधकार सो तारक कहे

नक्षत्र मयो है सघन नक्षत्र उदय हैं गोसाईं जी कहत कि ऐसी जो श्रीरघुनाथजी की मूर्त्ति आर्त्त हरण हारी ताको हिये में लाउ हे जड़ मन प्राणन को निवछावरि करिडारु भाव आत्मसमर्पण शुद्ध शरणागत में तेरो कल्याण है ऐसो रूप आरत भक्तको ध्यान है साँवरीदेह श्रमसीकर उपमेयमें तम राशि नक्षत्रन की सम्भावना ताते वस्तूत्प्रेक्षालंकार है १३ ॥

जलजनयनजलजाननजटाहैंशिरयौबनउमंगअंगउदितउदारहैं। साँवरगोरेकेबीचभामिनीसुदामिनीसी मुनिपटधरेउरफूलनकेहारहैं। करनिशरासनशिलीमुखनिषंगकटि अतिहीअनूपकाहूभूपकेकुमारहैं। तुलसीबिलोकिकैत्रिलोककेतिलकतीनि रहेंनरनारिज्योंचितेरेचित्रसारहैं १४ ॥

मार्ग में प्रभुके दर्शन पाये ते अपने ग्राम में अपर लोगनते कहत कि जलज कहे कमलकेसमनेत्र कमल सम मुख शीश में जटाजूट धारण देहन में यौवन की उमंग करिकै शोभा की उदारता अंग अंग में उदित नाम प्रकाशित है श्याम मेघ सम साँवरोकुंवर श्वेत मेघ सम गौर कुंवर ताकेबीच में

भामिनी सुन्दरि दामिनीसी शोभित मुनिपट बल-कलादि बसन धारण करे उर में फूलन के माल पहिरे कर कमलन में सुन्दर धनुष बाण धारणकिहे सिंहसे कटि मनोहर तरकस शोभित यहि वेषते यह सूचित होत कि काहू महाराज के कुमार हैं परन्तु शोभा के सुकुमारता लावण्यतादि रूपकी उपमा योग्य रूप दूसरो त्रिलोक में नहींहै याते यह सूचित होत किये मनुष्य नहीं हैं तौ हैं कौन ताको कहत कि तीनिउँ लोकके तिलक तीनों रूपहैं भाव लोकन के भूषण हैं अर्थात् गोलोक निवासी ताते स्वर्गलोक के भूषण श्रीरघुनाथजी अथवा अयोध्या पुरी भगवत् को शीश है पद्मपुराणे ॥ विष्णुपादमवंतिकागुण वती मध्येचकांचीपुरी नाभैद्वारवती तयाचहृदयं मायापुरीपुण्यदां। ग्रीवामूल मुदाहरंतिमथुरा मासाग्र वाराणसी एतद्ब्रह्मपदंबदन्तिमुनयो ऽयोध्यापुरीम स्तके १ सो शीश तनमें उर्द्धरहत ता अयोध्या भूषण ताते श्री रघुनाथ जी स्वर्ग के भूषण हैं अरु भूषण उत्पन्न ह्वै लोक भूषित करो ताते मृत्यु लोक के भूषण श्री जानकीजी अरु शेषावतारते प ताल लोक के भूषण लक्ष्मणजी तहां तिलक में तीनि रेखाहोत सो आगे श्री रघुनाथजी पीछेलषण लाल ते किनारे के रेखा हैं श्री स्थाने बीच में जानकीजी शोभित गोसाईंजी कहत कि त्रिलोक के तिलक जो तीनों रूप तिनको देखि नर नारी मनते मोहित ह्वै प्रेम

ते पुलकि देह थकित थकटक नेत्र ह्वै कैसे रहि जात यथा चित्रसार के चितेरे चित्र कैसे प्रतिमा भामिनी दामिनीसी यामें धर्म लुप्तोपमा लंकार है माधुरी गुण है १४ ॥

आगेसोहैसाँवरो कुवँरगोरो पाछे आछे काछेमुनिवेषधरेलाजतअनंगहैं। बाणविशिषासनबसन बनहीके कटि कसेहैंबनाइनीकेराजतनिषंगहैं। साथ निशिनाथमुखीपाथनाथनन्दिनीसी तु लसीबिलोकेचित्तलाइलेतसंगहैं।आनँद उमंगमनयौवनउमंगतन रूपकीउमँग उमगतअंगअंगहैं १५ ॥

सांवरो कुवँर आगे श्री रघुनाथजी गोरो कुमार पीछे श्री लक्ष्मणजी मार्ग में शोभित आछे काछे अच्छी ठाट बनाये ऐसे रूपवान् शोभामय हैं जो मुनिनहूं को ऐसो वेष धरे ताहू पर जिनकी शोभा देखि कामदेव लाजत है विशिषा सन जो धनुष सुन्दर बाण कर कमलन में लिहे बनही के वल्कलादि बसन अच्छी भांति बनाय के कटि में कसे सुन्दर तरकस शोभित है निशिनाथ चन्द्रमा ऐसो मुख है जाको ऐसी स्त्री साथ लिहे सो कैसी मनोहर पन्थ जल ताको नाथ समुद्र ताकी नन्दिनी

लक्ष्मी ऐसी अर्थात् मोहन शक्तिलक्ष्मी के नाम ह्रीं में है ताते लक्ष्मीसी कहे गोसाईं जी कहत कि दया दृष्टि जाकी दिशि हेरत वा सप्रेम जो कोऊ उनकी दिशिहेरत ताको चित अपने साथ लगाइ लेत ते कैसे हैं आनन्द की उमंग जिनके मनमें है भावमन सदा प्रसन्न रहत यौवनकी उमंग तनमें भाव देहै दीप्तिमान है रूपकी उमंग ते सब अंगनमें उमँगत है भाव बिना भूषणो सर्वांग भूषित से मनमोहन करत १५ ॥

सुंदरवदनसरसीरुहसुहायेनैन मंजुलप्रसूनमाथेमुकुटजटानिके । अंसनिशरासनलसतसुचिकरशरतूणकटिमुनिपटलूटकपटानिके ॥ नारिसुकुमारिसंगजाकेअंगउबटिकैविधिबिरच्योबरूथविद्युच्छटानिके । गोरेकोबरनदेखेसोनोनसलोनोलागै सांवरेबिलोके गर्बघटतघटानिके १६ ॥

शरद पूर्णचन्द्र सम सुन्दर बदन नवीन अरुण कमल सम सुहावने नेत्र माथन पै जटा के मुकुट ताके बीच मंजुल कहे श्वेत रंग के फूलनके गुच्छा शोभित अंशकन्धा तिन में शरासन कहे धनुष लसत कहे शोभित करकमलन में सुन्दर बाणलिहे कटि

में तरकस संयुक्त मुनिन के वस्त्र शोभित यह अद्भुत रूप पटको लूट कहे भाव परदा रहित ह्वै सब स्त्री पुरुष देखत हैं वा पट कहे पलक को परिबो लूटत देखनहार को यकटक करत वा मुनि पट कैसे शोभित होत जो पीताम्बर जरी आदि पटन की शोभा के लूटन हार हैं भाव जा अंगनको पाय वस्त्र शोभित रहे ता अंगन को छीनि आपु शोभित भये संग विषे नारि सुकुमारि कैसी शोभाय मानहै जाके अंग को उबटन करि मैल लैकै ब्रह्मा ने अनेक विजुलिन के वृन्द रचयो है गोरे कुमार के तनको वर्ण देखिते सोना कान्ति रहित देखातसांवरे कुवँर को बर्ण देखि घट जो श्याम सजल मेघ ताको गर्व टूटिजात यामें उपमान निरादरते प्रतीपालंकार नैन कमल में बाचक धर्म लुप्तोपमा कांति अरु लावण्यता गुणहै १६ ॥

बल्कलवसनधनुबाणपाणितूणकटि रूपकेनिधानघनदामिनीवरणहैं । तुल सीसुतीयसंगसहजसोहायेअंगनवलकम लहूतेकोमलचरणहैं । औरैसोबसंतऔरै रतिऔरैरतिपतिमूरतिबिलोकेतनमनके हरणहैं।तापसवेषैबनायपथिकपथैसहा यचलेलोकलोचननिसुफलकरणहैं १७

वल्कल कहे मुनिकेसे बसन धारण किहे कर कमलन में धनुष बाण कटि में तूण कहे तरकस शोभित दोऊ कुमार श्याम गौर ते रूप के निधान कहे स्थान हैं गोसाईं जी कहत कि सुन्दरि स्त्री संग में श्री महाराज कुमारी जिनके सर्वांग सहजही में सुहावने हैं जिनके चरण नवीन कमलहू ते कोमल हैं इत्यादि रूप उपमेयकी संभावना करत औरै सो कहे दूजो गौर राजकुमार रूप धारण किहे बसन्तहै पुनः औरै राजकुमारी रूप धारण किहे रतिहै पुनः औरै श्याम राजकुमार रूप धारण किहे कामदेव है जिनकी मूर्ति देखेते यह साबित होत कि मन तन के हरणहार हैं तनके कर्णादि इन्द्रिन को विषय शब्दस्पर्श रूप रस गन्धादि अरु मनादिकी वासना छोड़ाइ अपने रूप में लगाइ लेत तेई मनोहर तीनों रूप तापस कैसो वेष बनाय पथिक ह्वै पथ में शोभायमान लोकके नेत्रन को सफल करिबे हेतु चले हैं इहां तीनों रूप उपमेय में बसन्तादि की संभावना करे अरु जानो मानो आदि बाचक नहीं ताते गम्योत्प्रेक्षा है १०॥

बनिताबनिश्यामल गौरकेबीचबिलो कहुरीमखिमोहिसोह्वै। मगयोगनकोमलक्योंचलिहै सकुचातमहीपदपंकज छ्वै।तुलसीसुनिग्रामबधूबिथकीपुलकी

तनऔचलैलोचनच्वैं। सबभाँतिमनोहर
मोहनरूपअनूपहैंभूपकेबालकद्वै १८ ॥
परस्पर ग्राम बधुन की बार्ता है श्रीराम जानकी लक्ष्मणजीको अनूप रूप देखि मोहित ह्वै कहत कि श्याम गौर दोऊ राजकुमारन के बीच कांचन बरण चन्द्र बदनी बनिता कैसी बनी है हेरी सखी मोहिसी ह्वै देखु ती भाव मोहि गईसी ह्वै मन लगाय नेत्र आधत्त ह्वैके वा मेरी ऐसी दशा ह्वै कै देखु युगकुल उजियारी राजकुमारी परम सुकुमारी कठोर मारग चलिबे योग नहीं है सो कैसे चलि है जाके कमलहू ते कोमल चरणकी सुकुमारता स्पर्श भये भूमि सकुचाइ जात गोसाईं जी कहत कि ताकी बाणी सुनि ग्राम बधू थकित ह्वै प्रेमते देह पुलकित नेत्रन में आंसू बहि चले अनुराग वश ह्वै सब कहती हैं कि सब भांति मनोहर जहां जैसो चाहो तहां तैसही अंग बनो है जा अंग को देखिये तहैं मन मोहिजात ताते मनको हरण हार मोहन रूप भूपके दोऊ बालक अनूप हैं यामें सुकुमारता अरु सौंदर्यता गुण है १८ ॥

सांवरे गोरेसलोने सुभाय मनोहरता
जितमैनलियाहै। बानकमाननिषंगक
सेमुखसोहैंजटा मुनिवेषकियाहै। संग

लियेबिधुबैनीबधुरतिकोजिनरंचक रूपदियोहै । पांयनतौपनहींनपयादेहि क्योंचलिहैंसकुचातहियोहै १९ ॥

॥ ० ॥

श्याम गौर दोऊ राजकुमार सुभाय कहे सहज ही में सलोने अर्थात् लावण्यता ते भरिपूर्ण हैं जिन अपनी मनोहरता ते काम को जीति लियो है वा काम की शोभा बरबश जीतिके आपु लैलियो है काहेते बाण धनुष कर कमलन में शोभित कटिमें तरकस कसे शीशपै जटा के मुकुट शोभित मुनि कैसो वेष बल्कल बसन धारण किहे ते शांत रस मय वीर है अरु कामदेव शृङ्गार रस मय वीर है तहां शांत रसते शृंगार रसको जीतिबो उचित है तहां काम के संग दिव्य स्त्री है ताके हेत कहत कि संगमें चन्द्र बदनी तिया कैसी शोभायमान जाने अपने रूप सिंधुते बुंदमात्र रूप रति को दियो है भाव जाके रूपराशि के आगे रति को रूप रती मात्र है हे सखी मेरे उरमें यह सकोच आवत कि सुन्दर सुकुमार राजकुमारन के पांयन में पनहिउँ नहीं है कठोर भूमि मार्ग में पयादे कैसे चलि हैं यामें लावण्यता सुकुमारता स्वरूपता है १९ ॥

रानीमैंजानीअयानीमहापवि पाहन हूतेकठोरहियोहै । राजहुकाजअकाजन

ज्ञान्योकह्योत्तियकोजेहिकानकियोहै
ऐसीमनोहरमूरत्तिये बिछुरेकैसेप्रीतम
लोगजियोहैं। आँखिनमेंसखिराखिबे
योगइन्हैंकिमिकैबनवासदियोहै२० ॥

हे सखी रानी कैकेयी को सुभाव मैं जानि लई कि महा अयानी कहे अज्ञानी है भाव क्रोध लोभ मोह फंदमें बँधी है पुत्र राज पाइबो लोभ फंद है सपत्नि ईर्षा क्रोध फंद है हरिसों बिमुखता मोह फंदहै यही महा अज्ञान वशते वज्रहू पाषाणते कठोर हियो ह्वैगयो अरु दशरथ महाराजहू काज में अकाज ह्वैजाबो न जाने काहेते वोऊ कामफंद में बंधे तौ तौ राजा ने ऐसी अज्ञान रानीके वचन सुनि मानि लियो जाते ऐसी मनको हरनहारी इन तीनौं मूर्त्तिन को बन दियो वे प्रीतम लोग इनके प्रिय सम्बन्धी कैसे कठोर हृदयके हैं जो इनके वियोग भये पर जियत रहिगये सखी जो जप तप योग वैराग्य ज्ञानादि करि ये मूर्ति प्राप्त होइ तौ आंखिन कहे ध्यानमें राखिबे योग्य है भाव ध्यान में प्राप्ती दुर्लभ है तिन्हैं किमिकै कौन कर्त्तव्य करि आपनो वश करिलियो यौवन कठोर में वास दिये याते रमनीकता माधुरी गुण है २० ॥

सीसजटाउरबाहुबिशाल बिलोच

नलाललितरीछीसिभौहैं । तूणशरासनबा

णधरे तुलसीबनमारगमेंसुठिसोहैं । सा

दरबारहिबारसुभाय चितैतुमत्योहमरा

मनमोहैं । पूछतिग्रामबधूसियसों कहु

सांवरसोसखिरावरोकोहैं २१ ॥

बन मार्ग गमन जानकी रमणजीको रूप यौब-
नादि अनूप संपन्न परम पियूष रसमय विहार बल्लभ
जीको मनोहर रूप देखि काम शरमारी प्रेमाशक्त
वारी ग्राम नारी श्रीजनक कुमारीजी सों पूछती हैं
कि हे राजकुमारी जाके जटा के मुकुट भाल उर
भुज विशाल मीनमृग खंजन मदगंजन अरुण कंजन
सम नयन मन रंजन पै मनोहर तिरछी भृकुटी हैं
तरकस कटितट मुनिपट धनुबाण कंज पाणि दृग
सुखदानि बन मार्गमें सुन्दर शोभित हैं भाव भू-
षण पोशाक सवारी रहित मनमोहन हैं ते राज
कुमार आदर सहित बारम्बार सुभायकहै सहजनें
पवित्र दृष्टि चितै तुम त्यों भाव तुम्हारो ऐसो हूं
हमारोमन मोहित होत ऐसो बातैंकहि ग्राम बधू
श्रीजानकी जी सों पूछती हैं कि हे सखी कहौ
सांवरे राजकुमार तुम्हारे कोहैं ये निःछल वचन
सनेह वर्द्धन हेतहैं जानकी जी सों अरु रघुनाथ
जोसों स्वयं दूतत्व करि वचन बिदग्ध है २१ ॥

सुनिसुन्दरबैनसुधारससाने सयानि हैजानकीजानभली। तिरछेकरिनयनदै सैनतिन्हैं समुझायकछूमुसकाइचली तुलसीत्यहिऔसरसोहैंसबै अवलोकत लोचनलाहुअली। अनुरागतड़ागमेंभानुउदैविकसीमनोमंजुलकंजकली २२॥

सुन्दर बैनकहे देशकाल समय सुहावने थोरे बर्ण अर्थ बड़ो विलक्षण चातुरी हास्य युक्त श्रवण रोचक गूढ़ाशय स्नेह बर्द्धक याते सुन्दर सुधारस साने शृंगाररस साने अर्थात् जानकीजीसों कहतीं अरु श्रीरघुनाथजी सों गूढ़ोक्ति विदग्ध वचन चातुरी है ताको श्रीजानकीजी भलीभांति ते जानिलई कि ये सब ग्रामबधू क्रिया वचन विदग्ध में परम चातुरी हैं यहजानि श्रीजानकीजी क्रिया विदग्ध करि बोध करतीहैं श्रीरघुनाथजीकी दिशिको तिरछे नेत्रकरि सैन बुझाय दियो भाव ये हमारे पति हैं या भांति सबनको समुझाइ मुसक्याय कै चलीं मुसक्याबेको यहभाव कि जो तुम हमारे प्राणप्यारे को देखि कामाशक्तभईं ताते वचन चातुरी करि बिदग्धा हूव चाहती हौ भाव अपनी प्रीतिजनाय इहां बिश्राम कराय मिला चाहती हौ तौ जो हमारे प्राणप्यारे तुमको अंगीकारकरें तौ हमईर्षा

नहीं करेंगी क्योंकि तुम्हारी बचन चातुरी तौ लोक हेतुहै हमते तौ तुम निरछल अपनी आसको कहि दई कि तुम्हारे मनसम हमारो मन मोहिगयो यह तुम्हारी सांची बात सुनि हमतौ प्रसन्न हैं परंतु हमारे प्राण प्यारेकी रीति रहस्य तौ बिचारिये एतौ एक पतीब्रत अनुकूल नायक हैं ऐसी क्रिया समुझि श्रीजानकीजी को स्वाधीन पतिका जानि अनुराग करती भईं ताते स्वसुखकी बासना त्यागि तत्सुख पर आरूढ़भईं श्रीजानकीजी की प्रसन्नता हेतु अनुराग करतीभईं तब निश्चिन्त ह्वै लोचनको लाभ लेनलगीं भाव रूपकी माधुरी को अवलोकन सोई नेत्रनको लाभ मानि श्रीरघुनाथजी को टकटकह्वै ग्रामबधू देखनलगीं गोसाईंजी कहत कि ताअवसर में सब समाज कैसेसोहत मानों रूप भानु उदय देखि अनुराग तड़ाग में शोभा श्वेत कमलकलीने बिकाश कियो श्रीरामरूप भानु ग्रामबधुनको अनुरागतड़ागमें श्रीजानकीजी को मुख श्वेत कंज मुसक्यानि बिकाश है यामें उत्प्रेक्षा को अन्तर रूपक अलंकार है २२ ॥

धरिधीरकहैंचलुदेखियजाय जहाँसजनीरजनीरहिहैं । कहिहैजगपोचनसोचकछू फललोचनआपनतौलहिहैं । सुखपाइहैंकानसुनेबतियाँ कलआपुसमैंक-

छुपैकहिहैं । तुलसीअतिप्रेमलगीपल
कैंपुलकीलखिरामहियेमहिहैं २३ ॥

जब प्रेमबिवश ग्रामबधू श्रीरघुनन्दन को निरखन लगीं ताही समय श्रीरघुनाथ जी आगेको चले ता बियोगते बिवरण भईं पुनः धीर्यकरी अथवा लोकलाज भय ते धीर्य करि कहत कि हेसखी ये राजकुमार जहां बास रात्रीको करि हैं तहां चलौ जाइकै देखौ यामें जो लोक पोच कही जगकेलोग बुराई करि हैं ताको शोच कछू नहीं है हमारे नेत्र अपने फलतौ पैहैं अर्थात् आंखिनभरि राजकुमार को देखब तौ अरु सुन्दरीबातैं परस्पर करिबेकरि हैं तिनको सुनिकै हमारे कान तौ सुख पैहैं गोसाईं जी कहत कि प्रेमावेशते पुलकांग ह्वै देहभरिआई अरु श्रीरघुनाथजी को रूप उरमें आइगयो ताते नेत्रनकी पलकैंबंद करि ध्यानमें मग्नभई यामें रमणीकता गुणहै २३ ॥

पदकोमलश्यामलगौरकलेवर राजत
कोटिमनोजलजाये । करबाणशरासन
शीशजटा सरसीरुहलोचनसोनसोहाये।
जिनदेखेसखीसतभावहुते तुलसीतिनतौ
मनफेरिनपाये । यहिमारगआजुकिशो

गवधूविधुबैनीसमेतसुभार्याधायेर४ ॥

पद कमलसम कोमलहैं देखनहारी औरन ते कहतीं कि श्याम गौर कलेवर कहेदेहैं कैसोशोभा- यमान राजत जाको देखि कामदेव लजातहै कर कमलन में धनुष बाण धारण शीशमें जटाके मुकुट सरसीरुह कहे कमलसम लोचन सोन कहे अरुण शोभायमान ऐसे जो श्याम गौर राजकुमार तिन- को जो सहजहू सुभावते देखे अर्थात् प्रीति पूर्वक नहीं तिनहूं अपनो मनफेरि नहीं पाये अर्थात् इनहीं के संगमन पठाये हैसखी आजु यहिमार्ग में द्वै राजकुमार बिधुबैनी कहे चन्द्रबदनी संगमें लिहे सौभाय सहजही अर्थात् इहां काहूते कछु काजनहीं न मालूम कहांको चलेगये बिधु बदनी को बिधुबैनी प्राकृतमें भयो यथा दीपकको दिया लक्ष्मणको लषण लक्ष्मीको लच्छ भानुको भानगो- विन्दको गुविंद लोचनको लोयन इहां ग्रामचर्चाते ग्रामीन पद भूषणहै २४ ॥

मुखपंकजकंजबिलोचनमंजुमनोजशरासनसीबनिभौंहैं। कमनीयकलेवरकोमलश्यामल गौरकिशोरजटाशिरसोहैं। तुलसीकहिदूतणाधरधनुबाण अचानकदृष्टिपरीतिरछोहैं । क्यहिभांतिकहैं

सजनीत्वहिंसों मृदुमूरतिद्वैनिबसीमन मोहैं २५ ॥

अब ग्रामबधू अपनी व्यवस्था कहतीहैं मुखअरु नेत्र सुन्दर कमलसे भृकुटी टेढ़ी कैसीशोभायमान बनी यथा मनोजको शरासन कहे धनुष कमनीय कहे सुन्दर कोमल श्यामल गौर कलेवर कहे देह दोउ राजकुमार किशोर अवस्था शीशपै जटाके मुकुट सोहत कटिमें तरकस कसे कर कमलनमें सुन्दर धनुषबाण धारणकिहे तिनको लोकलाज ते सन्मुख देखि न सकीं ताते तिरछी दृष्टिमेरी अचानक उनपै परिगई ता अवसरते जो मेरीदशा भई सो हेसखी तोसों कौनभांति कहौं कामासक्ती कहत नहीं बनत ता अवसरते दोउ राजकुमारनकी कोमलमूर्ती सोमेरे मनमें निवास किहेहैं यामें रमणीकता गुण है कामासक्ती ते द्वै न मूर्ती कहे आठ सगण अंतगुरु पचीस वर्ण माधवी सवैयाहै २५ ॥

प्रेमसोंपोछेंतिरीछेंप्रियाहिचितैचितु दैचलेलैचितचोरैं । श्यामशरीरपसेउलसैंहुलसैंतुलसीलखिसोमनमोरैं । लोचनलोलचलैंभृकुटी कलकामकमानहुसोंतृणतोरैं । राजतरामकुरंगकेसंगनिषंगकसेधनुसोंशरजोरैं २६ ॥

यह चित्रकूट को चरित्र है आश्रम में श्रीजानकी जी बिराजमान रहीं श्रीरघुनाथजी मृगया को चले अति प्रेमते पीछे घूमि तिरछी दृष्टिते प्रिया श्रीजानकीजीको चिते मोहित ह्वै अपनो चित्त दैके चले सोई तिरछो कटाक्ष देखि प्रियाजी मोहित भईं ताते प्रियाको चित्त चोराइ लियो यह परस्पर उपकारते अन्योन्यालंकार है मार्ग गमन श्रम करि पसीना निकसि श्याम तन पै शोभा देरहा है ताको देखि तुलसी को मन हुलसत कहे आनंद उमगत है मृगनको ताकत में नेत्र लोल कहे चंचल हैं ताते भृकुटी चलायमान कैसी सोहत जो काम धनुष की शोभा तृण सम तोरत हैं कटि में निषंग कसे कर कमलन सों धनुष बाण जोरे मृग के संग श्रीरघुनाथ जी बिराजमान हैं २६ ॥

शरचारिकचारुबनाइकसेकटिपाणि शरासनशायकलै । बनखेलतराम फिरैं मृगया तुलसीछबिसोंबरणैकिमिकै । अवलोकिअलौकिकरूपमृगी मृगचौंकिचकैंचितवैंचितदै । नडगैंनभगैंजियजानिशिली मुखपंचधरे रतिनायक है २७ ॥

चारि बाण सुन्दर बनाइकै अर्थात् फूलनसों वे-

ष्टित करि कटिमें कसे अरु फूलन सों वेष्टित करि धनुष में एक बाण जोरि कर कमलन में लिये श्री रघुनाथजी मृगया खेलत बनमें फिरत ता समयकी छवि तुलसी कौन विधि सों वर्णन करै अलौकिक जैसा लोक में नहीं ऐसा अद्भुत रूप औचक देखि मृग मृगी चौंकत पुनः चित्त लगाय जब चितवत तब मन मोहित ह्वै चकिजात तातें न डोलैं न भागैं फूल वेष्टित धनुष पंचबाण धरे ते जाने कि कामदेव है यह जानि निर्भय ह्वै मोहिगये २७ ॥

बिंध्यकेबासीउदासीतपोब्रतधारीमहा बिननारिदुखारे । गौतमतीयतरीतुलसी सोकथासुनिभेमुनिवृन्दसुखारे । ह्वै हैंशिलासबचंद्रमुखी परसेपदमंजुलकंज तिहारे । कीन्हीभलीरघुनायकजी करुणाकरिकाननकोपगुधारे २८ ॥

इतिश्रीकवित्तावलीरामायणे अयोध्याकांडःसमाप्तः ॥ २ ॥

कवि की उक्ति हास्य युत पदरज को माहात्म्य वर्णन है जो बिन्ध्याचल पै बास करि उदासी कहे शत्रु मित्र भाव रहित तपस्या करत में महा ब्रत धारी कहे ब्रह्मचर्य आश्रम में रहे सो ब्रत पूर्णभये पर जब गृहस्थाश्रम को समय आयो तब स्त्री चा-

हिये ताते बिना स्त्री दुखारी रहे गोसाईंजी कहत कि गौतम तिया अहल्या तरी सो कथा सुनि वोई मुनिवृंद सुखी भये जे गृहस्थाश्रम हेतु बिना नारि दुःखित रहे तेकहत कि हे महाराज आपुके सुन्दर पद कमल स्पर्श भयेते यावत् शिला हैं ते सब चंद्र-मुखी दिव्य स्त्री ह्वैजायँगी तौहमारा गृहस्थाश्रम बिना परिश्रमही सिद्ध होइगा याते श्रीरघुनायकजी आपु भली करी जोहमपै करुणा करिकै कानन कहे वनमें आये यामें चित्रकूट को बास वर्णन करे वा जबते चित्रकूटको चले तबको बर्णन है २८ ॥

सवैया। सिखरेद्भुतजूटकलाप जटाद्यसरोजशुभास्मितवक्त्रयुतौ। कुसुमाद्भुतभूषणविभ्रतभातनश्यामसिततडिताजिमुतौ। करमार्गनकार्मुकतूणकटिं जन पालकघालकदुष्टनुतौ। नितमामकमानससन्निहितौमिथिलाधिपजावधनाथसुतौ २८ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभ पदशरणागतबैजनाथकृतेकवितावली रत्नदीपिका टीकायांअयोध्याकांडः समाप्तः २ ॥

———※———

आरण्यकाण्ड ॥

———*———

पंचवटीवरपर्णकुटीतरबैठेहैंरामसुभाय सुहाये । सोहप्रियाप्रियबंधुलसैंतुलसी सबअंगघनेछबिछाये ॥ देखिमृगामृग नैनी कहैंप्रियबैनतेप्रीतमकेमनभाये । हेमकुरंगकेसंगशरासनसायक लैरघुना यकधाये १ ॥

इतिश्रीकवित्तावलीरामायणे आरण्यकाण्डःसमाप्तः ३॥

अमलकमलनेत्रौ पूर्णचन्द्राभवक्त्रौ तडितजलद गात्रौ नीलपीताभवासौ ॥ अमितगुणसमुद्रौसज्जना नन्ददात्रौ नमितवैकिशोरौजानकीरामचन्द्रौ १ सब गुण जटी जो पंचवटी तामें सुन्दर जो पत्रन की कुटी ताके तर सहजही में जो शोभायमान ऐसे जो श्री रघुनाथजी ते आनन्द सों बैठे हैं प्रिया श्री जानकीजी प्रिय बन्धु लक्ष्मणजी तिनके रूप कैसे लसत कहे सजत हैं जिनके अंगन में समूह छबि छाइरही है ऐसी श्रीजानकीजी अरु लक्ष्मणजी श्री

रघुनाथ जीके साथ सोहत हैं ताही समय कंचन को मृग आयो ताको देख मृग नयनी श्री जानकी जी बोलीं कि हे प्राणनाथ या मृगको चर्म बहुत विचित्र है याको बधकरि लावो ऐसे बैन प्रियाजी के कहे वा मधुर वा देवकार्य को प्रारम्भ ऐसे प्रिय वचन सुनि प्रीतम जो श्री रघुनाथजी तिनके मन में भाये ताते कर में धनुष बाण लेकै श्री रघुनाथ जी कंचन मृगके साथ धाये १ ॥

सवैया ॥ शिखरेद्भुतजूटजटापटली छबिदिप्त प्रभाविचपुस्यधरं । कटिविभ्रततून निचोलत्वचाकर कंजशरासनसोभधरं । मृगहेमदद्दर्शतपंचवटीमृगया र्थबनेरुचिरं विचरं । ममसानसमानसर्पान्निहितोकाल हंससदाकुलहंसवरं ॥

इतिश्रीरसिकलत श्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणा गतबैजनाथविरचितायांकवितावलीरत्नदीपिका टीकायांआरण्यकांडःसमाप्तः ३ ॥

किष्किन्धाकाण्ड ॥

*

जबअंगदादिनकीमतिगतिमंदभईपव
नकेपूतकोफकूदिबेकोपलुगो । सहसी
ह्वैशैलपरसहसासकोलखाइ चितवत्त
चहूंओरऔरनकोकलुगो । तुलसीरसात
लकोनिकसिसलिलआयो कोलकल
मल्योअहिकमठकोबलुगो । चारिहूच
रणाकेचपेटचापेचिपटिगो उचकिउच
किचारिअंगुलअचलुगो १ ॥

इतिश्रीकवित्तावलीरामायणे
किष्किन्धाकाण्डःस-
माप्तः ॥ ४ ॥

बन्देहंजानकीरामौभक्तानामभयप्रदौ ॥ मंगला-
नन्दकर्त्तारौ शरणागतवत्सलौ १ जब अंगद आदि
कपिन की मति गति मन्दभई भावबुद्धिबल दोऊ
करि थकित भये तब जामवन्त के प्रचारे पवनपूत
जो श्रीहनुमान्‌जी तिनकी फांदि समुद्रपार जाबे को
पलकमात्र बिलम्ब नहींलगी साहसी कहे महाबली

ह्वै भाव हनुमान्‌जीको अपनाबल भूला रहत जब जामवान्‌जी सुधिदेवाये ताते बलो ह्वै कै सिन्धुतट के उच्चपर्वत पर सहसा कहे शीघ्रही सहित केलि आये ऐसी वेग ताको हाहाकार भयो जाको भय करिकै चारहू दिशिके देखनहारन को कल कहे सुख सबको जातरह्यो गोसाईंजी कहत कि कूदिबे को इचका लागे ते पर्वत भूमि में दब्यो ताते रसातलको जल ऊपर निकसि आयो अरु अंगदबि गये ते ब्याकुलह्वै वाराह कलमल्यो कहे सबअंग चलिभये अरु शेष कच्छप को बलजात रहा श्री हनुमान्‌जीके चारहू पावनको चपेटा लागेते भूमि रसातल तक दबिकै चिपटिगई पर्वत जो अचलरहा सो उचकि उचकि अर्थात् भूमि दलकि गई ताते चारि अंगुल पीछेको चलिगयो १ ॥

सवैया॥ नीलकलेवरनीरदभाद्यसरोजशुभाननअमृत धाम। चण्डशरासनशायकतेब्रकरेकटितूणसुविभ्रतवा म । शोकभवार्णवतारकप्लीअघतूलविध्वंसनपावकना म। नाथदयालयपालयदीनअहंशरणंशरणंतवराम१॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरण वैजनाथविरचिते कवित्तरामायण रत्नदीपिकाटी- कायां किष्किन्धाकाण्डःसमाप्तः ४ ॥



सुन्दरकाण्ड ॥

———*———

बासववरुणविधिवनतेसोहावनो दशाननकोकाननबसंतकोसिंगारसो । समयपुरानेपातपरतडरतबात पालतलाल तरतिमारकोविहारसो । देखेवरवापिका तड़ागबागकोबनाव रागवशभोविरागी पवनकुमारसो । सीयकीदशाबिलोकि बिटपअशोकतर तुलसीबिलोक्योसोति लोकशोकसारसो १ ॥

नीलारविन्दात्मसरोरुहाचं बामांगसोलास्थित हाटकाभं ॥ अंभोजपाणीशरचारुचापं राजाधिराजं चनमामिरामं १ देवलोक में इन्द्रको बन श्रेष्ठ पाताल में बरुणको ब्रह्मलोक में ब्रह्माको तिनहूं ते श्रेष्ठ शोभायमान दशानन को कानन अशोक बाटिका है अरु जो सब बननको श्रृंगार बसन्त ताहू को श्रृंगार अशोक बाटिका है भाव बसंतमें प्रथम सबन के पत्ता पवन गिराय उजारि देत या बनमें समय आये पर पुराने पत्ता गिरावत पवन डरत जब नवीन पल्लव ह्वै आवत ता पीछे पुराने पत्ता

झपते गिरत याते बसन्तमें उजार नहीं होत ताते बसंत को श्रृङ्गार कहे पालत कहे सींचत भौरत लालत दुलारत भाव काहूको धक्का नहीं लगात ताते ऐसा शोभायमान लागत यथा रति काम के बिहार की बाटिका सम जाके देखे कामोद्दीपन होत बर वापिका चित्र विचित्र बावली तड़ाग मणिनसों घाट निर्मल जल रंग रङ्ग कमल प्रफुल्लित जलपक्षी क्रीड़ा करत ऐसो मनोहर तड़ाग बागके मध्य में चारहु ओर चमन में रंग रंगके फूल फल बेलि बितानादि बाग की शोभा देखि पवनतनय ऐसे बिरागी सोऊ रागवश भयो परन्तु अशोकवृक्ष तर श्रीजानकीजी को देखे दुर्बल तन बसन मन मलिन सजल नेत्र नमितखल सक्रोध दुर्वचनाग्नि सो दग्ध ऐसी दशा देखि तब अस जाने कि यह बन तीनिहूं लोकके शोकको बास स्थान है १ ॥

मालीमेघमालबनपालबिकरालभट नीकेसबकालसींचैंसुधासारनीरको । मेघनादतेदुलारोप्राणतेपियारो बागअति अनुरागजियजातुधानधीरको । तुलसी सोजानिसुनिसीयकोदरशपाइ पैठोबाटिकाबजायबलरघुबीरको । बिद्यमान

देखतदशाननकोकाननसोतहशनहशकियोसहसीसमीरको २॥

जौने बनमें मेघन की माला तेई माली हैं जे सुधासार कहे अमीमय मधुर शीतल निर्मल मिष्ट जलसों नीकीभांति जहां जैसो चाहो तैसो सदा सींचत हैं जहां विशेष कराल योधा ते सदा रक्षा करत हैं यातुधान धीर जो रावण ताको अत्यन्त अनुराग है जा बागपर जो मेघनाद ते दुलारो प्राणनते अधिक प्यारो है गोसाईं जी कहत कि श्री जानकीजी के दरशपाइ तिनते हालसुनि रावणकी प्यारी बाग जानि श्रीरघुवीर को बल बजाइ हांक दैकै बाटिका में पैठि सहसो बली पवनकुमार अशोकवाटिका को तहश नहश करि दियो भाव उजार करदियो २॥

वसनबटोरिबोरिबोरितेल तमीचर खोरिखोरिधाइआइबांधतलँगूरहैं। तैसोकपिकौतुकी डरातढीलोगातकैकै लातकेअघातसहैजीमेंकहैकूरहैं। बालकिलकारीकैकेतारीदैदैगारीदेत पाछेलागेबाजतनिशानढोलतूरहैं। बालधीबढ़नलागीठौरठौरदीन्हीआगि

विंधकीदवारिकैधौंकोटिशतसूरहैं ३ ॥

मेघनाद करि बन्धन भये पर पूंछ फूंकबे को आज्ञा रावण दियो सो सुनि खोरिकहै गलीगली ते राक्षस दौरिआये बसन बटोरि तेलमें बोरि लंगूर में बांधन लगे जैसे निशाचर प्रबल परे तैसे कपि कौतुकी कहै तमाशा करनेवाले जे अनेक कर्तब करने वाले हैं तथा हनुमान्जी बृथा डरमानि तनढील करि कांपत हैं अरु लातन को प्रहार सहत जामें निशाचर जानें कि कपि कूर कादर है वा हनुमानजी अपने मनमें जानत कि ये सबनिशाचर कूरहैं भाव पकरिकै मारना कादरको काम है यहकौतुक देखि बालक किलकारी मारि हैं सबै तारीबजावत पीछे पीछे नगारा तुरही ढोल बाजत हैं हनुमान् जी की प्रेरणाते बालधी जो पूंछ सो बढ़नलागी ताते लंकामें ठौर ठौर आगि लगाइ दीन्हो ताकी उपमा देत किधौं बिन्ध्याचलपर दावानल लगो है किधौं कोकरोरि सूर्य हैं ३ ॥

लाइलाइआगिभागे बालजातजहाँ तहाँ लघुह्वैनिबुकिगिरिमेरुतेबिशालभो । कौतुकीकपीशकूदिकनककँगूराचढ्यो रावणाभवनचढ़िठाढ़ोत्यहिकालभो । तुलसीबिराज्योब्योमबाल

धापसारभारी देखेहहरातभटकालसों करालभो । तेजकोनिधानमानोंकोटि कक्रशानुभानु नखविकरालमुखतैसोरि सलालभो ४ ॥

आगि लगाइ सब मन्दिर ज्वलित करिदिये ताको देखि बालकन के बृन्द डराइभागे तब हनुमान्जी लघुरूप ह्वै निबुकि पीछे भारीरूप सुमेरु गिरि सों भयो कौतुकी हनुमान्जी कूदि कनक कंगूरा उच्चपर चढ्यो तापरते कूदि रावणके भवनपर चढ़ि ठाढ़भयो ताकालको रूप वर्णन करत बालधी जो पूंछभारी आकाश में पसारे विशेष कराल नख तैसो रिसकरिकै मुख लालह्वै गयो ताते कालहूते कराल बिराजमान भयो जाके देखेते निशाचर भट हहरात भाव सभीत भये हनुमान्जी को प्रताप सो मानो कोटिनरूप अगिन है वा अनेक रूप सूर्य है अथवा कोटिन ज्वाला अगिन लंका में मानों अनेकरूप सूर्य है ४ ॥

बालधीविशालबिकराल ज्वालजालमानौंलंकलीलिवेकोकालरसनापसारीहै । कैधौंव्योमबीथिकाभरेहैंभूरिधूमकेतु बीररसवीरतरवारिसीउघारीहै । तुलसीसुरेशचाप कैधौंदामिनीकलाप

कैधौंचलीमेरुतेकृशानुसरिभारीहै। देखैं यातुधानयातुधानीअकुलानीकहैं का ननउजारेउअबनगरप्रजारीहै ५ ॥

बालधी जो पूछ विशाल है तामें विशेष कराल जो अग्नि के समूह ज्वालाहै ताकी उत्प्रेक्षा मानो लंकाको लीलिबेहेतु कालने जिह्वा पसारीहै पुनः संदेह कैधौं पूछ व्योम बीथिका कहे शिशुमारचक्र में अग्निज्वाल किधौं समूह धूमकेतु भरेहैं धूमकेतु तारा जहां एक उदय होत ता देशमें दुर्भिक्ष महामारीको करनेवालाहै ॥ यथा मयूरचित्रे ॥ कपालाख्योधूम्रशिखो दृष्टःसर्वजलापहः ॥ प्राग्योमार्द्ध विहारीस्यात्तथाचुन्मृत्युकारकः ॥ इहां समूह भरे हैं ते लंका को नाश करैंगे अथवा सज्वलित पूछ सो वीररस जो बीरहै ताकी उघारी तरवारसी है बीर रस यथा सबल शत्रु समर विभाव बदनलाल अंग प्रफुल्लित अनुभाव है गर्भ उग्रता असूया संचारी है लंक विध्वंसकी उत्साह अस्थाया यहवीर रस प्रसिद्ध रूपधारी महावीर है सज्वलित पुच्छ कृपाण है गोसाईंजी कहत कि पुच्छ किधौं इन्द्र को धनुष उदय भयो किधौं समूह दामिनी है किधौं हनुमान् रूप सुमेरु ते अग्निरूप सरिता बहीहै यथा ॥ बर्षाघोरनिशाचररारी । सुरकुलशालिसुमंगलकारी ॥ ताते इन्द्र धनु दामिनी सरिता कहि

सोई घोरवर्षा को सूक्ष्मरूप कहे इत्यादि देखि रा-
चस राक्षसी अकुलानी कहत हैं कि प्रथम बन
उजारेउ अब नगर भस्म करैगो इहां हनुमान्‌जी
में वीररस कहे ताकी प्रतिकूल निशाचरन में भया
नक रसकहे करालरूप हनुमान्‌जी को देखिबो बि-
भाव है कंप रोमांच प्रस्वेद अनुभाव मोह मूर्छा
दीनता संचारी भय अस्थायी याते निशाचरन में
भयानक रस है ५ ॥

जहाँतहाँबुबुकबिलोकिबुबुकारीदे
त जरतनिकेतधाओधाओलागिआगि
रे। कहाँतातमातभ्रातभगिनीभामिनी
भाभी । ढोटाछोटेछोहराअभागेभोरे
भागिरे । हाथीछोरोघोराछोरो महि
षवृषभछोरो छेरीछोरोसोवैसोजगावो
जागिजागिरे।तुलसीबिलोकिअकुला
नीयातुधानीकहैं बारबारकह्योपियक
पिसेनलागिरे६॥

जहां तहां अग्निकै बुबुकारी देखि बुबुकारदैकै
रोवत कहत कि धाओ धाओरे आगि लागी घर
जराजातहै तात कहां माता कहां भाई कहां स्त्री
कहां भाउज कहां ढोटा कहां छोट छोहरा अरे
अभागे बौरहो भागोभागो हाथीछोरो घोड़ा छोरो

महिष वृषभ छेरी छोरैं सोवनहार को जगावैं जागौ जागौरे इत्यादि संभ्रम शब्द अनेक सुनाते हैं गोसाईंजी कहत कि यातुधानी मन्दोदरी आदि रानी अकुलानी कहत कि मैं बार बार समुझाइ कह्यों कि हे प्रिय दशकंध मतिपल्ल यहि बानर से न लागो ६ ॥

देखिज्वालाजालहाहाकार दशकंध सुनि कह्योधरोधरोधायेवीरबलवानहैं। लियेशूलसेलपाश परिघप्रचण्डदण्ड भाजनसनीरधीरधरेधनुबानहैं। तुलसी समिधसौंजलंकयज्ञकुण्डलखियातुधा नपुंगीफलयवतिलधानहैं। श्रुवासोलँ गूलबलमलप्रतिकूलहविस्वाहामहा हाँकिहाँकिहुनेहनुमानहैं ७ ॥

अग्नि ज्वालन के जाल देखि हाहाकार सुनि रावण कह्यो कि कपिको धरो पकरो यह सुनि बलवान् जे वीरते धावते भये कोऊ त्रिसूल कोऊ सांग फांसी परिघ अपर अस्त्र प्रचण्ड दंड लोह युक्त लाठी जल स हत घट लिहे धैर्यमान् वीर धनुबाण लिहे इत्यादि सब सौंज जो सामग्री सो सब समिध कहे यज्ञकी लकड़ी हैं लंक यज्ञकुण्ड सो बरत में परे अधिक प्रचण्डपरो तहां शाकल्य सम

देखि राक्षस सामान्य तेई सुपारी तिल यव धान अर्थात् चाउर अरु बलमूत प्रतिमूत्र कहे बली जे शत्रु हैं ते हवि कहे जाउरिहैं जाउरि जरिबे में देर तथा बली मरिबे में देर जाउरि अवा में लसिबेते गिरत देर तथा वली कोबहावतमें देर लंगूर अवा है महाहांक युद्ध कीललकार सोई स्वाहा करि करि श्रीहनुमान्जी हुने आहुतिदिये भावजे सामुहेपाये तिनकोअग्निमेंडारे ७ ॥

गाज्योकपिगाजज्यों विराज्योज्वालाजालयुतभाज्योवीरधीरअकुलाइ उठ्योरावनो । धावोधावोधरोसुनिधाये यातुधानधारिबारिधाराउलचैजलदजौनशावनो । लपटभपटभहरानेहहराने बातभहरानेभटपरेउप्रबलपरावनो । ढकनिढकेलिपेलिसचिवचलेलैठेलिनाथनचलैगोबलअनलभयावनो ८ ॥

अग्निज्वालन के जालसहित भयानकरूप हनुमान्जी गाज्यो कहे बज्रपात सम तड़पे सो सुनि करालरूप देखि धीर्यमान जे वोर रहे ते सब भागे ताते रावणहूं अकुलाइ उठो पुनः कहत कि धावो धावो वीरो कपि को धरो यह सुनि यातुधान जे राक्षस धारि सेना धाये ते जलकी धारा उलचत

यथा सावन में मेघ वर्षत अग्निकी लपटन की जो झपटैं ताके झहराने शब्द अरु बातकहे बयारि के हहरानेते भयमानि निशाचर वीर भहराने बेसुधि गिरत भागि प्रबल कहे कठिन परावन कहे सडर भागि निर्भय स्थान लुकिरहना जो निशाचर भागत सो पुनः लौटि नहीं आवत यह जानि सचिव सब धक्कन सों ढकेलि ठेलि पेलि बरबश रावण को टारिलेचले कि नाथ अग्नि महा भयंकर है यामें बल न चलैगा ८॥

बड़ोविकरालवेषदेखिसुनिसिंहनाद उठेउमेघनादसविषादकहैरावनो। वेग जीतेमारुतप्रतापमारतंडकोटिकाल ऊकरालताबड़ाईजीतेबावनो। तुलसीसयानेयातुधानेपछितानेकहैं जाको ऐसोदूतसोतोसाहेबअबैआवनो। काहे कोकुशलरोषे रामबामदेवहूकीविषम बलीसोबादिवैरकोबढ़ावनो ९

वेष कहे तनकी बनक अर्थात् लालमुख पिंगनेत्र कराल भृकुटी दशन रसना नख सज्वलित लंगूर ऐसो महा भयंकर वेष हनुमान्‌जीको देखि सिंहसम घोर शब्द सुनि धीरमान् मेघनाद सोऊ अकुलाइ उठो अरु उर में विषाद सहित रावण

कहत कि वेगताकरि हनुमान ने पवन को जीत्यो भाव काहू के पकरे नहीं थँभत अरु प्रताप करि कोटिन सूर्यन को जीत्यो भाव सन्मुख होतही भस्म होत अरु करालता करि कालको जीते भाव जाको देखि धीर्य मानहू सभीत होत बड़ाई करि बावन को जीते भाव प्रथम लघुरूप पुनः भारीरूप भयो गोसाईंजी कहत कि जे चतुर राक्षस रहते बिचार करि पछिताइकै कहत कि जाको हनुमान ऐसो दूत सो तो साहब अबहीं आवनहारहै भाव विरोध की जर श्रीजानकीजीतो अबहीं इहांहींमहैं तातेश्रीरघुनाथजी आयेपर जबक्रोध करैंगे तबवामा-देव जो शिवजी तिनकी कीन्ही जो कुशल सो कहै की कुशल है भाव कुशल नहीं है निशाचर सब नाश होइंगे ताते महाबलीते बैर बढ़ावनो बादिहै भाव वाको रक्षक कोउ नहींहै ६॥

पानीपानीपानी सबरानीअकुलानी कहैं जातिहैंपरानी गतिजानी गजचालिहै। बसनबिसारैं मनिभूषणसँभारत नआननसुखानेकहै क्योंहूकोउपालिहै। तुलसीमंदोवैमीजिहाथ धुनिमाथकहै काहूकानकियोनमैं कह्योकेतोकालि । बापुरेबिभीषणपुकारिबारबारक

ह्योबानरबड़ोबलायघनेघरघालिहै १०॥

कविकी उक्ति है जिनकी गति सबको जानी है कि गजसम मन्दचाल चलती रही तेई भयातुर अकुलानी विभ्रम ह्वै पानी पानी पानी कहती अनेकन रानी भागी जातीहैं देहमें वस्त्रनकी सुर्ति नहीं कि कौन छूटा कौन पहिरे हैं मणि भूषणन को सँभार नहीं छूटि टूटि गिरत जात मुख सूखे अधीर ह्वै कहती कि काहुभांति कोऊ हमारी रक्षा करिहै हाय मींजि माथधुनि बिलाप करि मन्दोदरी कहति कि मैं कन्हि केतो समुझाय कह्यों ताको काहू न सुन्यो कहिह कहिबे कोभाव अगहन शुक्लत्रयोदशीको अशोक बाटिका में अक्षै कुमार जूझो चतुर्दशी को लङ्का दाह याते कन्हि-कहे मन्दोदरी कहत कि बापुरे विभीषण बार बार पुकारि कहत रह्यो कि यह बड़ो एक बलाय बानर है बहुतेरे घरघालि है भाव बहुतेन को नाश करै गो इहां अग्नि करालता बिभाव हाथमींजिबो माथ धुनिबो अनुभाव मुख सूखो त्रासादि संचारी भय स्थाई याते भयानक रस है १०॥

काननउजार्योतोउजार्योनबिगार्यो
कछुबानरबिचारो बाँधिआन्योहठिहार
सों। निपटनिडरदेखिकाहूनलख्योबिशे

घिदीन्हीनछुड़ाइकहिकुलकेकुठारसों छोटेऔ बड़ेरेमेपूतऊअनेरेसबसांपनि सोखेलैंमेलैंगरेछुराधारसों । तुलसीमदो वैरोइरोइकैबिगोवै आपुबारबारकह्योमैं पुकारिदाढ़ीजारसों ११ ॥

मन्दोदरी कहत कि कानन उजार्यो तौ उजार्यो यामें कछु बिगार्यो नहीं काहेते फल खाइबो बृक्ष तोरिबो हारको रहिबो बानरको सुभाव होइहै तापर बिचारे बानर को हारसों मेघनाद हठो हठि करि बांधि ग्राम को लायो ताते अनेक राक्षस बधभये नगर भस्मभयो यह अपनेहाथ कर इलियो काहेते निपट निडर कपि को देखि सब मति अन्ध ह्वै गये काहूने विशेषिकै बिचारि न देख्यो की जो निशंक है तौ कछु कारण करैगो अस कहिकै कुल कुठार रावण को समुझाइ काहूने कपिको छोड़ाइ न दियो ताको बध मन्दोदरी आपही करत कि समुझावै कौन पति तौ अनीति रत है नेहै जे मेरे छोटे बड़े पुत्र हैं तेऊ अनेरे कहे अन्यायी हैं जे सांपन सों खेलत अरु छूराको धार गरेमें लगावत इहां हनुमान्जी सांप हैं पकरिबो खेलब है अग्नि छूरा धार है पूछिमें फूंकदेना गरेमें लगावबहै गोसाईं जी कहत कि मन्दोदरी रोइ रोइ कहत कि

दाढ़ीजार रावण सों बारबार मैं कह्यो कि त्वैं अपने हाथ आपुको बिगोवै नाश करै गो ११ ॥

रानीअकुलानी सबडाढत परानी जाहि सकैंनबिलोकि बेषकेसरीकुमार को। मींजिमींजिहाथधुनिमाथदसमाथतिय तुलसीतिलोनभयो बाहिरअगार को। सबअसबाबडाढोमैंनकाढोतैंनकाढो जियकीपरीसँभारैसहनभँडारको। खीभतिमंदोवैसविषाद देखिमेघनादबयोलुनियतसबयाहीदाढीजारको१२ ॥

एकतौ अग्निकरि सब जरोजात दूसरे हनुमान्जी को करालवेष देखि नहींसकत तातें सब रानी अकुलानीभागी जात अरु हाथ मींजि माथ पीटि रावणकी रानी सब कहत कि मणि भूषणादि सब असबाबजरि गयो तिलौ भरि घरतें बाहर न भयो कैसे बाहिर होइ न मैं काढ्यों न त्वैं काढ़े अपर कहत कि सबको अपने जीव बचाइबे की परी सहन भंडार कौन सँभारै मेघनादको देखि मन्दोदरी सहित बिषाद खीभत कि याही दाढ़ीजार को सब बयो है जो लुनियत है भाव जो मेघनाद कपि कोप-करि न लावत तौ यह दशा कैसे होतो १२ ॥

रावणकी रानीबिलखानीकहैयातु

धानोहाहाकोउकहै बीसबांहु दशमाथ सों । काहेमेघनादकाहेकाहेरेमहोदर तूधीरजनदेतलाइलेत क्यों न हाथसों । काहेअतिकायकाहेकाहेरेअकंपन अ-भागेतियत्यागे भोंड़ेभागेजातसाथसों । तुलसीबढ़ाय बादशालते बिशालबाहैं याहीबलबालिशोंबिरोधरघुनाथसों १३

यातुधानी राक्षसी जे रावणकी रानीते बिलखानी कहती हैं कि हाइ हाइ हमारी यह दशा बीश बाहु दश माथ वाले सों कोऊ कहै जाय भाव भुज शीश को बड़ा गुमान रहा सो कछु काम न करो काहे मेघनाद काहेरे महोदर तुम दोऊ बड़े मानी रहो ते ऐसे अधीर भागे जात कि हम को धीरज नहीं देत अरु हाथ नहीं लगाइ लेत जो सहारे तै हमहूं भागि चलैं काहेरे अभागे अति काय अकम्पन तुमको भुजबल को बड़ा गुमान रहा सो सब भूलिगो हम सब नारिनको साथ सों त्यागे बालिशो मूर्खो भागे जातहो तुम सब शाल बृक्ष सों बड़ी बड़ी बाहु बृथा बढ़ाईहै हे कादर मूर्खो याही बलते श्रीरघुनाथ जी सों बैर बढ़ायो है यह कहि श्रीरघुनाथजी के प्रताप को दिखाय सबको मान भंग करत हैं १३ ॥

हाट बाटकोटओट अटनि अगारपौरि खोरिखोरिदौरिदौरि दीन्हीअतिआगि है। आरतपुकारतसँभारतन कोऊकाहू ब्याकुलजहांसोतहांलोगचलेभागिहै। बालधीफिरावैबारबारझहरावैझरैबूँदि यासीलंकपघिलाइपागपागिहै। तुलसी बिलोकिअकुलानीयातुधानीकहैंचित्र हूकेकपिसोंनिशाचरन लागिहै १४ ॥

बजार की गलिन में किला की ओट अटारिन में घर घर द्वार द्वार गलीगली दौरि हनुमान्जीने प्रचण्ड आगि लगाइ दई ताको देखि राक्षस राक्षसी अति दुखित पुकारत कोऊ काहू को सँभारत नहीं सब ब्याकुल जो जहां रहैं सो तहांई से सब लोग भागि चले ता समय हनुमान्जी बालधी जो पूंछ है ताको चारहू ओर फिराइ बार २ झहरावैं कहे झिटकै हैं ताते बूंदियां सी चिनगी झरै हैं सोने को लंक पाग सो पिघलाइ बुँदिया सी पागत हैं गोसाईंजी कहत कि अकुलानी सब राक्षसी कहत कि वर्त्तमान कपिको को कहै कदाचित् चित्रसारी में भी बानरकी प्रतिमा देखि परैगी ताहू सों निशाचर अब न लागैंगे यामें हनुमान्जी को प्रताप सूचित होत १४ ॥

लागिलागिआगिभागिभागिचलेज हां तहांधीयकोन माय बापपूतनसँभा रहीं । छूटेबारबसनउघारेधूमधुंधअंधक हैंबारेबूढ़ेबारिबारिबारबारहीं । हयहि हिनातभागेजात घहरात गजभारी भीर ठेलिपेलिरौंदिखौंदिडारहीं । नामलै चिलात बिललात अकुलात अति तात ताततौंसियतझौंसियतझारहीं १५ ॥

आगि लागि आगि लागि ऐसा कहत जहां रहैं तहां ते सब भागि चले ऐसे बिह्वल ह्वै भागे जो कन्या को मात पुत्रको पिता नहीं सँभारत भाव कन्यापै माता को छोह पुत्र पै पिताको छोह ज्यादा रहत ऐसे बेसुधि भये कि युवतिन के बारबसन छूटि परे ते तनउघारे भागीं धुँवाको धुंधकारमें सब अन्धे से ह्वैगये बली सब भागि गये बूढ़े बारे पीछे बारबार पानी पानी करत हैं कहूं घोड़े तुराय हिहिनात भागे जात कहूं हाथी चिक्कारत भागे ते भारी भीर में परे ते ठेलि कहे ढकेलिकै पेलिगये जे पायँ तर परेते रौंदि गये जे धक्कामें गिरेते खौंदि कहे घायल ह्वै गये एक एकन को नाम लैलै चिल्लात बिललात कहे भागे भागे फिरत अति अकुलाने तात तात तात हे तात पुकारि कहत कि आंचमें तौ सियत

कहे ताव खाइयत अरु लपक की झार सों झौंसियत झारे जाइत हैं १५ ॥

लपटकरालज्वाल जालमालदुहूं दिशिधूमअकुलानेपहिंचानै कौनकाहि रे। पानीकोललात बिललातजरेगात जातपरेपाइमालजातभ्राततूनिवाहिरे। प्रियातूपराहिनाथनाथ तूपराहिबाप बापतूपराहिपूतपूततूपराहिरे। तुलसी बिलोकिलोकव्याकुलबिहालकहैंलेहि दशशीशअबबीसचखचाहिरे १६ ॥

सधूम अग्नि ते वृहद निकरत ते लपटैं कराल हैं निर्धूम अग्नि ते निसरत ते ज्वाल तिन के जाल कहे चहुंधाते घूमि एक में मिलत तिनकी माल कहे समूह छाइरही अरु दशों दिशा में धूम छाइ रहो तामें सब ऐसा अकुलाने कि कोऊ काहू को चीन्हत नहीं प्यासन के मारे पानी को ललात फिरत अरु आंच में गात जरेजात ताते बिललात कहे भागे भागे फिरत कोऊ पांयन तर परे पुकारत कि दबे जाइत भाई तुम उबारौ पतिनारिनसे कहत कि हे प्रिये तू भागै नारी पतिसे कहतीं कि नाथ तुम भागौ पुत्र पिता ते कहत कि बाप तुम भागौ पिता पुत्रते कहत कि हेपुत्रतुम भागौ इत्यादि

बहुत शब्द सुनात ऐसी दशा देखि सबलोग व्याकुल विहाल कहत कि अपने कर्त्तव्यताको फल दशशीश बीसो आंखिन भरि देखिलेहि १६ ॥

बीथिकाबजारप्रतिअटनअगारप्रति पँवरिपगारप्रतिबानरविलोकिये । अद्ध उर्द्धबानरबिदिशि दिशिबानरहैमानों रह्योहै भरिबानरतिलोकिये । मूंदेआंखि हीयमेंउघारे आंखिआगेठाढ़ोधाइजा इजहांतहांऔरकोऊकोकिये । लेहुअब लेहुतबकोऊन सिखावोमानोंसोईसत राइजाइजाहिजाहिशोकिये १७ ॥

गलिनमें बजारनमें अँटारिनमें घरन में देवारनपै इत्यादि नगरमें सर्वत्र बानरै देखात पाताल आकाश ईशानादि बिदिशा पूर्वादि दिशा सर्वत्र कैसे देखात मानों तीनिहूंलोक में बानरै भरि रहे हैं जे भयकरि आंखी मूंदि लेत तब हृदय में बानर देखात आंखि खोले आगे बानर ठाढ़ो धाइ जाइ जहां अर्थात् जहांअभय विचारि भागिजात कैलास ब्रह्मलोकादि तहांऊ बानरै देखात और को किये भाव बानरन को रोकि और कोऊ बस्तु जाने किये ऐसा सामर्थ्य को है जो बानरन की भयमिटाय राक्षसनकी रचा करै अर्थात् रघुनाथजी के विमुख को रचककोऊ

नहीं इत्यादि हाल देखि तब कोऊ कोऊ कहत कि तब हमारो सिखावन न मान्यो अब अपनो कर्त्तव्यता को फल लेउ लेउ भागो न तबतौ जाको रोकिये सोई सतराइ रिसाइ जाइ वह रिस अब कहां गई १७ ॥

एककरैंधौंजएककहैंकाढ़ोसौंजएक औंजिपानीपीकैकहैंबनतनआवनो। एकपरेगाढ़ेएकडाढ़तहीकाढ़े एकदेखत हैंठाढ़ेकहैंपावकभयावनो। तुलसीकहतएकनीकेहाथलायेकपिअजहूंन छांड़ेबालगालको बजावनो। धावरेबुझाव किबावरेजिआवरेहाअरे आगिलागी नबुझावैंसिंधुसावनो १८ ॥

एक करै धौंज अर्थात् धाइ जात अग्नि बुझाइबे हेतु एक कहत कि बुझाइबे पर न परै सौंज कहे सामग्री काढ़ौ एक प्यासे औंजि कहे आसूदा ह्वै पानी पीकै कहत कि पेट भरिगयो तातें वहां को आवनो नहीं बनत एक अग्निके बीच साकरे में परे एक जरत में काढ़े गये एक दूरि ठाढ़े देखत कहत कि अग्नि भयंकर है एक कहत कि कपि ने नीकी भांति हाथ लगाये बर्त्तमान रावण को मान भंग किये ताहू पर बालबुद्धी मूर्ख रावण गाल बजावन

नहीं छांड़त है जे गाढ़ परे ते पुकारत कि धाओ रे जे जरत ते पुकारत कि बुझाओ रे जे अधमरे ते पुकारत कि हे बावरेउ जिआवो रे जे बाहर ठाढ़े ते कहत कि यह और भांति की अग्नि लागी है भाव कछु और भांति की दैवी अग्नि है हम लोगों को कौन बात है जो समुद्र अरु सावन बुझावा चहै तौ न बुझाइगी भाव समुद्र उमँगिकै भूमिमें छाप चढ़ै सावन की जल वृष्टि अ.समान ते होइ तबहूं यह अग्नि न बुझैगी १८ ॥

को।पिदशकंधत्तबप्रलयपयोदबोलेरा-वणारजाइधाइआयेयूथजोरिकै। कह्यो लंकपतिलंकबरत्तबुताबोबेगिबानरबहा इमारौमहावारिबोरिकै। भलेनाथनाइ माथचलेप।थप्रदनाथ बरषै मुशलधार बारबारघोरिकै। जीवनतेजागीआगिच परिचौगुनीलागी तुलसीभभरिमेघभागे मुखमोरिकै १९ ॥

अग्नि न बुझाइगी ऐसे बचन सुनि दशकन्ध कोप करि प्रलय कारक पयोदजे मेघ तिनको बुलावत भयो ते रावण की आज्ञा पाइ यूथ जोरि कहे स-मूह बटुरिकै धाय आये तिनते रावण कह्यो कि बरत लंका को बेगि बुतावो अरु महाजल धारा

में बढ़ाइ बोरिकै बानर को मारि डारौ यह सुनि भले नाथ कहि माथ नाइ पाथप्रद जे मेघ तिन के नाथ अर्थात् मेघन के राजा चले ते बार बार घोरिकै घोर शब्द गर्जिकै मुशलसम मोटी जलकी धारा बर्षन लगे जीवन कहे जल यथा ॥ पयःकीलालममृतंजीवनंभुवनंवनं ॥ इत्यमरः एक तो स्वाभाविक प्रचंड अग्नि में जल परेते अधिक भभक निसरत दूसरे जो बड़वाग्नि जठराग्नि बज्रपाताग्नि ये जल पाय बुझात नहीं बल्कि जलहीको जराइ देत है तीसरे हरि इच्छामें बिघ्नकर्त्ताकौन है ताते जीवन कहे जलपरतही पुनः अग्नि जागी चपल ह्वै चौगुनी लागी यथा अग्निमेंजल परे ते भभकमें शीघ्र चिनगी उड़िचारहू दिशिअग्निबरिउठीताप्रचंड अग्निलंकामें बढ़ीदेखि मेघबराय मुँहफेरिभागे १९ ॥

इहांज्वालजरेजातउहांग्लानिगरेगात सूखेसकुचातसबकहतपुकारहैं । युग षटभानुदेखेप्रलयकृशानुदेखे शेषमुख अनलबिलोकेबारबारहैं । तुलसीसुन्यो नकानसलिलसर्पीसमान अतिअचरज कियोकेशरीकुमारहैं ।बारिदबचनसुनि धुनैंशीशसचिवनकहैंदशशीशईशबाम ताबिकारहैं २०

इहां तौ अग्नि के ज्वाल ते मेघ जरे जात उहां रावण के पास जाबे की ग्लानिमें गरे कहे बूड़ेजात ताते देहैं सुखाइ गई संकोच सहित पुकार करि सब मेघ कहत कि युग षट् छदुनो बारहौ कला सूर्य देखे ताहूमें ऐसा तेज नहीं प्रलय काल की अग्नि देखे ताहूमें ऐसा तेज नहीं शेष मुख की जो विषाग्नि है बार बार देखे ताहू में ऐसा तेजनहीं ऐसी अग्नि हम कानसों नहीं सुने जामें परेते जल सर्पि कहे घृत सम ह्वै अग्नि को प्रचण्ड करि देत अरु कंचन काठ सो बरत यह अत्यंत आश्चर्य हनुमन्तजीने करो है भाव कछु अद्भुत अग्नि है जो लंकामें लगाई है ऐसे वचन मेघन के सुनि माल्यवानादि जे सचिव हैं ते शीश पीटि कहत कि हे दशशीश यह अग्नि नहीं है ईश की बामता को विकार कहे ईश्वर को महाकोप है यामें रक्षक कौन है २० ॥

पावकपवनपानी भानुहिमवान यम कालखोकपालमेरेडरडांवाँडोलहैं। साहबसहेशसदाशंकितरमेशमोहिंमहातप साहसविरंचिलीन्हेंमोलहैं। तुलसीत्रि- लोकआजुदूजोनबिराजैराज बाजेबाजे राजनकेबेटाबेटीबोलहैं। कोहैईशनाम

कोजोवामहोतमोहूंसे कोमाल्यवानरा-
वरेकेबावरेसेबोलहै २१ ॥

, ईश बामता को बिकार है ऐसे बचन सचिवन के सुनि रावण कहत कि अग्नि पवन जल सूर्य हिमवान् जो चन्द्रमा यमराज काल इन्द्र वरुण कुबेरादि अरु सब लोकन के नाथ ते सब मेरे डरकरि डांवां डोल कहे भागे भागे फिरत हैं अरु महेश हमारे स्वामी हैं भाव हमारे सदा रक्षक हैं रमेश जो विष्णु ते शंकित हमते सदा डरतहैं अरु महातप के साहस कहे पराक्रम करि ब्रह्माजो को तौ मोक्ष ऐसो लीन है सदा मेरे आधीन हैं ये जो त्रिदेव हैं तिनकी बामता को तौ मोको डरै नहींहै जो मोपर बाम होइ ऐसा तीनिलोक में दूसरा कौन है राज पर बिराजमान जासों मैं दंड नहीं लियेआजहूं बाजे बाजे राजन के बेटी बेटा बोल कहे दंड हेत बँधुवा हैं याते त्रिलोक बिजयी प्रतापवान् हम मण्डलीक मणि राजा हैं मोहूं ऐसे को जो बाम होत सो ईश कौनहै कौन रूप है वाको कौन नाम है ताको बतावो नहीं तो हे माल्यवान् आप के बचन बावले के ऐसे हैं भाव निरर्थक हैं तुम्हारो कहिबो बृथा है २१ ॥

भूमिभूमिपालब्यालपालकपतालना
कपाललोकपालजेते सुभट समाजुहै ।

कहैमाल्यवानयातुधानपतिरावरेकोमन हुंअकाजआनेऐसोकौनआजुहै । राम कोरूपपावकसमीरसीय श्वासकोईशबामतासिलोकिबानरकोव्याजुहै । जारतप्रचारिफेरिफेरिसोनिशंकलंक जहांबांकोबीरतोसोंसूरशिरताजुहै २२ ॥

भूमि के जेते भूमिपाल राजा हैं यथा सुरथ सुधन्वावीर मणि दमनकादि अरु पाताल के जेते ब्याल पालक सर्पन के राजा यथा अनंत बासुकी तक्षक कर्कोटक शेष पद्मक महापद्मक एलापत्रकादि अरु नाकपाल इंद्रलोकपाल धर्मराज अग्नि सूर्य पवन बरुण कुबेरादि जेते सुभटन की समाज हैं माल्यवान् कहत कि हे यातुधानपति रावण त्रैलोक्य में ऐसा समर्थ आजु कौन है जो आपको अकाज करिबो मनमें लावै प्रसिद्ध की को कहै भाव तुम्हारो ऐसो प्रताप है जासों सब डरत हैं हे रावण जो आपने कहा कि कौन ईश है जो हमारे ऐसे को बाम होत ताको सुनिये परब्रह्म श्री रघुनाथजी को क्रोध पावक रूपहै श्रीजानकीजीकी बिरहाग्नि ज्वलित श्वास की जो समीर ताकी सहायता पाय अग्नि प्रचण्ड परत जात ईश जो श्री रघुनाथजी तिनकी बामता सोई कोश रूप करि

देखो बानर तो बहानामात्र है काहेते जहां रावण तुम ऐसे बांकेबीरभाव कालहू करि युद्धमें निश्शंक अरु शूरन में शिरताज भाव स्वहस्त शिर भेद न करेते तुम बर्त्तमानको प्रचारिकै निश्शंक घूमि घूमि लंका को जारत है याते निश्चय जानिय कि बानर रूप रघुनाथजीकी बामता है इहां कोह पावक प्रवाससमीरमें रूपकहै बानरकेबहाने ईशकी बामता वर्णन करे याते कैतवापन्हुति अलंकार है २२॥

पानपकवानविधिनानाकेसंधानेसीधो विविधविधानधान बरतबखारही । कनककिरीटकोटिपलँगपेटारेपीठकाढ़तकहारसब जरेभरेभारही । प्रबलपावकबाढ़ेजहांकाढ़ेतहांडाढ़े झपटलपटभरेभवनभँडारही । तुलसीअगारनपगारनबजारबच्यो हाथीहथसारजरेघोरेघोरसारही २३ ॥

जो बस्तु जरी ताको कहतपान कहे पीवनेका बस्तु यथा मेवादि औषधिनके अरक औषधिन के सरबत आसवादि अनेक भांति मदिरादि अरु पकवान कहे यथा खाभा बोंदी खुरमा जामुनि गुलगुला जलेबी आदि मिठाई अरु अनेक विधि संधानो कहे शोधि बनायो सीधो यथा इस्तेमाल चाउर कांड़ाकी दाल

मैदा घृत शक्करादि अरु विविधि विधान धान गेहूँ उरदादि अन्न जो बखारिन में भरो जरत है इति भण्डार अथ मन्दिर की बस्तु मणि जटित कञ्चन के मुकुटादि भूषण कोटिन रेशमी निवारिके पलंग दुशालादि बसननके भरे पेटार पीठक है सिंहासनादि के काढ़वमें भार सहित कहार जरे काहेते जब प्रबल अग्नि बाढ़ी ताकी लपटचकी झपटै भवन भंडार में भरि रही हैं ताते जहां असबाब काढ़ै तहांई डाढ़े कहे जरिके रहिगये गोसाईं जी कहत कि काहूको छोरि देबेकी सामर्थ्य न रही ताते हाथी हाथिसार में घोड़ा घोड़सारमें जरिगये २३ ॥

हाटबाटहाटकपिघिलिचलोघीसोघनो कनककराहीलंकतलफतजायसों । नानापकवानयातुधानबलवानसब पागिपागिढेरीकीन्हीं भलीभांतिभायसों । पाहुनेकृशानु पवमानसोपरोसोहनुमानसनमानिकेजेंवायेचितचायसों । तुलसीनिहारिअरि नारिदैदैगारिकहैं बावरेसुरारिबैरकीन्होंरामरायसों२४ ॥

बजारन में खंभादि राहनमें छज्जादि जो थोरा सोना रहा सो अग्नि में पिघिलि घीसम बहि चलो

भूमि अरु कोट में समूह सोना जो गलो नाहीं तप्त ह्वै रह्यो सोई लंका सोनेकी कराही है सो तलफत कहे द्रिगधत जात तामें गलो सोना घी सम भरो है जे बलवान् राक्षस हैं ते सब अनेक भांति पकवान हैं तिनको भली भांतिके भाव करि मन लगाय कै पागि पागि ढेरी करी अर्थात् पाहुन हेतु रसोई भाव सहित बनाई जात इहां बीर रस में धृति चपलता गर्बादि संचारी भावकरि राक्षसन को अग्नि में डारि दिये कृशानु जो अग्नि सोई इहां पाहुन है पवमान जो पवन सोई परोसन हार है तहां तप्त सोना में जे राक्षसन को हनुमान् जी डारिदिये तिनको रक्त मांस जरि रुक्षह्वै गये सो पागब है अब हलके परि गये तब पवन उड़ायज्वलित अग्नि में डारि दियो यह पवनको परोसब है प्रचण्ड अग्नि में परे ते बरिगये यह अग्नि को भोजन करिबो है या भांतिसों सन्मान करिके अग्नि को जिंवाये हनुमान्जी चित चाय कहे आनन्द सहित चित्त में उत्साह यह वीर रस को स्थायी है अरु पाहुन जेंवत में नारी गारी गावती हैं इहां अरि नारी जो राक्षसीन को रोदन सोई गान करि गारी देदे कहती हैं हे बावरे सुरारि रावण तुम रामरायसों बैर कीन्हो ताको फल लेउ इतिशेषः इहां बीर रस ते राक्षसिन में करुणा रस है अरु उपमा रूपक अलंकार करि श्रीरामप्रताप वस्तु व्यंग्य है २४ ॥

रावणसोंराजरोगबाढ़तबिराटउर दि
नदिनबिकलसबसुखरांकसो। नाना
उपचारकरिहारेसुरसिद्धमुनि होतनबि
शोकऔतपावैनमनाकसो । रामकीर
जायतेरसायनीसमीरसूनु उतरिपयोधि
पारशोधिसरबांकसो । यातुधानबुटपुट
पाकलंकजातरूपरतनयतनजारिकियो
हैमृगांकसो २५ ॥

बिराट् को उर जो है समुद्र ताके बीच में राज
रोग सम रावण प्रताप करि बाढ़त भयो ताके शोक
ते बिराट् दिन दिन बिकल होत अरु सब सुखरांक
कहे छीण होत भयो भाव नेत्र सूर्य प्रताप रहित
सेत ह्वैगये मन चन्द्रमा मलीन भये बाहु दिग्पाल
शोक ताप ते छीण भये ब्रह्मांड देह ताप ते तप्त
ह्वैरह्यो पाप कफ रूप बाढ़त जात इत्यादि शोक
निवारण हेतु अनेक भांतके उपचार कहे औषधी
करि देवता युद्ध आदि करि सिद्धि सिद्धाई करि
मुनि जप यज्ञादि करि सब हारिगये बिराट् बिशोक
न होत भयो औ तप कहे ज्वर सो मनाक कहे
थोरी नहीं आवत भाव रावण को प्रतापरूप ताप
बढ़तै जात ताके निवारण हेतु श्रीरघुनाथ जी की

आज्ञा ते रसायनी हनुमान्‌जी समुद्र पार जाय कै सरवा कहे दिया को सरवा जामें धरिकै रस फूंका जात है क कहे भूमि सिंधुपार की सोई सरवा है तामें सब धातु शोधिकै अर्थात् जात रूप रत्न कहे सोना मोती मय जो लंका है तामें राक्षस बूटी हैं तिनकी पुटपाक कहे एक में मिलाय यत्न सहित कहे मृगांक की बिधियथा तेज कांजी मठा त्रिफला गोमूत्र कुरथीको काढ़ादि में तप्त करि दुइबार बुझाय सोनो वरख करि खटाई अरु शुद्ध पारा समान करि घोटै पुनः कचनार रस की एक पुट देइ अग्नि छाले के रसकी तीनि पुट देइ करियारी की जरके रस की एक पुट देइ पीछे सोने को चौथाई मोती डारि घोटै पुनः शोधा गंधक सबको बराबरि डारि दुइ दिन घोटै गोला करि सरवा में धरि बंद करि कपरमट्टी करि गजपुट में फूंकि देइ यह यत्न है इहां राक्षस करियारी आदि सब औषधी हैं तिनको मर्दिबो सोई घोटब है मेघनादादि सबल राक्षसन को दर्प सोई पारा है सामान्य राक्षसन को दर्प गन्धक है सोना मोतीमयी लंका है तहां की भूमि सरवा है इत्यादि यत्न सों जारि हनुमान्‌जी मृगांक बनायो तहां बिराट् को मुख अग्नि है प्रचण्ड ह्वै भस्म करि देना मृगांक रस को भक्षण है तहां रावण राज रोग को प्रताप रूप तापआजुइ तेक्रमपरो भावसब लोकनिर्भयभये २५ ॥

जारिबारिकैबिधूमबारिधिबताइलूम नाइमाथोपगनिभो ठाढ़ोकरजोरिकै। मातुकृपाकोजैसहिदान दीजैसुनिसीय दीन्हींहैअशीष चारुचूड़ामणिछोरि कै। कहाकहौंतातदेखेजातजोबिहान दिन बड़ीअवलंबहीसोचलेतुमतोरिकै। तुलसीसनीरनैननेहसोंशिथिलबैन बिक लबिलोकिकपिकहतनिहोरिकै २६ ॥

लंका को जारि बारि विधूम कहे कोयला करि पुनः पूंछ समुद्र में बुझाय श्रीजानकी जीके पायँन में माथनाय हनुमान्जी हाथजोरि आगे ठाढ़ हो कहे हे मातु कृपाकीजै अर्थात् चलिबे की आज्ञा दीजै अरु सहिदानी कहे कछु अपनो चिह्न दीजै यह सुनि जानकी जी अशीषदै सुन्दर चूड़ामणि शीश ते छोरि कै दीन्हीं अरु कहती भई कि हे तात काह कहौं जो कहिबे को हालसो जाभांति ते दिन बिहान कहे दिन बीतत सो तुम देखे न जात हो तुम्हरे देखे हमारे प्राणन को अवलम्ब रहा ताहू को तुम तोरिकै चले जातहौ ऐसे वचन सुनि जानकी जीको विकल देखि हनुमान्जी स्नेह सों शिथिल तन सजल नैन निहोराकरि वचन कहतभये २६ ॥

दिवसछसातजात जानबेनमातुधरुधी रअरिअन्तकीअवधिरहीथोरिकै । बारिधिबँधायसेतुऐहैंभानुकुलकेतुसानुजकुशलकपिकटकबटोरिकै । बचनबिनीतकहिसीताको प्रबोधकरितुलसी त्रिकूटचढ़िकहतडफोरिकै । जैजैजानकीशदशशीशकरिकेशरी कपीशकूद्योबातघातउदधिहलोरिकै २७ ॥

दिवस छः सात कहिबो थोरे दिननको लोकोक्ति है अथवा छः सात कहे छः सते बयालिस दिन तहां अगहन शुक्लपूर्णिमा को हनुमान्जी की यह वार्त्ता है माघकृष्ण द्वादशीको लंका समीप कपिन युत रघुनाथजी प्राप्तभये याते बयालिसदिन बीतत मं कुछ जानि न परी हे मातु धीरज धरु अरि रावण के अन्त कहे मृत्यु की अवधि थोरेदिनकी रही काहेते कपिसेन बटोरि समुद्र में सेतु बँधाय लक्ष्मणजी सहित भानुकुल केतु श्री रघुनाथ जी कुशल सहित ऐहैं ससैन रावण को मारि तुम को लैजायँगे इत्यादि विनीत बचन कहि श्री जानकी जीको प्रबोध कीन पुनः त्रिकूट शिखरपर चढ़िडफोरि कहे ऊंचेस्वर हांक दैकै कहत भयो कि रावण रूप गजमर्दन को केशरी कहे सिंह रूप श्रीरघुनाथ जी

की जय होइ जयहोइ ऐसा कहि कपि हनुमान् जी ऐसी शीघ्रता करि कूदे जो तन करि बात कहे पवन निसरी ताकी घात कहे ठोकर ते समुद्र में हलोरा उठे याते वेगता गमन सूचित भयो २७ ॥

साहसीसमीरसूनु नीरनिधिलंघिल खिलंकसिद्धिपीठनिशिजागोहै मशान सो। तुलसीविलोकिमहासाहसप्रसन्न भईदेवीसियसारिखीदियोहैवरदानसो। बाटिकाउजारिअक्षधारिमारि जारिग ढभानुकुलभानुकोप्रतापभानुभानुसो। कर्त्ताबिशोकलोककोकनदकोककपिक हैजामवंतआयोआयोहनुमानसो २८

यामें हनुमान्जीको मशान जो जागिबो वर्णन करे तहां अत्यन्त साहसी होइ सो या मारग में पगदेइ काहेते यामेंविघ्न करिवेहेतु अनेक भयंकर भय देखात तिनको न मानै तहां पवन साहसीके पुत्र हनुमान्जी महासाहसी ह्वै या मार्ग में पांव दिये तहां सुरसा सिंहिका लंकिनीआदि अनेकभय कारक विघ्न तिनको कुछ न गने पुनः जहां नदी के बीच में रेतपरो होइ तहां अर्द्धरात्रो को जाइ मृतक के ऊपर बैठि मशान जागै तामें उलूक काग अजादि को बलिदान देय मदिरा की धार दैके मंत्र

जपै जो निर्विघ्न पुरश्चरण पूरो होइ तौ श्मशाने श्वरी देवी प्रसन्न होइ जो बर मांगै सोई देइ इहां हनुमान्‌जी समुद्र नांघि तहांकी भूमिमें मृतक शरीर लंकिनी को पायो यह देहधारी लंकापुरी है सो हनुमान् जीके मारे पापमयी देह छांड़ि दिव्य देह पाई यह रामचन्द्रिका में लिखा है यथा ॥ जबहीं हनुमन्तचलेतजिशंका । मगसोकिरहीतियह्वैतब लंका ॥ हनुमन्तबलीत्यहिथापरमारी । तजिदेहभई तबहींबरनारी ॥ या तेलंकापुरी मृतक सिद्धि पीठि सो देखिता पै बैठ मशान् सो रात्री जागे तहां मुद्रिका रूप बलिदान दिये प्रेममय बचन मद को धारदिये रामचन्द्र जीके गुणानुबाद वर्णन किये सोई मन्त्र जापसों पूर्ण भयो तहां रात्रि जागत समय रावण कृत अनेक भय देखानो ताको कछु न गनै इत्यादि महा साहस देखि देवीसी श्री जानकीजी प्रसन्न ह्वै बरदान दियो यथा ॥ भक्ति प्रतापतेजबलसानो । आशिषदीन्हरामप्रियजानो ॥ अजरअमरगुणनिधिसुतहोहू । करहुसदारघुनायक छोहू ॥ यहि बरदानके बलते निशाचरनको निदरि अशोक बाटिका उजारे धारि कहे सेना सहित अक्षकुमार को मारि लंका गढ़ को जारि इत्यादि साहस करिकै भानुकुल के प्रकाशक भानु को श्रीरघुनाथजी हैं तिनको प्रतापरूप भानु को वर्तमान भानु सो उदय करि रावण को भय रूप

रात्री को नाश करे जामें सब लोकनायक इन्द्र वरुणादि कोकनद कहे कमल सम संपुटित रहे तिनके मन प्रफुल्लित भये कोक कहे चक्र बाक सम राज श्री को बियोग रहा तिनको संयोग भयो इत्यादि बचन सब कपि कहत कि हे जामवंत सब लोकन को बिशोक करत हनुमान्जी आयो आयो हर्षते द्वै बार कहे २८ ॥

गगननिहारिकिलकारीभारीसुनि हनुमानपहिचानिभयेसानँदसचेतहै । बूड़तजहाजबच्योपथिक समाजमानोंआजुजायेजानिसबअंकमालदेतहै । जयजयजानकीशजयजयलषणाकपीशकहि कूदेकपिकौतुकीनटत्तरेतरेतहै । अंगदमयंदनलनीलबलशीलमहा बालधीफिरावैमुखनानागतिलेतहै २९ ॥

भारी किलकारी सुनि आकाश मार्ग निहारि हनुमान् जीको चीन्हि प्रसन्न मन देखि सब कपि जो दुखकारि मूर्च्छित रहैं ते आनंद सहित कैसे सचेत भये मानों जहाज बूड़त में कोई दूसरा जहाज लेकै पहुंचि गयो सब पथिकन को समाज बूड़त में बचिगई तथा सो मानों सब कपि आजु ते भयो जन्म पाये यह जानि अंकमाल कहे परस्पर

एक एकन को मिलत हैं अरु कहत कि जानकीश की जयहोइ जय होइ लक्ष्मण सुग्रीवकी जयहोइ ऐसे शब्द उच्चस्वर ते उच्चारण करिकै कौतुकी जे कपि हैं ते कूदत अरु समुद्र तट रेत में ठौर ठौर अनेक भांति की नृत्य करतहैं तिनको देखि अंगद मयंद नल नीलादि जे महा बलवान् कपि हैं ते बालधी कहे पूछ ताको फिरावत अरु मुखनते अनेक भांति तालन को गति लेत इत्यादि मन आनंद के मुद्र हैं ॥ २९ ॥

आयोहनुमानप्राणहेतु अंकमालदेत लेतपगधूरिएकचूंबतलंगूलहैं । एकबूझै बारबारसीयसमाचारकहे पवनकुमार भोविगतश्रमशूलहैं । एकभरवेजानि आगेआनिकंदमूलफल एकपूजै बाहुब लमूलतोरिफूलहैं । एककहैतुलसीसक लसिद्धिताकेजाकेकृपापाथनाथ सीता नाथसानुकूलहैं ३० ॥

सब कपिन के प्राण उबारन हेतु श्रीहनुमान् जी खबरि लैकै आये ता आनंद ते सब कपि अंकमाल कहे अंकोरा भरिकै मिलत हैं पुनः कोउ सुकृत कारक महात्मा मानि पायन की धूरि लै शीश पै धरत कोउ लांगूल को चूंबत भाव याही ते लंका

भस्म करै एक जानकीजी का समाचार बारम्बार बूझत है सो सब हनुमान्जी कहे ताको सुनिकै जो भूखे प्यासे मार्ग चलिबे को जो श्रम है औ न खबरि पाइबे को जो शूल रहै सो सब बिगत भई हनुमान्जीको भूखे जानि एक कन्दमूल फल सुंदर लैकै भोजन हेतु आगे धरत एक दल फूल तूरि आनि जल लैकै बलमूल जो हनुमान्जी की बाहु हैं तिनको पूजत भाव इनते खलन को जीते एक कहत कि हनुमान्जी को सब सुगम है काहे ते जापर कृपा के समुद्र सीतानाथ सानुकूल हैं ताको अणिमादि यावत सिद्धी हैं ते सब सुगम प्राप्त होती हैं ३० ॥

सीयकोसनेहशीलकथातथालंककी कहतचलेचायसों सिरानो पंथछनमें । कह्यो युवराज बोलिबानरसमाजआजु खाहुफलसुनिपेलिपैठेमधुबनमें । मारे बागवानते पुकारतदेवानगे उजारेबाग अंगदादिखाये घायतनमें। कहैंकपिराज करिकाजआयेकीश तुलसीशकीमाप थमहामोदमेरेमनमें ३१ ॥

यथा अनुकूल ताकी वृद्धि प्रिया होत याते श्री

जानकी जीको शील सनेह मयी स्वभाव की कथा तथा प्रतिकूलता की हानि प्रिया याते लंका भस्म होइबो निशाचरन को बध इत्यादि कथा हनुमान् जी कहत अपर कपि सुनत चाय कहे आनंद सों चलेजात में न जाने क्षणमें मार्ग सिराइ गई किष्किन्धा में प्राप्त भये तब अंगदने बानरनको समाज बुलाय कह्यो कि ये फल खाबे लायक समय आजु हो है याते आजु या बनके सुन्दर फल मन भाय खाउ यह सुनतेही सब मधुबन में पेलिकै पैठे भाव द्वार को राह न देखे सब सींवा फांदि गये जब वागवान रोकेउ तिनको कपि मारन लगे ते सब बागवान पुकार करत देवान कहे दरबार को गये कहेउ किअंगदादि बानरफल खायकै बाग उजारि दिये हम रोकेउ सो तन में घाउ खाये भावहमको मारेउयह सुनतेही सुग्रीवकहेउ कि बानरकाज करि आये खबरि लै आये श्रीरघुनाथजी की शपथ यह बात सांचीहै काहेते मेरे मन में महामोद है ३१ ॥

नगरकुबेरकोसुमेरुकीबराबरी बिरंचि बुद्धिकोबिलासलंकनिर्माणभो। ईशहि चढ़ायशीशबीसबाहुबीरतहां रावणसो राजारजतेजकोनिधानभो। तुलसीत्रिलो ककीसमृद्धिसौजसंपदा सकेलिचाकि

राखोराशिराजांगरजहानभो। तीसरेउपा सबनवासिंधुपास सोससाजमहाराज जीकोएकदिनदानभो ३२॥

धनवान् कुबेर को नगर पुनः सुमेरु की बराबरि कंचन मयी अति उन्नत विस्तृत अरु सब कला कुशल ब्रह्मा की बुद्धि का बिलास कहे चमत्कारीके आश्रित बिश्वकर्मा ने लंकाको निर्माण करो तहां ईश जो महादेव जी तिनको शीश चढ़ाइ बर ले अजीत बीस है जाके भुजा ऐसो बीर रज पराक्रम तेज प्रतापादि को निधान कहे समुद्र रावण ऐसो दिग्विजयी जो लंका को राजा भयो जाने आपने भुजबल इन्द्र वरुण कुबेरादिको जीति तीनहूं लोक की सब समृद्धि कहे धन संचय अर्थात् मणि मुक्ता सुवर्ण रुपयादि को खजाना अरु सम्पदा कहे सब प्रकार का ऐश्वर्य यथा धन गज रथ तुरंग महिषी धेनु भूमि बाटिका मंदिरादि आरोग्यतन स्त्री पुत्र पौत्र भोजन बस्त्रादि सौज कहे यावत् सामग्री सो सब सकेलि कहे बटोरि इच्छा पूर्ण सम्पदा अन्न की राशि इव चाकि राखी कुल फांदिपै चिह्नांकित करि राखी यथा किसान खाफर में राशिके किनारे गोवर को रेखा करत सो चाकवत् है तहां त्रिलोक सम्पदा राशि रावण ने लई राशि बूसा काढ़ि लेने पर जो डड़का बल्कल रहत ताको अँगरा कहत

सोई जांगर सम सब जहान भयो इत्यादि रावण कृत ऐश्वर्य्य सो समाज महाराज रघुनाथ जी को एक दिन चणमात्र को दान भयो अर्थात् बिभीषण को दिये कौनो दशा में सो कहत कि तीसरे उपास अर्थात् पौष कृष्ण सप्तमी को हनुमान्जी सों खबरि पाये प्रभात अष्टमीको मध्याह्न काल उत्तरा के प्रथम चरण सिंहके चन्द्रमा में ग्यारहें बलीयुद्ध हेतु वामें बली जानि लंका जाबे को प्रस्थान कीन प्रभात चले पौषकृष्ण अमावस को सिंधु तट प्राप्त भये तहां फलादि भोजन न मिले चतुर्थी को बिभीषण आये याते तीसरे उपास बनवास कहे प्राकृत राज श्री त्यागे सिंधुपास अर्थत् पार जाबेकी संदेह ऐसी दशामें बिभीषण को लंकनायकता दिये यामें धृति उदारता दान बीरतादि गुण बर्णन करे अरु श्रीरघुनाथजीको अति प्रताप सूचित करिबे हेतु रावण को ऐश्वर्य्य वर्णन करे ३२ ॥

सवैया ॥ तटबारिधिबारिधिरामधरा तनुजार्थधरा जिनयस्थितितो । सपुटांजलिदंडज दावनि पस्करि च्वानुजअंक कृतोबिहितो ॥ पुनरंबुपत्याव्यभिषेक्यलि केसकृताधिपलंगरितारहितो । जनसंश्रितमोचनराम दयालयमामकमानससन्निहितो ॥ १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभशरणा-
गत बैजनाथबिरचितेकवितरत्नदीपिका
टीकायांसुन्दरकांडस्समाप्तः ५ ॥

लंकाकाण्ड ॥

कार्यंक्रियाकर्ममिदानरूपंनरामयंभैषजमिष्टनामं ॥
सुधर्मपथ्यार्थगुणानुवादंनमामिरामंभवरोगवैद्यं १॥

बड़ेबिकरालभालुबानरबिशालबड़े
तुलसीबड़ेपहारलैपयोधितोपिहैं।प्रबल
प्रचण्डबरिबंडबाहुदण्डखण्डि मंडिमे-
दिनीकोमंडलीकलीकलोपिहैं । लंक
दाहुदेखेनउछाहुरह्योकाहुनको कहतस
बसचिवपुकारिपांवरोपिहैं । बाचिहैंन
पाछेंत्रिपुरारिहूमुरारिहूके कोहैरणरारि
कोजोकोसलेसजोपिहैं १॥

लंकादाहभये पीछे सब सचिव सशंकित वार्ता करतहैं कि बड़े बिकराल भयंकर भालु अरु बड़े बिशाल उच्च देहनके बानर महाबली ते बड़े पहाड़नको लैकै समुद्रको तोपिराह करि उतरि आइ हैं प्रबल प्रचण्ड कहे प्रतापवान् बरिबण्ड कहे तेज-वान् रावण ताके भुजदण्ड खंडन करि सुधर्म करिकै पृथ्वीको मंडि कहे भूषित करिकै भूमण्डल

को जीतनहार मण्डलीक रावणको चलाई जा लोक यज्ञादि धर्मको रोकि अधर्मको प्रचार ताको लोपिहैं मिटाय देहैं इत्यादि आगम काहेते समुझिपरत कि जबते लंका भस्महोते देखेउ तबते युद्ध करिबेको उत्साहकाहू निशाचरबीरमें न रहो याते सब सचिव पांवरोपि कहे प्रणकरि पुकारिकै कहतहैं कि औरन की क्या गतिहै जो त्रिपुरारि शिव मुरारि विष्णु इनके पाछे परिजो निशाचर उबराचाहैं तौ न बचिहैं भाव इनके नाममें प्रसिद्ध दैत्यनकी शत्रुताअर्थ होत याते इनहूंरक्षक नहींहैं अथवा जा समय कोशलेश श्रीरघुनाथ जो कोपकरि धनुषबाण गहैंगे तिनसों युद्धकरिबे को कोवीर समर्थहै जोनिशाचरनको उबारै भावकोऊ नहींहै यथाजयंत ॥ ब्रह्मधाम शिवपुर सबलोका । फिराश्रमित व्याकुल मनशोका ॥ काहूबैठन कहानवोही । राखिकोसकै रामकरद्रोही ॥ प्रमाणभगद्गुण दर्पणे ॥ ब्रह्मरुद्रेंद्र संज्ञैश्चत्रैलोक्यप्रभुभिस्त्रिभिः । रामबध्योनशक्यः स्यात्रक्षितुंसुरसत्तमैः १ ॥

त्रिजटाकहतबारबारतुलसीश्वरीसोंराघवबानएकहीसमुद्रसातोसोखिहैं । सकुलसँहारियातुधानधारिजंबुकादि योगिनीजमातिकालिकाकलापतोखिहैं । रा

जदैंनिवाजिबोबजाइकैविभीषणौबजैगो दग्रोसबाजनेंबिबुधप्रेमपोखिहैं। कौनद शकंधकौनमेघनादबापुरोकोकुम्भकर्ण कीटजबरामरणरोखिहैं २॥

तुलसीकी ईश्वरी जो श्रीजानकीजी हैं तिनसों बार बार त्रिजटा कहत कि हे महारानीजी धीरज धरो एक समुद्रको कौन बात श्रीरघुनाथजी को एकही बाण सातो समुद्र सोखि लेइगो या भांति समुद्र उतरि पुनः यातुधान जो राक्षस तिनकोधारि कहे सेना सहित कुलरावण को संहारि कहे नाश करैंगे तिनको रुधिर पी मांस खाइ जंबुकादि कहे शृगाल गीध चील्ह काग अरु योगिनिनकी जमाति कालिका समूह ते तोषिहैं कहे अघाइहैं भाव मृतके दग्ध करनहार कोऊ न रहैगो या भांति अकंटक करि डंकाबजाइ बिभीषण को लंकाकी राज्यदैनि- वाजिहैं तब निर्भय ह्वै बिबुध जो देवता ते प्रेमक- रिपोषिहैं कहे पुष्ट ह्वै मन राघवमें लगाइहैंताते आ- नन्द ह्वै आकाश में दुन्दुभी आदि बाजा बजावेंगे इत्यादिनिश्चय जानिये काहेतेजासमय श्रीरघुनाथ जीरोपकरि धनुषबाण धारणकरिहैं तिनसों युद्धकरिबे को कोऊ नहीं समर्थ है तहां रावण अरु बापुरो मेघनाद कीट सम कुम्भकर्ण ये कौन हैं २॥

बिनयसनेहसोंकहति सियत्रिजटा सों पायेकछूसमाचारआरजसुवनके । पायेजूबँधायोसेतुउतरेभानुकुलकेतुआये देखिदेखिदूतदारुण दुवनके । बदन मलीनहीनदीनदेखिमानोंमिटै घटेतमी चरतिमिरभुवनके । लोकपतिशोकको कमूंदेकपिकोकनद दण्डद्वैरहेहैंरघुआ दितउवनके ३ ॥

कविकी उक्ति विनय कहे नम्रता सनेह सहित बचन श्री जानकीजी त्रिजटा सों कहती हैं कि आर्य कहे श्रेष्ठ अर्थात् अवधेश सुवनके कछूसमाचार पायेहैं त्रिजटा बोली किपायोहै सेतु बँधाय भानुकुल केतु श्री रघुनाथजी समुद्र उतरि आये दारुण कहे कठिन दुवन कहे दुर्जन जो रावण ताके दूत देखि देखि आये तिनसों हाल सुनि निशाचरन के बदन मलीन भये अर्थात् वीररसकी स्थायी उत्साह जाती रही औ बलहीनभये अर्थात् धीरज गर्बादि बिभाव रहित भये दीन कहे करुणा रस वश भये ताकी उत्प्रेचा करत मानों निशाचररूप अन्धकार भुवनके घटे तातै मिटन चहत हैं लोकपति इंद्रादि राज श्री बियोग ते कोक कहे चक्रवाक सम सशोक हैं औ कपि कोकनद जो कमल ता सम संपुटित

हैं अब रघुनाथ रूप सूर्य उदय होबे के द्वै दण्ड बाकी रहे हैं भाव माघकृष्ण द्वितीयाको सेना समुद्र उतरी पञ्चमी की यह बार्त्ता है औ माघ शुक्ल द्वितीया को युद्ध प्रारम्भ भयो सो बारह दिन को अन्तर परो सो देवतनके दिन सो द्वै दण्डहोत यथा उत्तरायण दिन दक्षिणायन रात्री सब साठि दण्ड भये सो मनुष्य के बारह मास ते बारहपञ्चे साठि एक मास पांच दण्ड को भयो छः दिनको एक दण्ड भयो याते बारह दिन के द्वै दण्ड कहे अब रघुनाथ रूपी सूर्य उदय भये पर लोकपाल चक्रवाक से आनन्दित होइँगे कपिकमलसे प्रफुल्लित होइँगे३॥

झूलना॥ सुभुजमारीचखरत्रिशिरदूषणबालि दलतजेहिदूसरोशरनसांध्यो। आनिपरबामविधिबामतेहिरामसोंसकतसंग्रामदशकन्धकांध्यो॥ समुझितुलसीशकपिकर्मघरघरघैरुविकलसुनिसकलपाथोधिबांध्यो। बसतगढबंकलंकेशनायकअछत लंकनहिंखातकोउभाततांध्यो४॥

पुरवासी परस्पर वार्त्ता करत हैं सुबाहु मारीच खर त्रिशिर दूषण बालि आदिको बध करनमें जेहि श्री रघुनाथजी ने दूसरो बाण नहीं साधे एक हो

बाण ते प्राण नाश करे तिन श्री रघुनाथजी सों अब विधि बामता बशते पर नारी श्री जानकीजी को हरि आनि मृत्युबश रावण संग्राम काध्यो कहे अंगीकार कर्यो सो करि सकत है अर्थात् नहीं करि सकत है यह काकु व्यंग्य है तुलसीश जो श्रीरघुनाथ जी तिनको प्रताप अरु कपि हनुमान्जी तिन को लंका दाहादि कर्म समुझि लंका में घर घर घेरु कहे यही चर्चा मचिरहो है कि अब कुशल नहीं तापर पाथोधि जो समुद्र तामें सेतु बांधिबो सुनि पुरबासी सकल अति विकल भये गोसाईं जी कहत कि यद्यपि बिकट गढ़ लंका में बसत लंकेश रावण नायक कहे राजालोग बिजयी ताके अछत कहे देखत पुरबासी ऐसे भयातुर संभ्रम भये जो भातरांधिबे को होस नहीं काचो है कि पाको जैसे ही पावते तैसे हो खाते हैं यामें प्रभु को अति प्रताप वर्णन करे ४॥

सवैया ॥ बिश्वजयीभृगुनायकसेबिन हाथभयेहनिहाथहजारी। बातुलमातुल कीनसुनीसिखकातुलसीकपिलंकनजा री। अजहूंतोभलोरघुनाथमिलेफिरिबू झिहैकोगजकौनगजारी।कीर्त्तिबड़ोकर तूतिबड़ोजनबातबड़ोसोबड़ाईबजारी५॥

पुरबासी कहत कि हाथ हजारी जो सहस्रबाहु ताको हनि कहे मारि बिश्वजयी कहे संसारके च-त्रिन के जीतन हार परशुराम ऐसे वीर शिरोमणि तेऊ श्रीरघुनाथ जीके सन्मुख बिन हाथ भये भाव हथियार धरि बिनती करे पुनः बातुल कहे बाई को भरो बकवादी रावण को उसके मातुल कहे मामा मारीच ने सिखायो कि श्रीरघुनाथजी सों बैर नकरो सो रावण नहीं सुन्यो आखिर को कपि हनुमान् लंका नहीं जारी अर्थात् जारी यह काकुब्यंग्य है भाव अपराध एक रावणको घर सबके फूंकेगये ताते अजहूं रघुनाथजी सों मिलिबो भला है जो आपन बचाउ चाहै सो मिलै नाहीं फिरि गज कहे हाथी अर्थात् मृगवर्ग गजारि कहे मृगराज अर्थात् को प्रजा है कौन राजाहै यह कोऊ न बूझी सब मारे जाहिंगे अरु रावण को का कहिये जो कीर्त्ति करिकै बड़ो है अर्थात् तप स्तुति करि ब्रह्मा को प्रसन्न करेउ शीशदान दै शिव को प्रसन्न करेउ अरु करतूति करि बड़ो अर्थात् भुज बलते सब दिग्पालनको जीति लियो अरु जनन विषे बात करि बड़ो अर्थात् जाके सन्मुख दूसरा बात नहीं करि सकत क्योंकि जाने वेदन पै तिलक करेउ तासों कोऊ काह कहै सोतो रावण बड़ोई बजारी कहे सब भावको जानन हारो है अथवा बजारी कहे जालसाज झूठी सांची सांची झूठी करन हार अथवा बजारी कहे दलाल जो

कोऊलाख कहै अपनो मतलब नहीं छांड़त ५ ॥

जबपाहनभेबनबाहनसे उतरे बनराजय रामरढ़े। तुलसीलियशैलशिलासबसोहत सागरज्योंबलबारिबढ़े। करिकोप करैंरघुबीरकोआयसु कौतुकहीगढ़कूदिचढ़े। चतुरंगचमूपलमेंदलिकैरणरावणराड़केहाड़गढ़े ६ ॥

कविकी उक्ति जब पाहन कहे पहाड़ बन बाहन कहे नाव सम भये अर्थात् सेतुबँध्यो तापर बानर उतरि श्रीरघुनाथजी की जयजयकार करिरहे हैं गोसाईंजी कहत कि कोऊ पर्वत कोऊ शिलालिहे यथा जल सों समुद्र बाढ़त तथा बलकरि बाढ़त शोभित सब बारम्बार बानर कहत कि जब कोप करि श्रीरघुनाथजी आज्ञा करिहैं तब लीला मात्रही कूदि लंकागढ़पर चढ़ैंगे रथगज वाजि पैदलादि जो चतुरंगिनी चमू कहे सेना ताको पलमें दलिकैरांड़ कहे अकेला करिकै रावणहूं के हाड़गढ़ैंगे यह आमर्षहै ६ ॥

घनाक्षरी ॥ बिपुलबिशालबिकराल कपिभालुमानों कालबहुवेषधरेधाये कियेकरषा। लियेशिलाशैलसालताल

ओतमालतोरि तोयतोयनिधिपुरकोस मात्रहरषा। दुरोदिसाकुंजरकमठकोल कलमलेडोलेधराधरधारिधराधरधरषा। तुलसीतमकिचले राघवकीशपथकरै कोकरैअटककपिकटककअमरषा ७॥

कविकी उक्ति बिपुल कहे बहुत बिशाल कहीबड़े बिकराल कहो भयंकर कपि भालु कर्षा कहे क्रोध किये मानों बहुत बेष धरे काल धावत भये कोऊ शिला कोऊ पर्वत कोऊ साल कहे सांखूको वृक्ष कोऊतार तमाला द तोरिलैके तोयनिधि जो समुद्र ताको तोपे अर्थात् सेतु बांधि लिये सो देखि देवतन को समाज हर्षित भयो जबकपिसेनाचली तासमय दिग्कुञ्जर डगमगाय उठे कच्छप बाराह कलमले कहे अंगचलितभये धराधर जोपर्बत धारिकहे समूह सुमेरादिते भूमि सहित डोलि उठे पुनः धराधर जो शेष ते धर्षा कहे दबायगये गोसाईं जी कहत कि श्रीरघुनाथजी को शपथ करि तमकि कहे सरोष ह्वै चले ऐसो कपि कटककअमर्षा कहे बल बीरता के भरेतिनको कौन ऐसाबीर है जो अटक इ सके ७॥

आयेशुकसारणबोलायेतेकहनलागेपुलकशरीरसेनाकरतफहमही। महाबली

बानरबिशालभालु कालसेकरालहै रहे कहांसमाहिंगेकहामही । हँस्योदश कंधरघुनाथकोप्रतापसुनि तुलसीदुरावै मुखसूखतसहमही । रामकेबिरोधबुरो बिधिहरिहरहू कोसबकोभलोहैराजारा मकेरहमही ८ ॥

बानर सेनाको शुकसारन आये तिनको बोलाय रावण पूछेउ तब कहनलगे ता समय फहमही कहे कपिसेना सहित श्रीरघुनाथ जी की सुरति करि प्रेम ते पुलकांग ह्वै कहत कि महाबली बानर बिशाल कहु बड़े भारी अरु स्वच कालसम करालहैं ते कहां रहेहैं अरु कौनी भूमिमें अँबाहिंगे ऐसो प्रतापश्रीरघुनाथजी को सुनिसहमि कहे डेराइकै मुखसूखि गयो ताके दुराबबे हेतु रावण हँसत भयो कविकी उक्ति कि श्रीरघुनाथजी के बिरोधे कही आज्ञाप्रतिकूल करिबेते बुरोहै ताको भला करिबेको और को को कहै बिधिहरि हरहूको है जो भलाई करिसकै यथा ॥ रामबध्योनशक्य:स्यात् रक्षितुंसुर सत्तमै:ब्रह्मरुद्रेन्द्रसंज्ञैश्चत्रैलोक्यप्रभुभिस्त्रिभि: ॥ अथवा बिधिहरिहरहूको ह्वैकै श्रीरघुनाथजी को बिरोध करै ताको बुरोहै तहां रावण ब्रह्माको प्रपौत्र बरदानो है सो बिरोध करि बंशसमेत नाश होत अरु विष्णु

को अवतार परशुरामजी बचन बिरोध कियो सो पराजयको प्राप्तभये अरु सतीजी शिवजीकी बामांगोपरीक्षा मात्र बिरोधकरे तिनको हाल रामायण में प्रसिद्धहै तातेराज रामके रहम किये सबकोभला है८ ॥

आयोआयोआयोसोईबानरबहोरिभयोशोरचहुँओरलंकाआयेयुवराजके । एककाढैसौजसकबौजकरैकहाकैहैपाचभईमहाशोचसुभटसमाजके । गाज्योकपिराजरघुराजकीशपथकरिमूंदेकानयातुधानमानोंगाजेगाजके । सहीमसुखातबातजातकसुरतिकरिलवाज्योंलुकातुलसीझपेटेबाजके ९ ॥

कविकी उक्ति श्रीरघुनाथजी की आज्ञा ते युवराज अंगदजी आये देखिसभीत ह्वै राक्षस कहत कि जाने लंकादाह कियो सोई कपिफेरि आयो आयो इत्यादि शब्दको बड़ोशोर लंकामें होत भयो कोऊ काढ़त सौज कहे सामग्री घरते बाहर धरत एक धाये धाये फिरत कि अब काह होइगो अजितवीर आयो तौ पांचकहे बुराई भई यह समुझि सुभटन की समाजमें महाशोच भयो ताही समय कपिराज अंगदजी श्रीरामचन्द्र की शपथ कहे दुहाई दैगर्जतभयो मानों वज्रपात ऐसो घोर शब्द सुनि यातु-

धान राक्षसकान मूंदिलिये गोसाईंजी कहत कि बात जात जो हनुमानजी तिनको सुरतिकरि सहमिकहे डेरायके तन सूखत जातराक्षस कैसे लुकानेजैसे बाजके झपेटे लवा बटेर पक्षी लुकात इहां भयानक रस है ९ ॥

तुलसीसबलरघुबीरजीकोबालिसुतवाहिनगनतबातकहतकरेरीसी।बखशीशईशजीकीखीशहोतदेखियत रिसकाहेलागतकहतहैंमैंतेरीसी । चढ़िगढ़मढ़दृढ़कोटकेकंगूरेकोपि नेकधकादेहैंढैहैढेलनकीढेरीसी। सुनुदशमाथनाथसाथकेहमारेकपिहाथलंका लाइहैतोरहैगीहथेरीसी १०

गोसाईंजी कहत कि श्रीरघुवीर जीको बलसहित बालिसुत अर्थात् एक तौ रावणको कांख चापनहार बालि ताको पुत्र दूसरे रघुनाथजीके बलसहिततातें अंगद वाहि रावणको नहीं गनत तातें जो बात कहत सो करेरी सी कहत कि ईश जो शिव जी तिनकी बखशीश दीन्ही तुम्हारी सब संपदाहै ताको खीश कहे नाशहोत देखत हौं सो मेरे मन ते होत कि तेरी संपदा बनीरहै तातें तेरी ऐसी बात कहतहौं तामें तेरेरिस काहेको लागतहै हे

रावण श्रीरघुनाथजी के साथके जे हमारे कपि हैं ते तुम्हारे गढ़पर चढ़िके मढ़ जो मन्दिर दृढ़ कहे पोढ़े जे कोटके कंगूराहैं तिनमें कोपकरि नेक कहे थोरहू धक्का देहिंगे तौ ढेलन कीसी ढेरी ढहिपरैंगी जो लंकामें हाथ लगाइहैं तौ हथेरी कहे हाथे की गादीसी सचिक्कन चिन्ह रहित लंका होइगी ताते अबहीं कुशल है १० ॥

दूषणविराधखरत्रिशिराकबंधबधेतालऊबिशालबेधेकौतुकहैकालिको। एकहीबिशिखबशभयेबीरबांकुरेसोतोहूहैबिदितबलमहाबलीबालिको। तुलसीकहतहितमानतननेकुशंकमेरोकहाजैहैफलपैहैतूकुचालिको। बीरकरिकेशरीकुठारपानिमानिहारिलेरीकहाचलीबूड़तोसेगनेघालिको ११ ॥

खर दूषण त्रिशिरा विराध कबंधादि राक्षसन को सहजही जाने बधे अरु सात वृक्ष तालके विशाल कहे बड़े भारी तिनको एक बाणते बेधे इत्यादि कौतुक काल्हि कहे थोरे दिनको है अरु महाबली बालि जाको बल तुमहूंको विदित है भाव छः महीना कांखमें रहेहौ ऐसो बांकुरो वीर सो एकबाणके बश प्राणनाश भये अंगदजी कहत हैं रावण

हम तेरो हित कहतेहैं औ तू नेकहूशंका नहींमानत तौ हमरो क्या बिगरैगो तू अपनो कुचाल को फल पावैगो काहेते तेरी क्याचालीहै तुम ऐसेअनेकन सहस्राबाहु आदिकन को घालि कै नाशकर्ता ऐसे परशुराम जे वीररूपो हाथिनके सिंह तेऊ श्रीरघुनाथजी के प्रताप प्रवाहमें डूबे ताते हारिमानिश रण भये तहां तू क्या है ११ ॥

सवैया ॥ तोसोंकहौंदशकंधररेरघुनाथ विरोधनकीजियबौरे । बालिबलीखरदूषणाऔरअनेकगिरेजेजेभीतिमेंदौरे । ऐसियहालभईतोहिंको नतौलैमिलुसीयचहैसुखजौरे । रामकेरोषनराखिसकैतुलसीविधिश्रीपतिशंकरसौरे १२ ॥

अंगद बोले कि रे दशकन्धरबावरे श्रीरघुनाथजी सों विरोध न कीजिये बावरा याते कहे कि बावरा न अपरकी सुनैन आपुको कहिबेकी गतिहै संज्ञाते कहत समुझत सोसंज्ञा देखावत कि बालि ऐसोबली और खर दूषणादि और सुबाहु मारीच कबंध विराधादि जे जे शरणागत भूमि त्यागि अभिमान भीतिपर मन दौराये ते गिरे भावमान भंगह्वै आखिर शरणागत पद भूमिपै आये तैसेहाल तेरो भई तौ क्यों मानभंग को दुख सहैगो जो सहज सुख

चहुतौ श्रीजानकी जीको लैकै श्रीरघुनाथ जी को मिलि शरणागतहो जो कहौ कि मैसापराधहौं ताको कहत कि रामके रोष न शरणागतपै श्रीरघुनाथ जी के रोषनहीं है ताते शरण में राखिसकैंगे कौन विधिते जाविधि तुलसीको श्रीपति राखे भाव दैत्य को स्त्रीहै ताको अंगीकार कै महापावन कीन पुनः जाविधि शंकरशव कहे मृतक कपालादि अंगीकार कै पावनकरे तैसे तोको श्रीरघुनाथ जी राखिहैं अथवा जो शरणागत नजाइगो तौ श्रीरघुनाथ जी के रोषकिहे पर ब्रह्मा विष्णु शंकर ॥ सौकहे सैकर नतोको नहीं राखिसकैंगे यथा हनुमन्नाटके ब्रह्मा-स्वयंभूश्चतुराननो वाइन्द्रोमहेन्द्रासुरनायकोवा । रुद्र स्त्रिनेत्रस्त्रिपुरांतकोवा त्रातुंनशक्तायुधिरामवध्यम् १२॥

तूरजनीचरनाथमहारघुनाथकेसेवक कोजनहौं । बलवानहैस्वानगलीअपनी तोहिंलाजनगालबजावतसोहैं । बीस भुजादसशीशहरौंनडरौं प्रभुआयसुभंग तेजौहौं । खेतमेंकेहरिज्यौंगजराजदलौं दलबालिकोबालकतौहौं १३ ॥

अंगदजी कहत कि एकतौ निशाचर जातिहोस-बल तिनको नायकहे राजा ताहूमें महाकहे राजन को राजाहै अरु मैं श्रीरघुनाथके सेवक सुग्रीव को

जनहौं यथा श्वान जो कुत्ता अपनी गलीमें बल-
वान् होत तैसे तू आपने घरमें बैठे सौंहौ कहे हमा
रेसामने गाल बजावत तोको लाजनहीं लागत अरु
मैं तेरे घरमेंहौं दूसरे प्रभुकी आज्ञा नहीं है ताते
डरत हौं अरु प्रभु आयसु भंगते जो हौंनाडरौं तौ
तेरे बीसभुजा दशौ शीशनको हरौं कहे तोरिडारौं
रण खेतमें यथा सिंह गजराजन को दलत तैसे
तुम्हारे दलको मैं दलौं तौ बालिको बालकहौं १३ ॥

कोशलराजकेकाजहौंआजुत्रिकूटउ
पारिलैबारिधिबोरौं । महाभुजदण्डद्वै
अंडकटाहचपेटकेचोटचटाकदैफोरौं ।
आयसुभंगतेजोनडरोंसबमींजि सभासद
शोणितघोरौं । बालिकोबालकजोतुल
सीदशहूमुखकेरणमेंरदतोरौं १४ ॥

अंगद कहत कि कोलशराज जो श्रीरघुनाथ जी
तिनके कार्य हेत आजु मैं त्रिकूट जो लंका ताको
उचारिकै समुद्रमें बोरिडारौं तामें परिश्रम नहींका-
हेते महाबलके भरे मेरे जो द्वै भुजदण्ड ताकीच-
पेटाकी चोट सो अण्डकटाह जो ब्रह्माण्ड कोश
ताको चटाकदै फोरि डारों तो लंका क्या है जो
प्रभु आयसु भंगको न डरों तो हे रावण तुम्हारी
सभासद कहे सम्पूर्णको मींजिकै शोणित समुद्रमें

घोरों अरु समरभूमि में रावणके दशौमुख के दांत तोरि डारों तौ बालिको बालक कहावों यामें उत्कर्ष है १४ ॥

अतिकोपसोंरोप्योहैपांवसभासबलंक संकितभयोरमचा। तमकेघननादसेबीर प्रचारिकेहारिनिशाचरसैनपचा। नटरैपगभेरुहुतेगरुभो सोमनोंमहिसंगविरंचिरचा। तुलसीसबशूरसराहतहैंजगमें बलशालिहैबालिबचा १५ ॥

जा समय अंगदजी अत्यन्त कोप करिकै सभामें पाँव रोपत भयो ता समय सब लंका भरेमें राक्षस शंका सहित भये ताते शोर कहे हल्ला मचि रहाहै पाँवको टारिबे हेत मेघनाद ऐसे बीर तमके सरोष ह्वै प्रचारिकहे ललकारि कै उठावतभे बलकरिकै पचिमरे न उठा तब सब हारिगये पाँव नहीं टरत सुमेरुगिरिते गरू भयो मानों भूमिके साथै ब्रह्माजी ने रचोहै गोसाईं जी कहत कि सबशूर सराहत कि बलसालि कहे कठिन बलवान् एक बालिकोपुत्रहै१५ ॥

घनाक्षरी ॥ रोप्येोपांवपैजकैबिचारि रघुबीरबलालागेभटसिमिटिननेकुटसकतु है। तज्योधीरधरणीधरणीधरधसकत

धराधरधीरभारसहिनसकतुहैं। महाबली बालिकोदबतदलकतुभूमि तुलसीउछलिसिंधुमेरुमसकतुहै । कमठकठिनपीठिघट्ठापरोमंदरको आयोसोईकामपैकरेजाकसकतुहै १६ ॥

भक्तन के सदा प्रतिज्ञापाल हैं ऐसा बल श्री-रघुनाथजीको बिचारि प्रणकरि अंगदजी पांवरोपत भये ताके उठाइबे हेतु सब योधा बटुरे उठावन लगे पैनेकु नहीं टसकत अर्त्थात् तनकु नहीं भुईं छांड़त पाँवको महा भार नहीं सहाजात ताते धरणी धीर्य्यको छांड़िदियो ताते धराधर जो पर्वत ते भूमिमें धसकि गये धराधर जो शेषजी धीर्य्यमान तेऊ भार नहीं सहि सकत काहेते महाबली बालिको पुत्र जा समय पाँउ दाब्यो तासमय भूमि दलकि आई प्रथम धीर्य्य छांड़िबो कहेताकी दशा कहत कि दलकि आई याते भूमिको नाम द्वै बार कहे समुद्रसों जल उछलत अरु सुमेरु गिरि मसकत कहे फाटत जात कमठ जो कच्छप तिनकी पीठिपर घेठा मंदराचल को परिगयो रहै सिंधु मथन समय सोई आजु कामआयो भाव पीठि फाटि नहीं गई परन्तु भारते करेजा कसकत कहे पिरात है १६ ॥

झूलना ॥ कनकगिरिशृङ्गचढ़िदेखि

मर्कटकटककवदतमंदोदरीपरमभीता। सहसभुजमत्तगजराजरणकेशरी परशुधरगर्ब जेहिदेखिबीत्ता। दासतुलसीसमरसबल कोशलधनीख्यालहीं बालिबलशालि जीत्ता। रे कंततृणदंतगहिशरणश्रीरामकहि अजहुंयहिभांतिलैसौंपुसीता १७॥

लंका विषे कनककी पर्वत है ताके शृंगपै चढ़िकै बानरनकी समूह सेना देखि परम भयातुर ह्वै मंदोदरी रावण सों कहत कि देखो सहस बाहु ऐसोवीर जो बीरता मद में मतवारे हाथी सम यावत् बीर तिनमें राजा ता सहसबाहु गजराज पै रण में सिंह सम ह्वै नाश करै ऐसे जो परशुराम तिनको गर्ब जो अहंकार जिनके देखतही बीता कहे नाश भयो ऐसे श्री रघुनाथ जी समर में बलवान् हैं जे बालि ऐसे कठिन बली को ख्यालही एक बाणते जीति लिये ऐसा जानिकै हे कन्त तृणजो घास ताकोदांत तरे दाबि गऊ सम ह्वै ऐसे दीन बचन कहौकि हे श्री राम शरणपाल मैं आपकी शरणागत हौं मेरे अपराध क्षमाकरो या भांति ते आजहू श्री जानकी जीको लैकै श्री रघुनाथजी को सौंपौ तो कल्याणहै पैंतीस मात्रा झूलना छंद है १७ ॥

रेनीचमारीचविचलाइहतिताडुका

भंजिशिवचापसुखसबहिदीन्ह्यौ। सहस दशचारिखलसहितखरदूषणहियठैयम धामतैंतऊनचीन्ह्यौ। मैंजुकहुकंतसुनुमं तभगवन्तसोंविमुखह्वैबालिफलकौनली न्ह्यौ। बीसभुजशीशदशखीशगयेतबहिं जबईशकेईशसोंबैरकीन्ह्यौ १८ ॥

मन्दोदरी कहत कि रे कुमार्गी नीच सुनु जे श्री रघुनाथजी मारीचको बिचलाइ कहे बाणसों उड़ाय सिंधुपर डारेउ सुबाहु ताडुका कोमारि मुनि मख राखेउ पुनः महादेवजी को धनुष तोरि सब लोकन को सुख दीन्हेउँ चौदह हजार खल जो राक्षस तिन सहित खरदूषणको यम धाम कहे कालकेमुख में पठाये ऐसा हाल देखि तबहूं तैं श्री रघुनाथ जी को नहीं चीन्हेउ हे कन्त जोमैं कहौं सो मत सुन श्री रघुनाथजी सों बिमुख न हो काहेते बालि वि- मुख ह्वैकै कौन फल लीन्हेउ तुरत प्राण नाश भये तैसे तेरे बीसों भुजा दशौ शीश तबहीं खीश कहे नाश भयो जादिन ईशनं के ईश जो रघुनाथ जी तिनसों बैर कीन्हेउ यामें रामायण भरे को प्रताप सूक्ष्म रीति ते है १८ ॥

बालिदलिकालिह जलयानपाषान कियकंतभगवन्ततैंतऊनचीन्हे। विपुल

विकरालभटभालुकपिकालसे संगतरुतुं
गगिरिशृंगलीन्हे । आइगेकोसलाधीश
तुलसीसाजेहिछत्रमिसमौलिदशदूरिकी
न्हे ईशबकशीशजानिखीशकरुईशसुनु
अजहुंकुलकुशलबैरैंहिदीन्हे १९ ॥

जाने बालि ऐसो महाबलीको कालिहहीमारे अरु
नाव सम पाषाण करि सेतु बांधे ऐसे भगवन्त श्रीर-
घुनाथजी षट् भाग पूर्णहैं ऐश्वर्य १ धर्म २ यशर्यौ
श्री ४ वैराग्य ५ मोक्ष ६ महाराम यणे ॥ ऐश्व ३
नचधर्मेणयशसाचश्रियैवच । वैराग्यमोक्षषटकोणै:
संजातोभगवान्हरि: १ पोषणंभरणाधारं शरण्य सर्व
व्यापकं । कारुण्यं षटभि:पूर्णं रामस्तुभगवान्स्वयं २।
तिनको हेकन्त तैं तबहूं नहीं चीन्हे भाव शरण
नहीं भये अब बहुत कराल ऋच्छ भट अरु कालस
मबानर ते तुंग कहे ऊंचे तरु साखू तारादिके वृक्ष
पहाड़नके शृंग लीन्हे ऐसी सेन संगमें लीन्हे श्रीर-
घुनाथजी आइ गये जे सुबेलही परते छत्र के मिस
कहे बहाने ते तुम्हारे दशौशीश दूरि कीन्हे भाव
छत्र मुकुट ताटंक बाणते भूमिमें गिराइ दियेहौ ल
काहूने नहीं जान्यो इत्यादि आपनो प्रतापजनाय
तुमको शिक्षा दईहै ताते ईश जो महादेव तिनकी
दई बकशीश कुशल सम्पदा ताको खीश

कहे नाथ जनि करु ईश कहे स्वामी सुनु अजहूंश्री जानकीजी को दीन्हे कुलको कुशल है नाहीं सब नाश होइँगे १९ ॥

जाकेसैनसमूहकपिकोगनैअर्बुदैमहाबलवीरहनुमानजानो । भूलिहैदशादिशाशीशपुनिडोलिहैकोपि रघुनाथजबबाणतानो । बालिहूगर्वजियमाहिंऐसोकियोमारिदहपटकियोयमकिघानी । कहतमंदोदरीसुनहि रावणमतोवेगिलेदेहिवैदेहिरानी २० ॥

जिन श्रीरघुनाथजी के संग सेना समूहहै तिन कपिनको कौन गनि सकै तिनमें से एक हनुमान् जी को तुमने जानोहै तिनकी समानवाले महाबलीबीर अर्बुदन हैं जासमय श्रीरघुनाथ जी कोप करिकै धनुष चढ़ाइ बाणतानैंगे ता समय अभिमान न रहेगो व्याकुलता ते दशौ दिशि भूलिहै भाव दिशा भ्रम ह्वै जाइगो पुनः तुम्हारे शीश खण्डित ह्वै भूमिपै डोलिहैं तुम्हारहो ऐसा गर्व बालिहू आपने जीमें कियो रहे भाव वर प्रसाद अपनाको अजीत माने रहे ताको यमकी घानीकहे कालमुख कोल्हू में मानरूप तिलनको डारि मारि दहपट कहे मान को पेरि अज्ञान खरीसों अपनो सनेहरूप तेलकाढ़ि

लियो मंदोदरी कहत कि हे रावण मेरोमतो सुनु श्रीजानकी जीको लैकै जल्दी श्रीरघुनाथजी को देहु यामें कल्याण है २० ॥

गहनउजारिपुरजारिसुतमारितवकु-शलगोकीशवरवैरिजाको । दूसरोदूतप्र-णरोपिकोपेउसभाखर्वकियो सर्वकोरा-बंथाको । दासतुलसीसभयवदतमयनंदि नीमंदमतिकंतसुनुमंतम्हाको । तौलौंसि लुवेणिनहिंजौलौं रणरोषभयोदाशरथि वीरविरदैतबांको २१

जाको दूत कीश हनुमान्जी श्रुबैरी भाव प्रथम वाकी पूछ फूंके तापै तुम्हारो नगर जारेउ याते श्रु वैरी ताने तुम्हारो बन उजारि सुत अक्षय कुमार को मारिनगर जारि तुम्हारे देखत कुशल सहित चलागयो पुनः दूसरो दूत अंगद सभामें कोप करि टारिबेकी प्रतिज्ञाकरि पांव रोप्यो आपने बलकेआगे तुम सहित सब समाजको बल खर्व कहे छोटाकरि दियो ताते सबको गर्व थाको कहे मानमर्दन भयो गोसाईंजी कहत कि ऐसा समुझि भय सहितम-न्दोदरी कहत कि हे मतिमन्द कन्त म्हाकोकहे मेरो मतसुनुबिरद जोबाणाबांकोवालीवीरश्रीरघुनाथ जी जौलौंरणमें क्रोध नहीं करतहैं तबलौं श्रीजान-

कीजी को लैके जल्दी मिलौ तो कल्याण है २१ ॥

घनाक्षरी ॥ काननउजारिग्रक्षमारि धारिधूरिकीन्हींनगरप्रजारयोसो बिलो-कयौबलकीशको । तुम्हैंविद्यमानयातुधानमराडलीमेंकपिकोपि रोंप्योपांउसोप्रभावतुलसीशको । कंतसुनुमंतकुलअंत कियअंतहानिहातो कीजेहीयतेभरोसोभुजबीशको । तौलौं मिलुवेगिजौलौं चापनचढ़ायोरामरोषिबाण काढ्यौनदलैयादशशीश को २२ ॥

अशोक वन उजारि अक्षयकुमार को मारि राक्षसन की धारि कहे सेना ताको मींजि धूरि में मिलाय दीन्हीं नगर को जराय दियो सोतौ कीश हनुमान्जी को बल भलो भांति देख्यो पुनः विद्य-मान कहे देखततुम्हारे राक्षस मराडलीमें कपि अंगद कोप करि पांउ रोंप्यो काहूको टारो न टरो इत्यादि प्रभाव श्री रघुनाथजी को है ताते मेरा मत सुनु हे कन्त तासों बैर करि कुल को अन्त कहे नाशकराय अन्त में हानि विचारि आपने बीसौ भुजन को भरोसो हातो कहे नाश कोजे भाव भुज बल को भरोसो उर में न राखिये जब तक श्री रघुनाथ जो

धनुष को नहीं चढ़ायो अरु तुम्हारे दशौ शीशनके दलन हारे बाणन को क्रोध करि तरकस ते नहीं काढ्यो तबलौं जल्दी मिलु यामें उबार है २२॥

पवनकोपूतदेखौ दूतबीरबाँकुरोजी बंकगढ़लंकसोढकाढ केलिढाहिगो। बालिबलशालिकोसो कालिहदापदलि कोपिरोंप्यौपाँउचपरिचमूको चाउचा हिगो। सोईरघुनाथकपिसाथपाथ ना थबाँधिआयेनाथभागेते खिरिरखेहखा हिगो। तुलसीगरबतजिमिलिबेकोसा जसाजिदेहसीयनतोपिय पाइमालजा हिगो २३॥

मन्दोदरी कहत कि अपने मन में विचारि देखौ तौ श्री रघुनाथजी को दूत बांकुरो वीर पवन पूत श्री हनुमान्जी सो लङ्का ऐसो बांकागढ़को ढका कहे धक्कनसो ढकेलिकै ढाहिकहे गिरायगयो कठिन बलवान् अंगद कान्हिहो दापदर्प अभिमान तुम्हारो दलि कहे नाशकरे जा समय चपरि कहे बिलगाइकै कोप करि सभा में पाउँरोंप्यौ कोऊ न टारि सक्यो तौहिते सब तुम्हारी चमू जो सेना ताको चाउ जो उत्साह युद्ध करिबेको सो चाहि कहे देखिगयो कि

अब काहू राक्षस में युद्धको हर्ष नहीं रह्यो व उत्साह जो चाही सो गो कहे जात रही ऐसे जाके दूत सोई श्री रघुनाथजी कपि सेना साथ लिहे पाथनाथ जो समुद्र ताको बांधि उतरिकै लङ्का निकट आइ गये जो भागौगे तौ खिरिर कहे खिरफति क्लेश में परे खेह जो माटी ताको खात फिरोगे भाव बैठनेका ठिकाना न पावहु गे तातें गर्ब त्यागि मिलिबे की साज कहे दांते तृण दाबि हाथ बांधि मणि हेम गजबाजि फूल फल लैकै शुद्ध मन आर्त्त ह्वै कै श्री रघुनाथजी को मिलिकै जानकी जीको देहु नाहीं तो हे पति पाइमाल कहे मर्द्दित ह्वै परिवार सहित धूरिमें मिलहुगे २३ ॥

उदधिअपारउतरतनहिंलागीबारकेश रीकुमारसोअदराडकैसोडांड़िगो । बाटि काउजारिअक्षरक्षकनिमारिभटभारीभा रीरावरेकेचाउरसोंकांड़िगो। तुलसीति हारे विद्यमानयुवराज आजुकोपिपाँव रोंप्योसबकूंछकैकैछांड़िगो। कहेकौन लाजपियअजहूंनआये बाजसहितसमा जगढ़रांड़कैसोभांड़िगो २४ ॥

अपार समुद्र उतरत बारनहीं लागो हनुमान्जी आइके तुमकैसे अदराडरहो तिनको डांड़िकै चलो

गयो सो कहत कि अशोक बाटिका उजारि अक्षय-
कुमार सहित राक्षस रखवारनको मारि जे भारीभारी
योधा रहे तिनको चाउरऐसो मुष्टिका मूसरसों कांड़िकै
जातभयो आजुही भाव जो दही अंगद कांपि कै
पांवरोप्यो तुम्हारे देखत सब समाज को दल कैसे
छूंछ करिकै छांड़ि गयो काहू में न बल ठहरा जो
पांव उठाय सके ताते राक्षसन को समाज सहित
तुम्हारो गढ़ रांड़ विनापची कैसोभांड़िकै चलो गयो
ताहूपर बाज कहे त्यागे नहीं अभिमान अजहूं गाल
बजावत हौ तो हे पिय तुम्हारे कहे सुनेकी लाज
नहींहै भाव प्रभु शरण अबहीं नहीं भयो २४ ॥

जाकेरोषदुसहत्रिदोषदाहदूरिकीन्हे
पैयतनक्षत्रीखोजखोजत खलक में ।
माहिषमतीकोनाथ सहसीसहस्र बाहु
समरसमर्थनाथहेरियेहलकमें । सहित
समाजमहाराजसोजहाजराज बूड़िगयो
जाकेबलबारिधिछलकमें । टूटतपिनाक
केमनाकबामरामसे तेनाकबिनुभयेभृगु-
नायक पलकमें २५ ॥

त्रिदोष कहे सन्निपातकी दाह जाके होत ताके
प्राण तुरन्त दूरि होत तैसे जो परशुरामको रोष जो
क्रोधरूप त्रिदोष की दाह दुसह जो सहि न जाइ

ताते खलक जो संसार रूप देह में प्राणरूप चत्रिन को दूरि कीन्हे ताते खोजे कहे ढूंढ़े ते चत्रिन को खोज चिह्न नहीं पाइयतहै भाव चत्रिनको मिटाइ दिये नहीं रहे अरु महिष्मती नगरी को नायजो साहसी पराक्रमी सहस्रबाहु समर में समर्थ महा बली मन्दोदरी कहत रावण ते हे नाथ हलक कहे कण्ठ भीतर की मनोमय जो बाणी है तामें हेरि कहे बिचारि देखिये भाव सहस्रबाहु ऐसा बलीरहे सो तुमहूं को पकरि कै बांधिराख्यो सोई महाराज राजन को राजा सहस्रबाहु अपनो समाज सहित बल गर्व रूप जहाज राज कहे भारी जहाज सोऊ जा परशुराम के बल रूप समुद्र के छलक में बूड़ि गयो भाव सेना सहित नाश भयो तेई परशुराम जनकपुर में पिनाक धनुष के टूटत में नेकु कहे थोरी बामता टेढ़ाई श्री रघुनाथजी सों कीन्हे तेई परशुराम पलक भरे में बिना नाकके भये भाव मान भंग भयो २५ ॥

कीन्हीछोनीछत्रीबिनुछोनिपछपन
हारकठिनकुठारपानिबीरबानिजानिकै।
परमकृपालजोनृपाल लोकपालनपैजब
धनुहाईह्वैहैमन अनुमानिकै। नाकमें
पिनाकमिस बामताबिलोकिरामरो-

क्योपरलोकलोकभरीभ्रमभानिकै ।नाइ दशमाथमहिजोरिबीसहाथपियमिलि येपैनाथरघुनाथपहिंचानिकै २६ ॥

पूर्वकवित्त विषेहै कि भृगुनायक बिना नाक भये ताको व्याख्या कहत कि छौनिप जो राजा तिनके छपनि हार कहे नाशनहार परशुराम जीने छत्रिनको नाश करि बिन छत्रिय की भूमि करिदिये ऐसे कुठारपाणि कठिन वीरताकी बानि जो स्वभाव ताको जानि कहे विचारि कै भाव अस्त्रधारी ह्वै वीरता करि निर्दयी ह्वै जीवहिंसा यह धर्म ब्राह्मण को नहीं है तौ परशुराम वेद विरुद्ध धर्म करते हैं याते दण्ड देबे योग्य हैं ऐसा जानि यह निश्चय कियो कि आगे जनकपुर में इनको दण्ड देहुँगे ताको कहत कि जो लोकपालन पर परम कृपा करनहार नृपाल जो श्री रघुनाथजो हैं ते मन में यह अनुमाने कि जब जनकपुर में शिवको धनु जो पिनाक ताको हाई कहे टूटैगो तब परशुराम आइ कै वीरता को अभिमान सहित कुबचन हमको कहैं गे अरु हम साभिप्राय बचन कसि समुझावैंगे कि वीरता धर्म तुम्हारा नहीं है तुम बृथा अस्त्रधारण किहे हौ जब न मानैंगे तब दण्डदेबेके पात्र आपु ह्वै जाइँगे तब दंड देइँगे इहां नाक कहे प्रतिष्ठा अर्थात् लोकप्रबाद ते लोक में मान बड़ाई को नाक

कहतेहैं सोपरशुराम में जो प्रतिष्ठाहै सो वीरताते है औ बीरता ब्राह्मण को वेद बिरुद्ध धर्महै यह बाम-ता परशुरामकी प्रतिष्ठारूप नाकमें बिलोकिकहेदेखि कै पिनाक मिसि कहे धनु तोरिबेके बहाने बार्त्ता करि बाद बढ़ायकै तब लोक में जो भारी भ्रम रहै परशुराम के किये अवतारहैं कि नहीं ताको भानि कहे नाश करिके अर्थात् परशुराम को धनुष खैंचि भ्रम मिटाय दिये पूर्ण परब्रह्म अवतार को निश्चय कराये पश्चात् परलोक कहे अव्याहत गति स्वर्ग पाताल जाबेको सामरस्तो ताको नाशकरि बिना शक्ति करिदिये (यथाबाल्मीकीये) इमांवात्वद्गतिं रामतपोबलसमार्जितं । लोकानप्रतिमान्वापिहनि-ष्यामीतिमेमतिः १ जडीकृतेतदालोकेरामेवरधनुर्द्धरे निर्वीर्यौजामदग्न्योसौरामोराममुदैक्षत २ मंदोदरी कहत रावण सों हे पिय ऐसे श्री रघुनाथ जी को पहिंचानि कै तिनके पांयन को दशौमाथ भूमि में नवाय बीसौ हाथ जोरिकै मिलिये शरण जाइये तब उबार है २६ ॥

कह्योमतमातुलविभीषणहूबारबारऔं चलपसारिपियपाँयलैलैहौंपरी।बिदित बिदेहपुरनाथभृगुनाथगतिसमयसयानी कीन्हींजैसीआइगौं परी। बायसबिराध

खरदूषणकबंध बालिबैररघुबीरकेनपूरी काहूकीपरी । कंतबीसलोचनबिलोकि येकुमंतफलख्याललंकालाई कपिरांड़ कीसीझोपड़ी २७ ॥

मातुल कहे मामा मारीच औ विभीषणहू यही मत बार बार कहे औ हे पिय महूं अंचल पसारि बार बार तुम्हारे पांय लैलै परी कि श्री रघुनाथजी सों विरोध न करी काहेते राजनीतिहू में है कि अपनो असमय बिचारि सबल शत्रुको मिलि चलिये ताको दृष्टांत देखावत कि बिदेहपुर में भृगुनाथजी परशुराम तिनकी जैसो गतिभई सो सबको विदित है कि अपनो असमय बिचारि बचिबे की जैसी गैं आइ परी तैसी समय अनुकूल सयानी करी भाव जब बिचारि देखे कि श्री रघुनाथ जी सों हम न जीतैंगे तब अस्त्र दै शरण ह्वै विनती करी अरुजो बिमुख ह्वै हठवश शरण न आये ते नाश भये यथा जयंत बिराध खर दूषण कवंध बालि इत्यादि बैर कीन्हें रघुनाथ जी सों तिन काहूकी हठ पूरी नहींपरी तैसे अपनो जानिये कि रांड़ की झोपड़ी सम तुम्हारी लंका को ख्यालही में कपि हनुमानजी कोपकरि आगि लगाइ दई है कंत आपने कुमंत्र को फल बीसौ नेत्रन सों देखिये २७ ॥

सवैया ॥ रामसोंसाम कियेनितहै हितकोमलकाजनकीजियेटाँठे । आपनिसूझिकहौं पियबूझियेजूझबेयोगनठाहरूनाठे। नाथसुनीभृगुनाथकथाबलिबालिगयो चलिबातके साठे । भाइविभीषणजाइमिल्यो प्रभुआयपरेसुनिसायरकाँठे २८ ॥

मंदोदरी कहत कि श्री रघुनाथ जी सों साम कहे मिलापही किये सदा भला है ताते जो कार्य कोमलता ते बनै तामें टाँठे कहे कठोरता न कीजिये हे पिय आपहू मन में बूझिकै बिचारिये मैं अपनी सूझि कहे समुझते कहत हौं कि युद्धकिहे ते ठाहरू कहे ठौरही नाठे कहे नाश है ताते यह समय युद्ध करिबे योग्य नहीं है काहेते हे नाथ परशुराम की कथा प्रसिद्ध सुनो है कि शरण ह्वै आपु को बचाय गये अरु बली बालि अभिमानते आपनी बात साठे कहे पकरे रहे कि हम न मिलैंगे ते चलि गये प्राणनाश भये इत्यादि भय दिखाय अब भेद दिखावत कि तुम्हारे घर में भी फूटनि भई कितुम्हारे भाई विभीषण रघुनाथजीको मिले अरु सुनियत है कि सायर जो समुद्र ताके कांठे कहे किनारेपर प्रभु आइ परे भाव निकट आइगये २८ ॥

पालिबेकोकपि भालुचमूयमकाल करालहुकोपहरीहै। लंकसेबंकमहागढ़ दुर्गमढाहिबेदाहिबेकोकहरीहै । तीतर तोमतमीचरसेनसमीरकोसूनुबड़ोबहरी है। नाथभलोरघुनाथमिलेरजनीचरसैन हियेहहरी है २६ ॥

सुजननको रचा करिबो दुष्टनको दंड देबोदोऊ राजाको चाहो ताको कहत कि यमराज सहित कराल कालहूके कोपको हरण हार कपि ऋचन की सेना पालिबे कहो रक्षा करिबेको समर्थ है पुनः असुरनको दंड दाता कैसोंकि लंका ऐसे बंक कहे टेढ़े महादुर्गम गढ़ ढाहिबे कहे गिराइबेको अरु दाहिबे कहो फूंकि देबेको कहरी कहे कहर करनेवाले जुल्मी हैं तमीचर कहे राचसन की जो सेना तोम कहे समूह ते सब तीतर पची सम हैं तिनको नाश करिबेको समीर सूनु हनुमान्‌जीबड़ो बहरी बाज सम है ताते मंदोदरी कहत रावण सों हे नाथ श्री रघुनाथ जी के मिलिबे ते तुम्हारो भलो है काहेते जाके बूत तुम युद्ध ठान्या है सो रजनीचरन की सेना हृदय ते हहरी कहे डरते सहमि गई है २६ ॥

घनाक्षरी ॥ रोषेरणरावणबोलाये

बीरबानइत्तजानतजेरीतिसबसंयुगसमाज की । चलीचतुरंगचमूचपरिहनेनिशान सेनासराहनयोग रातिचरराजकी । तुलसीविलोकिकपि भालुकिलकतललक ललखिज्योंकंगालपातरीसुनाजकी । रामरुखनिरखिहर्ष्योहियहनुमान मानों खेलवारखोलीशीशताजबाजकी ३० ॥

इहां तक मंदोदरी के वचनन में श्री रघुनाथजी को प्रताप वर्णन जब कहे कि तुम्हारी सेना हृदय ते हहरि गई सो सुनि रावण क्रोधित ह्वै युद्धकरिबे हेत जे युद्धको बाना बांधे हैं ऐसे बीरन को बोलाये जे युद्धकी समाजकी सब रीति जानते हैं ते सब युद्ध हेत सजे हाथी घोड़ा रथ पैदलादि चतुरंगिणी सेना चपरि कहे फरचुयाइ कै चली निशान जो जुझाऊ बाजा हने कहे बजावते भये रातिचर राज जो रावण ताकी सेना तौ सराहिबे योग्य हुई है काहेते सदा युद्ध में मन बढ़े तीक्ष्ण अस्त्र धारण उछाहते चली आवत तिनको देखि कपि भालु युद्ध को हर्ष भरे किलकत अरु कैसे ललकत जैसे सुंदर अनाज की परोसी पातरी देखि कंगाल भूखा भोजन हेत धावत ता समय युद्धकरिबे को रुख रघुनाथ जी को देखि हनुमान्जी कैसे

हर्षित भये मानों खेलवार जो शिकारी ताने बाज के शीश को ताज कहे टोपी उतारि आंखी खोलि पक्षीदेखाइ छोड़ि दियो तैसे निशाचरनपै धाये३०॥

साजिकैसनाहगजगाहसउछाहदल महाबलीधायेबीरयातुधानधीरके। इहां भालुबन्दरविशालमेरुमंदरसे लियेशैल सालतोरिनीरनिधि तीरके। तुलसी तमकिताकिभिरेभारीयुद्धक्रुद्धसेनपसरा हेनिजनिजभटभीरके। रुण्डनकेभुण्ड भूमिभूमिभ्रुकरसेनाचैंसमरशुमारशूर मारेरघुबीरके ३१॥

यातुधान धीरजो रावण ताके जे महावली बीर हैं ते सनाह बखतर तनमें सजि अरु जीन गजगाह आदि घोड़न के सजि सवार ह्वै उछाह के भरे सब रन को दल आगे धावतभयो अरु इहां सुमेरु गिरि सम बिशाल ऊंचे भारी ऋच्छ बानरते नीर निधि कहे समुद्र तीरके पहाड़ औ शालादिके वृच्छ तोरि लैके तमकि के धाये अपनी जोड़ी ताकिताकि क्रोधकरि भारी भारी युद्धमें भिरे ता समयजे सेना पतिहैं ते अपनी भीरके योधन को सराहिकहे लल-कारतेभये तिनमें शुमार कहे जे गनतीवारे राक्षस जे रघुनाथजी के मारे ते शीश गिरयो धर ठाढ़ो

र हिगयो ऐसे जे शूर तिनके रुण्डन के झुंड समूह ते यथा पवन लागे तें वृक्ष झकोरत तैसे झुकरे से कहे झकोरा खाये से भूमि भूमि रण अजिर में नाचि रहे हैं ३१ ॥

सवैया ॥ तीखेतुरंगकुरंगसुरंगनिसाजि चढ़ेछटिछैलछबीले । भारीगुमानजिन्हैं मनमेंकबहूं नभयेरणमेंतनढीले । तुलसी लखिकेहरिकेहरिके झपटैपटकैसबशूर सलीले । भूमिपरभटघूमिकराहत हांकि हनेहनुमानहठीले ३२ ॥

जिन निशाचरन के मन में भारी गुमान है जिनके तन रण भूमि में कबहूं ढीले नहीं परे ऐसे छूटे जे छैल छबीले वीर हैं ते तीखे कहे तीक्ष्ण कुरंग कहे मृग सम बेगवान् सुन्दर रंग वाले तुरग जे घोड़ा तिनको साजिकैं सवार भये ते सब शूरन को लखिकै केहरि कहे केशरी ताकेपुत्र केहरि कहे सिंह सम हनुमान् हठीले सहित लीला सहज में कूदि फांदि कै हांक दैकै झपटि जिनको पटकि पटकि निशाचर भटन को हने ते घूमि घूमि गिरे भूमि परे कहरत हैं भाव छूटे छूटे बीरन को ढूंढ़िकै मारे ३२ ॥

शूरसजोयलसाजिसुवाजि सुसेलधरे

बगमेलचलेहैं ।भारीभुजाभरिभारीशरीर बलीविजयीसबभांतिभलेहैं । तुलसीजि न्हैंधायधुकैधरणीधरणी धरधौरधकान हलेहैं । तेरणतीक्षणलक्षणलाखन दानिज्योंदारिददाबिदलेहैं ३३ ॥

जे निशाचर शूर सजोइल कहे बरछा आदि के करतब में हुशियार ते सुन्दर घोड़ेन पर जीनआदि सजि सवारह्वै सेल्ल कहेबरछा सुन्दर लिहे बगमेल कहे बागै मिलाये पांति बांधे आगे धावतभये जि-नकी भुज दण्डै अरु देहैं भारी पुष्ट ताते भरी ऐसे बली औ विजयी कहे संग्राम जीतनेवाले सबभांति ते भलेहैं जिनके धाइकै चलेते धरणी जो भूमि सो धुकै कहे धकधकायके कंपितहोत औ धरणीधर जो पर्वत धौर कहे ऊंचे ते धक्कन ते हालि उठत ऐसे तीक्ष्ण निशाचर लाखन को लक्ष्णलाल कैसे दाबिकै दलिडारैयथा महादानी दान दैकै दारिदको दलि डारत इहां लक्ष्मण जी दानी दानस्थाने बाणन ते दाबिलोक दारिदसम निशाचरन को दलिडारे ३३ ॥

गहिमन्दरबन्दरभालुचलेसोमनोउन येघनसावनके ।तुलसीउतझुण्डप्रचण्ड झुके झपटैंभटजेसुरदावनके । बिरुझे

बिरदैत्य जेरखेत अरेनटरे हठिबैरबढ़ावन के। रणमारमचीउपरीउपरा भलेबीररघूपतिरावणके ३४॥

या दिश ते मन्दर जो पहाड़ तिनको गहि कै बानर भालुचले सो मानौ सावन मासके समूह मेघ उनये कही सघन छाइ गये उतते सुरदावन जो रावण ताके प्रचण्ड जो घन के समूह झुंडते झपटे दोऊ दल बिरझाय कै लड़त बिरुदैत कहे जे बीरता को बाना बांधे अरु हठि करि बैर बढ़ावन हार ते रण खेत में अड़े हैं टरते नहीं काहे ते भले हैं वीर रघुपति औ रावणके ताते उपरी उपरा कहे हांकी हांका करत आपनी जीति हेत रणभूमि में महा मार मचि रही है ३४॥

शरतोमरसेलसमूहपँवारत मारतवीर निशाचरके। इततेतरुताल तमालचले खरखण्डप्रचण्डमहीधरके। तुलसीकरिकेहरिनादभिरे भटखड्गखगेखपुवाखरके। नखदंतनसोंभुजदण्डबिहंडतमुण्डसोंमुण्डपरेझरके ३५॥

निशाचर रावण के जे वीर हैं ते शर जो बाण तोमर बरछा सेल जो सांगादि पँवारत कहे दूरिते

चलावत अरु गदा तरवारि त्रिशूलादि मारत हैं इत बानरन की सेना ते ताल तमालादि वृक्ष खर कहे तीक्ष्ण प्रचण्ड कहे भारी खण्ड कहे शिला महीधर जो पर्वतनके समूह चलत भये गोसाईं जी कहत कि जा समय केहरि कहे सिंहनाद करि भट भिरे खड्ग कहे तरवारि के खगे कहे लागेते खपुवा जो कादर ते खरके कहे भागे नखन सों दांतन सों भुजदण्ड बिहंडत कहे काटि डारत मूड़ तोरि बहाय मारेते मूड़ झरि टूटि भूमि में परतहैं ३५ ॥

रजनीचरमत्तगयंदघटा बिघटैमृगरा जकेसाजलरैं । झपटैभटकोटिमहीपट कैगरजैरघुवीरकीसौंहकरैं । तुलसीउत हांकदशाननदेतअचेतभेबीरकोधीरधरैं। बिरुझोरणमारुतकोबिरुदैत्य जोकाल हुकालकोबूझपरैं ३६ ॥

निशाचर मत्त हाथिनकी घटा कहे समूह बिघटै कहे नाश करिबे हेत हनुमानजी मृगराज कहे सिंहके साजते लड़ते हैं सो कहत कि श्रीरघुनाथजी की सौगन्द करि गर्जि कै झपटि झपटि कोटिन निशाचर भटन को भूमि में पटकत हैं गोसाईं जी कहत कि उत रावण हांकदेत ललकारत सुनि कौन ऐसो वीर है जो धीर्य धरिसकै ताते सब वानर वीर

अचेत भये ता समय बिरदवालो बीर मारुत को पुत्र जी कालहूको काल देखिपरत सो रणभूमि में बिरझाय के युद्ध करत है इहां मृगराज के साज में निशंकता कहे रघुवीरकी सौंह में हृदयमें सबलता करे गर्जिबे में विभव बिरझाबे में हठ ३६॥

जेरजनीचरबीरबिशालकरालबिलोकतकालनखाये। तेरणारोरकपीशकिशोरबड़ेबरजोरपरेफलपाये। लूमलपेटिअकाशनिहारिके हाँकिहठीहनुमानचलाये। सूखिगेगातचलेनभजात परे भ्रमबातनभूतलआये ३७॥

जे निशाचर वीर विशाल कहे बड़े भारी जिन की करालता बिलोकि के काल नहीं खाइ सक्यो इहां करालता देहकी नहींसभावित होत इहां इष्ट देवन सों बर पायबे की करालता जानिये यथा विराध अस्त्र करि न मरो तब रघुनाथ जी जियत ही भूमि में गाड़ि लिये बालमीकीमें प्रसिद्धहै यथा मकराक्ष लक्ष्मणजी को पकरि लिये अस्त्र सों नहीं मरयो तब आपनो देह लक्ष्मण जी बढ़ाय दियो मकराक्ष के अंग फाटि गये यथा मेघनाद ऐसे जे निशाचर तपस्या करि इष्टदेवन सों तपको फलपाये ते काटे मारे पटके नहीं मारिसके य तेबड़े बरजोर

रहे तेई रोर कहे कठिन रण में कपीश केशरी कि-
शोरके संमुख परे ते मारे परके न मरे तौ हनुमान्
हठी जो बिना मारे छोड़ै तिनको लूम जो पूछ
तामें लपेटि के आकाश निहारि भावदेव बिमान
में न लागि जाइ सून आकाश देखि हांकि कहे
ललकारि के तेई निशाचरन को आकाशको चलाय
दिये ते भ्रम बात में परे सदा चलेजात आकाश में
घुमावन हार पवन में परे सदैव घूमत मरिकै देहैं
सूखि गईं फिरि भूमि में नहीं आये यामें बुधि
बल वर्णन है ३७ ॥

जोदशशीशमहीधरईशकोबीसभुजा खुलिखेलनिहारो । लोकपदिग्गजदानवदेवसबैसहमैसुनिसाहसभारो । बीरबड़ो बिरदैतबली अजहूंजगजागतजासुपँवारो । सोहनुमानहन्योमुठिकागिरिगोंगिरिराजज्योंगाजकोमारो ३८ ॥

ईश जो महादेव तिनको महीधर कैलासताको
जो दशशीश बीसौ भुजन करिकै खेल खुलिकैखेलन
हारहै भाव प्रसिद्ध कैलास उठाये पुनः जाकोसाहस
कहे पराक्रम भारी सुनिकै लोकप इन्द्रादि दिशा
गज दैत्य देवतादि सबैसहमिजात काहे ते बिरदैत
कहे बीर ताको बानावाला बड़ो बली बीर जाकेबल

प्रताप को पँवारा रामायणादि ते अजहूं जग में जागत कहे प्रकाशितहैताही रावणके श्रीहनुमान्जी मुष्टिका मारे सो कैसे गिरिगयो यथा गाजके मारेगि-रिराज पर्वतनको राजा हिमाचल व सुमेरुगिरिजाइ यामें हनुमान्जी अति बलवान् करिगनेगये ३८ ॥

दुर्गमदुर्गपहारतेभारेप्रचण्डमहाभुजद-ण्डबनेहैं । लक्ष्यमेंपक्षरतिक्ष्णतेजज्जेशू-रसमाजमेंगाजगनेहैं । तेबिरुदैत्यबलीर-णबाँकुरेहांकिहठीहनुमानहनेहैं । नाम लैरामदेखावतबंधुको घूमतघायलघाय-घनेहैं ३९ ॥

दुर्गकहे कोटसे दुर्गमकहे अजीत अरु पहाड़सम भारी पुष्टांग जिनके महाभारी पुष्ट भुजदण्ड करिकै प्रचण्डबने हैं लक्ष्यकहे लाखन बीरनमें पक्षर कहे श्रेष्ठप्रवल तिक्ष्यन कहे तीक्ष्ण तेजमान इत्यादि प्राकृत भाषा है जे योधा शूरनकी समाज में गाज-कहे बज्रसम गनेजाते हैं भाव जापर चोटकरें ताको नाशकरि देइं ऐसे विरुदैत्य कहे बीरताके बानावाले रणबांकुरे बलीवीर निशाचरन को हांकिकहेललका-रिकै हठी हनुमान्ने हनेकहे मारे तिनकी देहनमें घनेकहे बहुतेरे घायल ह्वैगये तेघायल रणमें घूमत हैं तिनको नामलैलै श्रीरघुनाथजी बंधुजो श्रीलक्ष्मण

जो तिनको देखावत कि यह फलाना राक्षसहै ता-
को हनुमान् जीने माराहै ३९ ॥

घनाक्षरी ॥ हाथिनसों हाथीमारे घोड़े घोड़े सोंसँहारे रथनिसोंरथविदरनिबल-वानकी । चंचलचपेटचोटचरणचकचोट चाहैं हहरानीफौजैंभहरानीयातुधान की । बारबारसेवकसराहनाकरतरामतुलसीसराहैंरीतिसाहेबसुजानकी । लांबी लूमलसत लपेटि पटकतभटदेखौदेखौल खेलतरनिहनुमानकी ४० ॥

युद्धमेंहनुमान् जीकी फुरतई बर्णन यथा हाथि-नको पकरि हाथिनपै पटके घोड़ेन सों मारि घोड़े-नको नाशकरे रथनसों रथनको विदारनि तूरि डारनि बलवान हनुमान्जी की चंचल हाथनके चपेट जो चटकनाकी चोटसन खचरनको चकोटा करिमां-सनोचिलेना इत्यादिकोचाहैं कहे देखै ताते यातु-धान जो राक्षस तिनकी सेना हहरानी कहे घबरानी ताते भहरानी कहेयूथ फूटि फूटि भागनलगी गो-साईंजी सराहना करत सुजान साहेबकी रीतिको किसदाजनके गुण गाहक हैं तथा ॥ देखि दोषकब हुनडरआने ॥ सुनिगुनि साधुसमाज बखाने ॥ कोसा हबसेवकहिनेवाजी । आपु समान साज सबसाजी ॥

पुनः भगवद्गुणदर्पणे ॥ दोषादर्शीगुणग्राहीभावग्राहीचराघव ॥ ताते सेवकजो हनुमानजो को बारबार सराहनाश्रीरघुनाथजी करतेहैं कि देखौदेखौ लक्ष्मण लाल हनुमानको कैसोलरनिबांकोहै कि जा समय निशाचर भटनको लपेट भूमिमें पटकत ता समय लंबीलूम जो पूंछ सो कैसी लसत कहे शोभित होत ४० ॥

दबकिदबोरे एकबारिधिमेंबोरे एक मगनमहीमेंएकगगनउड़ातहैं । पकरिपछारेकरचरणउखारे एकचीरिफारिडारेएकमींजिमारेलातहैं । तुलसीलषत रामरावणविबुधविधि चक्रपाणिचंडीपतिचंडिकासिहातहैं । बड़े बड़े बानइतबीरबलवानबड़े यातुधानयूथपनिपातेबातजातहैं ४१ ॥

एकन को दबकिकहे घुरिकि दियेते दबोरे कही दबिकै लुकिरहे एकनको बहाय दियेते समुद्रमेंबूड़ि गये एक मगनकहे मूर्च्छित करि भूममें डारिदये एकनकोबहायदिये ते आकाशमें उड़जात एकनको पकरि पटकि डारे एकन के हाथ पांव उचारिडारे नखन सों चीरि एकन के पेट फारिडारे एकन को लातन मारि मींजि डारे बड़े बीरतःको बाना बांधे

बड़े बली बीरजे राक्षसनके यूथपति हैं तिनको बा तजात जो हनुमान् जी जा समय निपाते नाशकरे तिनको देखि लक्ष्मण जी श्रीरघुनाथ जी और वया सब देवता ब्रह्मा विष्णु महादेव चंडिकादि सब हनुमान् जीको बलदेखि सिहात ललचातहैं इहां हनुमान् जीकी वीरता देखि अनेक सिहावते अद्‌-भुत वीर रस है ४१ ॥

प्रबलप्रचंडबरिबंडबाहुदंडवीर धाये यातुधानहनुमानलियोघेरिकै ।महाबल पुंजकुंजरारिज्योंगरजिभट जहांतहांपट केलंगूरफेरिफेरिकै । मारेलाततोरेगात भागेजातहाहाखात कहैतुलसीसराखि रामकीसोंटेरिकै ।ठहरठहरपरैकहरिक हरिउठैहहरहहरहरसिद्धहँसेहेरिकै ४२॥

प्रबल कहे अति बलवान् प्रचण्ड कहे प्रतापवान् बरि बण्ड कहे तेजमान पुष्ट हैं भुजदण्ड जिनके ऐसे निशाचर वीर ते हवाले बटुरि धाय कै हनुमान् जी को घेरिलिये तिनको देखि महा बलपुंज जो हनुमान् जी कुंजरारि कहे सिंह ज्यों गर्जिकै लंगूर चारिउ दिशि फेरि लपेटि लपेटि निशाचर भटनको जहां तहां पटकिडारे अरु लातन मारि मारि अंग तूरिडारे जे बचेते हाहा कहे चिरौरी करत भागे

जात अरु टेरि टेरि कहत कि तुलसीश कहैं हनुमा
न तोको रघुनाथ जी की शपथ हमको राखिल जे
मारे गये ते ठहर कहे ठौर ठौर घायल परे कहरि
कहरि उठत इत्यादि कौतुक हेरिकहे देखिकै हर
महादेव अरु सिद्धगण हहरि कहे हहायकै हँसत
की बड़े गुमान ते दौरे रहैं ताको फल भली भांति
पायो इहां बीरता बिपरीति ते हास रस भयो ४२ ॥

जाकीबाँकीबीरता सुनतसहमतशूर
जाकीआंचअबहूं लसतलंकलाहसी । सो
ईहनुमानबलवानबाँकोबानइत जोहैया
तुधानसेनाचलेलेतथाहसो। कंपतअकंप
नसुखाय अतिकायकायकुम्भऊकरण
आयरह्योपाइआहसी । देखेगजराजमृ
गराजज्यौंगराजधायो बीर रघुबीरकोस
मीरसूनुसाहसी ४३ ॥

वज्रांग अद्वितीय बलवान् समर निशंक ऐसो
बांको बीरता जा हनुमान् की सुनि जे रणशूर हैं
तेऊ सहमि कहे डेरायजात अरु जाके प्रताप रूप
आंचते अबहूं लंका लाह सम लसत कहे दहिल
उठत सोई बांको बाना वालो बलवान् हनुमान् जो
निशाचरन की बलजोहै कहे देखवे हेतु सेना की
थाह ऐसी लेत रणमें बलिन सों युद्ध करत चले

तहां औरकी को कहै जो रणमें कबहूं न कांप्यो ऐसोजो अकंपन सोऊ हनुमान्‌जी के युद्धमें कांपि उठो महा भारी है देह जाकी सोऊ अतिकायकी काय जो देह सो युद्धमें सूखिगई कुम्भकर्ण महा बली युद्ध में सन्मुख आयो सो हनुमान् जी के मुष्टि का की चोट पाइ आह करि रहिगयो इत्यादि सब के बलको थाह पाइके रघुबीर जी को दूत वीर साहसी कहे पराक्रमी समीर सूनु हनुमान् गर्जि निशाचरनपै कौन भांति धायो यथा हाथिन कोदेखि सिंह धावत है यामें सबल निशंकता वर्णनहै ४३ ॥

झूलना ॥ मत्तभटमुकुटदशकंधसा-हसशैलशृंगबिदरनिजनुबज्रटांकी। दशन धरिधरणिचिक्करतदिग्गज कमठशेषसं-कुचितशंकितपिनाकी। चलतमहिमेरु उच्छलतसायर सकलबिकलबिधिबधि रदिशाविदिशझांकी । रजनिचरघर निघरगर्भअर्भक श्रवतसुनत हनुमानकी हाँकबाँकी ४४ ॥

हनुमान्‌जीकी हांक कैसी है मत्त कहे बल क-रिकै मदान्ध जे भटहैं तिनको मुकुट कहे शिरोम-णिहै दशकन्ध ताको साहस जो बल सोईहै पर्वत को शृंग ताके बिदारनिकोही काटिबे को मानों बज्र

की टांकी है पुनः जा हांकको सुनि सभीत ह्वै दां-
तन सों पृथ्वी धरिकै दिशागज चिक्कार करत क-
च्छप शेष संकुचित कहे सिकुरिजात त्रिलोक नाश
कर्त्ता पिनाकी जो महादेव सोऊ शंकासहित होत
सुमेरु आदि पर्वत सहित भूमि डोलि उठत सायर
जो समुद्र ते सकल उछलत है जाको सुनि व्याकुल
बधिर ह्वै ब्रह्मा भागिबे हेतु दशौ दिशा झांकत
कि कहां जाइये ऐसी बांकी हांक हनुमान्जीकोहै
जाको सुनतही निशिचरन के घरन में घरनी जो
स्त्री हैं तिनके गर्भ के अर्भक जो बालक ते श्रवत
कहे गिरि परत हैं यामें सबलता वर्णनहै दशमात्रा
झूलना छन्द है ४४ ॥

कौनकीहाँकपरचौंकिचंडीशविधि चंडकरथकितफिरितुरगहाँके । कौनकेतेजबलसीमभटभीमसेभीमता निरखिकरिनयनढाँके । दासतुलसीशकेबिरदबरणातबिदुषवीरबिरुदैत्यबर बैरिधाँके । नाकनरलोकपातालकोऊकहत किनकहाहनुमानसेवीरबाँके ४५ ॥

सर्वोपरि बीरता हनुमान्जी की देखावत कि
चंडीश कहे महादेव बिरंचि ब्रह्मा कौनकी हांक
पर चौंके [illegible] पूर्व जो कवित्त में लिख

आयेहैं चंडकर सूर्य कौनकी हांकपर थकित ह्वै थँभिकै फिरि तुरंग जो घोड़े तिनको हांके इनहू की थँभबो याही समय संभावित होत अथवा जन्म होतही रथ सहित सूर्यन को लीलिगये याते सदैव भयमाने हैं जब बाल अवस्था में विद्या पढ़िबे हेत हहाय कै पहुचैं तब रबिरथ थँभिजाय पुनः हांके पर घोड़े चलैं अरु भीमसेन ऐसे भट-बल सींव कहे मर्य्यादा महाबली ते कौनके भी-मता कहे भयंकर तेजको निरखि आंखी मूंदिलिये भाव महाभारत में अर्जुन के रथ ध्वजापर कराल रूपते गर्जै तासमय हनुमान्‌जीको देखि डराइ भीम आंखी मूंदि लिये अथवा जब गन्धमादनपर फूल लेबेहेत अर्जुन भीमा दिगये तब भयानकरूप देखिबे को कहे तब हनुमान्‌जी भयंकर रूप देखाये तब डरिकै भीम आंखी मूंदि लिये यह पद्म पुराण में प्रसिद्ध है गोसाईंजी कहत कि तुलसी जो हनुमान् जी तिनको बिदर कहे बीरताको यश ताको बिदुष जो पंडितजन सदा बर्णन करत कि बिरुदैत जो बीरता की बिरदावली वाले जो बीरबर कहे श्रेष्ठ बैरी रावणादि तिनपै हनुमान्‌जीकी धांक लागतहै धांकरुआब ग्रामीण बोली में प्रताप को कहत हैं स्वर्गमें देवता मृत्युलोक में मनुष्य पताल में ना-गादि तीनिहूंलोकमें हनुमान्‌जीकी समताको बांको बीर कहां है भाव नहींहै अरु जो होइ तौ भूत

काल पुराणादिकन में कोऊ काह्यन कहत अथवा बर्तमान में कोऊ काहे नहीं कहत है ४५ ॥

यातुधानावलीमत्तकुञ्जरघटानिरखि मृगराजज्योंगिरित्तेटूट्यौ । बिकटचटकनचोटचरणगहिपटकिमहिनिघटि गयसुभटसतसबकोछूट्यौ । दासतुलसी परतधरणिधरकतभुकतहाटसीउठतजंबु कनिलूट्यौ । धीररघुवीरकेबीरणबांकुरे हाँकिहनुमानकुलिकटककूट्यौ ४६ ॥

मत्त कुञ्जर कहे हाथी घटा कहे समूहन को निरखि मृगराज जो सिंह गिरि कहे पर्वतते ज्यों टूट्यौ कहे निशंक बेगता ते चोट करेउ त्यों यातुधान जो निशिचरन की अवली कहे पंक्ति बँधी सेनापै हनुमान् जी टूटे काहू की चटकना कौ बिकट कहेकठिन चोट मारे काहूको पद गहि भूमि पैपटकि डारे ते निघटि कहे नाश भये तिनको देखिजे बाकी रहे ते सुभटन को सत कहे शूरता सबको छूटिगई अधीर ह्वै भागे गोसाईं जी कहत कि निशाचरन को पटकत ताकी चोट परत भूमि धरकत कहे शंकित ह्वै भुकत कहे हालत है अथवा शंकित ह्वै निशाचर भुकत गिरि गिरि परत भागे जे घायल रहिगये तिनको मांस जम्बुक शृगालादि

लूटि लिये यथा बाजार उठे अन्नादि जो पदार्थ परोरहत ताको भूखे लूटिलेतहैं धैर्यमान् श्रीरघुवीर के बीर रण में बांकुरे हनुमान्जी ने निशाचरनकी कुलि कटक जो सेना ताको कूटि डारे ४६ ॥

छप्पै ॥ कतहु विकटभूधरउपारिअरिसैनबरष्षत । कतहुंबाजिसोंबाजिमर्दिगजराजकरष्षत । चरनचोटचटकनचकोटअरिउरसिरबज्जत । विकटकटकबिद्दरनबीरबारिदजिमिगज्जत। लंगूरलपेटतपटकिमहिजयतिरामजयउच्चरत। तुलसीश पवननंदनअटलयुद्धक्रुद्धकौतुककरत ४७

श्रीहनुमान्जीको रणं कौतुक बर्णन करत कतहूं वृच पहार उखारि शत्रु की सेनापर बर्षाकरत कहूं घोड़न सों घोड़ा कहूं हाथिन को कर्षत कहे खैंचि के मर्दन करत कहूं चरण की चोट छाती पर कहूं चटकना को चकोटा शत्रु नके शीश पै बज्जत कहे लागत कठिनसेना निशाचरनकी बिदारन हेत वीर हनुमान्जी मेघसम गर्जतहैं निशाचरन को लंगूर में लपेटि भूमिपै पटकि श्रीरघुनाथ जी की जयजयकार करत तुलसी के ईश पवननंदन अटल जो नहीं टरनेबाले ते युद्धमें क्रोधते कौतुक करत हैं ४७ ॥

घनाक्षरी ॥ अंगअंगदलितललितफू
लेकिंशुकसेहनेभटलाखनलखनयातुधान
केमारिकैपछारिकै उपारिभुजदण्डचंड
खंडिखण्डडारेतेबिदारेहनुमानके।कू
दतकबंधकेकदंबबंबसीकरतधावतदेखा
वतहैंलाघौराघौबानके।तुलसीमहेशवि
धिलोकपालदेव गणादेखतविमानचढ़े
कौतुकमशानके ४८ ॥

यामें लक्ष्मणजी के मारे हनुमान्जीके मारे श्री
रघुनाथजीके मारे राक्षसन के चिह्न बर्णन करतजिन
के अंग अंग दलितकहे टूटे कटेघावनते रुधिर मांस
की लालिमाते किंशुक जो पलाश केसे वृक्ष ललित
फूलेसे देखात ऐसे राक्षसन के लाखन वीरन को
लक्ष्मणजी हने कहे मारेहैं जिनको पटकि कै मारि
प्रचण्ड भुज दण्डन को उचारि खण्डि कहे तूरि तूरि
भूमि में डारे हैं ते हनुमान् जीके बिदारेहैं जे बिना
शिर के कवन्ध कदम्ब कहे समूह बम्बसी शब्द
करत कूदत धावत हैं यह राघव बाण को लाघव
कहे शीघ्रता है भाव ऐसे बेग ते बाण मारे जो शीश
उड़िगये परधर ठाढ़ नाचिरहो ऐसा कहि, देव गण
मृतक राक्षसन के चिह्न देखावत गोसाईंजी कहतकि

शिव ब्रह्मादि लोकपाल इन्द्रादि देवता बिमानन परते रण मशान को कौतुक देखतहैं ४८ ॥

लोथिनसोंलोहूके प्रवाहचलेजहां तहां मानहुंगिरिन गेरुझरनाझरतहैं । शोणितसहितघोरकुंजर करारेभारेकूल तेसमूलबाजिबिटपपरतहैं । सुभटशरीरनीरचारीभारीभारी तहांशूरनिउछाह कूरकादरडरतहैं । फेकरिफेकरिफेरुफारिफारिपेटखातकाक कंकबालककोलाहलकरतहैं ४९ ॥

रुधिरकी सरिता करि बर्णन करत हैं लोथिनसों लोहूको प्रवाह धार बहत सो मानों पर्वतन ते गेरु के झरना झरत हैं ठौर ठौर रुधिर सहित भयंकर हाथिनके समूह तेई भारी करारे हैं जब नदी बाढ़त तब किनारे के वृक्ष जरसहित उचरि परत हैं तैसे सजर वृक्ष घोड़े गिरतहैं जेसुभटन के शरीर धारा में परे तेई नीरचारी कहे मीन मगर घरियाल हैं इत्यादिक भयंकरता देखितहां जे शूर वीरहैं तिनके मनमें युद्धकीउछाह है भाव वीर रसते पूर्णहैं अरु जे कूर कहे कपटी कादरहैं ते डरतहैं फेरु जे सियार ते फेकरि कहे बोलि बोलिपेट फारि फारि खात यथा

सरिता में बालक कोलाहल करततथा काक औकंक कहे कुही वा गीध ते कोलाहल करत ४६॥

वोभरीवझोरीकांधेआंतनकीसेल्ही बाँधेमूडकेकमंडलखप्परकियेकोरिकै। योगिनिजमातिजोरिझुण्डझुण्डबनी तापस सी तीरतीरबैठीसोसमरसरिखोरिकै। श्रोणितसोसानिसानि गूदाखातसतुवा सेएकप्रेतपियतबहोरिघोरिघोरिकै। तुलसीबैतालभूतसाथलिये भूतनाथहेरिहे रिहँसतहैंहाथहाथजोरिकै५०॥

समर सरिपै मेला बर्णन पेटकी वोझरी काढ़ि झोरी सी कांधेमें डारे आंतनकी सेल्हीसी गरेमें बांधे मुंडन के कमंडल लिहे कोरी कहे काटि खोपड़ी आढ़ को खप्परलिहे ऐसो साजते योगिनिनकी जमातिके झुण्ड जुरे ते खोरि कहे नहाइ नहाइकै समरसरिके तीर २ तपस्विनी सी बैठी हैं ते श्रोणित जो रक्तरूप शर्बत में खोपड़ी को गूदा सानि सानि सतुवा से खात हैं कोऊ एक प्रेत बहोरि कहे फिरि फिरि घोरि घोरि शर्बत से रुधिर पियत हैं तहां जमातिन में कोऊ मालिक होत इहां भूतनाथ जो भैरव हैं ते बैताल भूतन को साथ लिहे समाजको अघाइ

खात देखि २ नेह पूर्वक भूतन सों हाथ पकरि के हँसते हैं ५० ॥

शासशासनतेचलेतीरहैनशरीरहड़ावरिफूटी । रावणधीरनपीरगनीलखिलैकरखप्परयोगिनिजूटी । शोणितछीतछटानछुटीतुलसीप्रभुसोहैमहाछबिछूटी । मानोंमरक्तशैलविशालमेंफैलिचलीबरबीरबहूटी ५१ ॥

श्रीरघुनाथजी के शरासन कहे धनुष ते ऐसे बेगते तीर छूटे जो शरीर में न रहे हाड़फोरि निकसिगये सो पीर को रावणने नहीं गनी काहेते धीर्यमान् है तहां कोऊ भाव करिके जो प्रभुके सन्मुख जीवहोत सो अनित्य जानि देहको दुःख सुख नहीं गनतेहैं तहां रावण बैर भाव करि प्रभु के सम्मुख है याते देहकी पीर नहीं गनी तिन घावनते रुधिरकी धारा चली ताको लखिकै पान करिबे हेतु खप्पर लै लै योगिनिन के झुण्ड जुटतो भई सोई रुधिरकी धार छूटी ताकी छींटन की छटा करि प्रभु सोहत भये श्याम शरीर पै अरुण छींटनते रण समय पाइ जो महाछबि छूटी कहे फैलि रही ताकी कवि उत्प्रेचा करत मानों रण रूप बर्षा काल पाइ मरकत मणि के विशाल शैल कहे पर्वत के ऊपर श्रेष्ठ बीर

बहूटी फैलि चली हैं यामें युद्ध बीर रस मय रूप बर्णते रुधिर छीट भूषित हैं ५१ ॥

काननबासदसाननसोंरिपुआननश्री शशिजीतिलियोहै । बालिमहाबल शालिदल्यो कपिपालिविभीषणभूप कियोहै । तीयहरीरणबन्धुपरेउपैभरेउ शरणागतशोचहियोहै। बाहपगारउदार कृपालकहांरघुबीरसोंबीरबियोहै ५२॥

एकतौ कानन कहे बनमें बास जो स्वाभाविक उदासीन दूसरे रावण ऐसो बली सो शत्रुता ताहू पर जिनको आनन कहे मुख ऐसो प्रसन्न प्रकाशमानहै जा श्री कहे शोभा सों चन्द्रमा को जीति लियो है महाबल शालि कहे कठिन बली बालि को दलिकै कपि जो सुग्रीव तिनको दयाकरि पाले अरु उदार दानी ह्वै विभीषण को भूपकियो तहां तियाजोश्री जानकीजी हरिगईं अरुबन्धु श्री लक्ष्मणजी घायल परे ताकोशोचनहींकेवलशरणागतविभीषणको शोच हृदयमें भरोहैऐसे बांहको पगार कहे देवाल जाकी आड़पायेकाहू चोटको भयनहीं रहत तैसे श्रीरघुनाथ जाकोबांहदेत ताको सब भांति अभय करि राखत ऐसोउदार कृपालु अर्थात् दान दया बीर श्रीरघुनाथ

जीके समान बियो कहेदूसरो कहांहै यामेंदान दया वीर दोऊ वर्णन है ५२ ॥

घनाक्षरी ॥ मानीमेघनादसोंप्रचारि भिरेभारीभटआपनेआपने पुरुषारथन ढीलकी । घायललषगालालसुनिबिल खानेरामभईआशशिथिल जगनिवास दीलकी । भाईकोनमोहछोहसोयकोन तुलसीशकहेमैं बिभीषणकी कछुनस बीलकी । लाजबांहबोलकी निवाजे कोसँभासारसाहेब न रामसे बलाइलेउँ शीलकी ५३ ॥

युद्धमेंमानी मेघनाद सों जे भारी भटहैं हनुमान् जामवानादि ते प्रचारिकै भिरे युद्धमें अपने पुरुषार्थ करिबे में काहूने ढील नहीं करी काहू सों जीति न गयो पीछे लक्ष्मणजी युद्ध करत में शक्तिकै लागे घायल भये सो हाल सुनि जगत् व्यापक श्रीरघुनाथ जी बिलखाने रोदन करतमें लंकाजीतनो विभीषण को राज्य देनो जानकीजीको लावनो इत्यादि आश दिलते शिथिल कहे ढील परिगई तहां भाई को मोह नहींहै काहेते सम्मुख मरण रण में क्षत्रियको धर्म है औ जानकी जीको छोह नहीं है काहेते

पतिव्रता के प्राण पतिके संगही रहत श्री विभीषण को राज्य देबेको कहे सो बचन पूरा नहीं भयो ताते श्री रघुनाथजी बार बार यही बात कहत कि जो बात कही विभीषण को सो कछु सबील कहे पूरी कछु न करी इत्यादि अपने बोलको लाज अरु बांह कहे अपने भरोसा की लाज है जिनको पुनः निवाजे कहो अपने दीन्हे की सँभार है जिन को ऐसे साहबन के सरस सुसाहेब श्री रघुनाथजी की समान दूसरा नहीं है तिनको शील जो है ताकी बलाइमैं लेउँ भावगोसाईंजी कहत कि शीलकी जो बाधा होइ सो मेरे ऊपर आवै जामें प्रभुको शील स्वभाव निर्विघ्न बना रहै ५३ ॥

लीनउखारिपहारविशालचल्योंतहिकालविलम्बनलायो।मारुतनंदनमारुतकोमनकोखगराजकोवेगलजायो। तीखीतुरातुलसीकहतोपैहियेउपमाकोसमाउनआयो। मानोंप्रतक्षपर्वतकीनभलीकलसीकपियोंधुकिधायो५४॥

सजीवनि मूरिहेतु विशाल पर्वत द्रोण गिरि उखारि विलम्बनहीं लगायोताही काल में मारुत नन्दन ऐसी वेगताते चले जो मारुत को औ मनको औ गरुड़ तीनिहूंकी बेगता को लजाये तीखी तुरा

कहे तीक्ष्ण वेगताको तुलसी कहतो परन्तु समान उपमा को समाउ उरमें नहीं आयो भाव हनुमान् जीकी समता को वेग त्रिलोक में दूसरा नहीं है तौ कौनकी उपमा दीजिये ताते उत्प्रेक्षा करत मानों पर्वत की लकीर खिँचीसी आकाश में प्रत्यक्ष लसी अर्थात् दिव्य औषधिन करि ज्वलित पर्वत जात श्याम आकाश में अग्निकोसी लकीर शोभित प्रसिद्ध दखानो याभांति हनुमान्जी धुकि कहे शीघ्रता ते धावत भये ५४ ॥

घनाक्षरी ॥ चल्योहनुमानसुनियातुधानकालनेमिपठयोसोमुनिभयोपायोफलछलिकै। सहसाउखारोहैपहारबहुयोजनकोरखवारे मारेभारेभूरिभटदलिकै। वेगबलसाहसमराहतकृपालरामभरतकीकुशलअचललायोचलिकै। हाथहरिनाथकेबिकानेरघुनाथजनु शीलसिन्धुतुलसीशभलोमान्योभलिकै ५५ ॥

सजीवनमूरि हेतु हनुमान् जी चले सो हाल सुनिकै यातुधान रावण ने कालनेमि को पठायोसो मुनि बनिकै छलै ताको फलपाये भाव हनुमान्जी छल जानिगये तुरतही मारि डारे जब द्रोणागिरि लेन लगे तहां इन्द्र के रखवार रहे ते मना किये

तिनको हनुमान्जी मारे ते इन्द्र को खबरिदिये ते भारी भट बहुत धाये तिनको दलिकै बहुयोजन को पहाड़ उखाड़िलियेसहसालैकै शीघ्रआइगये इत्यादि शीघ्रता को बल इन्द्र के रखवारन को जीते इत्यादि साहसकहे बीरता को बल इत्यादिकदोउभांति के बल की प्रशंसा कृपालु श्रीरघुनाथ जी करिकै कहत कि भरत की कुशल औ अचल जो पर्वतदोऊ को हनुमान जी चलिकैलाये हरिनाथ जो हनुमान् जी तिनके हाथ रघुनाथ जी मानहु बिकाइगयेका हेते तुलसीके ईश शील समुद्र हैं ताते भलीभांतिते हनुमान्जी को भली सेवककरि माने यामें कृतज्ञ गुण देखायो है ५५ ॥

बापदियोकाननभो आननशुभानन सों बैरीभो दशाननसोतीयकोहरणाभो । बालिबलशालिदलि पालिकपिराजके विभीषणानिवाजिसेतुसागरतरणाभो । घोररारिहेरित्रिपुरारिविधिहारे हियघायलभगावीरवानरवरणाभो । ऐसेशोक में त्रिलोककैबिशोकपलहीमें सबहीके तुलसीकेसाहबशरणाभो ५६ ॥

राज्य देनेको कहि पिता बनबास दियो सो अशुभता मनमें न व्यापी आननशुभानन भयो मंगल

मय मुखचन्द्र प्रसन्न बनो रहो ताहू में त्रिलोक बि-जयी दशानन ऐसो बैरी भयो जा बैरते श्रीजानकी जी को हरणभयो ऐसेहू शोक में धैर्य्य न गयो महा बलवान् बालिको मारि शरणागत सुग्रीव को पालि कपिनको राजा कियो औ शरणागत विभीषण को नेवाजे लंकनायक कियो दुस्तर समुद्र में सेतु बांधि उतरे लंकामें घोरयुद्ध देखि शिव ब्रह्मा हृदय में हारिमाने कि रावण को जीतनो दुर्घटहै काहे ते लक्ष्मण ऐसे बीर घायल ह्वै वानरवर्ण भये यथा वानर घायल परे तथा भये अथवा घायलह्वै जौन वर्ण लक्ष्मण जी भये ताही बर्णसब बानरबीर अधीर ह्वै गये ताते त्रिलोक शोकितभयो ऐसेशोक में त्रिलोक को पलही में श्रीरघुनाथ जी विशोक कियो भाव सजीवनिमूरि मँगाय लक्ष्मण जीको जि-आय पुनः रावण को मारि बिभीषण को राज्य दै सबको अभय करि दियो ऐसे तुलसी के साहब श्री रघुनाथ जी सबके शरणपाल भये यामें धृतिशरण-पाल गुण है ५६ ॥

कुम्भकरणरणहन्योरणरास दल्योद शकन्धरकन्धरतोरे। पूषणवंशविभूष णपूषणतेजप्रतापगरेअरिओरे। देवनि शानबजावतगावत धावतगोमनभावत

भोरे। नाचत्तबानरभालुसबै तुलसीकहि हारेहहाभैयाहोरे ५७॥

कुम्भकर्ण को रणमें मारे कंधर कहे ग्रीवातारि रावण को दले पूषण सूर्यवंश के भूषण पूषण श्री-रघुनाथ सूर्यनके तेज प्रतापते बारकहे आसमानी पत्थर सम अरि रावणादि गरे कहे गलिगये ताते आनन्द ह्वै देवता निशान बाजा बजायकै नाचत हैं काहे ते रावण की भयकरिकै भागत रहैं सो धावतगो अर्थात् भगिहल मिटी ताते परस्परकहत कि हेरेभाइउ अब मनभावतभयो गोसाईं जीकहत कि बानर भालु सब नाचत हैं अरु जे निशाचर बाकी रहे तिनसों व्यंग निरादर कहत कि भैया हारे हारेहारे ऐसाकहि हहाय कै हँसत हैं ५७॥

मारेरजनीचररावणसकुलदलअनुकूलदेवमुनिफूलबर्षतुहैं। नागनरकिन्नरबिरंचिहरिहरहेरि पुलकशरीरहियहेतुहर्षतुहैं। बामओरजानकीकृपानिधानकेबिराजैंदेखत्तबिषादमिटैमोदसरसतुहैं। आयसुभोलोकनिसिधारेलोकपालसब तुलसीनिहालकैकैदियेसरखतुहैं ५८॥

रातिचर राक्षसन को दल कुलसहित रावण को

मारे ताते अनुकूल कहे प्रभुकी ओर मन सन्मुख करिकै इन्द्रादि देव अरु मुनि प्रभुपै फूलनकी वर्षा करतेहैं नाग जे पातालबासी नर जेमृत्युलोकबासी किन्नर जे स्वर्गलोक बासी औ ब्रह्मा विष्णु शिवादिके मनमें हर्षभयो ताहेतुते प्रभु को निरखि प्रेम तेंदेह पुलकि आई काहेते कृपानिधान जो श्रीरघुनाथजी तिनके बामओर श्रीजानकीजी बिराजमान देखत सबके मनको विषाद मिटिगयो ताते सब के मनमें मोद सरसत कहे बाढ़त भयो गोसाईं जी कहत कि अभयकी सरखत कैकै सब को निहाल किये कि अब तुमको काहूकी भयनहीं है आनन्द ते अपने घरमें बसौ ऐसो आयसु श्रीरघुनाथजी को भयो ताको सुनि जयजयकार करिकै सब लोकपाल अपने अपने लोकनको सिधारे ५८ ॥ पुरटालयपादपकल्पसुमूल सिँहासनरत्नभानुसमः। सुखदास्थित पूषणपूषणवंश प्रकाशकनाशक शोकतमः। गहिचामरछत्रसखाचहुंधा छबिसिंधुकथंनरवक्तुक्षमः। मनु जीजभवार्चितश्रीचरणांनितजानकिजानकिनायनमः१ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथबिरचितकवित्तरत्नदीपिका टीकायांलंकाकाण्डस्संपूर्णम् ॥



उत्तरकाण्ड॥

———*———

पीतांबरतडिद्वामंश्यामवर्णकलेवरं॥
कृपावारिधरंरामंबंदेत्रैतापनाशनं १॥

कवित्त॥ देवनकीभीतिसहलोकनअनीतिमेटिश्रा येरणजीति लियसाथखासदासनै। बाजतनिशान पुरधूमश्राशमानदेव साजिकैबिमानश्रायअग्रपाकशा- सनै। छत्रचमरव्यजनअनुजलियबैजनाथ वेदगान सोहतसुदीपवृच्च बासनै। राजनकेराजमहाराजराजा रामचन्द्र जानकीसमेतश्राजुराजतसिंहासनै॥

बालिसेबीरबिदारिसुकराठथप्योहर्षेसुरबाजनेबाजे। पलमेंदल्योदाशरथीदशकन्धर लंकविभीषणराजबिराजे। रामसुभावसुनेतुलसी हुलसेश्रलसीहमसेगलगाजे। कायरकूरकपूतनकीहदतेऊगरीबनिवाजनिवाजे १॥

बालिऐसे महाबली बीरको बिदारिकहे मारिकै सुकंठ सुग्रीवको थाप्यौ भाव कपिनायक कियोपीछे श्रीजानकी जीकी खबरिलेनेको भूलगये ताहूपर

प्रभु दयालु बनेरहे काहेते जनको अवगुण प्रभु देख तै नहीं यह सुहृदता गुणहै यथा ॥ जेहिजनपरम-मताअरुछोहू । तेहिकरुणाकरकीननकोहू ॥ प्रमाण भागवते हनुमद्वाक्ये ॥ नजन्मनूनंमहतोनसौभगं । नवाक्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः ॥ तैर्यद्विसृष्टानपिनो वनौकसः । चकारसख्येबतलक्ष्मणाग्रजः १ ॥ ऐसो सौहर्दतागुणके बलते सुग्रीवको हालसुनि देवता हर्षित है बाजाबजाये अभिप्राय याकि पीछे भूलिजानो देवतनहूं को स्वभाव है पुनः प्रभु रावण को पलही में दलिकै लंकाको राज्यपर बिभीषण को बिराजमान किये अर्थात् शत्रुको भाई राक्षस घरते निरादर ह्वैकै शरण आयो ताको सखामानिमिले पुनः लंकनायक किये यह सौशीलता गुण प्रभुकोहै यथा कोटिबिप्रअघलागैजेही । आयेशरणतजौंनहिंतेही ॥ प्रमाणभगवद्गुण दर्पणे ॥ शोणितोत्सिक्तसर्वांगंक्र-व्यादंचजटायुषं ॥ अंकमारोप्यपप्रच्छसंचस्कारमृतंनृपः १ ॥ ताते जे राजसी स्वभाववाले आलसीहैं ते सौहर्दगुणको सुमिरि हुलसे हृदयमें आनन्द भये गोसाइँ जी कहतहैं कि जे हम ऐसे मलीनहैं ते प्रभुको सुशीलता गुणके बलतेगल कहे खुशी ह्वैकै गर्जतभये काहेते कायर कहे जे भक्ति क्रियामें कादरहैं राजसी स्वभाव वाले कामासक्त इन्द्रादि औ क्रूरकहे छली मारीचादि औकपूतकहे जे पिताको धर्मत्यागे यथा रावणादि ऐसनहूं को गरीब नि-

वाजश्रीरघुनाथजी निवाजेकहि स्वधाम दियो १ ॥

वेदपढ़ैंबिधिशम्भुसभीतपुजावनरावणसोंनितआवैं। दानवदेवदयावनेदीन दुखीदिनदूरहितेंशिरनावैं। ऐसेउभाग भगेदशभालतें जोप्रभुताकबिकोबिदगावैं। रामसेबामभयेतेंयहिबामहिबामसबैसुखसम्पतिलावैं २ ॥

जा रावण के समीप सडरह्वैकै ब्रह्मावेद पढ़िबेहेतु आवतहैं अभिप्राय कि प्रपौत्र दूसरे आशीर्वादो यहिमयाते वेद सुनावत जामें धर्म पर मन आवै अरु कुमार्गी बलीजानिडरतहैं अरुमहेश सभीत सदापुजावन हेतु जात जामें शीश अब न काटै औ देवता दानव दयावने कहे रावणकी दयाके प्यासे दोनहैं ताते दिनकहे अति दुखीह्वै दूरिहीते शीश नावत जामें राजीरहै ऐसोभारी भाग्य रावणको एक ठौरकोकहै दशोमाथनमें दशठौर ब्रह्माको लिखो सोहरि बिमुखताते दशो माथन ते भागिगई ऐसी प्रभुकी प्रभुताहै ताको कबिकोबिद गावत लोकमें प्रसिद्धहै कि श्रीरघुनाथजी सों बामकहे बिमुखभये तेहि बिमुख जीवको यावत् सुखसंपति है सो सब बिमुखह्वै जात यथा॥ रामबिमुखत्रातानहिंकोपी। भुजाउठायकहौंप्रणरोपी॥ प्रमाणरुद्रयामले॥ येन

राधमलोकेषु रामभक्तिपराङ् मुखाः ॥ जपंतपंदयाशौ चशास्त्राणामवगाहनं । सर्वंवृथाविनायेनशृणुध्वंपा तिप्रिये २ ॥

बेदबिरुद्धमहीमुनिसाधु सशोककिये सुरलोकउजारयो । औरकहाकहौंतीयहरीतबहूंकरुणाकरकोपनिवारयो । सेवकछोहते छांड़िक्षमातुलसीलख्योरामसुभावतिहारयो । तौलौंनदापदल्योदशकन्धरजौलौंविभीषणलातनमारयो ३ ॥

मुनिसाधुन को सशोक कहे दुखदै पापबढ़ाय भूमिको भारकिये औ देवलोक को तौ उजारिही करिदिये ऐसे वेदबिरुद्धकहे अधर्ममार्गमें चलीताके अवगुण और कहां तक कहौं तीय श्रीजानकी जी को हरिलैगयो तहौं तक प्रभुकोप नेवारे काहेते करुणाके खानिहैं गोसाईं जी कहतुहैं किहे श्रीरघुनाथजी तिहारो स्वभाव मैं जान्यों कि सेवककेछोह कहे मयाते क्षमाछांड़ि देतेहौ काहेते जबतकबिभीषणाके लातनहीं मारयो तब तक दशकन्धर को दापकहे अहंकार नहीं दल्यो भावजन को दुख नहीं देखिसकत यह करुणा गुणहै ३ ॥

शोकसमुद्रनिमज्जतकाढ़िकपीशकि

योजगजानतजैसो । नीचनिशाचरबैरी
कोबन्धु बिभीषणाकीन्ह पुरन्दरऐसो ।
नामलियेअपनायलियो तुलसोसोकहो
जगकौनअनैसो । आरतआरतिभंजनरा-
मग़रीब निवाजनदूसरऐसो ४ ॥

बालिके डरतेशोक कहेदुखरूप समुद्रमें निमज्जत कहे बूड़त में काढ़िके सुग्रीव को जा भांति कपि-नायक कीन सो रामायण द्वारा सब जानतहैं नीच स्वभाव निशाचर जाति दुष्टपुनः बैरीरावण को बंधु ऐसे बिभीषण को सैसो कहे सो इन्द्रसम ऐश्वर्य-वान् कीन्हे गोसाइँ जी कहत अपनाको कि तुलसी सम अनइस जगत में दूसरा कौन है सोऊ प्रभु की शरणाह्वै नामलियो ताहूको प्रभु तुरंतही अापनक रिलियो ताते आरत जो दुखित ताके दुखको भं-जानहार श्रीरघुनाथजीग़रीबनेवाजहैं दूसरो नहींहै४॥

सीतपुनीतकियेकपिभालुकोपाल्यो
ज्योंकाहुनबालतनूजो । मज्जनसींचबि
भीषणाभोअजहूं बिलसैबरबन्धुबधूजो ।
कौशलपालबिनातुलसीशरणागतपाल
कृपालनदूजो । क्रूरकुजातिकपूतअघीस
बकोसुधरैजाकौनरपूजो ५ ॥

श्रीरघुनाथ जी जैसे चंचल पशुकपि भालुन को पवित्र मित्रकरपाले तैसे कोऊ अपने तनते उत्पन्न बालकको नहीं पालतहै अरु प्रभुकी कृपाते सज्जनताकी सींवकहे मर्य्यादा बिभीषण श्रेष्ठबंधुसम जिनकी सज्जनता बन्धुबधूसम अजहूं बिलसतहै भाव श्रेष्ठ बन्धुबधू सम अजहूं प्रभुपालत हैं गोसाईं जी कहतहैं कि जे पुरबासिन को संगलै परधामको गये ऐसे कोशल पाल श्रीरघुनाथ जी बिना शरणागत पाल कृपाल दूसरा नहीं है ताते चहै कुमार्गी क्रूर होइ चहै कुजाति होइ चहै पिताते बिमुख कपूत होइ चहै पातकी होइ इत्यादिकर्मन की संदेह न करौ जोनर प्रभुको पूजो इष्टमानि शरण आवो तौ सबकी सुधरैगी यामे सौलभ्यता गुणदेखायो है ५ ॥

तीयशिरोमणिसीयतजीजेहिपावककीकलुखाईदहीहै । धर्म्मधुरन्धरबन्धुतज्यो पुरलोगनकीविधिबोलिकहीहै। कोशनिशाचरकीकरणी नसुनीनबिलोकिनचित्तरहीहै। रामसदाशरणागतकी अनखौहीअनैसीसुभायसहीहै ६ ॥

जिन पतिव्रत धर्मरूप अग्निते कलुखाई कहे दाहकता जराई शीतलकरि अग्निमें प्रवेश ह्वै कुशलपूर्वक निसरि आईं ऐसी पतिव्रता तियनमो शिरोमणि

जानकीजी तिनको त्यागेउ अरु धर्मधुरीण भक्तन में अग्रणीय ऐसे बन्धु लक्ष्मण जीको त्यागे यामें नैमित्यलीला है पुरलोग अवध बासिनको बोलाइ भक्ति दृढ़ता हेतु अनेक सिखावन दियो उत्तर काण्डमें अरु सुग्रीव बिभीषणकी जो करणी भौजाईमें रत होना इत्यादिको रघुनाथजी न सुने न देखे न चित्तमें राखे काहेते शरणागतको अनखौहो दण्डदेवेयोग्य अनैसी मना करिबे योग्य वार्ताकरे ताको श्रीरघुनाथजी सहजही स्वभावते सहिलेते हैं ६ ॥

अपराधअगाधभयेजनते अपनेउरआन तनाहिंनजू । गणिकागजगीधअजामिलकेगनिपातकपुंजसिराहिंनजू । लियेबारकनामसुधामदिये जेहिधाममहामुनिजाहिंनजू । तुलसीभजुदीनदयालहिरेरघुनाथअनाथनदाहिंनजू ७ ॥

गुरु शरणागती श्रीरामनाम को माहात्म्य प्रभुकी दीन दयालुता जे अपने उरमें नहीं विश्वास आनत भावजे शरणहै प्रभुको नहीं भजत तेईजन अपराधके अगाध समुद्रह्वै गये देखो गणिका व्यभिचारिणीगज मदांध गीध मांस आहारी अजामील कुमार्गीइत्यादिके पापगने ते नहीं सिराहिं असंख्य रहैं तेऊ बारकहि एकबार नाम लीन्हेते प्रभुसुन्दरधाम

में बासदीन्हे जा धामको अनेकन यत्नकरि महा-
मुनिनको जाइबो कठिनहै सो पतितन को देत
गोसाईंजी कहतहैं रेमन ऐसे दीनदयालु श्रीरघुना-
थजी को भजु जे अनाथन के सदा दाहिनहैं भाव
दीनन को दया करि अपन्याय लेते हैं यह प्रभुकी
दयालुता उदारता गुण है ७॥

प्रभुसत्यकरीप्रहलादगिरा प्रकटेनर
केहरिखम्भमहाँ । झषराजग्रस्योगज
राजकृपाततकालविलम्बकियेनतहाँ ।
सुरसाखीदैराखीहैपाडुबधूपटलूटतको-
टिकभूपजहाँ।तुलसीभजुशोचविमोच-
नकोजनकोप्रणरामनराख्योकहाँ ८॥

महिमा तोंहिमा खड्ग खम्भमा इत्यादि प्रह्लाद
की बाणी प्रभुने सांचो करी अर्थात् महाकराल रूप
नरसिंह खंभा फोरि प्रकट ह्वै हिरण्यकशिपु को मारे
झखराज जो ग्राह जा समय गजराजको ग्रस्यौ पकरि
लियो बूड़त में पुकार किये तहां तत्काल कहे तुरत
ही प्रभु कृपाकरि उबारे नेकहू बिलम्ब नहीं कियो
जहां कोटिन राजन की समाजमें दुश्शासन पट लू-
टत कहे खैंचत में पंडु बधू द्रौपदी की लज्जा राखी
भाव चीर बढ़ाय दियो इत्यादि को देवता साखी
हैं गोसाईंजी कहत हैं कि ऐसे शोच बिमोचन प्रभु

को भञ्जु जनको प्रण श्रीरघुनाथजी कहां नहीं राखते हैं यामें भक्त प्रतिज्ञा पाल गुणहै जा समय गोसाईंजी की रुचि बिचारि कृष्णचंद्र धनुर्द्धारी भये ता समय को यह कवित्त है ८ ॥

नरनारिउघारिसभामहँहोत्तदियोपट शोचहरयोमनको।प्रहलादबिषादनिवा रणावारणतारणमीतअकारणको । जो कहावतदीनदयालसही जेहिभारसदाअ पनेप्रणको । तुलसीतजिआनभरोसभजै भगवानभलोकरिहैंजनको ९ ॥

नर अर्जुन की नारी द्रौपदी सभा में उघारिहोत में पट बढ़ाय दैकै वाके मनको जो शोच लाज जाबे को सोहरि लियो प्रह्लादके मनको विषादके निवारण हार बारण कहे गजके तारण हार ऐसे अकारण कहे बिना प्रयोजनकेमीत प्रभु जे सांचे दीनदयालु कहावत हैं जिनको अपने प्रणको पूराकरिबे को भार है ताते और को भरोसो छांड़िभजै ता जनको भगवान् भलोकरि हैं सदा भगवान् कहे षट् ऐश्वर्य युक्त सामरस्त यथा महारामायणे ॥ ऐश्वर्यंनचधर्मंश्च यशसाचश्रियैवच ॥ बैराग्यमोक्षषट्कोर्णः संजातो भगवान्हरिः ९ ॥

ऋषिनारिउधारि कियेशठकेवट

सोतपुनीतसुकीर्त्ति लही। निजलोक दियोशबरीखगकोकपिथाप्योसोमालु महैसवही। दशशीशविरोधसभीतविभीषणभूपकियोजगलीकरही । करुणानिधिकोभजु तुलसी रघुनाथअनाथके नाथसही १० ॥

ऋषिनारि अहल्याको शापते उद्धार कियो शठ मूर्ख केवट नीचजाति निषाद को मीतकरि पुनीत कहे पवित्र कियो जाने सुकीर्त्तिलही संसारमें सुंदर कीर्तिपाई शबरी औ खग कहे गीध इनको अपनो धामदिये कपि सुग्रीवको थाप्यौ कपिनायक कियोसो सब जग जानतहै दशशीशके बिरोधते सभीत कहे डराय कै शरण आयो ता बिभीषणको लंकाको भूप कियो जाको लोककहे निशानी रामायण में कथा सदा बनी रही गोसाईं जी कहतहैं कि रेमन ऐसे करुणानिधि को भजु श्री रघुनाथजी अनाथके नाथ सहीकहे सचिहैं यह प्रणत पालगुण है १० ॥

कौशिक विप्रबध मिथिलाधिप केशव शोचदल्योपलसाहै। बालिदशाननबन्धुकथासुनिशत्रुसुसाहबशीलसराहै। ऐसोअनूपकहैतुलसीरघुनायककी

अगुणीगुणगाहै । आरतदीनअनाथन
कोरघुनाथकरैनिजहाथनछाहै ॥ ११ ॥

कौशिक जो विश्वामित्रको यज्ञ पूर्णकरै विप्रवधू अहल्याको शापते उद्धारकिये धनुष तोरि मिथिला-धिपको प्रणराखेउ इत्यादि सबके शोच पलक मात्र मेंदले बालि दशाननके बन्धु अर्थात् सुग्रीव बिभीषण को अकंटक राज्यदियो इत्यादिकथासुनि सुसाहब श्रीरघुनाथजीको शीलमयोस्वभावको सराहना शम्भु जोकरतेहैं यथाकुम्भकर्णकहै ॥ श्यामगातसरसीरुह लोचन ॥ देखौंजाइतापत्रयमोचन । बन्धुबंशतैकौन उजागर । भजेहुरामशोभासुखसागर ॥ अगुणी कहे गुणरहितन के गुणन को ग्राही यथा वानर जाति चञ्चल पशु यथा ॥ प्रभु तरुतरकपिडारपर ते किय आपुसमान ॥ पुनः ॥ ये सबसखासुनहुमुनिमेरे । भये समरसागरकेबेरे ॥ ऐसो गुणरहितन के गुणग्राही बिरुदावली श्री रघुनाथजी की ताको तुलसीदास अनूप कहतेहैं समता योग्य दूसरो नहीं है काहेते आर्त जे दुःखितहैं यथा गज द्रौपदी दीन जे गरीब हैं यथा शवरी कोलभिल्लादि अनाथ जिनके दूसरो नाथ नहींहै यथा सुग्रीव विभीषण इत्यादि पै श्री रघुनाथजी अपनेहाथनछांहीं करतजामें कोई आंच र लागै यथा अम्बरीष ११

तेरेबग्रसाहेबग्रसाहतऔरान औरबग्र

साहिकेबेचनहारे । ब्योमरसातलभूमि भरेनृपकूरकुसाहबसेतिहुंखारे । तुलसी त्यहिसेवतकौनमरैरजते लघुको करेमेरुतेभारे ।स्वामिसुशीलसमर्थ सुजान सोतो सोंतुहींदशरत्थदुलारे १२ ॥

तेरे व्यसाहे कहे दया वित्तदै जिनको मोल लियेभाव जिन जीवनको शुद्धकरि भक्तिमें आरूढ़ करे ते औरन को शुद्ध करत यथा ॥ नारद उपदेश दै यथा भरत ॥ जोनहोतजगभावभरतको । अचर सचरचरअचरकरतको ॥ इत्यादि अपनोभाव देखाय और को भावोक करत औ और जे ब्रह्मादि देवता हैं ते ब्यसाहिके बेचन हारे हैं भाव प्रथम अपनो मानि बरदान दियो पीछे जैसो कर्म करे तैसो फल औरन के हाथ दिवायो यथा हिरण्यकशिपु रावण भस्मासुर ताते देवतादि जेस्वर्गमेंहैं नागादि जेपाताल में राजादि जे भूमि मे हैं इत्यादि त्रैलोक्यमें भरेहैं ते कूर कहे कपटी कुसाहब हैं तैसे तिहूंको खारे बने रहत भाव वृथा क्रोधित रहत हैं गोसाईंजी कहतहैं कि तिन कुसाहबनको सेवाकरि क्रोध सहि सहि को मरै काहेते रजते लघुजीवनको मेरुतेभारी कौन करि सकत है यथा बाल्मीकि निषाद शबरी गीधादि तुच्छजीव जिनकी कृपाते महान भये ऐसे

स्वामी सुशील जे ऊंच नीच नहीं विचारत शवरी के जूठे फलखाये गीध को अकोरा में बैठारे समन्थ कहे जे बालि रावण को मारि सुग्रीव विभीषण को थाप्यो अथवा निषादादि के पाप नाशकरि सुकृती करि दिये सुजान कहे चतुर इत्यादि गुण सहित हेइशरथदुलारे तेरेसमान तुहींहै दूसरानहींहै १२॥

यातुधानभालुकपिकेवटबिहंग जो जोपालोनाथसद्य सोसोभयोकामकाज को।आरतअनाथदीनमलिनशरणआये राखेअपनायसोस्वभाव महराजको। नामतुलसीपै भोंड़ेभागते कहायोदास कियेअंगीकारऐसेबड़े दगाबाजको। साहबसमर्थदशरथके दयालदेवदूसरो नतोसोंतुहींआपनेकिलाजको १३॥

यातुधान विभीषण भालु जामवान कपि सुग्रीवादि केवट निषादादि विहंग जटायु इत्यादि हे नाथ जिन जिन को पाले सोसो सद्य कहे तुरतही तुम्हारो काम करिबे योग्य ह्वै गयो भाव सब आश भरोसाछांड़ि शुद्ध शरणागती धर्मपर आरूढ़ ह्वै गये आर्त्त गजादि अनाथ सुग्रीवादि दीन शवरी आदि मलीन कोलभिल्लादि जे जे शरण में आये तिनकोआपन बनाय शरणमेंराखे ऐसोकृपाशीलमयी

शरणापाल स्वभाव महाराज कोहै यथा ॥ कोटि विप्र अघलागहिंजेही ॥ आयेशरणतत्यागहुंतेही ॥ सनत्कुमार संहितायां ॥ सत्यसंधंजितक्रोधंशरणागतवत्सलं ॥ सर्वक्लेशापहरणं विभीषणवरप्रदम् ॥ गोसाईं जी कहत हैं कि पवित्र पूज्य तुलसी ऐसो मेरो नाम है अरु कर्मनते अपूज्य अपावन भांग सम भोंड़ो कहे अपावन हौं ऐसो बड़ो दगाबाज मोको प्रभु अंगीकार कीन्हेउ ताते मोहूं तुलसीदास कहायों हे दशरथ के सुवन समरथ साहब तुम सम दयालु देव दूसरो नहीं है अपने शरणागत को लाज को राखनहार तोसों तुहीं है १३ ॥

महाबलीबालिदलिकायरसुकंठक-पिराजकियेमहाराजहैंनकाहूकामको भ्रातघातपातकी निशाचर शरणआये कियेअंगीकारनाथ ऐतेबड़ेबामको । रायदशरत्थके समर्थतेरेनामलिये तुलसी सेकूरकोकहतजगरामको । आपनेनि-वाजकीतौलाजमहाराजको सुभावस-मुझतमनमुदितगुलामको १४ ॥

वालि ऐसे महा बलीको दलिकै महाराज श्री रघुनाथ जी कादर सुग्रीवजी काहू काम को नहीं ताको कपिराज कियो औ भ्राता के घातकी इच्छा

जाके मन में ऐसो पातकी जाति निशाचर येतो बड़ो वाम कहे कुटिल विभीषण शरण आये ताको रघुनाथ जी अंगीकार कीन्हे हे महाराज दशरथ सुवन समर्थ तुम्हारे नामके लिये ते तुलसी ऐसे कूर को सब जग रामदास कहत ताते महाराज श्री रघुनाथ जीको अपने निवाजे की सदा लाज है ऐसो स्वभाव समुझत गुलाम तुलसी दास मन में मुदित है २४ ॥

रूपशीलसिंधुगुणसिंधुबंधुदीनकोदया निधानजानमणिबीरबाहुबोलको। श्राद्धकियेगीधकोसराहेफलशबरीकेशिला शापशमननिबाह्योनेहकोलको।तुलसी उराउहोतरामकोसुभावसुनि कोनबलि जाउंनबिकाइबिनमोलको।ऐसेऊसुसाहब सोंजाकोअनुरागनसोबड़ोईअभागोभा गभागोलोभलोलको २५ ॥

श्री रघुनाथ को रूप गुणन को समुद्र है तामें ते कछु कण मात्र लिखत क्रमालंकार ते यथा प्रभु शील समुद्र हैं याते नीच खग गीधको श्राद्ध किये नीचदीन मलोजन को अपनो बनायो बड़ाई देना यह सौशील्य गुण है प्रभु में यथा भगवद्गुण दर्पणे ॥ हीनैर्दीनैर्मलीनैश्चबीभत्सैःकुत्सितैरपि ॥ मह

तोच्छिद्रसंश्लेषं सौशील्यंविदुरीश्वरा: ॥ पुन:दीनबंधु हैं याते दीन शबरी के फलनकी प्रशंसा करे तहां ब्राह्मणादि वर्ण को विचारबिना ज्ञानादि के साधन बिना गुण अवगुण विचार बिना अपनो करिलेना यह सौहृद गुणहै यथा भागवते हनुमान्वाक्यम् ॥ नजन्मनूनंमहतोनसौभगं नवाक्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोष हेतु: तैर्यद्विसृष्टानपिनौवनौकसश्चकारसख्ये वतलक्ष्म णाग्रज: ॥ पुन:दयानिधानहैं यातेशिलाशापकोशमन कहे नाश करि अहल्या को दिव्य देह बनाये तहां बिना प्रयोजन अकारण प्रीति करना यह दयागुणहै सनत्कुमार संहितायां ॥ त्रैलोक्यनाथंसरसीरुहाक्षंद यानिधिंद्वन्द्वबिन शहेतुं॥पुन: जान मणि कहे सुजान नमें शिरोमणिहैं याते कोलभिल्लन को नेह निबाहे अर्थात् उनकी बोली में बातचीतकरत यह चातुर्य्य ता गुण है कि प्रभु सबकी भाषा समुझत यथा भगवद्गुण दर्पणे ॥ कोशानांभाषयाराम: कौशेषुव्य यदेशिक: ॥ ऋचराक्षसपक्षप्रुतिषांगीर्भिस्तथैवस: १ अन्यान्यदेशभाषाभिस्तत्रैवव्यवहारक: ॥ सर्वत्रचतु रोराम:पारसीमपिपेठिवान् २ भूतप्रेतपिशाचानांभाषा विद्राघव:प्रभु: ॥ दैत्यदानवनागानांभाषाभिज्ञोरघु द्वह: ३ गीर्बाणबाणीनिपुणोरामस्तैप्रणतंसदा ॥ कीटपक्षिपतंगानांरुतज्ञोरसकोपिस: ४ महाशाकुनि को राम:समुद्रागमपारग: ॥ ग्रामारण्यपशूनांचभाषा- भिर्व्यवहारकृत् ५ पुन: जाको बाहकहे भरोसादे

जो बोल बोलत ताके निबाहबे में बीरहैं हर्ष सहित पूरा करत यहवीर्य गुणहै यथा ॥ त्यागबीरोदयाबीरोविद्याबीरो बिचक्षणः । पराक्रममहाबीरोधर्मवीरः सदास्वतः १ पंचबीरा समाख्यातारामएवसपंचधा ॥ रघुबीरोइतिख्यातिःसर्वबीरोपलक्षणः २ ऐसा स्वभाव श्री रघुनाथ जी को जानि तुलसीऊ रावहोत भाव मन आनंद होत जा सुभाव को सुनि बिना मोल को बिकाइ कै को न बलिजाइ ऐसेहू सुसाहब सोंजाको अनुराग नहीं भाव प्रभु के प्रीति रंगमें जाकोमन नहीं रँगि गयो ते बड़े अभागी हैं काहेते विषयलोभ ते मन लोलकहै चंचल है ताते उनकी भाग्य भागि गई है १५ ॥

धीरधरैयाजमहाराजनिकेमहाराजजाकोनामलेतहीसुखेतहोतऊसरो । सासाहबकहाजहानजानकीशसोसुजानसुमिरेकृपालकेमरालहोतखूसरो । केवटपषानयातुधानकपिभालुतारेअपनायोतुलसीसोधींगधमधूसरो । बोलकोअटलबाँहकोपगारदीनबंधु दूबरेकोदानिकोदयानिधानदूसरो १६ ॥

या कवित्त विषे तीनिचरणके पांचपांच विशेषण क्रम ते लागत चौथे चरणके विशेषण बिपरीति ते

लागत अंत आदिमें यथा अंतमें जो पद है किदूस-
रो भाव दूसरो नहींहै एक रघुनाथही शूर शिरताज
हैं यह सौर्यगुण प्रभु को स्मरण कीन्हे ते यमराजके
दंडको भय अरु कामादि को विघ्नता अपही नाश
ह्वैकै जीव शुद्ध ह्वैकै प्रभुमें लागत यथा भगवद्गुण
दर्पणे ॥ अगणितपापानस्मरान्भगवदेव शरणानपि
यमो दंडयिष्यतीतिनिवृत्तिर्भगवतऐश्वर्याद्यपरपर्य्या
यशौर्य्यगुणानुसंधानफलं॥ सोशौर्य्यगुणतेप्रभुकेवटको
अपनाये अर्थात् जो समूह पाप रहैं ता हेतु यमदंड
को भय सों औ कामादिको बिघ्नता सों सब क्षण में
प्रभु नाश करि दीन्हे शुद्ध ह्वै सनभयो अरुमहारा-
जन के महाराज कहे यावत् भगवान् के रूप हैं
तिनके परे श्री रामरूप है याते दया निधान हैं सब
के रक्षक हैं यथा मंत्रार्थे ॥ जानक्यासहदेवेशो
रघुनाथोजगद्गुरुः॥रक्षकःसर्वसिद्धांतबेदांतेषुप्रगीयते१
ताही दया गुणते प्रभु पाषाणते अहल्या को दिव्य
देहकरी पुनः जिनप्रभुको नाम लेतही जो ऊषर है
जिन के उरमें काहू सुकृत को बीज नहीं जामत
तेऊ सुखेत होत भाव सब सुकृत को फल परे धाम
को अधिकारी होत यथा बिष्णु पुराणे ॥ अवशेना
पि यन्नाम्निकीर्तितेसर्वपातकैः ॥ पुमान्विमुच्यते
सद्यस्सिंहत्रस्तमृगैरिव ॥ पाद्मेयथा॥ सकृदुच्चारयेद्य
स्तु रामनामपरात्परं ॥ शुद्धांतःकरणोभूत्वानिर्वाण
मधिगच्छति १ यह प्रताप गुण दूबरे को दानि है

याही गुणते प्रभु विभीषणको अपनाये तहां ऊपर सम्मनिशाचर जाति सो नामलिहे सुखेत सो भागवत भयो औ घरते निरादर दीनदूबर सो लंकनायकभयो और दूसरो जहान में नहीं है एक रघुनायही जो साहब कहे शरणागत पालिबेको बीरयथा ॥ त्याग वीरोदयावीरोविद्यावीरोविचक्षणः ॥ पराक्रममहा वीरोधर्मवीरःसदास्वतः १ पंचवीरःसमाख्यातारामंये वसपंचधा ॥ रघुवीरोइतिख्यातिःसर्ववीरोपलक्षणः २ इत्यादि बाह की पगार कहे जाको भरोसा देत ताको निर्बाह करत यहि वीरता गुणते प्रभु सुग्रीव को पाले कि महा बली बालि को मारि सुग्रीव को कपिराज कीन्हे औ सुजान दूसरा नहीं है एक जानकीश ही सुजान कहे चतुरहैं जो सबकी भाषा समुझत यह प्रमाण पूर्वके कवित में लिखी है सब की भाषा में बात करत ऐसे दीनबंधु हैं सो दीन-बंधु सुजानता गुणते कपि भालुन को पाले दीन पशुनको सखा बनाये चतुरता गुणते उनको बोलो समुझत औ अटल कहे अचलहै जिनको बोलयथा॥ रामो मिथ्यान भाष्यंते । ऐसे कृपालु कोस्मरण करते ही खूसट सम अपावन कुद्रूपी सोऊहंससम विवेकी पावन होतयथा तुलसी धींग कहेकुमार्गीधमधूसरमूर्ख खूसटसम ताहूको अपन्याय हंससम पावनकरे१६ ॥

कौबेकोबिप्रोकलोक लोकपालहूतेस

न कहूंकोऊभोनचरवाहोकपिभालुको। पबिकोपहारकियो ख्यालहीकृपालुरा मबापुरोविभीषघरौंधाहुतेबालको । नामओटलेतहीनिखोटहोतखोटेखलचो टबिनमोटपाइभयोननिहालको। तुलसी किबारबड़ीढीलहोतशीलसिंधु बिगरीसँ वारिबेकोदूसरोदयालको १७ ॥

इंद्रादि लोकपालहुते कहो बनेरहे लेकिन रा- वण रूप शोकको मिटाय लोकको विशोक कहे सुखी कोऊ न करि सकेउ औ सौभाविक में चं- चल पशु कपि भालु तिनको चरवाहो कहे सुमार्ग में कोऊ न लगाइ सक्यो औ विभीषण बापुरो बाल कन कैसो बनायो धूरि कैसो घरौंदा निर्बल ताको ख्याल ही में कृपालुश्री रघुनाथ जी पबि कहे वज्र से पोढ़ो पहार सों अचल कियो यथा ॥ करहुक- लप भरि राज्य तुमम्वहिं सुमिरयहुमनमाहिं ॥ पु- नि मम धाम सिधारयहु जहां संत सब जाहिं ॥ जोतांबादि चांदीके भीतर होत ताको खोटाकहत यथा बानरन में चंचलता है जो चांदी तांबा मि- लोहै ताको खल कही यथाराक्षसन में विकारता जोवमें मिलो है तहां चहै खोटा होइ चहै खल होइ जापर प्रतापी राजाको टकसारी सिक्का नामां-

क्षित होत ता नामकी ओटते खरेकी जगह पर चलत तैसेही खोटेखल प्रभुके नामकी ओट होतही निखोटे कहे खरे होत अरु चोट बिनालागे भाव कर्म ज्ञानादि साधन बिना कीन्हे मोट कहे भक्ति मुक्ति पाइ कोनहीं निहाल भयो ताते बिगरी को सुधारिबेयोग्य दूसरो दयालु नहीं है हे शीलसिंधु श्री रघुनाथ जी अब तुलसी को बारको बड़ीढील होतीहै भाव जल्दी क्यों नहीं अपन्यावतही १७ ॥

नामलियेपूतकोपुनीतकियेपातकीश आरतनिवारीप्रभुपाहिकहेपीलकी। छलिनकीछौड़ीसोनिगोड़ी छोटीजातिपाँतिकीन्हीलीनआपुमें भामिनीभोंड़भीलकी । तुलसीओतारिबोबिसारिबोन अंतमोहूं नीकेहैंप्रतीतिरावरेसुभावशीलकी । देवतौदयानिकेतदेतदादिदीननकी मेरीबारमेरेहीअभागनाथढीलकी १८॥

पातकीश महापापी अजामीलपुत्रकोनाम हरि संबंधी मृत्युसमय कहे ताहूको पुनीत करि परंधाम को पठायो पील गजराज पाहि कहे कि मैं शरणहौं ताहूकी आर्त जो ग्राह पकरेको दुःख ताको प्रभु निवारे मिटाइ दिये औ शवरी जो छलिन की छौड़ी कहे बेटी भावकाहू सुकृतिन की नहीं है पुनः

निगोड़ो निकाम जाको जूठे अनूठे को ज्ञान नहीं है पुनः छोटी जाति ताहूमें पांति रहित अर्थात् भी-लनकी पांति ते निसरि ऋषि के यहां आई तहां अपर ऋषिन त्यागे ताते दोऊ पांति ते गई औ भोड़ी जाति भीलकी स्त्री भीलिनि शबरी ताहू को प्रभु आपु में लीन कीन्हो ऐसो शीलमयी स्वभाव रावरेको है ताको मोको प्रतीति है कि तुलसीऊ को तारिबो बिसारिबो न अंत में तुलसिउको तारि हौ काहेते देवजो श्री रघुनाथ जी कृपा के निकेत कहे स्थान हैं जे दीननको दादिदेते हैं भाव कोऊ शत्रु सतायो सभीत दीन ह्वै जो शरण आयो ता-को दुःख प्रभु मिटाये गोसाईं जी कहत कि मोको कामादि शत्रु सतावत सो दुःख निवारिबे को प्रभु ढील किहे हैं सो मेरी अभाग्यते तहां अपनो दोष प्रभु के गुण समुझि भरोसा राखन यह भक्तन को लक्षण है यथा॥ गुणातुम्हारसमुझैनिजदोसा। ज्यहि सबभांतितुम्हारभरोसा॥ याते गोसाईं कहेहैं १८॥

आगेपरेपाहनकृपाकिरातकोलनी कपीशनिशिचरअपनायेनायेमाथजू । साँचीसेवकाईहनुमानकी सुजानरायऋ णियाकहायेहों बिकानेताकेहाथजू । तुलसीसेखोटेखरेहोतओट नामहीकीम

हँगीमाटीमगहूकीमृगमदसाथजू । बात चलेबातकोनमानिबोबिलगबलिकाकी सेवा रीझिकोनिवाजोरघुनाथजू १९ ॥

या कवित्त विषे व्यंग्य बचननमें स्तुति है यथा मार्ग जात में आगे परिगई ताते पाहन अहल्या को पवित्र कीन्हे किरात औ कोलनी शवरी को कृपाकरि अपनायो कपीश सुग्रीव निशिचर विभीषण तिनको माथ नायेते अपनाये भाव इन काहू ते कुछ काम नहीं बनो अपनेही ओरते कृपाकर एक हनुमान्‌जीको सांची सेवकाई है ताको सुजानराय श्री रघुनाथजी कछुदेवे नहीं कीन्हे किन्तु ऋणियां कहाय ताके हाथ विकाने यथा ॥ सुनुसुततोहिं उऋणमैंनाहीं ॥ ताते आपके नामके ओट होतही जे खोटे तुलसी ऐसे तेऊ खरे होत यथा मृगमद के संग मगकी माटी महँगी होत अर्थात् जहां कस्तूरी गिरि परत ताको उठावत माटी साथ में लागि आवत सोराहकी माटी कस्तूरीकेसाथ महँगी बिकात है तैसे आपके नामके ओट खोटे जीव पावन होत हैं बातपरे पर बात कही जात ताको विलग कहे बुरान मानब मैंबलिजाउं हेश्रीरघुनाथ जी काकी शुद्ध सेवकाई देखि काको निवाजे अर्थात् जाको निवाजे ताको अपनी ओर ते कृपा करि निवाजे भाव अकारण कृपा करि सर्वस्व देत ।जे

शुद्ध ह्वै सेवा करत ताके हाथ आपु बिकाइ जात यह ब्याजस्तुति है १९ ॥

कौशिककीचलतपषाणकीपरसपा इँ टूटतधनुषबनिगईहैजनककी। कोल पशुशवरीबिहंगभालुरातिचर रतिनके लालचिनप्रापतिमननकी। कोटिकला कुशलकृपालनतपालबलि बातहूकिते कतरातुलसीतनककी। रायदशरथके समर्थरामराजमनि तेरेहेरेलोपैलिपि बिधिहूगणककी २० ॥

कौशिक की चलत कहे विश्वामित्रकी बाइस ते प्रभु पदरज परसेते पाषाण अहल्याकी बनिगई जानकी जीके हेतु धनुष तोरे याते जनकजी की बनो भाव प्रण रह्यो भगवत् संबन्धी भये पुनः कोलभिल्ल पशु जो मृग रूप मारीच विहंग जो जटायु ऋच्छ बानर सुग्रीव यामवानादि रातिचर बिभीषणादि ते सब रत्तिनके लालची भाव लौकिक सुख दुर्लभ रहै तिनको मनन सुखकी प्राप्ती भई भाव लोक परलोक दोऊ सुख समूह पाये इत्यादि जो जौन भांति चाही ताको तैसेही सुख दीन्हेउँ याते कोटिन कला में कुशल कहे सब भांति ते सुजान औ कृपाल नत जो नम्रता के पालन हार

ऐसे समर्थ आपु तहां बलिजाउं तृण सम तनकतुल-सोके तारिबेकी केतिक बातहै राजन में शिरोमणि महाराज दशरथ के समर्थ पुत्र तेरे कृपादृष्टि हेरेते बिधि ऐसे गणाऊ जे काल कर्म स्वभाव समुभि कै भाग्याभाग्य लिखत हैं ऐसो ब्रह्मा की लिखी लिपि जो पांति सोऊ लोपत कहे मिटिजात है भाव जापर कृपादृष्टि हेरत ताको काल कर्म स्वभाव मिटाइ देते हैं २० ॥

शिलाशापपापगुहगीधकोमिलाप शवरीके बापआपचलिगयोहौसोसुनी मैं । सेवकसराहेकपिनायक विभीषण कोभरतसभासादरसनेहसुरधुनीमैं । आलसीअभागीअघीआरत अनाथपालसाहं बसमर्थएकनीकेमनगुनीमैं । दोषदुखदारिददलैयादीनबंधुराम तुलसीनदूसरोदयानिधानदुनीमैं २१ ॥

या कवित विषे पांच बिशेषण क्रमते चारिहू चरणते अर्थ सिद्ध होत यथा शिलारूप अहल्याको शाप उद्धार कीन्हे सो कैसी है अहल्या आलसी भाव जाने अपनो परायो पति न चीन्हे परपति रतिकीन्हें सो दोष को प्रभुदले पवित्र करि दीन्हे पुनः गुहके पापदले कैसो रहै गुह अभागी जो हिंसारत

नीच जाति में जन्म भयो ताके पापन के फल दुःख ताको नाश करि प्रभु सुखी करिदीन्हें पुनः गीध सों मिलाप कहे अकोरामें लीन्हें सो गीध कैसा रहै अघीकहे पातकी मांस अहारी सुकृति रूप वित्त भो दरिद्री ताको दारिददले सुकृतिन को शिरोमणि करे पुनः यह मैं सुनो है कि शवरीके धामको आपु चलिकै गयो है बाप कहे जगत् के पिता ते शवरीको माता करि माने गीता वली में लिखाहै, तेहिमातु ज्यों रघुनाथ अपने हाथजल अंजुलिदई । सो कैसी रहै शवरी आर्तकहे ते गुरुको बियोग ऋषिन को त्याग ते आर्ततातें दीन रहै ताकी दीनता दलि सर्वोपरि करिदीन्हें ऐसे प्रभु दीन बंधुहैं पुनः सुग्रीव बिभीषणको सुसेवक करिमाने अरु राज्य सभा में आदर सहित प्रभु भरतजी सों प्रशंसा करे उनके सनेहको गंगाजी समनिर्मल पावन करि बर्णनकरे ते सुग्रीव बिभीषण कैसेरहैं अनाथ तिनको प्रभु महाराज किये गोसाईं जी कहत हैं किमैं अपने मन में गुणिकै यह निश्चय कियो कि ऐसो दया निधान दुनियामें दूसरो नहीं है अनाथ पाल समर्थ साहब एक श्री रघुनाथही जी हैं २१ ॥

मीतबालिबंधुपूतदूतदशकंधबंधु सचिवशराधकियोशवरीजटायुको । लंक जरीजोहेंजियशोच सोबिभीषणकोक-

हैाऐसेसाहबकीसेवानखटायको । बड़े एकएकतेअनेकलोकलोकपालअपनेअ पनेकोंतौकहैगोघटायको । सांकरेको सेइबोसराहबेसुमिरिबेकोरामसो नसा- हिबनकुमतिकटाईको २२ ॥

शत्रुबालि ताके बंधु सुग्रीवको मित्र कियो पुत्र अंगदको दूत कियो भाव शत्रुसंबंधी को शंका नकरे तैसे रावण के बंधु को सचिव करे यामें सबलता निःशंकता गुण दिखाये अरु शवरी गीध महानि- षिद्ध तिन की श्राद्ध कियो यामें सौशीलता गुण है बालिकी जो राज्यधानी सो निर्विघ्न सुग्रीव को दीन्हेउ अरु विभीषण को जरी लंका दीन्हें यह प्रभु के जीमें शोच है तामें शंका कि प्रभु शोच क्यों करते हैं ॥ निमिष मात्रमहंभुवननिकाया । रचैजासुअनुशासनमाया ॥ ऐसेसमर्थनईक्योंनकारिद ये तहांउत्तर प्रभु भक्तनको मनोरथ प्रथम पूराकरिकै पीछे दिव्य ऐश्वर्य देतेहैं यथा ध्रुवको प्रथम राज्य कर,ये पीछे अचल धाम दिये तैसे विभीषण को बासना अपने राज्य को रहे सो पूराकराय पीछे अपने धामको बास दिये ऐसे समर्थ सौशील सरल साहबकी सेवामें को न खटाय भाव सबको सेवकाई पारहोइ तहां बैकुंठादि आदि अनेकन लोक हैं तिनकेनायक यथा बरुण यम इन्द्र ब्रह्मा शिव विष्णु

महा विष्णु महाशंभु वासुदेवादि जेते लोकनाथ हैं ते एकते एक बड़े हैं तिनके सेवक अपने साहबनको घाटिको कहैगो भाव अपने स्वामीको तौ सराहते हैं परंतु सबके प्रशंसा करिबे योग्य गुण श्रीरघुनाथ जीमें हैं याते सब प्रशंसा करते हैं कि सांकरे को सांकर आधि मनकी पीड़ा व्याधि देह की पीड़ादि कौनहू दुःखहोइ जो श्रीजानकीनाथको नामस्मरण करै तौ सब दुःख नाश करिदेते हैं ऐसी प्रशंसा नारदजी अंबरीष सों करे हैं यथा ब्रह्मवैवर्त्ते ॥ आधयोव्याधयोयस्यस्मरणान्नामकीर्त्तनात् ॥ शीघ्रवैनाशमायांतितंवंदेजानकीपतिम् १ आदिपुराणेश्रीकृष्णवाक्यं ॥ श्रद्धयाहेलयानामवदंतिमनुजाभुवि ॥ तेषां नास्तिभयंपार्थरामनामप्रसादतः २ ॥ पुनः श्रीरघुनाथ जी सेवा करिबे योग्य सुलभ स्वामीहैं जे सेवक को मन नहीं तोड़तेहैं यथा भागवते हनुमान्वाक्यं ॥ नजन्मनूनंमहतोनसौभगं नवाङ्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः ॥ तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौकसश्चकारसख्यंवतलक्ष्मणाग्रजः ॥ पुनः सराहबे योग्य जिनको यश पवित्र सब गावत यथा भागवते ॥ रामस्यकोशलेन्द्रस्यचरितंकिल्विषापहं ॥ पुनः सुमिरिबेयोग्य जिन को नाम सहजही पतितपावनहै नन्दीपुराणेनन्दीश्वरवाक्यं॥सर्वदासर्वकालेषुयेनकुर्वंतिपातकं ॥ तेपिश्रीरामसन्नामजपंकृत्वापरंपदम् ॥ ताते कुमतिकोकाटनहार श्रीरघुनाथजीकीसमान दूसरोसाहब नहींहै२२॥

भूमिपालव्यालपालनाकपाललोकपा
लकारणाकृपालमैंसबैकेजीकीथाहली ।
कादरकोआदरकाहूकेनहींदेखियतसब
निसुहातहैंसेवासुजानटाहली । तुलसीसु
भायकहैनहींकछूपक्षपात कौनेईसाकि
यकोशभालुखासमाहली । रामहीकेद्वा
रपैबोलाइसनमानियत सोसेदीनदूबरेक
पूतकूरकाहली २३ ॥

एक समय गोसाईं जी बृन्दाबन में रहैं तहां कृष्ण उपासकों ते तर्क कीन्हो यथा तुलसी चरित्रे व्रजबासीउवाच ॥ चौपाई ॥ हमहूंदरशअवधकोपायो। इतोप्रभावदृष्टिनहिंआयो ॥ औरनचमत्कारकछुदेख्यो । दीनखीनप्राणीबहुपेख्यो । तापै गोसाईं जी उत्तरदिये दो० ॥ औरपुरिनसबबांटिलियधनिकधनेश नरेश । दीनखीनराखेशरणदीनानाथदिनेश ॥ पीछे यह कवित्त कहे हैं ॥ भूमिपाल जेराजा ब्यालपाल शेषादि नाकपाल इन्द्रादि लोकपाल ब्रह्मा आदिते सबके जीकी थाह ली अर्थात् पुराणादिकन में सब के चरित विदित हैं तिनको सुनि विचारि सब को स्वभाव जानिलीन है कि नर राजा जे हैं तिनको नीकी भांतिकी टहल करने वालेनकी सेवा सुहाती है अरु देवतादिकों को जप तप यज्ञादि कर्मकाण्ड

बिधिपूर्बक जानिबेमें सुजान टहल करनेवालेन को सेवासुहात है यह लोक प्रसिद्ध है कि काहू देवताको आराधन करै जो विधि सहित न करै तो देवता प्रसन्न न होइ किन्तु क्रोधितहोइ ताते सबके जीकी हाल जानिये यह निश्चय भई कि जे कोऊ कर्मकरि नहीं सकत ऐसे जे कादर हैं तिनको आदर काहूके नहीं देखि परत गोसाईं जी स्वाभाविक में कहत कछु आपनी उपासना को पक्षपात नहीं यह लोक वेद में प्रसिद्ध है यथा ॥ भावकुभावअनखआलसहू । नामभजतमंगलदिशिदशहू ॥ प्रमाणआदिपुराणे श्री कृष्णवाक्यं ॥ श्रद्धयाहेलयानामबदन्तिमनुजाभुवि ॥ तेषांनास्तिभयंपार्थरामंनामप्रसादतः ॥ ब्रह्मवैवर्त्त शंकरबाक्यं ॥ ब्रजंस्तिष्ठन्स्वपन्नश्नन्स्वसन्बाक्यप्रपूर्णके ॥ श्रीरामनामसंकीर्त्यभक्तियुक्तःपरंब्रजेत् १ कथञ्चिन्नामसंकीर्त्यभक्त्यावाभक्तिबर्जिताः ॥ दहतेसर्बपापानियुगांताग्निरियोत्थितः २ ब्रह्मपुराणेब्रह्मावाक्यं॥ प्रमादादिपिसंस्पृष्टोयथानलकणोदहेत् ॥ तथौष्ठपुटसंस्पृष्टं रामनामदहेदघं ॥ इत्यादि प्रमाण तौ असंख्य हैं प्रसिद्ध बिचारि देखौ सेवाइ श्री रघुनाथजी और कौन ईशने खास महल की टहल को अधिकारी बानर ऋच्छन को कौनहै जे ऐसे आलसी हैं कि अपने रहबेको स्थान नहीं बनाइ सकत तिनते और क्याबनै गो ऐसे काहलो कहे आलसी कूर कुमार्गी कोलभिल्लादि गोसाईंजी कहतहैं कि मोहिं ऐसे दीन

दूबरे कपूतन को अपने द्वारपै बोलाइ कै श्रीरघुनाथै जी सनोमान करत हैं २३॥

सेवाअनुरूपफलदेतभूपकूप ज्यौं बिहीनगुणपथिकपियासेजातपथके । लेखेजोखेचोखेचित तुलसीस्वारथहित नीकेदेखेदेवतादेवैयाघनेगथके । गीध मानोंगुरुकपिभालुमानोंमीतके पुनीत गीतशाकेसबसाहेबसमर्थके । औरभूप परखिसुलाखितौलताइलेत लसमके खसमतुहींपैदशरत्थके २४ ॥

जगमें जेराजाहैं ते सेवकनकोतौ सेवाको अनुकूल फलदायक हैं औ याचकन को कूप समहैं अर्थात् जाके पास गुण कहे रस्सी होइतौ कूपते जलपावै बिना रस्सीके पथिक राहके पियासे चलेजात तैसे गुणमानन को राजा दानदेत बे गुणके बिमुखजात गोसाईं जी कहत हैं कि घने गथ कहे बहुतौ द्रव्य के देने वाले जे देवता हैं इन्द्रादि तिनको नीकी भाँति बिचारि देखे कि अपने स्वार्थके हितको चित्त ते चोखे हैं भाव पूजा जप यज्ञादि जो करत तापै प्रसन्न होत ताहूपै लेखा करिकै सुकृति योषिता को अनुकूल फलदेतयथा ॥ पुण्येक्षीणेमृत्युलोके ॥ अरु समर्थसाहब जो श्रीरघुनाथ जी हैं तिनके यश कीर्त्ति

करिके शाके जो प्रताप सो सब पुनीत पवित्र गीत कहे चरितको देव मुनि गानकरि रहे हैं कि जिनने अधम गीधको गुरु कहे बड़ा पिता के सम मानि अरु वानर रिच्छन को मीत करि माने जे चंचल पशु हैं तहां और जे देवादि भूप हैं सो सब सेवक को परखि लेते हैं खोटा है वा खरा औ सुलाखि लेते हैं भाव तन मनते एक रस हैं कि नहीं औ तौलि लेते हैं भाव सेवकाई में पूरा है या नहीं पुनः ताइ लेत भाव बिघ्न देखाइ कसि लेत तब सेवा के योग्य फलदेत अरु लसम कहे खोटे अर्थात नकामन के खसम कहे स्वामी एक तुमहीं दशरथ के नन्दनही यह लोक प्रसिद्ध है रघुनाथ अनाथ के नाथहैं २४ ॥

रीतिमहाराजकी निवाजियेजोमांगनोसोदोषदुखदारिददरिद्रकैकैछोड़िये । नामजाकोकामतरुदेत फलचारिताहि तुलसीबिहाइकैबबूरेंडगोड़िये । याचैकौनरंकदेशदेशकोकलेशकरै देहै तोप्रसन्नह्वैबड़ीबड़ाईबोड़िये । कृपापाथनाथलोकनाथनाथसीतानाथ तजि रघुनाथहाथऔरकाहिओड़िये २५ ॥

श्री रघुराज महाराज की यह रीति है कि जा मांगने वाले को नेवाजत हैं ताके दोषादि ते रहित

करि भव फंद ते छोड़ाई देते हैं काहेते जिनको नाम कल्प वृक्ष जो चारिउ फल देत यथा दानिन में शिरोमणि रघुवंश ताके नाथ रघुनाथ ते अर्थफल दैके दारिद्को मिटाइ देत सर्व धर्म शिरोमणि आह्लादिनी एसो सीता तिनके नाथहैं तातै धर्म फलदै काम क्रोधादि दोष को मिटाइ देत पुनः सब कामनादायक लोकनाथ तिनके नाथहैं ताते काम फल दैकै दै हक दै वक भौतको द दुःख मिटाइ देत कृपापाथ नाथकहे कृपा सागर हैं याते मोक्ष फल दैकै भवबन्धन ते छोड़ाय देत हैं ऐसे श्रीरघुनाथजीको त्यागि और काको हाथ पसारिये अर्थात् देश देशनमें क्लेश सहि नरेशन को कौन यांचे आखिर जो प्रसन्न है बड़ी बड़ाई मानि देहै तौ बोड़िये कहे दमड़ी की कौड़िये तौ देहैं ताते कल्प वृक्ष त्यागि बबूर सकंटक वृक्ष तीक्ष्ण देवता औ रेंड असार नरेशनकी सेवाकौन करै २५ ॥ इहां तक अश्वासन अर्थात् गुण है प्रभुके अवभत्सें अर्थात् जीवके अवगुण बर्णन यथा ॥

जाकेबिलोकतलोकपहोतबिशोक लहैसुरलोकसुठौरहि । सोकमलातजि चंचलता अरुकोटिकलारिझवैशिरमौ रहि । ताकोकहायकहैतुलसीतुलजा हिनसांगतकूकुरकौरहि । जानकिजी

बनकोजनह्वै जरिजाउसोजीहजोयाँच तऔरहि २६॥

जाकेसुदृष्टि बिलोकत लोकपकहेइन्द्रादिकोऐश्वर्य होत अरु जीव बिशोककहे दुःखरहित ह्वै सुरलोक ऐसा सुन्दर ठौर लहत कहे पावत है ऐसी कमला जो लक्ष्मी जो तेऊ अपनो चंचलस्वभाव छांड़िकै सकल शिरमौर जो श्री रघुनाथ जी तिनको कोटिन कला करिकै रिझावतहैं भाव जाद्रव्यको लोभकरत सो लक्ष्मी प्रसिद्ध प्रभुकी चेरी है ऐसे श्री रघुनाथ जीको दास कहायकै हे तुलसी देवादि के द्वार द्वार पै कूकुर सम औरके हेतु तुच्छ सुखभोगत तोको लाज नहीं लागत है काहेते जानकी जीवनको जन ह्वैकै जोऔरको याचनाकरै ताकी जीह जरिजाउ काहे ते सबके सिद्धि दाता श्रीरघुनाथजी हैं यथा हरिहिहरिताबिधिहिबिधिताशिवहिशिवता जेहिदई सोजानकीपतिमधुरमूरतिमोदमयमंगलमई ॥ तत्र प्रमाण रुद्रयामले शिववाक्यं ॥ यत्प्रभावेनहर्ताहं त्राताविष्णुप्रजापतिः ॥ यत्प्रसादेनकर्ताभूदेवोब्रह्माप्रजापतिः ॥ येनराघमलोकेपुरामभक्तिपराङ्मुखाः ॥ जपंतपंदयाशौचंशास्त्रानामवगाहनं ॥ सर्वं वृथाबिनायेनशृणुध्वंपार्वतिप्रिये ॥ पुनःपुलहसंहितायांविष्णुवाक्यं ॥ सावित्रीब्रह्मणाशार्द्ध लक्ष्मीनारायणेनच । शंभुनारामरामेतिपार्वतिजयतिस्फुटं२६ ॥

जड़पंचमिलैजेंहिदेहकरीकरनीलघु धाधरणीधरकी । जनकीकहु क्योंकरि हैनसम्हारजोधारकसचराचरकी । तुलसीकहुरामसमानकोआनहैसेवकिजासुरमाधरकी । जगमेंगतित्याहिजगत्पतिकीपरवाहिहैताहिकहानरकी २७॥

जड़पंचतत्व यथा आकाश श्याम बायुहरितअग्नि अरुण जलश्वेत पृथ्वी पीत इत्यादि पांचों जड़ हैं औ परस्पर बिरोधी हैं अग्नि जलते बिरोध वायु पृथ्वी ते विरोध तिनको मिलाय देहरची तामेंदश इन्द्री ताके देवता बिषय यथा श्रवणदेव आकाश बिषे शब्द १ त्वचा देव पवन विषे स्पर्श २ नेत्र देव सूर्य विषे रूप ३ रसना देव बरुण विषे रस ४ नासिकादेवअश्विनीकुमार विषे गन्ध ५ इतिसदेव विषे ज्ञानेन्द्री पुनः पगदेव यज्ञ बिष्णु विषे चलन १ गुदादेव यमराज बिषे मूलत्याग २ लिंगदेव प्रजापति बिषे मैथुन ३ मुखदेव अग्नि विषे भक्षण ४ हाथदेव इन्द्र विषे व्यवहार ५ इतिसदेव विषे कर्मेन्द्री तहां एकएक तत्वते द्वै द्वै इन्द्री यथा मुख कान आकाश ते १ त्वचा बाहुवायुते २ नेत्रपद अग्नि ते ३ रसना लिंग जलते ४ गुदा नासिका पृथ्वीते ५ अथ प्रकृति लोभ १ मद २ मान ३ काम ४ क्रोध ५ इतिप्रकृति अलग्नको[illegible] शीशमें मुख कान [illegible]रा

भक्षण सुनब अहार १ धावन १ चलन २ सकोरन ३ पसारन ४ उत्क्रमण ५ इति प्रकृति बायुकी नाभी में बासनासिका द्वारागंध अहार १ श्वास १ प्रश्वास २ क्रिया है २ पुनः निद्रा १ कांति २ क्षुधा ३ आलस ४ जमुहाई ५ इतिप्रकृति अग्निकी पित्त में बासनेत्र द्वारा रूप अहार ३ पुनः रक्त १ पसीना २ मूत्र ३बीज ४ लार ५ इतिप्रकृति जलकी ललाटमें बासलिंग जिह्वा द्वारामैथुन षट्रस अहार ४ पुनः अस्थि १ मांस २ त्वचा ३ नाड़ी ४ रोमा ५ इतिप्रकृतिपृथ्वी की हृदय में बास गुदा द्वारा ५ पुनः वायु आकाशते चित्त है देव जीवहै १ जलते मन देव चन्द्रमा २ पृथ्वी ते बुद्धिदेव ब्रह्मा ३ अग्निते अहंकार देवरुद्र ४ पुनः योग १ बिराग २ स्मरण ३ ज्ञान ४ बिज्ञान ५ उच्चाटनादि ६ चित्तके अंश हैं १ पुनः जप १ यज्ञ २ तप ३ त्याग ४ आचार ५ ध्यानादि ६ बुद्धिके अंश हैं २ पुनः कर्म १ अकर्म २ बिकर्म ३ नेम ४ संकल्प ५ बिकल्पादि ६ मनके अंश हैं ३ पुनःमान १ क्रोध २ ईर्षा ३ पारुष्य ४ हिंसा ५ शत्रुतायुत ६ अहंकार के अंश हैं अथ वायु अंग बास यथा हृदयमें प्राण १ गुदामें अपान २ नाभीमें समान ३ कंठ में उदान ४ सर्वशरीरमें ब्यान ५ नाभीमें नाग ६ नेत्रमें कूर्म ७ क्षुधामें क्रिकिल ८ जमुहाई में देवदत्त ९ मृत्यु में धनंजय १० अथनाड़िका दाहिने पिंगला १ बामेंइंगला २ मध्यसुषुम्ना ३ त्रिपुटीमें महाशब्द ४ बामनेत्रे

गांधरी ५ दा हिन नेत्रेहस्तिनीद रसनामें नाम्नि ७ दहि नेकर्णीपूषा ८ बामकर्णी पश्चिनी ६ मुखेबिलंबिका १० स्थल थाने शं खनी११ अथबाणी नाभीमेंपरा सोराम तत्वनिरूपिणी १ हृदयमें पश्यंती जीवात्म निरूपिणी २ कंठमें मध्यमा धर्मार्थ कामस्वर्गादिवार्ता ३ जिह्वामें बैखरी प्राकृत व्यवहार ४ अथपंचकोश अन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ ज्ञानमय ४ बिज्ञानमय ५ इत्यादि की बिश्वाभिमानी प्रजापतिदेवता जाग्रत अवस्था वैखरी बाणी इतिपंचभौतिक स्थूलशरीर अथसूक्ष्म ॥ पंचप्राण मनोबुद्धिर्दशेंद्रिय समन्वितं ॥ अपंचीकृतमस्थूल सूक्ष्मांगंभोगसाधनं ॥ इति सूक्ष्म शरीर ॥ अथकारण ॥ अविद्याभगवच्छक्तिर्वद्धजीवस्य बंधनं ॥ सदसद्भ्यामनिर्वाच्या शरीरंसा पकारणम् इतिकारण शरीर इत्यादि रचना धरणीधर जो श्री रघुनाथ जी करी है जो औरकी करी नहीं है सकल सो प्रभुको लघुधा कहे कुछ बड़ी बात नहीं है ऐसे समर्थ जो प्रभु हैं ते अपने जनकी क्योंन संभार करि हैं जो चराचर की सार कहे सबको सहारिकै भोजन देत ताको भक्त नहक संदेह करत यथामहाभारते॥ भोजनेच्छादनेचिन्ताश्याकुर्वंतिवैष्णवा ॥ योसौविश्वभरोदेवोसभक्ताकिंउपेच्छति ॥ गोसाई जीकहत कि श्री रघुनाथजी की समिताको समर्थ और कौन है काहेते जिनके घरकी सेवकिनी श्री लक्ष्मीजी हैं ताते जगत्पति जोश्री रघुनाथ की गति

जाको है ताको नरको परवाहि कहा है २७ ॥

जगयांचियेकोऊनयांचियतौजिय यांचियेजानकीजानहिरे । जेहियांचत याचकताजरिजाइ जोजारतजोरजहान-हिरे। गतिदेखुबिचारिबिभीषणकीअरु आनुहियेहनुमानहिरे। तुलसीभजुदारिद दोषदवानलसंकटकोटिकृपानहिरे २८॥

हे जिय जगमें काहूको नयांचिये निष्काम भजन करिये कदाचित् सकाम ह्वै याचिये तो जानकी जान श्री रघुनाथही जीको यांचिये काहेते जो यांचकता दारिद्रता रूप अपने जोरते जहानको जारि रही है अर्थात् आशा मइ दुःख है सोई दुःख रूप यांचकता प्रभुके यांचेते जरिजाती है भाव श्रीरघुनाथ जीके याचेते फिरि यांचकता रहि नहीं जाती है काहेते जो लोकहू परलोकते पूर्णकाम करि देते हैं ताको आगे देखावत कि बिभीषणकी गतिविचारि देखु भाव सकाम रहे तिनको लंकाको राज्य दिये पीछे परंधाम दिये पुनः हनुमान्जी की गति हियेमें आनु अर्थात् निष्काम रहे तिनके प्रभुवश भये गोसाईं जी कहत कि दारिद दोष रूपवनके जारिबे को दावानल समानहै अरु कोटिन भांति के संकट काटिबेको कृपाण समहै ऐसेप्रभु को हेमन भजु २८ ॥

सुनुकानदियेनितनेमलिये रघुनाथ हिकेगुणगाथहिरे । सुखमंदिरसुन्दररूपसदा उरआनिधरेधनुभाथहिरे । रस नानिरावासरसा रसोतुलसी जपुजान किनाथहिरे । करुसंग्रसु शीलसुसन्तनसों तजिकूरकुपंथकुसाथहिरे २९ ॥

अनुरागी भक्तनकी कृपा अपने मनते उपदेश करते हैं प्रथम कीर्ति यश प्रताप सौशीलतादि अनेक गुण जो श्री रघुनाथ जी के हैं ताकी गाथा कहेकथा ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित लीला रामायणादि की नेम लिये कान देके नित श्रवण करु नेमलिये को यह भाव कि कर्म इन्द्रिनकी बिषय रोकि शौच संतोष तप जप ईश्वर निष्ठादि सहित बिधि पूर्वक श्रवण औ कानदिये को भावमनादि बासना रहित समर्चित ह्वै कर्णादि ज्ञानेन्द्रिन की बिषय रोकि बिचार श्रद्धा सहित श्रवण सुखमंदिर कहे जीवन के सुखदायक जे गुण हैं क्षमा करुणा उदार बात्सल्य शरणपालादि समूह यामेंभरेहैं ऐसो श्यामतन कर कमलन में धनुष बाण धारण कटिमें भाथ कहे तरकस पीतांबर शोभित चन्द्र सों प्रसन्न बदन सर्बांग सुठौरबिना भूषणो भूषित ऐसो सुन्दररूप श्रीरघुनाथ जी की उरमें आनु अथवा सुखमंदिर अयोध्या मध्ये

हेमरत्न मंदिर में श्री जानकी जी सहित प्रसन्न रूप यथा महारामायणे ॥ सीतायुतंरघुपतिंचविशोक मूर्तिं पश्यंतितेनिभृमुदा परमेनरम्नम् ॥ भावप्रसन्न रूपसुखमंदिर आसीन ध्यान करबेको चाही उपास-कनको याते गोसाईं जी कहत रेमन रात दिन रस-नाते आदर सहित श्री जानकी नाथ को जपु तहां रसना सों जपबेको कहे आदर सहित जानकीनाथ को कहे रसना सों जपबेको क्योंकहे तहां अंतरमें नामजपे जीवन मुक्त होत है परंतु न प्रेमापरा भक्ति होइ न रघुनाथ जीको समीपीहोइ यथामहारामा-यणे ॥ अंतर्जपंतियेनामजीवन्मुक्तभवंतिते ॥ तेषांन जायतेभक्तिर्नचरामसमीपकः ॥ ताते जे अनुरागी हैं ते रसना सों जपत यथा महारामायणे ॥ जिह्वया प्यंतरेनैव रामनामजपंतिये ॥ तेषांप्रेमापराभक्त्या नित्यं रामसमीपकाः १ श्रीरामनामरसनाग्रपठंति भक्त्याप्रेमाचगद्गदगिरोप्ययहृष्टलोमः ॥ सादरकहि बेको यह भाव कि रूखानाम निरादर होत ताते आदर सहित लाड़ दुलार को नाम अनुरागिन के जपिबेको चाही यथा सनत्कुमार संहितायां ॥ श्री रामचन्द्ररघुपुङ्गवराजवर्य राजेन्द्ररामरघुनायकराघवे शः ॥ राजाधिराजरघुनंदनरामभद्रदासोहमद्यभवतः शरणागतोस्मि ॥ पुनः॥ रामायरामभद्रायरामचन्द्राय वेधसे ॥ रघुनाथायनाथायसीतायाःपतयेनमः ॥ याही हेतु जानकीनाथ कहे औ कूर कुपंथी यथावच्च

सूचया ॥ चार्वाकाश्चतुसः स्वतर्कनिपुणा देहात्मवादे रताः सर्वेवामनिरस्तदुस्सहमहाद्वैतेपराशक्तिकाः ॥ कर्त्तारंप्रभजंतिपापनिरताभूतेषुयेनिर्दया स्तेषामादिद कल्पमेवह्निफलंवैवास्तिमोक्षंपरम् ॥ इत्यादिनास्तिकनकी कुसंगतित्यागिकै सुसंतशीलवान् यथा महारामायणे ॥ शांताः समानमनसाश्चसुशीलयुक्तास्तोषः क्षमागुणदयामृजुबुद्धियुक्तः ॥ विज्ञानज्ञानविरतिः परमार्थवेत्तानिर्द्वंमिकोभयमनःसचरामभक्तः ॥ ऐसे अनुरागी भक्तनकी संगतिकरु २९ ॥

सुतदारऽगारसखापरिवार बिलोकुमहाकुसमाजहिरे । सबकीममतातजिकैसमतासजिसंतसभानबिराजहिरे । नरदेहकहाकरिदेखुविचारि बिगारुगँवारनकाजहिरे । जनिडोलहिलोलुपकूकुरज्योंतुलसीभजुकोशलराजहिरे ३०॥

रे मन सुत जो पुत्रदारा जो नारिसखा जो सनेही परिवारके यावत् लोग हैं तिनको महा कुसमाज दुःखदायी करिकै बिलोकिकै सबकी ममता तजिकै ताग सम खैंचि समता कहे वासना त्यागि एकाग्र चित्तकरिकै प्रभुमें मन लगाउ इति शेषः यह भक्तन को स्वाभाविक चाही यथा ॥ सबकीममताताग बटोरी । ममपदमनहिंबांधिबरडोरी ॥ शिव

संहिता में हनुमान्जी कहे यथा ॥ पुत्रवत्पितृवद्रा मो मातृवन्ममसर्वदा ॥ श्यालवद्भ्रामवद्रामः श्वश्रूवच्छ्वसुरादिवत् ॥ इत्यादिसर्वसंबंध प्रभुमें मानने को चाहो यारीतिते संतनको समाजमें विराजमान रहे नहीं तो बिचारि देखु नरदेह में कहा है भाव सारांश कुछ नहीं है एक हरि भजन सार है हे गँवार सो काज न बिगारु लोलुप कहे परधन पर दारादि में मन लगाये कूकुर ज्यों भढ़ेईहेतु वा कौर हेतु घरघर मांगत न डोलु है तुलसी के मन कोशलराज को भजु ३० ॥

विषयापरवारिनिशातरुणाईसुपाइ परयोअनुरागहिरे । यमकेपहरूदुखरोग वियोग विलोकतहूनविरागहिरे । म मतावशतेसबभूलिगयो भयोभोरमहाभ यभागहिरे । जरठाईदिशारविकालउ योअजहूं जड़जीवनजागहिरे ३१ ॥

परस्त्री हेतुक विषया कहे परकिया रतश्रृङ्गार परस्पर अवलोकन आलंबन है षट्ऋतु शोभा राग रंग सुगंध त्रिविधि पवन पुष्प वाटिकादि उद्दीपन है षट् भांति परकिया यथा ॥ बिदग्धा लचिता गुप्ता कुलटा मुदितानुसैनादिके हाव भावादिमें का मासक्तोत्यादि विषय रूप रात्री में तरुणाई रूप

निद्रा बढ़ी ताते परनारी के अनुराग में परे भाव वाही रंग में मनरँगगयो इत्यादि विषयरति सुख में परिहरि शरणागती भूलिगयो याहोजीवको सो ई जाना है तहां यमराज प्रभुके कोतवाल हैं जो कसूर करत ताको दंड देत यह वेद पुराण द्वारालो कमें प्रसिद्ध है यथाबुध बिला से ॥ देखे नरक बहुत दुखदाई । करिकरिसुरति बहुत पछिताई ॥ अष्टधातुपुतरीकरिताती । लंपटकोलपटावतछाती ॥ परतियनगनदेखिललचाई । फोरतकाकआंखिदुखदाई ॥ इत्यादि वचनलोक में प्रसिद्धतेई जीव को ज गावने वाले यमके पहरूहैं पुनः पर स्त्री रतमें मानस कायिक अनेक रोग होत यथा भयलज्जाकलंक अपमानादि मानसिक रोग हैं गरमी सुजाख प्रमेह नताकती आदिकायिक इत्यादि अनेक रोगहैं पुनः बियोग कहे बिप्रलंभ यथा पूर्व अनुराग अभिलाष चिन्तागुण कथन स्मृति उद्वेग प्रलाप उन्माद व्याधि जड़ता मरणादि वियोग में इत्यादि अनेक दुःखविलोकतहू बिषयते विरागनहीं होत सोममता वशते ज्ञान वैराग सब भूलिगयो भाव विषय रति में सोवते रह्यो अब यमजातनादि महाभय रूपीभा कहे प्रभा घामको गहे भोर भयो जरठाई जो जरा अवस्था सो पूर्व दिशा है तामें कालरूप सूर्य उदय भये भाव मरण काल आइ गयो है जड़जीव अजहूंनहीं जागत ३१ ॥

जनम्योजेहियेनिञ्चनेक क्रियासुख लागिकरीनपरैबरनी । जननीजनकादि हितूभयभरि बहोरिभईउरकीजरनी । तुलसीञ्चबरामकोदासकहा हियेधरुचातककीधरनी । करिहंसकोवेषबडोसबसों तजिदेबककायसकीकरनी ३२ ॥

गोसाईं जी अपने मनते कहतकि ज्यहि योनिमें जन्म पायोताही तनके सुख लागि कहे सुख के हेतु अनेक क्रिया कहे कर्तव्यता कीन्ह जो बर्णिबे योग्य नहीं भावनीच ऊंच विचार रहित तहां जन्म होतही जननी हितू भई पीछे पिता हितू भयो सयान भये पर भाई बहिन परिवार नातादि बहुत हितू भये युवाभये पर उरकी जारन हारीजो नारि है सो हितू भई अथवा पूर्वजे सब हितू भये तिनका ममता वशते पीछे जर न कहे त्रयतापमें जीव जरत भयो हे तुलसी अबश्री रघुनाथजी को दास कहायो ताते अब चातककी धरणी कहे सब को आश भरोसा छांड़ि अनन्य ह्वै प्रभुकी शुद्ध शरणागति हिये में धारु काहे ते हंसको वेष करिके भाव श्री राम भक्तनको वेष यथा महारामायणे ॥

भालेवरम् तिलकंबवरेखदीप्तं रामस्यपादसदृशंसच पीतमध्ये ॥ कंठेतथातुलसिदासलसद्भु वैतम्नबा

ण धनुषांकितर।मभक्त: ।। यथा सब पच्छिन में उतम हंस तथा सब के भक्तन में उतम श्रीराम भक्त हैं यथा शिव संहितायां ॥ इन्द्रादि देवभक्त भ्यो ब्रह्म भक्तो धिको गुणै: शिव भक्ता धिको विष्णु भक्त:शास्त्रपु गीयते ॥ सर्वभ्योविष्णु भक्त भ्यो राम भक्तो विशिष्यते ॥ रामदन्या:परोध्येयो नास्तोतज्जगतांप्रभु: ॥ तस्माद्रामस्ययभक्तास्तेनम स्या:शुभार्थिभि: ॥ ऐसे श्रीराम भक्तरूप हंसको बे ष किहे तौ बककहे बगुला औरकाक कौवा इनकी करणी त्यागि देवककी करणी कहेदेखाउ मेंसूरति साधुकी मनमें असाधु बकध्यानी लोकमें प्रसिद्ध है भावछली काक करणी मनचंचल बचन कटुक क र्म कुटिल भाव चंडाल ३२ ॥

भलिभारतभूमिभले कुलजन्मसमाज शरीरभलोलहिकै।ममताकरषातजिकै बरषाहिममारुतघामसदासहिकै ॥ जो भजैभगवानसयानसोई तुलसीहठचातक ज्योंगहिकै। नतऔरसबैविषबीजबयेह रहाटककामधुकानहिकै ३३ ॥

याके अंतर्गत सुकृति रूप कृषी वर्णन है तहां पहिले अच्छी भूमि चाहिये तहां भारत खंडकी भली भूमि है जामें ... जहां गंगा यमुना सर

यू प्रयाग चित्रकूट बृन्दावन काशी मिथिलादि सु-
क्षेत्रन के मध्य श्री अयोध्या जी जो विष्णु को म
स्तक है यथा पद्मपुराणे ॥ येतद्ब्रह्मपदंवदंति
मुनयोऽयोध्यापुरीमस्तके ॥ ऐसीभूमि सब सुकृतको
उपजावन हारो है पुनः ब्राह्मणादि सुकृत रूप कृषी
के स्वाभाविक अधिकारी हैऐसे उत्तम कुलमें जन्म
पायो तहां अयोध्यादि में सत्संग हेतु राम भक्तन
को समाज भलो है अरु विघ्न रहित निरुज भलो
तन लहि भावनर तन पाइके ताते ममता औ क
र्षाकरे प्रीति वैर त्यागिके वर्षा जाड़ व परि घामस-
हिके गोसाईं जी कहतकि चातक को हठ गहिकै
भाव अनन्य ह्वै जो श्री रघुनाथजी को भजै सोई
सयान है जो भक्ति रूप धान्य उपराजै औ जो औ
र कर्तव्यता करेते मानो नरतन रूपसो नेकोहरता
में सन्त समाज रूप कामधेनु नहिकै विषबीज वये
भाव विषय में मन लगाये महादुःख फल है ३३

सोसुकृतीशुचिमंतसुसन्तसुजान सु-
शीलशिरोमणिस्वय । सुरतीरथतासुम-
नावतआवत पावनहोतहैतातनछवय ।
गुणगेहसनेहकोभाजनसो सबहीसोंउठा
यकहैंभुजद्वय । सतिभावसदाछलछां-
ड़िसबै तुलसीजोरहैरघुबीरकोहवय ३४

कर्मनेष्ठों को सुकृति सांची तबै है जो राम सने ह होइ शुचिमंत कहे तप तीर्थ नेष्ठोंकी पुनीतता तबै सांचोहै जोराम सनेह होइ सुसन्त कहे शांत रसवालेनकी शांति तबै सांची जो राम सनेहहोइ सुजानकहे ज्ञानिन को ज्ञान तबै सांचो जो राम-सनेह होइ सुशील शिरोमणि की सज्जनता तबै सांची जो रामसनेहहोइ रामसनेह होकी देह छुये सब पवित्र होत ताते देवतीर्थ आदि सब रामसने-ही को आगमन मनावत हैं गोसाईं जो कहत कि मैं दोऊ भुजा उठायकै खुलिकै सबसों कहतहौंकि जो रामसनेह को भाजन है सो सब गुणनको गेह है भाव सब गुण आपही आइजाते हैं जो सबछल छांड़िकै सति भावते सदा रघुबीरको सनेहीहूवै रहै काहिते श्रीरामते परे दूसरा तत्व नहींहैयथा पद्म पुराणे ॥ रामान्नास्तिपरोदेवोरामान्नास्तिपरं ब्रतम् ॥ नहिरामात्परो योगीनहिरामात्परोमखः ३४ ॥

सोजननीसोपितासोइभ्रातसो भामिनिसोसुतसोहितमेरो । सोईसगोसोसखा सोइसेवकसोगुरुसोसुरसाहबचेरो । सो तुलसीप्रियप्राणसमान कहांलौंबनाइ कहौंबहुतेरो । जोतजिदेहकोगेहकोनेह सनेहसोरामकोहोइसबेरो ३५ ॥

जननी कहे माता सोईहै पितासोईहै भाई सोई है स्त्री सोईं है पुत्र सोई है हितकारी सोई है सगो सम्बन्धी सोई है सखा सोईहै सेवक सोई है गुरु सोई है देवता सोई है साहब सोई है चेरो सोई है इत्यादि सम्बन्धी कहांतक बहुत बनाइ कै कहौं तुलसी को प्राणन के समान प्रिय सोई है जो पुत्रादि देहको नेहतजि द्रब्यादि गेह को नेह त्यागि श्री रघुनाथ जीको सनेही है शरणागत सबेरे होइ भाव बृथा दिन न गँवावै यामें यह प्रयोजन है कि हरि सनेहिन ते सनेह करै और सों नहीं सनेह राखना ३५ ॥

रामहैं मातुपिता सुतबंधुऔसंगीसखा गुरुस्वामिसनेही । रामकी सौंहै भरोसा हैराम कोरामरंग्योरुचिराच्योनकेही । जीवतराममुयेपुनिराम सदा रघुनाथहिकोगतिजेही । सोईजियैजगमेंतुलसीनतडोलतऔरमुयेधरिदेही ३६ ॥

जिन के माता पिता पुत्र भाई संगी मित्र गुरु स्वामी सनेही एक रघुनाथैजी हैं सौहैं कहे संमुख ह्वै जिनको मन रघुनाथै जीको भरोसा राखे है जिनकी रुचि रघुनाथैजी के सनेह रंग में रँगी है राचौन केही जिनकीरुचि और में नहीं पगी है

इत्यादि अनन्य भक्तनकी स्वाभाविक रीतिहै यथा॥ स्वामिसखागुरुमातुपितुजिनकेसबतुमतात ॥ मनमंदिर तनकेबसहु सियासहितद्वउभ्रात॥ यथाशिवसंहितामेंहनुमान्जीकहेहैं ॥ पुत्रवत्पित्रवद्रामोमातृवन्ममसर्वदा ॥ श्यालवद्भामवद्राम:श्वश्रवच्छ्वसुरादिवत् ॥ पुत्रीवत्पौत्रवद्रामोभागिनेयादिवन्मम ॥ सखावत्सखिवद्रामः पत्नीवदनुजादिवत् ॥ ए.प्रीतिः सर्वभावेषु प्राणिनामनपायिनो ॥ रामसीतापतावेवनिधिवन्निहितामुने ॥ अरु जीवत लोकमें आशभरोसा मुये परलोग आशभरोसा जिनके सदा एक रघुनाथहीजीकोहै सोई जगमें जीवत हैं यथा ध्रुव हनुमानादि औ जे प्रभुकी शरण नहीं हैं ते और सब मृतकसम देहधरे जगमें डोलतहैं भाव पश्चारूपहैं यथा पद्मपुराणे ॥ स्थानंभयस्थानमनराम कीर्ति रामेतिनामामृतशून्यमास्यं ॥ सपालयंप्रतगृहंगृहंतद्यत्रार्च्यतेनैवमहेन्द्रपूज्य: ३६ ॥

सियरामस्वरूप अगाधअनूपबिलोचनमीननकोजलुहै । श्रुतिरामकथामुखरामकोनामहियेपुनिरामहिंकोथलुहै । मतिरामहिंसोंगतिरामहिं सोंरतिरामसोंरामहिंकोबलु है सबकीनकहैतुलसीके मतेयतनोजगजीवनकोफलुहै ३७॥

रूपकहै जो बिना भूषणै भूषितहोइ यथा ॥ अंगा
निर्भूषितान्येवनिस्काद्यै र्श्चाबिभूषणैः ॥ येनभूषितव
द्भाति तद्रूपमितिकथ्यते ॥ ऐसो जो श्रीजनकनं-
दिनी रघुनन्दनको उपमारहित जो रूपहै सोई नि-
र्मल अगाधजलहै तामें जे अपने विलोचन कहेनेत्र
नको मीनकरि रूपहीमें मग्नरहतेहैं पुनः जैसे मृगा
गानको सुनत तैसे जे रामानुरागी श्रीरामकथा को
मनलगाइ कानानसों सुनत हैं पुनि श्रीरघुनाथके जे
मधुरनामहैं तिनको आदरसहित मुखते सदाउच्चा-
रण करतहैं थल कहे वासस्थान श्रीरघुनाथजी को
परिकर सहित भावना करिकै हियेकमल में राखत
हैं पुनः मतिकहे बुद्धि जाकीरामतत्त्व निरूपण में
सदा रहतहै पुनः गति पहुंच भावशरणागत रघुना-
थैजीकेहैं रतिकहे प्रीति रघुनाथैजी में है बल कहे
भरोसा जाके एक श्रीरघुनाथैजी को है इत्यादि
सबभांतिते जो रघुनाथजी को है तुलसी के मतते
यतनोई जगत्में जीवनको फलहै सबकोमैं नहींकहि
तहौं भाव कोई मतवारो अनख न मानैमैं अपने
मत सों कहतहौं ३७ ॥

दशरत्थके दानिशिरोमणि राम
प्रसिद्धपुराणसुन्योंयशमैं । नरनागसुर
सरयाचकजो तुमसोंमनभावतपायोन
कै । तुलसीकरजोरिकरैबिनतीजुकृपा

करिदीनदयालसुनै । जेहिदेहसनेहन रावरेसोऐसीदेहधरायकैजायजियै ३८॥

दशरथ नन्दन दानिनमें शिरोमणि हैं ऐसा यश पुराणनमें प्रसिद्ध मैं सुन्योंहै नर मनुष्य नाग शेषादिसुर इन्द्रादि असुर प्रह्लादादि जो याचकहवै आपुसों याचनाकीन्हे सो मन भावत कौन नहीं पायो भाव सबपायो तुलसो कर जोरिकै बिनतोकरतहै जो दोनदयाल कृपाकरिके सुनौ कौन बिनती करतहौं कि जो देहधारी ह्वै आपुसों सनेह नहीं करत भाव रघुनाथजी सों बिमुखहै ऐसी देहधराइ कै बिमुखता करने वाले जायजियैं अर्थात् मरिजाइँ तौ भलाहै काहेते काको प्रभुपूर्ण कामनहीं करैं कवित्तमें चारिचरण चारिभांतिके सो मध्यमतुकांतमें एकभेद मिस्वरहोत भावस्वरते तुकांत होत ताकोभेद काव्यनिर्णय के बाईस उल्लासके प्रारंभमें है जाको संदेहहोइ सो देखिलेइ ३८ ॥

झूठोहैझूठोहैझूठो सदाजगसंतकहंतजेअंतलहाहै । ताकोसहैशठसंकटकोटिककाढतदंतकरंतहहाहै । जानपनीकोगुमानबड़ोतुलसीके बिचारगंवारमहाहै । जानकिजीवनजानन जान्योतो जानकहावतजानकहाहै ३९ ॥

जे अद्वैतवादी सन्त हैं ते कहते हैं कि हम जगत्‌को अन्तलहा कहेपावाहै कौन अन्त पावा है कि जगत् सदा झूठ है झूठा है झूठा है अबार कहते तीनिउँ काल में झूठा है न पूर्ब में सांचारहा न अबसांचा है न आगे सांचा होइगो इत्यादि कहते तौ झूठा है अरु ताही जग में हानि निन्दा पमान पराजय काम क्रोध लोभ ममता ईर्षा रोगादि कोकोटिन जो संकट हैं तिनको सहते हैं भाव शोकके अभिमानी हैं पुनः लाभ सुत बित्त नारि जाति पांति कुल युवा तन मान बड़ाई निरोगलादि पाइकै दाँत काढ़त हहायकै हँसत हैं भाव हर्ष के अभिमानी हैं ताहू में ज्ञान पनो कहे ज्ञान को गुमान मनमें है ते तुलसीके मतते गँवार कहे महा मूर्ख हैं काहेते हर्ष शोक अभिमानादि अज्ञानता यही जगकी सचाई औ जीवको धर्म है यथा हर्ष विषाद ज्ञान अज्ञान जीवधर्म अहंमिति अभिमान इत्यादि अज्ञान में तौ बधे औ ज्ञान के गुमान ते भक्तिको निरादर किहे हैं यह मूर्खता है यथा ॥ जेअसिभक्ति जानिपरिहरहीं। केवलज्ञानहेतुश्रमकरहीं॥ तेजड़ कामधेनुगृहत्यागी। खोजतअर्कफिरहिंपयलागी॥ प्रमाणंमहारामायणे॥ येगमभक्तिममलां सुविहाय रम्यां ज्ञानेरताःप्रतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे॥ आरान्महेन्द्र सुरभींपरित्यक्तमूर्खा। अर्कभजंतसुभगेसुखदुग्धहेतु॥ भागवते॥ श्रेयःस्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये

केवलबोधलब्धये तेषामसौक्लेश लस्य शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषवघातिनाम् ॥ ताते जान कहे ज्ञानपरहू जो जानकी जीवनको न जान्यो तो जान कहावत पर जान कहां है भाव बिना भक्ति ज्ञानयुति भये भवसागरमें परते हैं यथा ॥ जेज्ञानमानविमद लवभयहरणिभक्तिन आदरो । तेपाइसुरदुर्लभपदा दुःपपरतहमदेखेहरी ॥ प्रमाणंभागवते ॥ संसारकूपे पतितं विषयैर्मुषितेक्षणम् ग्रस्तंकलाहिनात्मानंकोन्य स्त्रातुमिहेश्वर ३६ ॥

तिनतेखरशूकर श्वानभलेजड़तावश तेनकहैंकछुवै। तुलसीजेहिरामसोंनेह नहींसोसहीपशुपूंछविखाननहै। जननी कतभारमुईदशमास भईकिनबांझगईकिनच्वै। जरिजाउसोजीवनजानकिनाथरहैजगमेंतुम्हरोबिनह्वै ४० ॥

शुभाशुभ कर्म रस्सीमें बांधे जगभार वाहो ऐसी कर्मकाण्डी ते खरसमहैं योगक्रिया भिमानी मल भक्षक सिद्ध पुष्टांग ऐसे योगी शूकर सम हैं ज्ञान बल मुंहजोर अकारथवाद भूंकना ऐसे ज्ञानी श्वान सम हैं भावबिना राम सनेह कर्मकाण्डी खर सम योगी शूकर समज्ञानी श्वान सम पुनः कहत कि नाहीं तिन तेखर शूकर श्वान भलेहैं काहेते जड़ता

के बशते कछुकहते तौ नहीं हैं औ ज्ञानी आदिचै तन्यह्वै बिमुखता करतेहैं ताते गोसाईं जी कहत कि जाकोनेह श्रीरघुनाथ जीसों नहींहै ते सहीकहे सांचो पशुहैं बिनापूंछके बांड़े बिनाद्वै सींगके मुडुवा ऐसे कुद्रूपीभाव पशुओंमेंसुभगनहीं ऐसेहरि बिमुखन की जननी गर्भके भार ते दशमास लौं काहेकोमरि मिटी बांझक्योंनभई चवै कहे गर्भडारि क्योंनदियो हे जानकी जीवनबिना तुम्हारो ह्वैकै जे जगमें जीवतहैं तिनको जीवनजरि जाउ भाव वै मरि जाइँ ४० ॥

गजबाजिघटाभले भूरिभटाबनिता सुतभौं हतकैंसबकै । धरणी धनधाम शरीरभलोसुरलोकहुंचाहियहैसुखस्वै । सबफोटकसाटकहैंतुलसी अपनोनकछू सपनोदिनद्वै । जरिजाउसोजीवनजानकि नाथजियैजगमेंतुम्हरोबिनह्वै ४१ ॥

गजबाजि कहे हाथी घोड़ादि घटाकहे समूहचतु-रंगिणी सेना तामें भलेमनमाने योधा भूरिकहे बहुत हैं औ बनितादि पुत्रपर्यंत यावत् समाजहैं ते सब कोऊ भौहैं तकतभाव आज्ञानुकूल हैं औ धरणीधन धाम इच्छापूर्वक भलोशरीर निरुज अर्थात सत्यांग राजको पूर्णहैं यथा ॥ स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्दुर्ग

बलानिचेत्यमरः ॥ इत्यादि तौ लोकमें सुखीहैंसोई अपने सुखकी चाह सुरलोकहूकी राखतेहैं भावतीर्थ तप दान यज्ञादि करिकै सुरलोक सुखके अधिकारी भये इत्यादि सबसुख फोटक साटकहैं अर्थात्बिना श्रीराम शरणागत सबसुख बकला बूसासम असारहै गोसाईंजी कहत कि स्वप्ने कैसो सुख द्वैदिनकीलोकसंपदामें अपनो कुछनहीं है तामें मनलगावते हैं ताते हे जानकी जीवनबिना तुम्हारोहवैकै जे जग में जीवत हैं तिनको जीवन जरिजाउ भावबै मरि जाइँ तौ और को तौ न बिमुखतादेइँ ४१ ॥

सुरराजसोराजसमाजसमृद्धि बिरञ्चि धनाधिपसोधनभो । पवमानसोपावकसो यमसोमसोपूषनसोभवभूषनभो ॥ करियोगसमाधिसमीरन साधिकैधीरबड़ोबशहूमनभो । सबजाइसुभाइकहैतुलसी जोनजानकि जीवनकोजनभो ४२ ॥

सहितसमाज इन्द्रसों राजाहोइ समृद्धिकहे संपूर्ण ऋद्धिसहित ब्रह्मा सों समर्थ होइ धनाधिप कुबेरसमधनवान् होइ पवमानकहे पवन सों बलवान्होइ पावकसों तेजवान् होइ यमराजसों दण्डधारीसोम चन्द्रमासों शीतल होइ भव जो संसार ताको भूषण

कहै प्रकाशक पूषणकहे सूर्यनसम होइ योग अष्टांग यथा यम १ नेम २ आसन ३ प्रत्याहार ४ प्राणायाम५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ इत्यष्टांग तहां अहिंसासत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य असंग्रह इति पांचयम हैं शौच संतोष तपजप निग्राये पांचनियमहैं स्वस्तिकादि चौरासी आसन हैं तामें चारिमुख्य हैं यथा योगशास्त्रे ॥ सिद्धपद्मंतथासिंहंभद्रंचैवचतुष्टयेइत्यादि ॥ आसन प्रत्याहारकहै श्रद्धा र स्वल्पाहारी यथा योगशास्त्रे ॥ सस्निग्धमधुराहारश्चतुरांश व वर्जितः भुज्यतेहरिसंप्रीत्यैमिताहारःसउच्यते ॥ प्राणायामकहे मंत्रयुक्तदच्छिण श्वासाखैंचै आठबार सो पूरकहै थांभिराखे बत्तिस बारसो कुम्भकहै बाम श्वासा सोरहबार करिछांड़ै सो रेचकहै याते चित्तमें प्रकाश होतहै इति प्राणायाम धारणाकहे नासिकाग्रभाग दृष्टिदै नाभीचक्रादि वस्तु विषैचित्तस्थिरकरनाइति धारणाहै चित्तका ध्येयाविषयक जो वृत्ति प्रवाह सोध्यानहै वृत्यादि भेदशून्य अर्थमात्रकामना होइ जेहिमो सोसमाधिहै इत्यादि योगकरिसमाधि लगाइ पुनः समीरकहे बायुयथाहृदय मेंप्राण गुदामें अपान नाभीमें समान कंठमें उदानसब देहमें ब्यान औरामनाभीमेंनाग नेत्रमेंकूर्मचुधामेंक्रिकिल जमुहाई मेंदेवदत्तमृत्युमें धनंजयादि समीरनकी साधिकैबड़ी धीर्यमानहू मनहूको जीतिलये गोसाईंजी सौभाविक में कहत कि जो जानकी जीवनको जन न भयो तौ

योगादि यावत् साधन हैं सो नायकहे वृथाहैं यथा रुद्रयामले ॥ येनराधमलोकेषुरामभक्तीपराङ् मुखाः ॥ जपंतपंदयाशौचंशास्त्राणामवगाहनम् ॥ सर्वं वृथाविनायेनश्रुणुध्वं पार्वतिप्रिये ४२ ॥

कामसेरूपप्रतापदिनेशसे सोमसेशील गणेशसेमाने । हरिचन्दसेसांचेबड़ेविधिसे मघवासेमहीपविषयसुखसाने । शुकसेमुनिशारदसेवकताचिरजीवनलोमशतेअधिकाने । ऐसेभयेतौकहांतुलसोजोपैराजिवलोचनरामनजाने ४३ ॥

काम समान रूपवान् होइ दिनेश कहेसूर्यसम प्रतापवान् होइ सोम कहे चन्द्रमासम शीलमान होइ गणेश से माने कहे पूज्यमान होइ हरिश्चंद्र से सांचे कहे धर्मवान् होइ ब्रह्मासों बड़ोभयो बिषयरससाने सुरसहित मघवा कहे इंद्रसे राजा भयो शुकदेव ऐसो मुनिभयो शारदा से वक्ता बिद्वान्भये चिरंजीवन में लोमशसे आयुर्बल भयो इत्यादि सबगुण पूर्ण भयो औ राजीव लोचन श्री रघुनाथ जी को न जान्यो भक्त न भयो ताको गोसाईं जी कहत कि सब गुण भये ते काभयो आखिर सबगुण लौकिक नाशवान् हैं भक्ति प्रबल है राजीव लोचनर-

मेत्यर्थः ॥ तत्ररफपर ब्रह्म वाचकः सश्रीरामस्यलो-
चन कंजयोः तेजः यथा महारामायणे ॥ तेजो रूप
मयोरेफोश्रीरामांवककंजयोः ॥ कोटिसूर्यप्रकाशश्चप
रब्रह्मसउच्यते ॥ पुनः रेफस्याकारःप्रकाशवाचकः ॥
सश्रीराम मुखमंडलस्यतेजोरूपःयथा ॥ रामास्यमंडल
स्यैवतेजोरूपेवरानने ॥ कोटकंदर्पशोभाढ्योरेफाकारो
हिबिंदुच ॥ पुनः दीर्घाकारःजगत्स्थितबाचक.सश्री
रामवचसस्यतेजरूपः यथामध्याकारोमहारूपःश्रीराम
स्यैववचसः पुनःजीवशब्द जगपालन सगुणवाचकः ॥
ताते राजीवकी उत्पत्तिपालन दिव्यगुणादि अर्थभयो
यथारामानुजकृतमंत्रार्थे ॥ रामएवहिलोकानां उत्प
त्तिस्थितिकारकः एवंभूतोव्यापनशीलःश्रीरामोरकारा
र्थःरकारवाचय रादानेइति धातोःरातिग्रहणातिकुत्सौ
विश्वामितिरःरादीप्ताविति धातोःरा तिप्रकाशतेइतिरः
इत्यनेन जगज्जन्मादिकर्तृत्वेनरकारस्यसर्वेस्वरत्वं
जगत्कारणत्वंचसिद्धं उक्तंचहारीते ॥ रकारमैश्व
र्यंवीजंतु मकारस्तेनसंयुतः अवधारणयोगेन रामोय
स्मान्मनुःस्मृतः ॥ यद्वारमुक्रीड़ायामितिधातोडप्रत्य
येरमयतिसुखदुःखादि दातृत्वेन विश्वमितिरः ॥ एते
नजगत्पालकत्वंसिद्धं यद्वारमधातोर्विसगार्थिकत्वं. त
दाजगतोरमयति उत्पादयतिइतिरःइत्यनेनाखिलब्र
ह्मांडानं तापरिच्छन्नै श्वर्यविशिष्टोपहतपापमावि
ज्वरो विमृत्यु र्विशोको विजि घत्सो ऽपिपासःसत्यका
मःसत्यसंकल्प इत्यादिगुणविशिष्टत्वंसिद्धंअयंरकारो

योगरूढ़:तत्रयोगेन जगज्जन्मादिकर्तृत्वा कर्तृत्वंप्रसिद्धंरूढ्यातु अखण्डब्रह्मवाचकत्वंपरवाचकत्वेनप्रधान: सर्ववेदाश्रयत्वाच्च सर्वलोकस्यकारणत्वात् ईश्वरप्रतिपाद्यत्वादखंडब्रह्मवाचकउक्तंच ॥ वीरय्ययथास्थितो वृक्षशाखापल्लवसंयुत:।तथैवस र्वेदाहिरकारेषुव्यवस्थिता: ॥ रकाराज्जायतेब्रह्मरकाराज्जायतेहरि:।रकाराज्जायतेशंभु.रकारात्सर्वशक्तय: ॥ आदावंतेतथामध्ये रकारेषुप्रतिष्ठित:। विश्वंचराचरंसर्वमवकाशेननित्यश: ॥ यथाकरंडेरत्नानिगुप्तान्यन्यैनदृश्यते। तद्वंमंत्राश्चवेदाश्चरकारेषुव्यवस्थिता: ॥ इतिपुलहसंहितावचनात्रघुनाथस्यसाक्षाद्रकारवाच्यस्य परब्रह्मवाचकत्वं सिद्धं ॥ तहां रेफको अर्थ परब्रह्मभयो रेफकोअकार को अर्थ शोभामय प्रकाश भयो भाव अकार सहित रेफ प्रकाशमय सोहत अरु दीर्घअकार उत्पत्ति पालन अर्थ भयो औ सौशील वात्सल्य करुणा दयादि जो दिव्य गुण हैं तेजीवशब्द को अर्थ गुणनिधि भयोलोचनकहे दयादृष्टिहै सदा जिनके ऐसेराजिवलोचन को जे न जानैंतौरूपादियावत गुणहैं ते सब वृथा हैं ४३ ॥

भूमतद्वारअनेकमतंग जँजीरजरेमद अंबुचुचाते। तीखेतुरंगमनोंगतिचंचल पौनकेगौनहुतेबढ़िजाते। भीतरचंद्रमुखी अवलोकतिबाहिरभूपखड़ेनसमाते। ऐ

सेभयेतौकहातुलसीजोपैजानकीनाथके रंगनराते ४४ ॥

मद अंबुकहे मदको जल गंडस्थल में चुचुवात ऐसे मस्त मतंगकहे हाथी अनेकन जँजीरनमें जकड़े जिनके द्वारपै झूमत हैं औ तीखेकहे तीक्ष्णमनोगति जिनको मनकी ऐसी गति ऐसे चंचल हैं जो पवनहूं की गौनते बड़ो बेगते बढ़िजातेहैं ऐसे घोड़े समूह जिनको प्राप्त हैं सुन्दर मंदिरके भीतर चन्द्र बदनी स्त्री अवलोकत कहे आज्ञा निहारत है बाहर द्वारपै समूहभूप खड़े जो दरबार में अंबात नहीं ऐसे ऐश्वर्यमान भयो तौ काह भयो अंतसमय कोऊ संग न जाहिंगे गोसाईं जी कहत कि जोपै जानकी नाथ के रंग न राते भाव श्री रघुनाथ जी की प्रीति रंग में जिनकोमनरँगि न गयोरामानुरागी न भयो तौ सब ऐश्वर्य वृथा है यथा भागवते ॥ रायःकलत्रंपशवःसुतादयो गृहामहो कुंजर कोशभृतयः ॥ सर्वेऽर्थकामाःक्षणभंगुरायुषः कुर्वन्तिमर्त्यस्यकियत्प्रियंचलः ४४ ॥

राजसुरेशपचासकको बिधिकेकरकोजोपटोलिखिपाये । पूतसपूतपुनीतप्रियानिजसुंदरतारतिकोमदनाये । संपतिसिद्धिसबैतुलसी मनकी मनसाचितवै

चितलाये । जानकिजीवनजानेबिनाज
नएसेउ जीवन जीवितजाये ४५ ॥

सुरेश जो इन्द्र ताके पचास गुणराजा होइ ता
को पट्टा कहे पुष्टता को पत्र ब्रह्मा के हाथ को
लिखापायो भावकल्पांत न बनोरहै पुनः पुत्रसपूत
होइ पुनीत प्रियाकहे पतिब्रतस्त्री होइ जाने अपनी
सुंदरताके आगेरतिको मानमर्दन करोहै संपति कहे
संपूर्ण द्रब्य सिद्धि यथा देह अनुरूपको प्राप्तिसो
अणिमा है स्थूल रूप सो महिमा लघु देह होइसो
लघिमा है सहित देवता परेन्द्रिय में प्रवेश होइ
सो प्राप्ति है दिब्य दृष्टि सो प्रकाम्य है मायाके अंश
प्रेरणा सो ईशिता है बिषयभोग में मनस्वबश सो
बशिता है मनोरथ प्राप्ति सो अवश्यति है इत्यष्टी
सिद्धि भगवत्प्रधान हैं पुनः क्षुधादि रहितसो अनू-
र्मित्व है दूरि बस्तु देखना दूरदर्शन दूरि श्रवणमन
समगति देहसो मनोजवहै इच्छारूपधारीकामरूपहै
अपर में प्रवेश परकाय प्रवेश है इच्छामरण स्व-
च्छंद मृत्यु है देवसम अपसरन की क्रीड़ा प्राप्ति
सो देवा नां सहक्रीड़ा दर्शन है संकल्प प्राप्ती सो
यथा संकल्प है जाकी आज्ञा अभंग सो आज्ञा अ-
प्रतिहतगतिहै इति दशसिद्धी गुणसम्बन्धीहैं तीनिउँ
कालकी बातजाने सो त्रिकालज्ञात्वहै शीतोष्णजल
सो अद्वंद है पराये चित्तकीबातजाने सोपरचित्ताभि

ज्ञाता है अग्न्यादि के तेजको थांभै सो अग्न्यार्कां बुविषादीनां प्रतिष्ठम्भहै काहूसों पराजय न होइ सो अपराजयहै इतिपांच सिद्धी तुच्छहैं सबतेइससिद्धी हैं ते सब मन की मन से चित्त लगायकै चितैरहीं भावजो मनोरथहोइ सोईकरैं गोसाईंजी कहत कि जानकी जीवनको विना जाने जे ऐसेउ जन हैं ते जीवतमें जीवनजाये कहे मृतक समान हैं ४३ ॥

छुधागातललातजेरोटिनकोघरबात घरेखुरपाखरिया। तिनसोनेकेमेरुसेढे रलहेमनतौनभरेघरपैभरिया। तुलसी दुखदूनेदशादुहूंदेखि कियोमुखदारिद कोकरिया। तजिआशभोदासरघुपति कोदशरथकोदानिदयादरिया ४६ ॥

आपनो कालपाय दुष्टकर्म उदयते दारिद्र प्रकाश क्लेशआतप पीड़ित तातेगात कहे देहकृशकहेदूबरि ह्वै रही चुधासोई उष्णआकुलीते अन्नशीतलता चाह तातेरोटी कहे भोजनको चाहते ललचात फिरत हैं घरेकहे घर विषेघरबात कहे घरकी मर्यादासिरिफ खुरपा खरिया है भावघास छोलि बेचिबो जीवका है तिनहींको कोऊकाल पाइकै सुकर्म उदय भयो भाग्य प्रकाश ते सुख शीतलतारूप सोनेके मेरु पहाड़ समधनको ढेरलहेकही पाये ताते घरतौभरि भय

पै मननहीं भरो आशाबनीरही गोसाईं जी कहत कि दूनों दशा दूना दुःख देखि अर्थात् दारिद्र दशा में जो सुखकी आशारहै सोई सुखदशा में आशा बनी रही इत्यादि दोऊदशा में आशा रूप दूनों दुःख देखिकै दारिद्रको सुखकरिया कहैस्याहीलगा- यकै मन रूप देश ते निकारिदिये भाव आशा छां- ड़िदियेते सुखीह्वै गयो यथा ॥ आशापाशैवयेदा- सास्तेदासाजगतामपि। आशादासीकृतायेनतस्यदासा यतेजगत् ॥ तातेआशको तजिकैश्रीरघुपतिको दास भयोजे दशरथ नंदन दयाके दरियाकहै समुद्र हैं४६॥

कोभरिहैहरिकेरितये रितवैपुनिको हरिजोभरिहै । उथपैतेहिकोजेहिरा सथपैथपिहैतेहिकोहरिजोटरिहै । तुल सीयहजानिहियेअपनेसपनेनहिंकालहु तेडरिहै । कुमयाकछुहानिनऔरनको जोपैजानकीनाथमयाकरिहै ४७ ॥

हरि श्री रघुनाथजी के रितये कहे खाली कि- हे ताको औरको भरहै लंका दुष्टराक्षसन ते खाली करे ताको कोऊ न भरि सक्यो अरु हरिज को भरि हैं ताको पुनः कौनरितवै कहे खाली करैगो यथा विभीषण को लंकामें भरे ताको कोऊन खाली करि सक्यो अरु जाको श्री रघुनाथजी थापिहैं ताकोको-

न उथापै कहे उखारैगो यथा ध्रुव प्रह्लाद अंबरीष हैं अरु जाको हरि टारहैं ताको कौन थापैगो यथा हिरण्यकश्यप बालि जो जन शरण आवै ताको अभय करिदेत यथावाल्मीकिये ॥ मित्रभावेनसंप्राप्तनत्यजेयंकदाचन । दोषोयद्यपितस्यस्यात्सतामेतदगर्हितम् ॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम ॥ तातेजाको श्री रघुनाथजी रक्षाकरत ताको काहूकी भयनहींहै ऐसो अपने हियमें जानि गोसाईंजी कहतकी हमसपनेहू में कालहूको नहीं डरते हैं काहेतेजो जानकीनाथ कृपाकरिहैं तौ और देवादिकी कुमयाते हानिनहीं ४७ ॥

व्यालकरालमहाविषपावक मत्तगयंदनकेरदतोरे । शासतिशंकिचलीडरपैहुतेकिंकरतेकरनीमुखमोरे । नेकुविषादनहींप्रहलादहिकारणकेहरिकेबलहोरे । कौनकित्रासकरैतुलसीजोपैराखिहैंरामतौमारिहैकोरे ४८ ॥

हिरण्यकश्यप प्रह्लाद जी के ऊपर व्याल कहे सर्प कराल छुड़ाइदिये तेशंकामानि भागे महाविष हालाहल दिये सोऊनि वंषहवै गयो पावक में फूंकिदियो सोऊ शीतल भई मत्तगयन्द छाड़े तिनके

दांत रघुनाथजी तोरे तातेभागे इत्यादि यावत्था-
सतिकिये सो सबथंकाकरि भागि चली ताते थासति
करने वाले जे किंकर सेवकहुते तेऊ आपनी कुटिल
करणी को डरमानि तापै मुंहफेरिलिये भाव अब
हमते यह काम न होइगो अरु प्रह्लाद जी को नेकु
कहे थोरहू बिषाद न भयोयाको यहकारण किवेहरि
कहे नरसिंह तिनको बल ह्वै रह्यो गोसाईं जीकह-
त कि कौनकी आसकरै जापै श्री रघुनाथ राखि हैं
तौ और कौन मारिहै ४८ ॥

कृपाजेहिकीकछुकाजनहीं नआका
जकछूजेहिकेमुखमोरे । करैतिनकीपर
वाहिकोजाहिंबियाननपूछफैदिनदौ
रे । तुलसीजेहिकेरघुवीरसेनाथसमर्थ
सुसेवतरीझतथोरे । कहाभवभीरपरीते
हिधौं बिचरैधरनीतिनसोंतृणतोरे ४९॥

जे धन राजादि मदमें माते हरिसनेहिनसों बिमुख
तिनको कहतकि जाकी कृपाकिहे आपनो कछुकाज
नहीं अरु जाके मुखफेरे अपनो अकाजनहीं तिनसों
जोहरि सनेहीहोइ तौ बिषय सनेहिनते परवाहि न
करै काहेते जाहिकहे जिनकी विषाणकहे सींग पूंछ
हीन मुण्डेबांड़ पशुसम दौरैफिरते द्वै दिनकी जिंद-
गानीमें गोसाईं जी कहत कि जाके श्रीरघुवीर ऐसे

समर्थ स्वामीहैं जेथोरेहीसनेह सेवाते रीझतेहैं यथा वाल्मीके ॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते॥ अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम पुनः ॥ हनुमन्नाटके॥ याबिभूतिर्दशग्रीवे शिरच्छेदेपिशंकरात् ॥ दर्शनाद्रामदेवस्यसाविभूतिर्विभीषणे ॥ तातें श्रीरघुनाथऐसेस्वामीको जो सेवकहै ताको भवकहे संसारमें कहांधौं भोरपरी भावकछु संकट न परैगो ताते लोकमानी लोगजेहैं तिनसों सनेह तृणसमान तोरिकै अभय है भूमिपै बिचरै ४६ ॥

काननभूधरवारिबयारिमहाबिषव्याधिदवाअरिघेरे। संकटकोटिजहांतुलसी सुतमातपिताहितबंधुननेरे । राखिहैरामकृपालतहांहनुमानसेसेवकहैंजेहिकेरे। नाकरसातलभूतलमेंरघुनायकएकसहायकमेरे ५० ॥

जो भूमिपै बिचरै कोकहै तामें शंकाकी भूमिपै अनेक बिघ्नहैं ताहेतु प्रसिद्ध कहतकि बनमें पहाड़नमें नदी आदि जलमें औ महाबिषय की बयारि कहे जहांबनमें हालाहल जहरको वृत्तहोत ताकी बयारि लागे मनई मरिजात अरु बाराहऋक्षव्याघ्र भूत ज्वरादि यावत् ब्याधिहैं अरि घेरेकहे ठगचोर भीलादि बादाये वालो शत्रु के संमुख इत्यादि

कोटिन संकटजहांहैं तहां माता पिता पुत्रभाई हित-कार कोऊनेरे नहीं जो सहायकरै गोसाईं जी कहत कि जहां संकटपरी तहां श्रीरघुनाथजी कृपालुराखि हैं संकटते उबारि हैं तहां त्रिदेवपूज्य इतनेबड़स्वा-मीते तुच्छकामनको सहायता मांगनो सेवककीढि-ठाईहै ताकेहेतु कहत कि जिनके हनुमान् ऐसे सेवक जे रामभक्तनकी ब्याधि निवारणार्थ पंचमुख धारेहैं चारि चारिउ दिशाको एक आकाशको जहां भक्तन को बांधादेखत ताको तुरतही निवारतयथा तंत्रागमे ॥ येनभक्तनबिघ्नौघसर्वापद्भ्यांबिनिर्ययौ ॥ कुर्वंतुशरणंतस्यसर्बशत्रुहरंपरम्॥ पुनःब्रह्मांडपुराणे॥ श्रीरामहृदयानंदंभक्तकल्पमहीरुहं ॥ अभयंबरदंद्वा भ्यांकलयेमारुतात्मजं ॥ ताते नाक कहे रसातल तहां देव नागादि को जो भय भूतलमें शत्रुआदि भय यावतहैं तहां एक श्रीरघुनायक मेरे सहायकहैं एक समय अकबर बादशाह सिद्धाई देखबेको गोसा-ईंजी को बन्धुवाकरे तासमय यह कवित्त कहिहनु मान्जी को स्मरणकरे तब बांदर कोटिन पैदा ह्वै दिल्ली उजारि दिये ५० ॥

जबैयमराजरजायसुतेमोहिंलैचलिहैंभ टबांधिनटैया । तातनमातनस्वामिसखा सुतबंधुबिशालबिपत्तिबटैया । शासति घोरपुकारतआरतकौनिसुनैचहुंवोरडटैया

एककृपालुतहांतुलसीदशरत्थकोनन्दन बंदिकटैया ५१ ॥

इहांतक जीवके दोषकहे अब भयदर्शन यथामृत्यु समय जब यमराजकी रजायसुते भट यमगण ग्रीवा बांधिकै मोको लैचलिहैं ता समयकी बिशाल कहे बड़ोभारी बिपत्तिको बटैयाकहे सहायक मातापिता स्वामीसखा पुत्र भाई कोऊनहीं है तहां जन्मांतरके पापनके फलहेतु यमगण दण्डदेत ताकी शासति कहे दुखघोर कहे महाकठिन परेते आरत ह्वै पुकार करत तामें कौन सुनै चारहू ओरते डटैया कहे सब दंड दायकै हैं अथवा दीन की पुकार को सुनैया दूसरा नहींहै तहां की बंदी काटने वाला एक दशरथ को नन्दन कृपालु है काहेते जो अवशो ह्वैकै नामको उच्चारण करै तौ तुरतही सब पाप भागते हैं जैसे सिंहके त्रासते मृगा भागते यथा ब्रह्मांडपुराणे ॥ अवशेनापियन्नाम्निकीर्त्तितेसर्व पापकै ॥ पुमान्विमुच्यतेसद्यःसिंहत्रस्तमृगारिव ५१॥

जहांयमयातनघोरनदीभटकोटिजल चरदंततटैया । जहँधारभयंकरवारनपार नबोहितनावननोकखेवैया । तुलसी जहंमातुपितानसखानहिंकोऊकहूं अव लम्बदेवैया । तहांबिनुकारणरामकृपालु

बिशालभुजागहिकाढ़िलेवैया ५२ ॥

जहां यमयातनाकहे पीड़ा ताके देनेवाले कोटिन भटबीर दया रहित अरु नदी वैतरणी घोरहै काहेते जामें अनेकन जलचर दांत पैनाय रहे हैं फारिखावे को जहां धारा भी भयंकर है काहेते वारते पारनहीं सूझि परतहै औ न वोहित कहे जहाज है न नाव है न नीक खेवनहार है जो सुगम उपायते उतारै यमपुरीको ब्याख्या रामाश्वमेध है औ भागवत में पंचमस्कन्ध के अन्त अध्याय में समूहते एक बैतरणी को लिखत हौं यथा ॥ ये-त्विहवैराजन्याराजपुरुषा वा अयाखंडान् धर्मसेतून् भिदन्तितेसंपरेत्यवैतरण्यांनिपतंति भिन्नमर्य्यादातस्यां निरय परिखाभूतायमद्यं यादोगणैरितस्ततोभक्ष्यमाण आत्मनानबियुज्यमानाश्चाभिरुह्यमानाःस्वाघेन कर्मपाकमनुस्मरंतउपतप्यन्तेविरामूत्र पूयशोणितकेशनखास्थिमेदोमांसववसावाहिन्यामुपतप्यते ॥ गोसाईंजी कहत जहां यमपुरी में माता पिता सखादि कोऊ अवलम्ब कहे सहारा को देवैया नहीं है तहां बिना कारण बिन हेतु जे कृपालु श्रीरघुनाथजी तेई बिशाल भुजा ते गहि कै काढ़ लेवैया हैं ५२ ॥

जहांहितस्वामिनसंगसखावनितासुतबंधुनबापुनमैया । कायगिरामनकेजन

केअपराधसबैछलछांड़िक्षमैया । तुलसीतेहिकालकृपालुबिनादूजोकौनहैदारुणदुःखदमैया । जहांसबसंकटदुर्घटशोचतहांमेरोसाहबराखैरमैया ५३ ॥

जहां यमपुरी में हितकार न स्वामी न संगी सखान बनिता न पुत्र न भाई न माता न पिता तहां काय कहे देह के गिरा कहे बचन के औ मनादि के करे यावत् सब अपराध हैं आपने जन के तिनको छल छांड़िकै सत्य सत्य क्षमाकरनहार श्रीरघुनाथजी हैं यथा सनत्कुमारसंहितायां ॥ मानसंवाचिकंपापंकर्मणाःसमुपार्जितं ॥ श्रीरामस्मरणेनैवतत्क्षणान्नश्यतिध्रुवं ॥ इदंसत्यमिदंसत्यंसत्यमेतदिहोच्यते ॥ गोसाईंजी कहत जाकाल में यमपुर में लेखापरी ता काल में श्रीरघुनाथ कृपालु बिना दारुण कहे कठिन दुःखको दमैया नाशकरैया दूसरा कौन है एक रघुनाथैजी हैं यथा अध्यात्म्ये ॥ कोवा दयालुःस्मृतकामधेनुरन्योजगत्यां रघुनायकादहो ॥ स्मृतोमयानित्यमनन्यभाजा ज्ञात्वामृतामेस्वयमेवयातः ॥ ताते जहां सब तनाते दुर्घट संकट को शोच परत तहां मेरो साहब रमैया राखत है रमैयाकहे जो सबको अपना में रमावै सबमें रमै अध्यात्म्ये ॥ यस्मिन्रमंतेमुनयोविद्ययाज्ञानसंप्लवे ॥ तंगुरुःप्राहरामेतिरमणाद्रामइत्यपि ५३ ॥

तापसकोबरदायक देवसबैपुनिबैरब ढावतबाढ़े । थोरेहिकोपकृपापुनिथोरे हिबैठिकैजोरततोरतठाढ़े ॥ ठोंकिबजाय लियेगजराज कहांलौंकहौंकेहिसोंरद काढ़े । आरतकेहितनाथअनाथकेराम सहायसहीदिनगाढ़े ५४ ॥

ब्रह्मादिकयावत् देवताहैं तेसब तापसकोबरदायक हैं भाव जो तपस्याकरत ताको बरदेत पुनःवाहीभक्त के बाढ़े बलिष्ठ भये परसबै देवबैर बढ़ावत यथा हि रण्यकश्यप तपस्या करै तब ब्रह्माजी बरदान दैश्च- चल करैं पुनः जब बलिष्ठ परो तब बैर बढ़ाय ईश्व र ते प्रार्थनाकरे कि यहि दुष्टको वधकरो जब मरि कै फिरि रावण भयो तपस्याकरो तब फिरि बरदै अचल करे जबरावण बलिष्ठ भयो तब फिरि बैरबढ़ा य ईश्वर ते प्रार्थना करे कि रावण को मारो ताते कोप करत तो थोड़े दिनको कृपाकरत तो थोड़ेदि न को अरु बैठिकै प्रीति जोरत औ ठाढ़े होतही प्रीति तोरि देत तहां बैठबे उठबेको अवधि क्षणमा त्र की है भावक्षणाहीं में प्रीति क्षणाहीं में बैरताते सब देवनकी करतूतिरूप सक्का को गजराज ने ठों कि बजाइ परखि लियो सब खोटेही ठहरे कोहिसों कोहिसों गजराज ने रद कहदांत भाव खीस काढ़ि

विनय कासों नहीं करै यह कहां तक कहौं सबसों पुकार करै काहू देवने ग्राहसों न उबारे एक रघुनाथजी उबारे ताते आरत दुःखित के हितकार औ अनाथ के नाथ औ गाढ़े दिनके सहायक श्री रघुनाथ जी सही कहसांचे हैं ५४ ॥

जपयोगबिराग महामखसाधनदान दयादमकोटिकरैं । मुनिसिद्धसुरेशगणेशमहेशसेसेवतजन्मअनेकमरैं । निगमागमज्ञानपुराणपढ़ैतपसानलसेयुगपुंजजरैं । मनसोंप्रणरोपिकहैतुलसीरघुनाथबिनादुखकौनहरैं ५५ ॥

जपकहे सिद्धि साध्य सुसिद्धि अरि अणी धनी शुभदिशा मुहूर्त कूर्म चक्र शोधि जीवन जनन ताड़नादि संस्कार करि मंत्र पुरश्चर प्रति सहस्र सपादलक्ष पुरश्चरण भूमिशयन सत्य बचन सूक्ष्म भोजन श्रद्धा बिश्वासयुत इति जप करै योग कहे यमनेम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इत्यष्टांग योग करै वैराग्य में चारि भेद बिषय को विष सों अधिक मानै सो हेतु बैराग्य है पुनः जो विषय को व्यवहार करि वेद आज्ञा ते कर्मकरि हरि अर्पण करि फल त्यागत दूजो जो फल न खाना ताको वृक्ष को लगावना याते विषयको स्व

रूपै त्यागत ये द्वौ भेद स्वरूप बैराग्य हैं पुनः जो
बस्तु त्यागै ताको फिरि कुछ बासना न उठै अभि
मान न आवै ताको फल बैराग्य कहो पुनः सब
लोकनको ऐश्वर्य्य महाविष मानि त्यागै ताको अ-
वधि बैराग्य कहो पुनः चारि भेद तामें असार को
त्याग सार को ग्रहण सो जितमान बैराग्य है पुनः
मोहदल जीति विवेकदल बलिष्ठकरै कालको विषय
जीतै सो बितरेक वैराग्यहै पुनः मनादि को विष-
य रोकि इंद्रिन में ईश्वर को प्रकाश मानै सो एक
इंद्रिय वैराग्यहै पुनः त्रि लोक विषय मानापमानादि
को स्वरूपही त्यागै सो बशीकार वैराग्य है पुनः
चारिभेद निधन निरादर ते मन्द वैराग्य है कथा
दि श्रवण ते तीव्र वैराग्य जो देहैं ते वैराग्य सो ती
व्रतर है जो मोक्षहू सों बैराग्य सो तीव्रतमहै महा
मखकहे अश्वमेध गोमेध नरमेध वाजपेय साधन कहे
चारि मुक्ति हेतु प्रथम वैराग्य सो पूर्व कहि आयेहैं
दूसर बिवेक सारासारको बिचार तीसर षट्संपति
यथा वासना त्याग समहै श्रवणादि इन्द्रिन को वि
षय रोकना दम है विषय ते पीठ देना उपरति है
शीतोष्ण सहना तितीक्षा है गुरु वेदांत वाक्य में
विश्वास श्रद्धा है चित्त एकाग्र समाधानादि षट्चतु-
र्थ है मेरी मुक्ति होयगी यह मुमुक्षुतादि चारि सा-
धन करै मुक्ति हेतु मरुदान कहे देशकाल सुपात्र
बिचारि श्रद्धा सहित बासना रहित शांत चित्त आ

दर ते देना यह दान सो करै दया कहे निर्हेतु सब जीवनको सुख देना ऐसी दया सदा करै दम कहे श्रवणादि इन्द्रिन की बिषय रोकि देना इत्यादि कोटिन उपायकरै जीव को दुख काहू सों नहीं छूटै पुनः मुनिकहे मननशील सिद्ध कहे जिनको सिद्धि प्राप्त है सुरेश जो सबल देव राज हैं गणेश बिघ्न नाशक प्रथम पूज्यहैं महेश जोसब पदार्थ दाताऐसे समर्थादिकी सेवा करत अनेक जन्म मरै जीव को दुखकाहू सों नहीं छूटै निगम कहे दयथा ऋग्वेद ताको उपवेद आयुर्वेद है चिकित्सा शास्त्र वैद्यक यजुर्वेद ताको उपवेद धनुर्वेद युद्धशास्त्र बाणविद्या सामको उपवेद गन्धर्ववेद संगीत शास्त्र गान विद्या अथर्वण वेद ताको उपवेद अर्थ शास्त्र शिल्पविद्या नीति विद्या वेदनके षडंग यथा शिक्षा१ गृह्यसूत्र २ व्याकरण ३ निरुक्ति ४ छंदशास्त्र ५ ज्योतिष ६ आगम कहे शास्त्र प्रथम मीमांसाके जैमिनि आचार्य यामें यज्ञादि धर्म बिषयहै धर्म ज्ञानही प्रयोजन है यथोक्त कर्मके अनुष्ठान करिकै पुरुषको परम पुरुषार्थ लाभहोत है द्वितीय वैशेषिक शास्त्र याके आचार्य कणाद मुनि यामें पदार्थ बिषयहै पदार्थ तत्वज्ञान प्रयोजन है भावाभाव द्वै पदार्थमें द्रव्यादि छःपदार्थ भावमें ताके समान बिरुद्ध धर्म जानिये ते पदार्थन के अनेक धर्मको ज्ञान होत तामें निवृत्तिधर्म उत्पन्न जो आत्म साक्षात्कार तातें मोक्षहोत है तृतीय

न्यायशास्त्र याके आचार्य गौतम मुनि याको बिषय प्रमाणादि सोरह पदार्थ हैं ताको ज्ञान प्रयोजन है पदार्थ तत्वज्ञान ते मोक्ष होत चतुर्थ योगशास्त्र याके आचार्य पातंजलि मुनि चित्तवृत्ति रोकनो बिषय है निर्विकल्प समाधि प्रयोजन है अपने निरुपाधि रूप में स्थित सो मोक्ष है पंचम सांख्यशास्त्र याके आचार्य कपिल मुनि यामें प्रकृति पुरुषको बिबेक बिषय है औ अत्यन्तकी दुखत्रयकी निवृत्ति प्रयोजन है बिबेक ते मोक्ष होत षष्ठ वेदांत शास्त्र याके आचार्य वेदव्यास मुनि यामें जीव ब्रह्मकी एकता शुद्ध चैतन्यता बिषय है आनन्द प्राप्त प्रयोजन है सारासारबिबेक ते मोक्ष होत इत्यादि समुझबे को ज्ञान होय पुराण कहे ब्रह्म ब्रह्माण्ड बामन ब्रह्म बैवर्त मार्कंडेय भविष्यादि षट् पुराणैं राजसी हैं नारदीय विष्णु बाराह गरुड़ पद्म भागवतादि षट् पुराणैं सात्त्वकी हैं मीन कूर्म लिंग शिवस्कन्ध अग्न्यादि षट् पुराणैं तामसी हैं इत्यादि को पढ़ै सर्गादिदशांग जनैपुन: तपसानल कहे पंचाग्नि आदि तापतमें पुंज कहे बहुत युगलौं जराकरै परन्तु जीवको दु:ख काहूसों न छूटै ताते गोसाईंजी प्रणारोपकै अपने मनसों कहते हैं कि हे मन श्रीरघुनाथजी बिना तेरो दुख कौन हरैगो बिना श्रीरघुनाथजी की भक्ति सबवृथा है यथा रुद्रयामले ॥ येनराधमलोकेषुरामभक्तिपराङ्मुखा: ॥ जपंतपं दया शौचंशास्त्राणामवगाहन ॥ सर्ववृथाबिनायेनशृणुध्वं

पार्बतिप्रिये ॥ मनसों कहिबे को यह भाव कि कोऊ मतवाला तर्क माने ताते अपने मनसों कहत अनन्यता देखते ५५ ॥

पातकपीनकुदारिददीनमलीनधरेकथरीकरवाहैं। लोककहैंबिधिहूनलिख्यो। सपनेहूंनहींअपनेबरवाहैं।रामकोकिंकरसोतुलसीसमुझेहीभलोकहबोनरवाहैं। ऐसेकोऐसोभयो कबहूंनभजेंबिनबानरकोचरवाहैं ५६ ॥

पातक जो पाप तिन करिकै पीन कहे मोटोहौंकुदारिदकरिकै अन्न वस्त्र हीन ताते दीन दुखित मलीन ह्वै रह्यों बसन नाते कथरी पात्र नाते करवा धरेकहे लिहे इदंदशा बिलोकि लोग कहत अर्थात् अभागीहैं अरु बिधिहू न लिख्यो तहां बिधिको लिखना द्वै भांति होतहै एक कर्माचर हस्तपद शीशादिकी रेखा जो सामुद्रिक विद्यासों जानो जातयथा ॥ यस्यमीनसमारेखाकर्मसिद्धिश्चजायते । धनाढ्योसस्तु बिज्ञेयो बहुपुत्रोनसंशयः ॥ एककाल अक्षर जो लग्नकुण्डली में जैसे ग्रह परत तैसे फल ज्योतिष जातक सों जानो जात यथा ॥ लग्नस्थानेनिशानाथेत्रिकोणे जीवभास्करे। कर्मस्थानेभवेद्भौमः राज्ययोगस्सउच्यते ॥ इत्यादि भाग्य उत्तम एकहू ब्रह्माने नहीं

लिख्यो अरु आपने बर कहे अप्रुता बाहे कहे हाथन को बल सपनेहूं में नहींहै कि हम कछु करि सकैंगे ताते लोकवेद आपनेतीनों मतते नकाम हैं। सोई तुलसी श्री रघुनाथजीको किङ्करसेवक जैसोभयो तैसो समुझेहो बनतहै काहेते आपनो बड़ाईआपने मुखते कहिबो यहबात जगमें रवां नहींहैसलिलरीति नहींहै बल्किदूषणहै ताते अपनानाहीं कहेपरन्तु और महा त्मोंने कहेहैं यथानाभाजी भक्तिमालमेंलिखे ॥ कलि कुटिलजीव निस्तारहितबाल्मीकि तुलसीभये ॥ ताते बानरको चरवाहो जो श्री रघुनाथ जी तिनके बिना भजे ऐसे नाम को ऐसो समर्थ कबहूं नहीं भयो है अर्थात् जो कोऊ भयो सो रघुनाथैजी को भजिकै भयो यथा बाल्मीकि शवरी गीध निषाद अरु बानर चंचलपशु आलसी कादर तिनको सबल करि सुमार्ग में लगायो याते बानरको चरवाहो कहे ५६ ॥

मातपिताजगजाय तज्योबिधिहून लिखीकछुभालभलाई । नीचनिरादर भाजनकादरकूकुरटूकन लागिललाई । रामसुभावसुन्योतुलसीप्रभुसों कह्योबार कपेटबलाई । स्वारथको परमारथको रघुनाथसोंसाहबखोरिनलाई ५७ ॥

जगमें तो माता पिता जाया नाहे स्त्री न काम

जानिकै त्याग कियो औ भाल जो माथ तामें भलाई भाग्यकी रेखा ब्रह्माने कछु नहीं लिखे ताते भाग्य ते नीच लोक में निरादर ताको भाजन कहे पात्र बाहुबल हीन ताते कादर ताते यथा कूकुर टूकन हेतु ललचात फिरत रहौं तब श्री रघुनाथ जीको स्वभाव सुन्यो कि महाउदार दानीहैं यह जानिकै एकही बार प्रभु सों पेट खलाय कै आपनी गरज कह्यों सो स्वारथ को जो सुख लोक में परमार्थ को जो सुख परलोक में सो सब पूर्णकरे याते श्रीरघुनाथ ऐसे सुसाहेब को खोरि न लगावा चाहिये जो कछु कसरि सो आगे कहत ५७ ॥

पापहरेंपरितापहरैंतनपूजिभोहीतल शीतलताई। हंसकियेबकतेबलिजाउं कहांलौंकहैंकरुणाअधिकाई। काल बिलोकिकहैतुलसीमनमेंप्रभुकीपरतीति अघाई। जन्मजहांतहंरावरेसोंनिबहैभरि देहसनेहसगाई ५८॥

श्री रघुनाथजी कृपा करिकै मेरे पाप हरे अर्थात् पावन करे काहेते जाने कि मेरो तन जग में पूज्य भयो औ परिताप हरे सन्ताप मिटाये काहेते जान्यो कि हियतल जो हृदय तामें शीतलता आई औ सब भद्रो पाखण्डी बकसम रह्यो ताको सारासार बिबेको

शुद्ध हंस सम किये ऐसे प्रभुकी मैं बलिजाउं करुणा की अधिकारता कहांतक कहौं प्रभु की प्रतीति के बलते मन अघानो है परंतु काल कहे समयकी भय ते कि या समय में कोऊ धर्म पार नहीं जात याते अथवा कीलमृत्यु थोड़ेदिनकी जीवन जबलग चैतन्य भयो तबलग काल पहुंचि गयो फिरि जन्म पाये जबलग चैतन्यता आई तबलग विक्षेप रहो ताते यह डर कि अल्पज्ञ जीव प्रभु सनेह भूलि न जाइ याते गोसाईं जी कहत कि कर्माधीन जन्म जहां पावौं तहां आपते सनेह सगाई कहे नाता सो देह भरि निबहै भावभक्ति बनी रहै ५८ ॥

लोगकहैंअरुहौं हूंकहौं जनखोटोखरोर घुनायकहीको । रावरीरामबड़ीलघुता यशमेराभयोसुखदायकहीको । कैयह हानिसहौं बलिजाउंकिमोहूंकरौं निनिज लायकहीको।आनिहियेहितजाकराज्यों हौं ध्यानधरौं धनुशायकहीको ५९ ॥

लोकोंमेंसब कहत अरुमोहूंकहतहौं कि खोटोह वा खरोहौं एक रघुनायकही को गुलामहौं अपरको नहींहौं महाराज यामेंआपकी बड़ी लघुताहै कि ऐसे महाराजहू केतुलसी ऐसे कुबुद्धी को सेवककिये यही

यथ मेरो मेरे हृदयको सुखदायक भयो अर्थात् इतने बड़े समर्थ स्वामी को सेवक कहायो तौमें धन्यहौं मैं बलिजाउं हे करुणा सागर कितौ अपनी लघुता की हानिसहौ कितौ आपने किंकर होबे लायक कौ मोहू को करिये तहां रामभक्तनके लक्षण यथा महारामायणे ॥ अन्येविहायसकलंसदसच्चकार्यं श्रीरामपंकजपदं सततंस्मरंति । श्रीरामनाभरसनाग्रपठंतिभक्त्या प्रेनाचगद्गदगिरोप्यथहृष्टलोमा: ॥ सीतायुतंरघुपतिंचविशोकमूर्त्तिं पश्यत्यहर्निशमुदापरमेशरम्यम् । शांता:समानमनसश्चसुशीलयुक्ता: तोषच्चमागुणदयामृजुबुद्धियुक्ता: । विज्ञानज्ञानविरति: परमार्थवेत्ता निर्धामकोऽभयमन:सखरामभक्ता: ॥ ऐसो सुभाव जब होइ तब आपकी कैंकर्यता करबेयोग्य होउं यहमेरोहित जानिकै अपने हृदयमें दयाआनि ऐसोअनन्यकीजै जामें मैं धनुशायकहोको भाव धनुषधारी रूपकोध्यान करौं और रूपहूमें मनुनलागै ५६ ॥

आपुहौआपुकोनीकेकैजानतरावरोरामभरायोगढ़ायो।कोरउयोंनासरतैतुलसीसोकहैजगजानकीनाथपढ़ायो । सोईहैखेदजोवेदकहै नघटैजनजोरघुबीरबढ़ायो । हौंतौसदाखरकोअसवारतिहारोईनामगयंदचढ़ायो ६० ॥

इहां तक तौ कवित में भय दर्शायो अब राम सनेह नामबल दृढ़ता हेतु प्रार्थना करत है श्रीरघुनाथजी भरायो गढ़ायो कहे बनायोमैं आपही को हौं ऐसो अपना को मैं नीकी भांति आपुही जानत हौं औ जगत् भी यही बात कहत, कि याको जानकीनाथैने पढ़ायो अर्थात् तुलसी के हृदय में भक्तिको प्रकाश रघुनाथै जी की कृपा ते है अरु मैं कैसो हौं कि यथा कीर कहे सुवा सम मुखही ते नाम रटत हौं भाव हृदय में राम सनेह नाहीं है सोई बात को मेरे मनमें खेदहै काहेते जो वेद कहत कि जेहि जनको श्री रघुवीर बढ़ावत हैं सो फिरि नहीं घटत है यथा श्रुतिः॥ तस्मात्वमुद्धवोत्सृज्य चोदनांप्रतिचोदनां ॥ याहिसर्वात्मभावेनमयास्याह्यकुतोभयं १ नारदीयपुराणे ॥ श्री रामं स्मरणाच्छीघ्रासमस्तक्लेश संचयः॥ मुक्तिं प्रयाति विप्रेंद्रतस्यविघ्नोनबाधते२ तातेहौं कहे मैं तौ सदाखरको असवार रजक व चांडालवत्पतितमलक्रियाको पात्रहौं परंतु आपकोनाम मोको गयन्द कहे हाथी परचढ़ायो भाव महाराजसम मानि जगत्माथ नावतहैताकी लाजकीजे६०॥

घनाक्षरी ॥ छारतेसँवारिकैपहाड़हूते भारीकियो गारोभयोपांचमपुनीतपक्ष पाइकै। हौंतोजैसोतबतैसोअबअधमाई कैकैभरोपेटरामरावरोईगुणगाइकै ।

आपनेनिवाजेकीपैकीजैलाज महाराज मेरीओरहेरिकैनबैठियेरिसाइकै। पालि कैकृपालुब्यालबालकोनमारियेऔका टियेननाथबिषहूकोरूखलाइकै ६१ ॥

छारकहे धूरि हलकी नीच निरादर तैसोमैं रहौं ताको श्री रघुनाथजी सँवारिकै पहाड़हूते भारीकि-यो अर्थात् अचल पुष्ट उच्च पूज्यमान करि दियो औ पुनीत श्री रामभक्ति को पद पाइकै पांच कहे संतन की समाज में गारो कहे गरू भयो अथवा पांच कहे गाणपती सौर शाक्त शैव वैष्णवादि पांच में गरू कहे रामभक्तन में गिनती भयो अरु हौं कहे मैंतौ जैसो तब रहौं तैसे अबहूं मनशुद्ध हरि शरणही भया काहेते अबहूं अधमता करिकै पेट भरत हौं कौन अध माई है हे श्री रघुनाथ जी आपुको गुण गाइकै जगत्को रिझाइ पुजावत जो द्रब्यादि पावतसोपेट ही में लगावत कुछु सुकृतिमें नहीं लगावत याते आपुके प्रसन्न हेतु नहीं गुण गावत हौं ताते अपने निवाजे की पै कहे जोआपु दयाकरि बड़ाई दीन्हीहै तापै लाज कीजै अर्थात् अपनी ओर ते दयादृष्टि राखे रहिये अरु मेरी करणी की ओर हेरि रिसाइकै न बैठिये काहे ते हे कृपालु जो ब्याल कहे सर्पहू को बालक पालिये तौ अपने पाले की लाजकरि ताहू को नमारिये ताही भांति जो बिषहू को रूख लगाइये

ताहू को न काटिये तथा मैं आपुही को पाली पोषी हौं ६१ ॥

वेदनपुराणगानजानौंनविज्ञानज्ञानध्यानधारणासमाधिसाधनप्रवीनता। नाहिंनविरागयोगयागभागतुलसीके दयादानदूबरोहैंपापहीकीपीनता। लोभमोहकामकोहदोषकोषमोसोंकौनकलिहूजोसिखलईमेरियेमलीनता। एकहीभरोसोरामरावरोकहावतहौंरावरेदयालुदीनबन्धुमेरीदीनता ६२ ॥

या कवित्त में वेदादि के यावत् भेदहैं सो सब पचपन के कवित्त में विस्तार है याते यहां सूक्ष्म लिखतहौं चारिउ वेद अठारहौ पुराणादि को गान कछु नहीं जानत हौं ज्ञानकहे अपनो रूप चीह्निबो विज्ञान कहे ब्रह्म को जानिबो ध्यान कहे इष्ट में चित्त लगावना धारणा कहे नासिकाग्र दृष्टि दे नाभि चक्रादि वस्तु विषे चित्त स्थिर करना समाधि कहे अखण्ड ध्यान इष्ट में लय होना ताकी जो साधन यम नियमादि की प्रवीणता एकहू नहीं है विराग कहे विषयको त्यागे योग अष्टांगकरि मनस्थिर करना याग अश्वमेधादि तुलसी की भाग्य में एकहू नहीं है एक श्रीरघुनाथजीकी दयारूप दान पाइवे

को दूबरो कहे भूखा हों अरु अपने पापन करिकै पीनता कहे मोटा हों काम क्रोध लोभ मोहादि दोषन को कोष कहे खज़ाना मोसमान दूसरो जहान में कौन है जो कलियुगहू ने जो रीति सिखि लई है सो मेरीही मलीनता है ताते मो समान कुटिल दूसरा नहीं है जो कहौं ऐसे कुटिल हौं तौ तुम श्रीरामदास काहे को कहावते हौ ताको कहत हे श्रीरघुनाथजी रावरे दयालु दीनबन्धु हौ भाव दीनपर अकारण दयाकरि कृतार्थ करते हौ अरु मेरे दीनता है याही एक भरोसे सों मैं आपको दास कहावत हौं नहीं तौ न कहावतो ६२ ॥

रावरोकहावौंगुणगावौंरामरावरोई रोटीद्वैहौंपावौंरामरावरोहिकानिहौं । जानतजहानमनमेरेहूगुमानबड़ो मान्यो मैंनदूसरोनमानतनमानिहौं । पाँचकी प्रतीतिनभरोसोमोहिंआपनोई तुमअप नाइहौतबैहीपरिजानिहौं । गढ़िगुढ़ि छोलिछालिकुन्दकैसीभाईबातें जैसी मुखकहौंतैसीजीयजबआनिहौं ६३ ॥

हे श्रीरघुनाथजी रावरो कहे आपही को गुलाम कहावौं अरु आपही के करुणादया उदारता सों शीलादि जो समूह गुण हैं तिनको गावौं पुनः राम

कहे रकार मकार जो द्वै वर्ण हैं तेई द्वै रोटी पावों अर्थात् श्रीराम नामही की उरमें भूख है अरु कानि कहे मर्यादा लाज आपही की है अरु अनन्यता मेरी को जहान जानत यथा तुलसी मस्तक तौ नवे जब धनुश बाण लेउ हाथ इत्यादि बजते प्रसिद्ध है कि गोसाईं जी अनन्य रामोपासकहैं यह लोक जानत है अरु मेरेहू मनमें बड़ो गुमान है अनन्य ताको यथा॥ एक भरोसो एकबल एक आश बिश्वास। स्वाति बुन्द रघुबंश मणि चातृक तुलसी दास॥ इत्यादि दूसरे को न आगे मान्यो है न अब मानत हौं न पीछे मानि हौं पांच कहे ब्रह्मा विष्णु महेश देवी गणेशादि पंचदेवन की मोको प्रतीति नहीं है अथवा पांच कहे पंच जग के लोग जो मोको श्री रामभक्त कहत सो मोको प्रतीति नहीं है औ अपनोई कहे आपनी अनन्यता की मोको प्रतीति नहीं है कि यामें मैं भक्त ह्वै गयों हे श्रीरघुनाथजी जब तुम अपनै हौ तामें जब परिहौं तब आपही जानि जैहौं कौन भांति ताको कहत यथा कुंदेर लकड़ी को गढ़ि डौल्यावत छोलि कै सफा करत भाईं कहे खरादि कै चीकनी करत तैसे मेरी बातैं यथा गुण गावौं आपु को कहावौं नामकी भूख है इति गढ़ी गुढ़ी है दूसरे को नहीं मानत हौं यह मेरे गुमान है ताको जहान जानत इति छोली छाली है पांच की न प्रतीति न आपनो भरोसो

आपके भरोसे हौं इति कुन्द कैसी भाईं इत्यादि बातैं जो मुखसों कहत हौं तैसी जब मेरे जीव में करि देहौ तब जानि हौं कि मोको आपनो गुलाम बनायो ६३ ॥

बचनबिकारकरतबखुवारमनबिगतबिचारकलिमलकोनिधानुहै । रामको कहाइनामबेंचिबेंचिखाइ सेवासंगतिनजाइपाछिलेकोउपखानुहै ॥ तेहूतुलसीकोलोगभलोकहैताको दूसरोनहेतुएकनीकेकेनिदानुहै । लोकरीतिबिदितबिलोकियतजहांतहां स्वामीकेसनेहश्वानहूकोसनमानुहै ६४ ॥

वचन बिकार कौन बिकारता है कहत नाम बेंचि बेंचि खाउं द्रव्य पाइबे हेतु जगत् में श्रीराम नामको माहात्म्य सुनावत हौं करतब खुवार कहे कर्म खोटे हैं कौन भांति श्रीरघुनाथजीको सेवा पूजा नहीं करत हौं अरु मन बिचार रहित कलि-मल कहे पापको निधान कहे घर ह्वै रहो हौं भाव विचार नहीं पापही मन में भरो है काहेते सत्सं-गति में नहीं जात है तहां रामदास कहाइ औ बचन कर्म मनादि में बेकार तौ काहेते रामदास सब कहत तापै पिछले लोगन की कहनूति उपखानु

कहे मसलापर बात कहनो सो अंत में कहैंगे ऐसो तुलसी कुटिल ताहू को लोग भलो कहत ताको और दूसरो हेतु नहीं है निदान कहे कारण एक यही रीति लं कमें बिदित जहां तहां बिलोकियत कहे देखियत है कि स्वामी के सनेह स्वानहूं को सन्मान है यही उपखानु कहनूति है यथा ॥ ज्यों स्वामिमया कूकुर सनमान । त्यों रामकृपा तुलसी को मान ॥ पुनः ॥ घटहि राम दुनियां सबहारी । टेटे लरिका गाउं गोहारी ६४ ॥

स्वारथकोसाजनसमाजपरमारथको मोसोंदगाबाजदूसरोनजगजालहै । कैन आयोंकरैंनकरैंगोकरतूतिभली लिखीनबिरंचिहूभलाईभूलिभालहै । राव रीआपथरामनामहींकीगतिमेरे इहांझूठो झूठोसोतिलोकतिहूंकालहै । तुलसीको भलोपैतुम्हारेहीकियेकृपालु कीजैनबिलंबबलिपानीभरीखालहै ६५ ॥

स्वार्थ को साज कहे लोक सुखके जो अंग हैं यथा ॥ सुन्दरि बनिता १ अतरादि सुगन्ध २ सुन्दर बसन ३ भूषण ४ गानतान ५ तांबूल६ उत्तम भोजन७ गजादि बाहन ८ इत्यष्टौ सौभाग्य अंग यथा ॥ भगवद्गुणदर्पणे ॥ सुगंधंबनितावस्त्रंगीतंतांबूलभोजनं॥

भूषणंवाहनंचेतिभागाष्टकमुदीरितं १ ॥ इत्यादिएक हूनहीं है परमार्थ को समाज कहे तीर्थ व्रत यज्ञ तप जप ज्ञान योग वैराग्य शांति संतोषादिते एकहू नाहीं हैं जाल कहे माया प्रपंच यावत् जगत् है तामें मो समान दगाबाज दूसरो नहीं है औ भली करतूति कहे सुकर्मादि न आगे कै आयों है न अब करत हौं न फिरि करिहौं भलाई कहे सुखद रेखा माथे में ब्रह्मा भूलिहू कै नहीं लिखो है श्रीरघुनाथ जी रावरी कहे आपु की शपथ करि कहतहौं कि मेरे एक श्री रामनामहीं की गति है और को आश भरोसा नहीं है यह मैं सांची कहत हौं काहेते आपके इहां जो झूठा है सो तीनहूं लोक तीनहूं कालमें झूठा वाको बिश्वास कोऊ न करैगो ताते मेरी बातको प्रमाण करिये हे कृपालु तुलसी की भलो तुम्हरेही किये पै होइगो याते अवबिलं-बन करिये काहेते पानीभरी खालहै यह उपखान कहनूति है यथा पानीभरो खाल रहि नहीं सकती है शीघ्रही सरिजातीहै तथा देहको ठेकाना नहीं तहां ईश्वरकी भलाई तौ जीवके हेतुहै देह अनि-त्यकी क्यों संदेहकरें याको यह भाव किजो कहेहैं कि तुलसी को भलो पै तुम्हारेही किये कृपालु तहां तुलसी नाम देहमात्र को है ताते यही देह अपनो गुलाम करिलीजै जामें दूसरो देह न धरिबे परै६५॥

रागकोनसाजनबिरागयोगयागजि

थकायरनछांड़िदेतठाटबोकुठाटको । मनोराजकरत अकाजभयोआजुलगिचा हैचारुचीरपैलहैनटूकटाटको । भयो करतारबड़ेकूरकोकृपालुपायोंनाम पारसहौलालचीबराटको । तुलसीबनी हैरामरावरेबनाये नातौधोबीकैसाकूकुर नघरकोनघाटको ६६ ॥

राग कहे लोकस्नेह ताको साजकहे अष्टांगभोग यथा बनिता सुगन्ध बसन भूषण गान तांबूल भोजन बाहनादि सो एकहू नहींहै औ बिराग कहे संसारके त्यागमें योग अष्टांग यथा ॥ यम नेमआसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधिअरु याग अश्वमेधादि सोऊ नहींहै औ सुखके हेतु अनेकउपाय रूपी कुठाटको ठाटब ताको जीव कादर छांड़ि नहीं देत कायर याते कहे कि कौन एकौनहीं होत बासना सबकी राखत इत्यादि मनोराज कहे मनोरथ करत आजुतक अकाजभये काहेतेचारु चीरकहे सुन्दर दुशाला ज़रबफ़तादि कीतौ चाहक रत अरु लहै कहे पावत नहीं टाटको पुरानो टूकरा भाव बड़े सुखकी चाह औ थोरहू सुखनहींपावतो ऐसोमैं कूरकहे कपटी ताहूपै करतार कृपालु भयो काहेते बराट कहे कौड़ी को मैं लालची भाव तुच्छ

देव व भूतादिकी चाह अरु पायौ पारससम श्रीराम नामताते तुलसीकीजो बनिहै सो है श्रीरघुनाथजी रावरे कहे आपुके बनाये बनिहै नाहीं तौ धोबीकै-सोकूकुर न घरको न घाटको यह कहनूति उपखान है अर्थात् जो श्रीरघुनाथजी कृपा न करें तौ लोक परलोक एकहू न बनि परीयथा ॥ घाटैजायधोबिनि यांमारै घरमादीन्होंफरका । धोबीकेरोकूकुरऐसो घाटकभयोनघरका ६६ ॥

ऊंचोमनऊंचीरुचिभागनीचौनिपट ही लोकरीतिलायकनलंगरलबारुहै । स्वारथअगमपरमारथकीकहांचली पेट कीकठिनजगजीवकोजवारुहै। चाकरी नचाकरीनखेतीनबनिज भीखजानतन करूंकिसमकबारुहै। तुलसीकीबाजी राखीरामहीकेनामनतु भेंटपित्तरनसोंन मूडहूमेंबारुहै ६७ ॥

ऊंचो मन कहे मान बड़ाई आदिको मनोरथ है ऊंची रुचि कहे भूषण बसनादि भोजन छादनादि नीकेकी चाह औ भाग्य निपटनीचो है भाव एकहू आश पूर्णनहीं है लोकरीति कहे यथा शीलता उदा-रता कोमलता सत्कारता धीरर्य धर्मादि जो उत्तम लोकरीति है ताके लायक एकहू नहीं हों काहे ते

लंगर कहे कुमार्गी लवारु कहे झूठाहैं स्वार्थ कहे भोजन बसन इच्छापूर्वक मिलनो यही अगम है तौ परमार्थ कहे परलोककी कहां चली है काहेते पेट भरि भोजन मिलिबो सुख जगमें कठिनहै तौ जीव सुख तौ जवारु कहे जानहारे है काहेतें जब क्षुधा लागत तब धर्म कर्म कुछ नहीं बनि परतहै तहां क्षुधा पूर्णकी जो उपाय है यथा चाकरी सोऊ नहीं आकरी कहे खानि ते खोदि कोऊ पदार्थ मिलत सोऊ नहीं खेती नहीं बनिज भीख अरु काहूभांति को कबारु नहीं जानत काहे ते सुभाव कूर कहे टेढ़ाहै ताते जीविकाकी एकौ सूरति नहीं है तौ क्षुधावंत ते परमार्थ कैसे बनै तहां चौरासी लक्षयोनिरूप कोठा घूमि नरदेह रूप चौपरि कोसी बाजी आई जो अबकी पांसा न परोभाव हरि शरण न भये तौ फिरि वाही चौरासी को गयो तैसे नरदेह रूप तुलसीकी बाजी को श्रीरघुनाथजी के नामही ने राखी भाव कृपाकरि अपनो करि लियो जो प्रभुकृपा न करते तौ मेरे जीवोद्धार की कुछ सूरति न रहै कौन भांति यथा भेंट पितरन सों न मूड़हू में बारहै यह कहनूति उपखान है यथा पितरनको भेंट देबे को बृषोत्सर्ग तेरहीं नित्यकुम्भ बरषी श्राद्ध गया पीछे चौर कर्म भी पितृकाजही है तहां और कर्म की को कहै पितृ भेंट देबे को मूड़ में बारभी नहीं है कि चौरकर्म भी तौ कराय डारिये तैसे हरि

शरणागत को उपाय मो में एकहू नहीं है ६७ ॥

अपतउतारअपकारकोअगार जग जाकोछांहछुयेसहमतब्याधबाधको।पा तकपुहुमिपालिबेकोसहसाननसो का ननकपटकोपयोधिअपराधको। तुलसी सेबामकोभोदाहिनोदयानिधान सुनत सिहातसबसिद्धसाधसाधको । रामना मललितललामकियोलाखनिको बड़ो कूरकायरकपूतकौड़ीआधको ६८ ॥

अपत उतार कहे पतितनमें पतित अपकार कहे परअकाज कारक जो कर्म ताको अगार कहे घरहौं जगमें अपावन कैसोहौं कि व्याध जोजीव हिंसकबा-धक बिघ्नकर्ता तेऊ जाकी छांह छुवत सहमत डरै हैं क. हेते पापरूपी पृथ्वी पालिबे को सहसाननजो शेष समहौं भाव भूमिसम गरू भारी पाप शीश पर धरे मोको बोझ नहीं जानि परत है औ कपटको का-नन कहे बनहौं भाव अनेक कपट करतहौं अपराध को पयोधि कहे समुद्र हौं ऐसेतुलसी बामकहे कुटिल को दया निधान श्रीरघुनाथजी दाहिने भयो भाव अपनी शरण करिलियो ताको देखिसुनिकै अणिमा-दिक सिद्धी प्राप्तवाले सिद्ध मनबश करनवाले साधु साधना करनेवाले साधकादि सब सिहात कहे लल-

चात कि हम ऐसे न भये सो कैसो भयो ताको कहत कि ऐसो बड़ो कूर कहे कुमार्गी कायर कहे धर्म कर्म करिबमें कादर कपूत कहे कुलधर्म सों बिमुख सो नकाम आध कहे फूटी कौड़ी को पोढ़ी कौड़िउको नहीं ऐसे तुलसी को श्रीरामनाम ने ललित कहे सुन्दर ललाम कहे रत्न करि दियो जो लच्छनके मोल को अथवा कपूत यथा क कहे जलताको पूत आथ-मानो पत्थर कपूतहै सोकूर बड़ो याते कहे कि जहां गिरत तहां कृषी दलि डारत कायर याते कहे कि घाम बयारि लागतही गलिजात मोल जाको कौड़ी को नहीं ऐसोकूर कादर कपूतहि मोपल सम तुलसी को श्रीराम नामने लाखन के मोलको सुख पुष्टही-राबनायो जो लोकमें प्रकाशितहै यह अर्थ हम याते करे कि तंत्रन में हिमोपल को हीरा ह्वै जानेकी क्रिया लिखीहै परन्तु भक्तिवान् को कामहै यथा श्री रामनाम तुलसी को पावन करे क्रिया यथा ॥ चन खारस्यखवदैपुटंबस्त्वे हिमोपले। बेष्टिमधूकतैले ग्रं स्व पक्व हीरकंभवेत् ६८ ॥

सबअंगहीनसबसाधनबिहीन मनब चनमलीनहीनकुलकरतूतिहैं। बुधिबल हीनभावभगति बिहीन दीनगुणज्ञान हीनहीनभागहूबिभूतिहैं। तुलसीगरीब कीगईबहोरिरामनामजाहि जबजोहरा

मह्लकोबैठोधूतिहौं । प्रीतिरामनामसोंप्रतीतिरामनामकी प्रसादरामनामकेपसारिपायँसूतिहौं ६९ ॥

यम नेमादि योग के सब अंग करि हीन हौं बिबेक बैराग्य समादिषट् सम्पत्ति मुमुक्षुतादि साधन करि विहीन हौं मन मलीन भाव बिषय आसक्त हौं बचन मलीन भाव परदोष गावत हौं कुल करतूति कुलके शुभ कर्म ते हीनबुद्धि बल चतुरता करि हीन औ भक्तके जे भावहैं दासता सख्यतादि ताहू करि हीन दीन बित्तहीन गुण यथा बिद्याकारीगरी आदि ज्ञान सारासारको बिचारहीन औभाग्य बिभूति कहे ऐश्वर्य इत्यादि सबते हीन हौं इत्यादि तुलसो की गई ताको बहोरि कहो फेरि आनि दई श्रीरामनाम ने जाको जीह सी जपत में बैठे श्रीरामहू को धूति हौं कहे छलि हौं भाव पाप पुण्य को फल दुःख सुख नरक स्वर्ग श्री रघुनाथजीकी आज्ञाते है तहां सुकृति तौ मेरे हई नहीं है पाप समूह है सो नाम जपि ताके बलते पाप को उल्लंघि जाउंगो यथा यमन हराम कहि पारभयो ऐसो नामको प्रभाव है ता रामनाम में मेरी प्रीति है ताते मोको राम नामकी प्रतीति है कि श्रीराम नामके प्रसादते पायँ पसारि कै सोइहौं भाव पाप शत्रुकामादि चोरनसों निर्भय ह्वै कै ६९ ॥

मेरेजानजबतेहौंजीवह्वैजनम्योजग तब :बेसाह्योदामलोभमोहकामको । मनतिनहींकोसेव तिनहींसोभावनीकोबचनबनाइकहौंहौंगुलामरामको । नाथहूनअपनायोलोक झूठोह्वैपरोपैप्रभुहूतेप्रबलप्रताप प्रभुनामको । आपनीभलाईभलोकीजैतौभलाईनतौ तुलसीकोखुलैगो खजानोखोटेदामको ७० ॥

मेरे जान जबते मैं जीव ह्वै जगमें जन्म पायों तबते लोभ मोह कामको दाम कहे सिक्का कमायों बेसाह्यों खजाना भरेडं कामहेतेजान्यों कि लोभादिकही को सेवा में मन लागत है औ तिनहीं में प्रीति भावनीको है अर्थात् अंतर में चाह लोभादिकही को है औ मुखसों बचन बनाइ कै कहत हौं कि मैं श्री रघुनाथजीको गुलाम हौं तहां रघुनाथजीने न अपनायो भाव सांचो दास न करिलियो औ लोकहू में मेरी दासता झूठी ह्वै ठीक परी भाव यह सब सांच माने कि तुलसी झूठो रामदास है ऐसी मेरी बिगरीपै प्रभु के नामको प्रताप प्रभुहू ते प्रबल है अभिप्राय यह किरूपएक ठौर रहततारूपको प्रतापनामो द्वारा लोक में प्रकाशित होत ताको सुनि सब आपही डरत जो निर्लज्ज हौ प्रतापी को नाम लेइ तौ वा-

को कछु भय नहीं होत तैसे रामनाम के भरोसे मैं हौं ताते अपनी भलाईते मोको भलो कीजै तौ भलो है नाहीं तौ तुलसीके कमाये जन्मान्तर के कामादि खोटे दामन के खजाना खुलैगो भाव मेरी खोटाई जाहिर होयगी यथा लोभ को सिक्का पाखंड है तामें सुवेष रूप सोना देखाउ में अशरफी है भीतर तृष्णा कुधातु भरी विडंबना खोटाई प्रकटी मोहकी सिक्का ममता तामें मायारूप चांदी देखाउ में रुपैया भीतर मिथ्या दृष्टि कुधातु भरी अज्ञानता खोटाई प्रकटी कामको सिक्का सौहार्दता है तामें प्रीतिरूप तांबा देखाउमें पैसा लोलुपता भीतर लोहा भरोकलंकता खोटाई प्रकटी ७० ॥

योगनबिरागजपयागतपत्यागब्रत्ती थैनधर्मजानौंबेदबिधिकिमिहै । तुलसी सोपोचनभयोहैनहिंहवैहैकहूं शोचैसब याकेअघकैसेप्रभुक्षमिहै । मेरेतौनडरु रघुवीरसुनोसांचीकहौंखलअनखैहेंतुम्हें सज्जननगमिहै । भलेसुकृतीकेसंगमोहिं तुलातौलिये तौनामकेप्रसादभारमेरी ओरनमिहै ७१ ॥

योग अष्टांगादि विरागजग सो उदासीनता जप विधिसहित मंत्र जप याग अश्वमेधादि तप पंचा-

न्यादि त्याग विषय छोड़ना व्रत चांद्रायणादि तीर्थ प्रयागादि धर्म सत्य शौच तप दानादि वेदकी विधि कैसी है इत्यादि एकहू नहीं जानत हौं याते तुलसी समपोच कहे नीच न भयोहै न है न आगे कहूं होइगो याते सब शोच करते हैं कि या तुलसी के अघ प्रभु कैसे क्षमा करेंगे ताको मोको कछुडर नहीं है श्रीरघुनाथजी मैं सांची बात कहत हौं ताको सुनो जो मोको अपनाइ हौ तौ ताको सुनि खल तौ अनखैहैं तुम्हैं ईर्षा करिहैं परंतु सज्जन न अनखैहैं काहेते उनको गमि है वेद पुराण ते नाम को प्रभाव जानते हैं नाहीं तौ आपु भले सुकृती के साथ मोको तुला नाम तराजू पर धरि तौलिये तौ आपुके नामके प्रसादते मेरी ओर भार नसिहै गरू परि है काहे ते सतयुग में ध्यान त्रेता में यज्ञ द्वापर में अर्चा करि बहुत कालमें जो फल प्राप्त होत रहै सो फल कलियुग में श्रीराम नामके स्मरणमात्र में प्राप्त होतहै यथा ॥ विष्णु-पुराणे ॥ ध्यायंकृतेयजन्यज्ञैस्त्रेतायांद्वापरेर्चयन् ॥ यदाप्नोतितदाप्नोतिकलौश्रीनामकीर्त्तनात् १ दृष्टंश्रुतं मयासर्वंयत्किंचित्सारमुत्तमं ॥ परंतुरामनाम्नैकंवैभवं परतरात्परं ७१ ॥

जातिकेसुजातिकेकुजातिकेपेटागिबस खायेटूकसबकेविदितबाततुनोसो। सा

नसबचनकायकियेपाप सत्यभाय राम कोकहायदासदगाबाजपुनीसो । राम नामकोप्रभावपाउमहिमाप्रताप तुलसी सोजगमानियतमहामुनीसो । अतिहीअ भागेअनुरागतनरामपद मूढ़येतोबड़ोअ चरजदेखीसुनीसो ७२ ॥

जाति अपनी के सुजाति ऊंची जाति के कुजाति नीची के पेटागि कहे भूख बश ते सबकी रोटिन के टूक खाये सो बात दुनियां में बिदित सब जानत हैं औ मानस वचन काय देह अर्थात् मनसा बाचा कर्मणा सतिभाय स्वाभाविक सुभाव ते पाप किये फिरि श्रीरघुनाथजीको दास कहायो पुनि सोई पूर्ववत् कर्म करि दगाबाज बनो हौं तहां श्रीराम नामको ऐसो प्रभाव है ऐसो कुटिल मैं सोऊ महिमा प्रताप पायों कौन महिमा प्रताप पायों अर्थात् तुलसी को सब जग महामुनि वाल्मीकि सम मानियत है यथा भक्तिमाल मे लिखा है ॥ कलिकुटिल जीव निस्ताररहित वाल्मीकि तुलसी भये ॥ येती बड़ो आश्चर्य देखि सुनिकै जे श्री रामपद में मन सों अनुराग नहीं करत ते मूढ़ अतिही कहे महा अभागे हैं भाव थोड़ी मेहनति में बड़ी मजूरी मिलत ताहू में बिमुख याते अभागी ७२॥

जायोकुलमंगनबधावोनबजायोसुनि भयोपरितापपापजननीजनकको । बारे तेललातबिललातद्वारद्वारदीन जानतहौ चारिफलचारिहिचनकको । तुलसीसो साहिबसमर्थके सुसेवकहि सुनतसिहा तशोचबिधिहूगनकको । नामरामराव रोमयानोकिधौं बावरोजोकरतगिरीते गरूतृणातेतनकको ७३ ॥

मंगन कहे याचक के कुल में पाय कहे जन्म पायों और की को कहै बधावा तक न बजायो काहेते जननी जनक कहे माता पिता को पापरूप परिताप कहे दुःख देनहारो प्रकट भयों भावजन्म होतही महादारिद्र आयो ताते बारेहीते भूखकरि बिललात कहे व्याकुल ललात कहे एक एक दाना को ललचात द्वारद्वार फिरत ऐसो दीन रहौं किजी चारिहूचना पावों तो चारिहूफल सम मानत रहौं सोई तुलसी अब समर्थ साहेब श्रीरघुनाथ जी को सेवक भयो ताको सुनि सिहात ललचात समर्थ ब्रह्मा ऐसे गणक शोच करत भाव भाग्य की रेखा एकहू नहीं यह ऐश्वर्य कहांते भयो है श्रीरघुना- थजी रावरोनाम सयानो है किधौं बावरो है जो तृणा सम तनक को गिरि कहे पर्वत ते गरू करत

है भाव पतित जीवन की सुकृतिन की शिरोमणि बनावत है ७३ ॥

वेदहू पुराणकही लोकहू बिलोकि यतरामनामहीसोंरीझेसकलभलाईहै । काशीहूमरतउपदेशतमहेश सोइसाधन अनेकचितईनचितलाईहै ॥ छाछकोललातजेतेरामनामकेप्रसादखातखुनसात सोंधेदूधकीमलाईहै । रामराजसुनियत राजनीतिकीअवधि नामरामरावरोतौ चामकीचलाईहै ७४ ॥

वेदहू पुराण कहत सो सुने हैं अरु लोकहू में बिलोकि कहे देखियत है कि श्रीराम नामही के रीझे मन लगाये सकल भांत सबकी भलाई है और उपाय ऐसो सुगम नहीं है काहेते महादेव ते अधिको सुजान कोऊ नाहीं है ते काशीजी में जो कोऊ जीव मरत ताको सोई श्रीराम नामही उपदेश करि मुक्त करत हैं औ अनेक साधन वेद कहे तिनको करिबेको कौन कहै शिवजी चित्तलगायके चितये भी नहीं भाव श्रीरामनाम के आगे सब साधन तुच्छ माने इत्यादि वेद पुराणन में सुने हैं यथा ॥ केदारखण्डे शिववाक्यं ॥ रामनाम समंतत्वंनास्तिवेदांतगोचरं ॥ य प्रसादात्परांसि

द्धिंसंप्राप्तामुनयोमलां १ अध्यात्मेशिववाक्यं ॥ अ
होभवन्नामगृणन्कृतार्थी वसामिकाश्यामनिशंभवा
न्या ॥ मुमूर्षमाणस्यविमुक्तयेहं दिशामिमंत्रंतवरा
मनाम २ पद्मपुराणे ॥ येयेप्रयोगास्तंत्रेषुतैस्तैर्य
त्साध्यतेफलं ॥ तत्सर्वंसिध्यतिक्षिप्रं रामनामैवकी
र्त्तनात् ३ ऋग्वेदे ॥ परंब्रह्मज्योतिर्मयंनाम उपा
स्यंमुमुक्षुभिः ॥ यजुर्वेदे ॥ रामनामजपतेनैवदेवता
दर्शनंकरोतिकलौनान्येषां ॥ सामवेदे ॥ रामनामज
पादेवमुक्तिर्भवति ॥ अबलोक की देखीबात कहत
कि जे छाछ कहे माठाको ललचात नहीं पावत
तेई श्रीराम नामके प्रसादते सोंधे कहे पाके सुग-
न्धित दूधकी मलाई को खातमें खुनसात रिसात
कि बहुतपाके दूधकी माधुर्य्यता जात रहत है भाव
पतित सुकर्मरूप छाछ को ललचात हूं नहीं स-
कत तेई श्रीराम नाम के प्रभावते सोंधे दूध सम
परम धर्म ताको मलाई ज्ञानको खुनसात कि भ-
क्ति आगे ज्ञान निरस है हे श्रीरघुनाथजी सुनियत
है कि आपको राज्य में अवधि कहे मर्यादा
राजनीति की चलती रहे यथा तांबा चांदी सो-
नादि मोल अनुकूल तौलपै अपनो सिक्का बनाय
जो मोल थापिदेत ताहीपर चलत तथा तांबे को
सिक्का पैसा लघुमोल सो कर्मकाण्ड है ताको थोड़ो
मोल स्वर्ग सुख है चांदीको सिक्का रुपया मध्यम
मोल सो ज्ञान है ताको मध्यममोल कैवल्यमुक्ति

है सोनेको सिक्का अशरफीको बड़ामोल सो उपासना है ताको बड़ामोल नवधा प्रेमा पराभक्ति प्रभु की समीपी इत्यादि श्रीराम राजमें कर्म ज्ञान उपासना वालेन को अपने अनुकूल फल पावते रहैं अरु आप के नामने चामकी मर्यादा सिक्का चाम को चलायो भाव चामकी चकतीपर सिक्का करि सब सिक्कनते ऊंची मर्य्यादा करिदियो इहां चाम कहे कर्म ज्ञान उपासना रहित ऊंच नीच कोऊ जीव कैसहू पापी पतितहोइ श्रीरामनाम स्मरण करतही ऊंची सर्वोपरि गति पावत है यथा ॥ अपतअजामिलगजगणिकाऊ । भयेमुक्तहरिनामप्रभाऊ ॥ हनुमत्संहितायां ॥ रामत्वत्तोधिकंनामइतिमेनिश्चलामतिः । त्वयातुतारितायोध्या नाम्ना तुभुवनत्रयं ॥ शुकसंहितायां ॥ आकृः:कृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनंचांहसा माचांडालममूकलोकसुलभोवश्यंचमुक्तिस्त्रयः ॥ नोदीचांनचदीचणांनचपुरश्चर्यामनागीक्षते मंत्रोयंरसनास्पृशेवफलतिश्रीरामनामात्मकः २ बृहद्विष्णुपुराणे ॥ अविकारी विकारीवा सर्वदोषैकभाजनः ॥ परमेशपदंयातिरामनामानुकीर्तनात् ३ अथर्वणवेदेश्रुतिः ॥ यश्चांडालोपिरामेतिवाचंवदेत्तेनसहसंवदेत्तेनसहसंवसेत्तेनसहसंभुंजीयात् ७४ ॥

सोचसंकटनिसोचसंकटपरतजर जरतप्रभावनामललिततलामको । बूड़ि

यों तरतबिगरियोसुधरतिबातहोत देखि दाहिनेसुभावबिधिबामको ॥ भागत अभागअनुरागतबिरागभागजागतआलसि तुलसीहसेनिकामको। धाईधारिफरिकै गोहारिहितकारीहोत आईमीचुनिकट जपतरामनामको ७५ ॥

यामें श्रीराम नाम को प्रभाव द्वै भांति कहे एक हेतु रहित यथा ॥ अजामील पुत्र के बहाने नाम लिये ताके महापाप नाश भये हरिधाम गये तथा यमनहराम कहि धाम पायो दूसरो हेतु सहित जे प्रीति ते रामनाम जपतेहैं तिनको यावत प्रतिकूल विघ्न करतातेई अनुकूल ह्वै सहाइ करता होत तहां हेतु रहित को प्रभाव रामनाम कैसोहै यथा ललित ललामकहेसुन्दर रत्नपासआयेते शोच संकट ज्वरादि रोग कछु नहीं ब्यापत यह काव्यकलाधर में रघुनाथ कवि लिखोहै यथा ॥ बिषको भयभयवश कौनेकन व्यापततास । शुद्ध अंगकोहोतहै हीरा जाकेपास ॥ पुनः ॥ संतति संपतिबढ़तअरु रहतनिरोगितगात । गजमुक्ताजाकेरहतताकोयश अवदात ॥ तैसेरामनाम सुन्दर रत्न के प्रभावते पापकर्मन को शोच औ यम शासति को संकटको शोच संकटपरत भाव हरिपा-र्षदनते दंडपावत औ ज्वर जो त्रिताप सो आपही

उरिजात अब हेतु सहित कहतकि जिनको श्री राम नाम में प्रीतिहै ते काहू क्लेश में वा भवसागरमें बूड़ियो तरत कहे पार होत यथा परीक्षित अकाल मृत्यु में बूड़े तेऊ तरे औ बिगरियो सुधरत जिन की बात बिगरि जात यथासुग्रीव की सुधरि गई अरु कर्मवश जाको सुभाव बाम ह्वै गयो यथा बाल्मीकि तिनहूंको स्वभाव दाहिनो भयो ब्याधाते महामुनि भये बाम बिधि कहे टेढ़े कर्म जिनके यथानिषाद तिनहूं को कर्म दाहिनो भयो कुल समेतपावन भयो अभाग कहे हरि बिमुखता यथा ॥ कहहनुमंतविपतिप्रभुसोई । जबतवसुमिरणभजननहोई ॥ ऐसो अभाग भागत अरु विराग जगते बिमुखतासों अनुरागत अरु आलसी नकाम तुलसी ऐसेन को भाग्य जागत भाव हरिचरण में प्रीति होत मीचु कहे मृत्युको धारि कहे सेना जो मारिबेको धाईआवत सोऊ श्री रामनाम जपत सोई मृत्युधारि लौटि हितकारी गोहारि होत यथा अंबरीष पै कृत्यानल मृत्यु ते सहायक भई ७५ ॥

आँधरोअधमजड़जाजरोजराजमनशू करकेशावकढकाढकेलोमगमै । गिरो हियेहहरिहरामहोहरामहन्योहाइहाइ करतपरीगोकालफरामै ॥ तुलसीविशोक

ह्वैत्रिलोकपतिलोकगयेनामकेप्रताप बातविदितहैजगमैं। सोईरामनामजोस नेहसोंजपतजनताकी महिमाक्योंकहीहै जातअगमैं ७६॥

काहूसमय कीबातहै किएक यमन कहे मुसल्-मान अधम कहेपातकी सुभाव जड़जरा कहेबुढ़ापा अवस्थाकरिकै जर्जर निर्बल देह आंधर ताको शूक रके शावक कहे बालकने ढका कहे धक्कादे राह में ढकेलि दियो हृदय ते हहरि गिरत में कह्यौ कि हौं कहे मोको हरामने हनो हायहाय करत काल फंगमें परो कहे मरिगयो तहां हराम शब्दते राम नाम निकरो ताके प्रतापते हरिगण आइ यमगणन सों छीनि लियो याते विशोक ह्वैकै त्रिलोकपति लोक जो हरिधाम तहां कोगयो श्रीराम नाम के प्रताप ते यह बात जग में विदित सब जानत है इत्यादि नाम को प्रभाव हेतुरहित है सोई श्री रामनाम को जे जन सनेहते जपत ताकी महिमा अगम है क्यों कही जात यथा वाराहपुराणे शिव वाक्य ॥ दैवाच्छूकरशावकेननिहतोम्लेच्छोजराज र्जरो हारामेतिहतोस्मिभूमिपतितोजल्पंस्तनुंत्यक्तवा न ॥ तीर्णोगोष्पदवद्भवार्णवमहोनाम्नःप्रभावहपु नःकिंचिच्चंयदरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदं ७६॥

जपकोनतपखपकियोनतमाइयोग
यागनविरागत्यागतीरथनतनको। भाय
कोभरोसोनखरोसोबैरबैरीहूसो बलअप
नोनहितूजननीनजनको॥ लोककोनडर
परलोक कोनशोचदेवसेवानसहाइगर्व
धामकोनधनको । रामहीकेनामतेजो
होइसोईनीकोलागैऐसोईसुभावकछुतु
लसीकेमनको ७७॥

यामें सब भरोसो त्यागि शुद्ध शरणागती कहत कि मंत्रादि जपको न किये न तप किये काहेते खप्र नाम कादर हौं ताते तम इ नाम पूर्ण तीव्र योगहू न किये याग यज्ञन विराग कहे जगते उदासीनता न विषय को त्याग किये तीर्थन में तनको नहीं कियो अपनो करि भाई को भरोसो नहीं न बैरिहू सों खरोसो कहे अच्छा बैरिहू नहीं किये आपनेहू बल नहीं औ हितू माता पितादिहू को बल नहीं लोक को न डर अर्थात् मर्यादा भी न बनाये परलोकहू को शोच नहीं भाव सुकर्म भी नहीं किये सहायक देवता की सेवा भी नहीं किये गर्व धामको न धनको भाव न घरहै न धनहै इत्यादि एकहू नहीं तौ फिरि क्या है ताको कहत कि श्रीरामही के नाम ते जो कुछु होइ भलो व

बुरो सोई नीको लागत है अस कुछु सुभाव तुलसी के मन को है भाव केवल श्रीराम नाम को भरोसो है दूसरो नहीं ७७ ॥

ईशानगणेशनदिनेशनधनेशनसुरेशसु रगौरिगिरापतिनहिंजपने । तुम्हरेईनामकोभरोसेभवतरिबे कोबैठे उठेजागत वागतसोयेसपने ॥ तुलसीहैबावरोसोरावरोईरावरीसोंरावरेहूं जानिजियकीजियेजुअपने । जानकीजीवनमेरेरावरेबदन फेरेठाउंनसमाउं कहूंसकलनिरपने ७८॥

ईश महादेवहू की पूजादि नहीं किये जे देवतन में श्रेष्ठ हैं गणेशहू को न पूजे अग्रपूज्य हैं सूर्यहू को नहीं पूजे जे लोक प्रकाशक हैं धनद कुबेर सुरेश इन्द्र सुर और सब देवता गौरि पार्बती गिरापति ब्रह्मादि काहूको मंत्रादि को जपनो नहीं है मेरे हैका कि बैठे उठे जागत वागत कहे चलत फिरत सोवत सपने में भव तरिबे को भरोसा आपु के नामहीं को है रावरी सौं आपुकी सौगन्द खाइ कै कहत हौं कि तुलसी जो बावरो है सो रावरोई गुलामहै ताते आपहू यह जियसों जानिकै आपनो गुलाम कीजियेजू मेरे कर्मन को न देखिये हे श्रीजानकी जीवन आपके बदन फेरेते मेरेसमावे को

ठाउँ कहीं नहीं है काहेते यावत् देवता गनाये ते यंत्रराज पर पूजा में अंग देवता आपु के साथ सब पूजा पावते हैं यह राम तापिनी आदिते प्रसिद्ध है तिनको छांड़ि आपुही को भरोसा राख्यो याते सकलदेव निरपने कहे बिराने ह्वै गये ते मेरे ऊपर क्रोध करैंगे लोकहू में जे अमला को नहीं मानते ते राजा के बूतते जो राजा मुंहु फेरै तो अमला बिगारि न डारैं ७८ ॥

जाहिरजहानमेंजमानो एकभांतिभ योबेंचियेबिबुधधेनु रासभीबेसाहिये । ऐसेउकरालकलिकालमेंकृपालतेरेनाम केप्रतापनत्रितापतनदाहिये । तुलसीति हारोमनबचनकर्मजनयेहू नातानेहनिज ओरतेंनिबाहिये । रंककेनिवाजरघुराज राजाराजनके उमरिदराज महाराजतेरी चाहिये ७९ ॥

धर्म अधर्म द्वै मार्ग सदैव रहे अब या समय में धर्मलोप भये अब एकही भांति अधर्ममार्ग में जमाना जहान में जाहिर भयो कि बिबुधधेनु कामधेनुको तो बेंचिये औ रासभी गदही बेसाहिये भावतन सुख रूप द्रव्य सुकृति को बेंचिये पापरूप द्रव्यदै दुःकृत्य बेसाहिये जो दुःखद है ऐसेउकलि-

काल करालमें जामें और धर्मकर्म है नहीं ताहू में हे कृपालु आपके नामको प्रतापने दैहिक दैविक भौतिकादि तीनिउं तापनके तनको दाहियतु है याते जन तुलसी मन वचन कर्महू ते तिहारो दास है कदाचि येहू नहीं तौ निज ओरते नेह निबाहिय तहौ आपनी ओरते दया करि आपनो गुलाम करि मानियत हौ ऐसे रंक के निवाज राजन के राजा महाराज रघुराज दराज कहे बड़ी उमरि तेरीचाहिये इहांऽवि भान्ते आशीर्वाद देताके रघुकुल राज गद्दी पर सदैव आसीन रहौ ७६ ॥

स्वारथसयानपप्रपंचपरमारथ कहायोरामरावरेहीजानतजहानहै। नामके प्रतापबापआजुलौं निबाहीनीकोआगे कोगोसाईंस्वामीसबलसुजानहै। कलि कोकुचालिदेखिदिनदिनदूनोदेव पाहरूईचोरहेरिहियहहरानुहै। तुलसीकी बलिबारबारहीसंभारकोवीयद्यपि कृपानिधानसदासावधानहै ८० ॥

स्वारथ भये में आपनो सयानप माने कि यह काम हम अपनी चतुराई ते कीन भाव कपट सयानो हौं औ परमार्थ में प्रपंच कहे छलो को देखाउ और मन मे और ऐसे कुटिल मोको बालक मानि

बाप सम आपुनाम के प्रताप ते आजतक नीकोनिबा हौं औ आगेको निबाहिबेको हे गोसाईं आपुसबल सुजान स्वामी हैं परंतु हे देव कलियुग की कुचालि प्रतिदिन दूनी बढ़त कौनि कुचाल है कहतपहरोई चोर अर्थात् कलियुग राज पहरुवा सोई कामादि चोरनको लै सुकृत धन चोरावत देखि हियाहहरान कहे डेरान है य ते कहत हौं हेकृपानिधान यद्यपि आपु सदा सावधान हैं तदपि मैं बलिजाउं तुलसी की ओर बारबार सँभार को बी काहेते पहरुहो चोर है ताते मेरे मन में बेकरता अवगुण न देखब ८० ॥

दिनदिनदूनोदेखि दारिददुकालदुख दुरितदुराजसुखसुकृतसकोचुहै । मांगेपैतपावतप्रचारिपातकी प्रचंडकालकीकरालताभलेकोहोतपोचुहै । आपनेतोएकअवलंबअंबडिंभयोसमर्थसीतानाथ सबसंकटबिमोचुहै । तुलसीकीसाहसीसराहियेकृपालरामनामकेभरोसे परिनामकोनिसोचुहै ८१ ॥

अब समयकी व्यवस्था कहत कि दारिद्र दुकाल महँगी हानि रोगादि दुःख दुरित कहे पापदुराज कहे राजा दुष्ट इत्यादि प्रतिदिन दूनी बढ़त है औ सुख सुकृत को सकोचु कहे घटत जात है औ

कालकी करालता ऐसी प्रचंड भई कि जामें पातकी जन प्रचारि कहि ललकारि कै पैत कहि दांव मांगे पावत हैं औ जे भले सुकृति हैं ते पोचुकहि बुराई पावत हैं ऐसा हाल देखि अपना कोतो एक अवलंब है यथा डिंभ कहे बालक को अंब कहे माता इव समर्थ सीतानाथकी भरोसा है जो सबसंकटको बिमोचुकहि छोड़ावनहार है इत्यादि तुलसीकी साहसी कहेवीरता धीरताको सराहिये काहेतेहेकृपाल श्री रघुनाथ जी श्रीराम नाम के भरोसे परिणाम कहे अन्तकाल समय निशोचु कहे शोचु रहितहौं भाव श्रीरामनामके प्रतापते भवसागको न जाउंगो ८१ ॥

मोहमदमात्योरात्योकुमतिकुनारिसोंबिसारिवेदलोकलाजआकरोअचेतुहै। भवैसोकरतमुहआवैसोकहतकछुकाहूकीसहतनाहिंसरकसहेतुहै।तुलसीअधिकअधमाइहूअजामिलतेताहूमेंसहायकलि कपटनिकेतुहै। जैबेकोअनेकटेकएकटेकहवैबेकी सोपेटप्रियपूतहितरामनामलेतुहै ८२ ॥

अजामील को आपनो रूपक कहत अजामील मदमें मातोर है मैं मोहरूप मद में मातोहौं वह कुनारिन सों रात्योरहै मैं कुमति कुनारीसों रतहौं

उहु वेदमार्ग बिसारे रहै मैं लोकलाज बिसारे हौं उहु आँकरी कहे टेढ़ा रहै मैं अचेत हौं वाको जो भावै सो करत रहै मेरे जो मुखमें आवत सो कहत हौं उहु काहूकी बातनहीं सहत रहै मेरे सरकस हेतु है भाव हरि भरोसा जबर या कारयाते काहू को नहीं मानत हौं याते तुलसी अधमाइहू कर के अजामीलते अधिक है ताहू में कपटको निकेत कहे स्थान कलिकाल सहायक अर्थात् धर्म में विघ्न करता ताते भवसागर जावेकी अनेक टेककहे निश्चय है अरु हरिशरण ह्वैवेकी एकही टेक है यथा अजामील प्रियपूत को नामले तरेउ तैसे मैं प्रिय पूत रूप पेट भरिबे हेतु श्रीराम नाम लेतहौं ताके प्रतापते मेरी भी सुधरी ८२ ॥

जागियेनसोइयेबिगोइयेजनमजायदु नदुखरोइयेकलेशकोहकामको राजा रंकरागीऔबिरागीभूरिभागीयेअभागी जीवजरतप्रभावकलिबामको । तुलसी कबंधकेसो धाइबोबिचारुअन्धधन्धदे खियतजगसोचपरिणामको । सोइबो जोरामकेसनेहकीसमाधि सुखजागिबो जोजीहजपैनीकेरामनामको ८३ ॥

न जागिये भाव चैतन्य ह्वै हरिभजन करिये

सो नहीं औ सोइये न भाव संसारही में सुखी रहिये सोऊ नहीं याते जाय कहे बृथा जन्म बिगोइयत कहे बिताइयतु है काहेते काम क्रोधके क्लेशकरि प्रतिदिन दूनो दुःख बढ़त ताते रोइयत है तामें राजा औ रंककहे दरिद्री रागी कहे लोकनेही वि-रागीकहे जगत्यागी भूरि कहे बड़भागी सुखी अ-भागी आदि यावत् जीवहैं ते सब कलियुग के बाम कहे तीक्ष्ण प्रभाव में जरत हैं इत्यादि सब कबन्ध कहे बिनशीश कैसो धरको धाइबे सम वृथा विचार हे तुलसी अन्ध जगको धन्धा भूठो ताको देखि-यतही भाव भूठे धन्धामें मन लगायो तामें परि-णाम कहे अन्तकाल में शोचु है भाव पछितावे को परी ताते जो सोइबो होइ तौ श्रीरघुनाथ जी के सनेह की समाधि सुख में सोउ भाव प्रेमासक्त रहु जो जागिबो होइ तौ जीह करिकै नीके प्रेमसहित श्रीराम नामको जपौ ८३ ॥

बरनधरमगयो आश्रमनिवासतज्यो त्रासनचकतसोपरावनोपरोसोहै । करम उपासनाकुबासना बिनाशोज्ञानबचन बिरागवेषजगतहरोसोहै । गोरखजगायो योगभगतिभगायेलोग निगमनियोगते सोकलिहिछरोसोहै । कायमनबचन

सुभायतुलसीहैं जाहिराझनामकोभरोसो ताहीकोभरोसोहै ८४॥

वर्णके धर्म यथा ब्राह्मणके तप शौचदान क्षत्रीके सत्य शौच तप दान वैश्यहू के दानसोई शूद्रके सत्य दान ब्राह्मण धर्मके नौकर्म यथा सम दम शौच शांति दया ज्ञान बिज्ञान शापाशीर्वादको समर्थ क्षत्री धर्मके कर्मछः स्वर्ग दानतपमें शूर१तेजसो प्रतापो२ धीर्य्यमान् सावधान ३ नीति विद्या दक्ष ४ युद्धमें अचल ५ वेद आज्ञापाल ६ क्षत्री की बर्मासंज्ञा सो चारिभांति एक गृहित जो कर्म कहि आये हैं औ दूसरा धर्म शील तीसरा तापस यथा मनु सतरूपा चौथा भक्त यथा॥ रुक्मांगद अंबरीष औ वैश्यकर्म कृषीबाणिज्य गोरक्षा इनकी गुप्त संज्ञा सो चारि भांति प्रथम गृहस्थ दूसरे सुकर्मी जो तीर्थ ब्रत दानकरै तीसरा तापस यथा श्रवण चौथा साधु शूद्र तीनि वर्ण सेवी गृहस्थ दास दूसरा भगवद्दास शवरी आदि इत्यादि वर्णके धर्म सबजात रहे औ आश्रमचारि ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ बानप्रस्थते अपनो निवास कहे कर्मतजे काहे ते कलि प्रेरित अधर्मकोभयकरि धर्मकर्म चकृत ह्वै परावनो सो परो अर्थात् सब भागि गये औ सुत बित नारि तन सुखादि कुबासना नेककर्म ज्ञान उपसनादिको बिनाश कियो औवैराग्य बच मात्र रहि गयो औ दिगंबरादि जे बेषहे ते जगत हरासो कहे जग

में धन हरिबे हेतु है गोरख योगी ह्वै योग नहीं जगाये मानों भक्ति भगाये लोगन को श्रीराम भक्तिते विमुख करे तहां गोरखको दोषनहीं काहे ते योग मार्ग वेद आज्ञा है याते निगमनियोग कहे वेद आज्ञाके बहाने गोरख रूप ह्वै कलिकाल जगको छल्योहै भाव एक गोरख में सबल योग दर्शाय अनेकन को भक्ष्याभक्ष्य मद मांसादि खवाय लोगनको भ्रष्ट करि दियो तहां अनेकन पंथ भक्ति बिरोधी हैं एक गोरखै को क्यों कहे तहां और पंथ वेद बाह्य धर्म है तिनको प्रमाण नहीं दूसरे भ्रष्ट क्रिया नहीं योग वेद मार्ग तामें गोरख भ्रष्ट क्रिया में चलाये याते गोसाईं जी कहत कि मनसा वाचा कर्मणा जाको श्री राम नामको भरोसा है ताहीको भवसागर तारिबेको भरोसा है और को नहीं है८४॥

वेदपुराणबिहाइसुपंथकुमारगकोटि कुचालचली है। कालकरालनृपालकृपालनराजसमाजबड़ोईछली है। बर्णविभागनआश्रमधर्म दुनीदुखदोषदरिद्रदली है। स्वारथकोपरमारथ कोकलिरामको नामप्रतापबली है ८५ ॥

इति प्रार्थना अब कलिकाल की भभरि में नाम शरणागती प्रबल कहैं वेद पुराणकी आज्ञा ते कर्म

ज्ञान उपासना नौधा प्रेमापरादि सुधर्ममय पंथवि-
हाय कहे छांड़िकै अनेकन कुमार्ग कहे कुपंथन में
कोटिन भांति के कुचाल भक्ति विरोधी वार्ता धर्म
नाशक वार्त्ता यथा पत्थर पानी तीर्थ मैंकाहै इत्या-
दि अनेकन कुचाले चली हैं अरु काल कहे समय क
राल है याते सुधर्म में बिघ्न लागत नृपाल जो राजा
ते कृपा रहित निर्दयी हैं नायब दीवान मंत्री का-
रिंदे आदिजो राज समाज ते बड़ेई छली हैं ब्राह्मण
क्षत्री वैश्य शूद्रादि वर्ण बिभाग जात रहे वर्ण संकर
भये गृहस्थ ब्रह्मचर्यबानप्रस्थ संन्यासादिआपनो नि-
वास स्वधर्म की मर्यादा छाड़ि दिये ताही दोषनते
दरिद्र दुःखने दुनियाको दलिडारो याते औरउपाय
नहीं है कलियुग विषे स्वार्थ कहे लोक सुखहेतु को
परमार्थ कहे परलोक सुखहेतु को श्री रघुनाथ जी
को नामही एकप्रताप करिकै बलीहै यथा विष्णुपु-
राणे ॥ ध्यायन्कृतेयजन्यज्ञैस्त्रेतायांद्वापरेर्चयन् ॥
यदाप्नोतितदाप्नोतिकलौ श्रीनामकीर्तनात् ॥ पुनःबा
ल्मीकीयटीकायां ॥ रामेतिवर्णद्वयमादरेणसदास्मरन्
मुक्तिमुपैतिजंतुः ॥ कलौयुगेकल्मषमानसानामन्यत्रध
र्मेखलुनाधिकारः ८५ ॥

नमिटैभवसंकटदुर्घटहै तपतीरथजन्म
अनेकअटो । कलिमेंनविरागनज्ञानकहूं
सबलागतफोकटझूठजटो । नटज्योंजनि

पेटकुपेटककोटिकचेटककौतुकठाटठटो। तुलसीजोसदासुखचाहिय तौरसनानिशिवासररामरटो ८६ ॥

अनेकन जन्म तक तपस्या अरु तीर्थन में अटो तीर्थाटन करौ पर भवसागर को संकट मिटौ काहे ते अति दुर्घट है मोह प्रेरित विषय की प्रबलताते कलियुग में न वैराग्य है न कहूं ज्ञान है यावत् तपस्या तीर्थाटन ज्ञान बैराग्यादि हैं ते सब फोकट कहे बूसीसम सार रहित झूठ में जटित देखाव मात्र पाषंड है ताते ज्यों नट नटसम पेट के हेतु कुपेटक कहे कुजीविका कुकर्मकरि जीविका अर्थात् चेटक टटकादि कोटिन करि कौतुक कहे इंद्रजाली तमाशा जग ठगिबे हेतु ठाट जनि ठाटौ हे तुलसी जो सदा सुख चाहौ तौ प्रेम सहित रसना करिकै निशिवासर दिनराति श्रीरामनाम रटौ भाव या समय में श्रीरामनामही में जीवोद्धार समर्थ है और धर्म नहीं है ८६ ॥

दमदुर्गमदानदयामखकर्मसुधर्मअधीनसबैधनको। तपतीरथसाधन योगविरागसोहोइनहींदृढतातनको। कलिकालकरालमेंरामकृपालयहैअवलम्बबड़ोमन

को।तुलसीसबसंयमहीनसबै यकनामअ
धारसदाजनको ८७॥

दम कहे इन्द्रिन की विषय रोकना सो या स-
मय में दुर्गम है औ दान कहे गोभू आदि सुपात्र
कोदेना दया जीव रक्षा मख अश्वमेधादिकर्म वेद
आज्ञा करना सुधर्म सत्य शौच तप दानादि चा
वर्णादि को शुभ धर्म इत्यादि सब धनके आधीनहै
अर्थात् विना धन होत नहीं धनिन के श्रद्धा नहीं
औ तपस्या विधि सहित तीर्थ यात्रा विवेकादि
ज्ञान के साधन योग वैराग्यादि कीन्हे ते होतही
नहीं काहेते इत्यादि करिबे में दृढ़ता चाही सो
दृढ़ता तनुमें है नहीं काहेते कलिकाल कराल है
तामें मनको अवलंब बड़ो यहीहै कि श्रीरघुनाथजी
कृपालुहैं आपनी ओरते कृपाकरि मनको अपना में
लगाइ लेते हैं ताते गोसाईंजी कहत कि सब संयम
कहे साधन ते हीन सबै है ताते जनन को सदा
आधार एक श्रीराम नामही है ८७॥

पाइसुदेहविमोहनदीतरणीनलहीक
रणीनकछूकी। रामकथावरणीनवनाइ
सुनीनकथाप्रहलादनध्रूकी। अबजोरज
राजरमात्तवयोमनमानि गलानिकुबा

खिनसूको । नीकेकैठीक दईतुलसीअव
लम्बबड़ीउरआखरदूको ८८ ॥

विशेष मोहरूपी नदी तरिबे योग्य सुन्दर उत्तम नर देहरूप तरणी कहे नाव पाइकै पार जाबे को करणी कछू नहीं कीन्ही सो कहत कि श्रीरघुनाथ जीके पावन चरित्रनकी कथा बनाइ वर्णन ना कीन्ही जामें बुद्धि निर्मल होति अरु प्रह्लाद ध्रुवादि हरि भक्तन के शरणागत दृढ़ता की कथा सुनीन जामें प्रभुके भक्तवत्सलतादि गुणनते मनमें विश्वास आवत इति तरुणाई वृथा गई अब जरावस्था को जोर अग्नि में गात जरि गयो जर्ज्जर ह्वै गयो ताहू पर मन में ग्लानि मानिकै कुबानि न मूको कुमार्गी स्वभाव न तजो इत्यादि सकहू न भयो तब तुलसी नीके भवसागर पारजावे को मनमें एक यहै ठीक दई कि श्रीराम नामके जे दोऊ आखर हैं ते मेरे उरमें हैं यह बड़ी अवलम्बहै ये दोऊ वर्ण को ऊर्द्धगामीस्वभावहै भाव स्वर नष्टभये रेफ व्यंजन वर्णनके ऊपरजातेहैं तौ देहनष्टभये जीवकोऊर्द्धगति जावो स्वाभाविक होइगो यथा मनुस्मृतौ ॥ यन्नामसंसर्गवशाद्विवर्णौ नष्टस्वरौमूर्द्धनिगतौस्वराणां ॥ तद्रामपादौहृदिसन्निधायदेहीकथंनाद्धं गतिं प्रयाति ८८ ॥

रामविहायमराजपते विगरीसुधरी

कविकोकिलहूकी । नामहितेगजकी गणिकाहुअजामिल कीचलिगैचलचूकी । रामप्रतापबड़े कुसमाजबजाइरही पतिपाडुबधूकी । ताकोभलोअजहूंतुलसीजेहिप्रीतिप्रतीतिहैआखरदूकी ८६ ॥

सब साधन रहित श्री राम नामके अवलंबते भव सागर पार जावेको कहे ताको प्रमाण देखावत कि इन दोऊ अच्छरन में ऐसोई प्रभाव है यथा श्री राम शब्द बिहाय मरा शब्द उलटा नाम जपेते बिगरी बात सुधरिगई कवि कोकिल बाल्मीकि की यथा ॥ कूयंते राम रामेतिमधुरंमधुराक्षरं ॥ आरुह्यकविता शाखांवन्देबाल्मीकिकोकिलं ॥ औ एकहीबार राम नाम कहे गजकी सुधरीकीरमुख नाम सुनि गणिका की सुधरी पुत्रहेतु नाम लीन्हे अजामिलकी सुधरी इत्यादिकेचलकहे चंचल स्वभाव ते जो चूकी अर्थात् बिगरीरहै सोचलीगई दुर्योधनकी सभामें अनेकसमर्थबैठेरहे जब दुर्योधन कुमार्गपर आरूढ़ भयो तब काहू ने न बरज्यो सब शामिल रहे ऐसे कुसमाज में श्री राम प्रतापते डंका बजाय भावलोक में प्रसिद्ध है पांडुबधू द्रौपदी की पति रही बसन बाढ़िगयो ताही भांति गोसाईं जी कहत कि श्री रामनाम के दोऊजे आखरहैं तिनमें जाकी प्रीति प्रतीति है ताजनको अजहूं भलो है ८६ ॥

नामअजामिलसेखलतारणतारणवा रणबारबधूको । नामहरेप्रहलादविषाद पिताभयसांसतिसागरसूको । नामसों प्रीतिप्रतीतिविहीन गिल्योकलिकाल करालनचूको । राखिहैरामसोजासुहिये तुलसीहुलसैबलआखरदूको ९० ॥

पुनः श्रीराम नामकैसो प्रतापवान् है जो अजामिल ऐसे खलनको तारण हारहै वारण कहे गज को बारबधू गणिका ताको तारणहारहै अरु श्रीराम नाम होने प्रह्लाद को बिषादहरे कौन भांति कि पिता जो हिरण्यकश्यप ताको भयकहे डर शासति संकटको सागर समुद्र सो श्री राम नामके प्रताप ते सूखि गयो भाव अग्न्यादि कोऊ विघ्न न व्यापे यथा नृसिंह पुराणे प्रह्लाद वाक्यं ॥ रामनाम जपतांकुतोभयं सर्वताप शमनैकभेषजं ॥ पश्यतातममगात्र संनिधौपावकोऽपिसलिलायतेऽधुना १ ऐसे श्री राम नामकी प्रीति प्रतीतिते जे जन बिहीन हैं तिनको गिलो कहे लीलि जाउ है कलिकाल कराल अब ना चूको कदाचि श्रीराम नाम लैलेइँगेतो फिरि न तुम्हारे लीले लीलि जाइँगे भाव यह कि श्री राम नाम बिमुख कलियुग में निस्तार दुर्घट है यथा ॥ भविष्योत्तरे नारायण लक्ष्मी सों कहेउ है ॥ जीवः

कलियुगेघोरा:मत्पादविमुखा सदा ॥ भविष्यंतिप्रिये सत्यं रामनामविनिंदका: ॥ गमिष्यंतिदुराचारा:नि श्चये नात्र संशय: ॥ कथंसुखंभवेद्देविरामनाम मवाहिमुखे ॥ औजे श्री रामनाम जपते हैं तिनको श्री रघुनाथजी बचाइ राखैंगे कौन को ताको गोसाईं जी कहतकिश्री रामनामके दोऊ आखरनको बल जासु के हियेमें हुलसत है तिनको कलियुग नहीं दबाइ सकत है ९० ॥

खेतीनकिसानकोभिखारिकोनभीख बलिबनिककोबनिजनचाकरको चाकरी। जीविकाविहीनलोगसिद्यमानसोचबसकहैंएकएकनसोंकहाँ जाइका करी। बेदहूपुराणकहीलोकहूबिलोकियतसाँकरेसमयपैरामरावरेकृपाकरी। दारिदसानदबाईदुनी दीनबंधुदुरितद हनदेखितुलसीहहाकरी ९१ ॥

बलि कहे हेश्रीरघुनाथजी यासमयमें किसाननके खेती नहींपूरी उपजत अकालप्रबल तातेभिखारीको भीखनहीं मिलत बणिक कहेबनियनकोकाहूव्यापार में नहीं पूरो नफा होत चाकर को चाकरी नहीं लागत इत्यादि चारि भाँति जीविका विहीनलोग सिद्यमान कहे दु:खित ह्वै सोच बस एक एकन सों

कहत कि कहां कौने देश जाइये का करी कौन रोजगार करी जामें जीविका होइ इत्यादि समय में कौन सहायक है ताको कहत कि वदहू पुराण ने यही बात कही औ लोकहू में विलोकियत कहे देखियत है कि साँकरे समय के आये पर है श्री रघुनाथजी जहां जाको सहाय करी तहां आपु की कृपा ने सहायकरी याते कहत कि दारिद रूप दशा-नन कहे रावण ने दुनिया को दबाइ लीन्हों ताके दुरित कहे पापमें अपना को दहत कहे जरत देखि ताको बन्धु दीन विभीषण यथा रघुनाथ जी सों शरण शरण पुकार करी तथा विभीषण रूप तुलसी प्रभु सों हाहा विनती करी कि मोको उबारी ६१ ॥

कुलकरतूतिभूति कीरतिसुरूपगुण यौवनजरतजुरपरैनकहूकही। राजकाज कुपथकुसाजभोगरोग हीकेवेदबुधविद्या पाइविवशबलकही । गतितुलसीशकी लखतनहींजोतुरतपवितकरतछारपवैसो पलकही । कासोंकीजैरोषदोषदीजैकाहि पाहिरामकियोकलिकालकुलिखल लखलकही ९२ ॥

कलियुग जाभांति जगको विगारो है सो कछु कही परै है ताको कहत यौवन रूप ज्वर प्रबल भयो

तहां बात पित्त कफादि कारण ते ज्वर होत यहां कामबातकफलोभअपारा । पित्तक्रोधनितछातीजारा तहां यौवन अवस्था में काम प्रबल सो बातहै क्रोध प्रबल सो पित्त है ताते बात पित्तमय यौवन ज्वरते सब जग जरत है ताके लक्षण यथा ज्वर में मूर्च्छा होत यहां काम बश नीची जाति में रतभये कुल ते च्युत भये सो मूर्च्छा है कलंकभये करतूति कहे मर्यादा नाशभई सो घुमनी है पापकर्म ते भूति कहे ऐश्वर्य नाशहोत सो तन दाह है अयशते कीर्त्ति नाशहोत सो नींद नाश है विषयाशक्तीते स्वरूपता नाश सो शीश पीड़ा है मन मलिन भये गुण नाश होत यथा धीर्य शील जात सो कंठ मुख सूखनिहै लोलुपता ते सन्तोष नाश होत सो अंग पीड़ा है विद्याभिमान सो बक्र बाद है इति ज्वर के लक्षण हैं तहां दधि दुग्ध मिठाई आदि कुपथ पाइ ज्वर बढ़त है यहां राजकाज कुपथ यथा ऐश्वर्य दधि है हुकूमति दूधहैतनकोपोषकताआदि मिठाई इत्यादि राजसी साज रूप कुपथ पाइ यौवन ज्वर प्रबलभयो अरु सुखभोगसोई कुसाजहै जाको पाइ ज्वर बिगरि जात है यथा बनिता सोई दिनकी नींद है सुगन्ध लगावना सो दुर्गन्ध स्थान है राग तान सो पवन है भूषण बसन सो मैले बसन हैं सुभोजन सो घाम है गजादि बाहन सो परिश्रम है इत्यादि कुसाज पाइ यौवन ज्वर बिगरि गयो अर्थात् त्रिदोष सो

भयो ताको बेग कहत कि वेद औ बुध कहे चतुर विद्या व्याकरणादि पाइ ताके अभिमान बश बलक कहत उफान को यहां विद्या अभिमान सो बलकहो बकबाद करत सो प्रलाप सन्निपात है ताके बश ते यथार्थ देखि समुझि नहीं परत तहां तुलसीश जो रघुनाथ जी वैद्य हैं नाम औषधि है तिनकी गति नहीं लखत कि जो तुरतही पबि कहे बज्र ते छार करत औ छारते पबै कहे पहाड़ करत क्षणमें बज्र सम पाप ताको को छारकै देते यथा निषाद औ छार सम पतित जीव तिन को पहाड़ सम करत यथा बाल्मीकि इत्यादि प्रभुकी प्रभुता कोऊ नहीं देखत काहेते कलिकाल कुलि खल कहो सब संसार हो में खलल कहे सुमार्ग बिगारि दियो तो काको दोष दीजे कि तुम हरि बिमुखता करते हो औ कासों रोष कीजे कि तुम हरि बिमुख हो मुखदेखबे लायक नहीं ताते हे श्री रघुनाथ जी मैं पाहि कहे शरण हों मोको उबारो ६२ ॥

बबुरबहेरेकोबनायबागलाइयतरूंध बेबोसोऊसुरतरुकाटियतहै । गारीदेत नीचहरिचन्दहूदधीचि हूकोआपनेचना चबाइहाथचाटियतहै। आपमहापात कीहंसतहरिहरहूकोआपुहैअभागीभूरि

भारीडारियतहै । कीतकीकलुषमन मलिनकियेमहत मसाककोपांसुरीपयो धिपारियतहै ६३ ॥

तंत्रन में जहां पिशाचादि को सिद्ध करिबेहेतु मंत्र जपादि सो बबुर बहेराही तर लिखा है याते मलीन बुद्धी लोक पुजाइबेको पिशाचादि सिद्ध करबेहेतु बबुर बहेरादिको बाग सुथल बनाइके लगावते हैं ताके रुंधिबेको सुरतरु देवपूजक वृत्त यथा पीपर चन्दन आंब बिल्व आँवरादि को काटत हैं वा नीच प्रसंगी अधर्मिन सों नेहकर तिनको पालिबेहेतु धर्मात्मन को दण्डदेत औ सूमशिरताज नीच आपु तौ ऐसो है जो चना चबाइ हाथ चाटत कि कुछुलागि न रहाहोइ वा चनौ पेटभरि नहीं प्राप्त ऐसे नीच ते हरिश्चन्द्र दधीचि आदि धर्मात्मनको गारीदेते हैं कि वे अहमक रहे जोसर्वस्व औ प्राण देदिये तहां जो आपुअधर्मी तौ धर्मात्मनको क्योंमानै औ आपु तौ महापातकी हैं स्वाभाविक पापही में मनरहत अस औरै सुकृतिनको कौनकहै लोक पावन करता हरि हर ऐसे पवित्रन को पाप लगाय हंसते हैं यथा बिन्दा मोहिनी के प्रसंगते आपु तौ ऐसे अभागी जो अन्न बस्त्र नहीं पावत औ बड़ेही भाग्यवानन को डाटत कि हम काहूको नहीं समुझते हैं ऐसे नीच दरिद्री कुमार्गी

जीव कलि की कुचाल में कलुष कहे पाप करिकै मन मलीनते किंचित् धर्म्म देखाउ मात्रकरि महत् कहे बड़ा गुमान किये हैं कि हम भवसागर पार जायँगे तापै गोसाईंजी तर्क उपखान कहत कि मशक की पांसुरिन सों पयोधि कहे समुद्र पाटा चाहत हैं भाव महापापी कुटिल जीव किंचित् धर्म देखावमात्रकरि भवसागरपार कैसेजायँगे ९३॥

सुनियेकराल कलिकालभूमिपाल तुमजाहिघालौचाहिये कहौंकोराखै ताहिको। हौंतोदीनदूबरोबिगारेउढा रावरोनमैंहूंतैंहूंताहि कोसकलजगजा हिको। कामकोहलाइकैदेखाइयतआं खिमोहियेतेमान सकमकीयेकोआपु आहिको। साहिबसुजानजिनखानहू कोपसकियोरामबोलानामहौंगुलाम रामसाहिको ९४॥

हेकलिकाल कराल सुनिये जाको तुम घालौ कहे मारो चाहो ताहिको कहो कौनयों राखिसकै काहेते तुम भूमिपाल हौ तुमको नीति करनी चाहिये भाव मोटे सबल को डाटौ दीन दूबरे को पालौ तहां हौं कहे मैं तो दीन दूबरो हौं दूसरे आपुकी कछु ढारी कहे बनायो बिगारयो नहीं

इति बिनतीकरे ताहूपर कलियुग न मान्यो तब कहत कि जाहि मालिक को सकल जग है ताही के मैं हूं तोहूंहै भाव रघुनाथजी को तरफ ते तुम राजाहौ मैं उनको गुलाम हौं तहां काम क्रोधादि कुटिल दूत लगाइकै मोको आंखि देखाइयत हौ तो हम पूछते हैं कि इतनो अभिमान औ अकस कहे शत्रुता करनेवाले आपु हमरे कौनहैं अच्छा जो अकस करते हौ तो यहबात जाने रहना यह रूबकारी एक दिन परैगी काहेते श्रीरघुनाथजी सज्ञान साहेब हैं जे अवधबासी श्वानहूं को पक्ष करि ब्राह्मण को दण्डदीन औ मैं तोश्रीराम सा हेब को गुलामहौं अरु रामबोला मेरोनाम है यह प्रौढ़ि है ६४ ॥

साँचीकहौंकलिकालकरालमैंढारो बिगारोतिहारोकहाहै। कामकोलोभकोक्रोधकोमोहको मोहिसोंआनिप्रपंचरहाहै। हौजगनायकलायकआजुपैमेरियोदेवकुटेवमहाहै। जानकीनाथबिना तुलसीजगदूसरेसोंकरिहोंनहहाहै ६५॥

हे कलिकाल कराल यह सांची कहतहौं कि मैं तुम्हारो बनायो बिगारेउ कहा है भाव कबहूं काम बनावतो अब ना बनावतो तो क्रोध करिबो उचित

रहै वा कुछ बिगारतो तो क्रोध करिबो उचित है निर्हेतु क्रोध क्यों करते हो कौन क्रोध है सो कहत कि कामको प्रपंच लोलुपता लोभ को प्रपंच पाखण्ड क्रोध को प्रपंच अविचार मोह को प्रपंच अज्ञानता इत्यादि प्रपंच करिबे को तुमको मेरेही ऊपर रहा है भाव और कोऊ नहीं है जगमें एक महीं हौं क्यों न हुकूमति करौ आज तुम जगनायक कहे स्वामी हौ दण्ड रक्षादि सब करिबे लायक हौ पै हे देव मेरी भी यह महाकुटेव है भाव पुष्ट हठ पकरे हों कि एक जानकीनाथ बिना जग में दूसरे सों हहा बिनती तुलसी न करिहै भाव औरघुनाथही जी सों गर्ज सुनैहौं तुमते हाहा विनती न करिहौं ६५ ॥

भागीरथीजलपानकरौंअरुनामद्वैरामकेलेतनितैहौं । मोसोंनलेनोनदेनोकछूकलिभूलिनरावरीओररचैतहौं॥जानिकैजोरकरौंपरिणामतुम्हैंपछितैहौपैमैंनभतैहौं । ब्राह्मणज्योंउगिल्योउरगारिहौंत्योंहींतिहारेहियेनहितैहौं ९६ ॥

भागीरथी महापाप नाशिनी गंगा जी को जल पान करत हौं भाव काहूके कूप को नहीं औ श्री रघुनाथजी के नाम द्वै बार संध्या प्रभात वा सीता राम ऐसे द्वै नाम वा एकवार नाम लीन्हे भवसा-

गर पार होत मैं तो श्रीराम के द्वै नाम नितही लेत हौं हे कलिकाल हमसों तुमको न कछु लेनो है न कछु देनो है याते रावरे कहे आपकी ओर मैं भूलि हू कै न चितैहौं भाव आपते मैं हेतु रहितहौं ऐसा जानिहू कै जोर करते हो सो कछु भलो नहीं क्यों कि परिणाम कहे अंत में तुमहीं पछितैहौ पै मैं न भितैहौं मैं न डरिहौं कौन भाँति यथा उरगारि गरुड़ ब्राह्मण को उगिल्यो त्योंहीं हौं कहे मैं तिहारे हृदय में न छितैहौं भाव महूं तुम्हारे उरमें न पचौंगो गरुड़ जा समय अमृत हरबे हेत चले तब पिता ते कहे कि हमारे चुधा लगी तब कश्यप ने कह्यो कि उत्तर तटबासी पातकी निषादन को खाउ यह सुनि गरुड़ सबको भक्षण करि गयो तिनमें एक नष्ट ब्राह्मण मिला रहे वह उरमें दाहक भयो तासों गरुड़ कह्यो कि तुम निसरि आवो वाने कह्यो कि हमारे संगिन को निकासौ तो हम निकरैंगे यह सुनि गरुड़ सबको उगिलिकै सुखी भये भाव यह कि नष्ट भी ब्राह्मण किंचित ब्रह्मतेजते गरुड़ पचाइ न सके तैसे मैंभी जो पतित हौं तो श्रीराम नामके प्रताप ते कलियुग तुम न पचै सकोगे ९९ ॥

राजमरालकेबालकपेलिकैपालतलालतखसरको । सुचिसुन्दरसालिसकेलिसुबारिकैबीजबटोरतऊसरको ॥ सुराज्ञा

नगुमानभभेरिबड़ोकल्पद्रुम काटतमूसर को। कलिकालविचारअचारहरीनहिंसूझैकछुधमधूसरको ६७ ॥

राजमराल कहे हंसनके बालकन को पेलिकहे ढकेलिकै खूसर कहे खूसट जो मशानो पक्षी अपावन ताको लालत दुलारत पालत नेह राखत भाव उत्तम पावन बिबेकी हरिभक्तन के बेष बालकन को निरादर करि कौल कपालिन को पूजते हैं शुचि कहे पवित्र सुन्दर शालि कहे धान सुखेतसों सकेलि कहे बटोरिकै बारि कहे फूंकिकै ऊसर बोइबे हेतु ऊसरही के बीज बटोरत हैं भाव सुकृति को अधर्म अग्नि में जराइ डारत तुच्छदेव भूतादि के सिद्ध हेतु उनके यंत्र मंत्र बटोरते हैं तापर अनेक भांति को गुमानकरि हैं सोई बड़ो भभेरि कहे घबराहट ज्ञानादि गुणन के भगाइबे हेतुहै भाव गुमान भये ज्ञानादि सब गुण जात रहत हैं औ मूसर हेतु कल्पद्रुम काटते हैं भाव लौकिक कलेश परे पर श्रीराम नाम लेते हैं धर्म अधर्म को बिचार तप शौचादि अचार सब कलिकाल ने हरि लयो तापर धमधूसर निर्बुद्धी जीवन को नहीं सूझि परत कि औरधर्म तो ह्वै नहीं सकत सौभाविक श्रीरामनाम तो जपिये कल्प हेतु ६७ ॥

कोबिकहापढ़िबेकोकहाफलबूझिन

वेदकोभेदविचार्यो । स्वारथकोपरमार थकोकलिकामदरामकेनामबिसार्यो । वादबिवादविषादबढ़ाइकै छातीपराई औआपनजारयो । चारिहुकोछहुकोनव को दशआठकोपाठ कुकाठज्योंफा र्यो ९८ ॥

कौवे कहा सुन्दर नर देह पाइकै का करिबे को चाहो अर्थात् हरि भक्ति न कीन्ह्यौं औ वेद पुरा- णन को भेद काहू सों बूझि कै वा अपने मनते न विचार्यो कि पढ़िबे को कहा फल है यथा ॥ वेद पुराणसन्तमतयेहू । सकलसुकृतफलरामसनेहू ॥ पद्मपुराणे ॥ सर्वेषांवेदसाराणां रहस्यंतेप्रकाशितं । एकोदेवोरामचन्द्रो व्रतमन्यंनतत्समं ॥ स्वारथ कहे लोक सुखदाता परमारथ कहे परलोक सुखदाता कलियुग में विशेष कामद मनोरथ दाता कल्प वृक्ष सम श्री राम नाम को बिसारिकै विद्या के मान ते बाद बिवाद विषाद कहे दुःख बढ़ाय के क्रोध सों परारी और आपनी छाती जरायो याते चारिहू वेद यथा ऋग्यजु साम अथर्वण छहूशास्त्र यथा मीमांसा सांख्य वैशेषिक न्याय योग वेदान्त नव व्याकरणै यथा इन्द्र चन्द्र काश्य कृष्ण सकट पिप्पलाबन पाणिनि अमर जैन्येन्द्र सरस्वती दशआठ पुराणै यथा

मीन भविष्य शिव बाराह वामन ब्रह्म ब्रह्माण्ड गरुड़ मार्कण्डेय पद्म विष्णु नारदीय लिंग ब्रह्मवैवर्त्त अग्नि कूर्म स्कन्ध भागवत इत्यादि को पाठ कहे पढ़िबो कैसा कीन्ह्यो यथा कुकाठ बिना रेशा को उकठा खुद्दा जो फारिबे को परिश्रम वृथा तथा विना हरिभक्ति वेदादिको पढ़िबो बृथा यथा ॥ श्रुतिपुराण सबग्रन्थकहाहीं । रघुपतिभक्तिबिनासुखनाहीं ॥ पद्म पुराणे । नतत्पुराणंनहियत्ररामो यस्यांनरामोनच संहितासा । सनेतिहासोनहियत्ररामःकाव्यंनतत्स्यान्नहियत्ररामः ॥ अन्यच्च ॥ पठितसकलवेदाःशास्त्रपारंगतोवायमनियमपरोवाधर्म शास्त्रार्थकृद्वा ॥ अटतिसकलतीर्थंव्राजकोबाहुताग्नि र्नहिहृदियदिरामःसर्वमेतद्वृथास्यात् ९८ एक समय सिद्धजन आप गोसाईं जीसों पूंछ्यो कि तुम्हारेकौन सिद्धाईहै तापर गोसाईं जी यह कवित्त कहे आगम वेद पुराण इति ॥

आगमवेदपुराणबखानतमारगकोटिनजाहिंनजाने । जेमुनितेपुनिआपुहिआपुकोईशकहावतसिद्धसयाने । धर्मसबैकलिकालग्रसेजप योगविरागलैजीवपराने।कोकरिसोचमरैतुलसीहमजानकिनाथकेहाथबिकाने ९९ ॥

आगम कहे षटशास्त्र चारिउ वेद अठारहौ पु-

राण उपपुराण इत्यादि कोटिन मार्ग बखानत जो कोऊ जाना चाहै तो जानो नहीं जात तथा ऋग्वेदी यजुर्वेदी सामवेदी अथर्बणी मीमांसी सांख्यवैशेषिको न्यायी योगी वेदांती वैष्णव शैव शाक्त सौरी गाणपती स्मार्तक द्वैतवादी अद्वैतवादी वशिष्ठाद्वैतवादी ईश्वरवादी मायावादी जीववादी कालवादी कर्मवादी अग्निवादी जलवादी भूमिवादी पवनवादी आकाशवादी कामवादी तपस्वी तीर्थाटनो मौनो पयोहारी जापक अर्चक नवधी प्रेमीपरा वाले इत्यादि आस्तीक पुनः जंगम चार्वाक दिगंबर कौल कपाली जैनी श्रावक तंत्री बौधनी लंपटी आरद्रपटी अजिनपटी पाशुपती महाव्रती इत्यादि अनेकन हैं पुनि जे मुनि हैं तिन में जे ब्रह्मवादी हैं ते आपु अपना को ईश कहावते हैं अणिमादिक वाले अपनाको सिद्ध कहावते हैं जे कर्मकांडी आचार्य है ते अपनाको सयाने कहावते हैं सत्य शौच तप दानादि यावत् धर्म हैं तिन सवन को कलिकाल ग्रस्यौ कहे लीलि लेन चाहत ता भयते जप योग वैराग्य जीव लैलै पराने कहे भागिगयो ताका शोच करिकरि को मरै गोसाईं जो कहत कि हम जानकी नाथ के हाथ बिकाइ गये भाव शुद्ध शरणागतके भरोसे हैं ९९ ॥

धूतकहौअवधूतकहौ रजपूतकहौ

जुलहाकहौकोऊ। काहूकीबेटीसोंबेटा नब्याहबकाहूकीजातिबिगारनसोऊ ॥ तुलसीसरनामगुलामहैरामको जाकोरु चैसोकहौकछुसोऊ । मांगिकैखैबोम सीतको सोइबो लेबेकोएक नदेबेको दोऊ १०० ॥

धूत कहौ कोउ छली कहौ अवधूत कहौ कोऊ सांचो फकीर कहौ रजपूतकहौ कोऊउत्तम धोर्य्य वान कहौ जोलाहा कहो कोउकोउनीच कादर कहौ वा कोऊ कुछु कहौ मोको काहूकी बेटीसों बेटा नहीं ब्याहिबाहै जो काहूको जाति बिगारत होउं सोऊ नहीं है ताते जाको जो रुचै सो कुछु कोऊ कहौ तुलसीतौ सरनाम प्रसिद्ध श्री रामको गुलामहै मांगि कै खैबो अर्थात् काहूएकको आसरा नहीं दूध भिक्षा उत्तम धान्यहै औ मसजिदको सोइबो भाव काहू के द्वारपै नहीं जावैहैं भरोसे रघुनाथ जी के न काहू सों लेनो एक न देनो दोइ भावलोक व्य-वहार रहित हौं १०० जातिपांति की मर्यादा सर-वरिया ब्राह्मणन में प्रसिद्ध है पांति वालेन को बनवास वखात पांति वालेन के बिवाहत जाति में वे श्रेष्ठ हैं ॥

मेरेजातिपांतिनचहौं काहूकीजातिपां

तिमेरे कोऊ कामको नहीं काहू के काम को। लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है भरोसो तुलसी के एक नाम को। अति ही अयाने उपखानो नहिं बूझैं लोग साहेब को गोत गोत होत है गुलाम को। साधु के असाधु कै भलो कै पोच सोच कहा काका हू के द्वार परो जो हों सो हों राम को १०१ ॥

मेरे जाति पांतिन भावजो जाति में प्रकटभयो ताको त्याग कियों याते मेरे जातिकी भांति नहीं है तौ औरहू की जाति पांति नहीं चाहत हौं कि मोको कोऊ जाति पांति में बैठावै काहेते न कोऊ मेरे कामको है औ नामैं काहूके कामको हौं क्यों कि मैंतो श्री रघुनाथ जी के हाथ बिकाइ गयोंया ते लोकहू परलोक को निबाह मेरो श्री रघुनाथ ही के हाथ है काहेते तुलसी को भारी भरोसा एक श्री राम नामही को है भाव यंत्र राजपै रा- मार्चन बिधान में अनेक अंगदेव पूजे जात सो रहित हौं एकनाम बल श्री रामको गुलाम हौं या में जे संदेह करते हैं ते अतिही अयाने लोग हैं जे उपखान नहीं बूझते हैं सो कौन उपखान है यथा साहेब को गोत सोई गोत गुलामहू को होत तौ जोमैं श्री राम गुलाम हौंतौ काहूकी जाति पांति

मोको क्या करना है साधुहौं कैधौं असाधु भलोहौं कैधौं पोच कहे बुरोहौं या बातको कहा शोच है क्यामैं काहूके द्वारपै परो हौं भलो बुरोजो कुछुहौं सो श्री रामही को हौं १०१ ॥

कोऊकहैकरतकुसाजदगाबाजबड़ो। कोऊकहैरामको गुलामखरोखूबहै। साधुजानैंमहासाधु खलजानैंमहाखल बानीझूठीसाँची कोटिउठतिहबूबहै॥ चहतनकाहूसोंकहतनकाहूको कछूसब कीसहतउरअंतरनऊबहै । तुलसीकोभ लोपोचहाथरघुनाथहीकेरामकीभगति भूमिमेरीमतिदूबहै १०२॥

कोउ कहत कि छल कपट ठगी आदि कुसाज करत याते बड़ो दगाबाज है कोऊ कहत शुद्धश-रणागत खूब खरो श्रीरघुनाथजी को गुलामहै तहां जे साधु हैं ते महासाधु करि मानत हैं औ जे खल हैं ते महाखल जानत हैं इत्यादि झूठी सांची बाणी कोटिन हबूब कहे पानी कैसो बुल्ला उठता है ह-बूब शब्द अरबी है औ काहू सों कुछु चाहतनहीं कि मोको कोऊ कछु देइ औ काहूको कछु कहत नहीं कि क्यों ऐसी बात मोको कहते हौ सबको कही बात सहत हौं ताको कछु उर अंतर में ऊब

नहीं काहेते तुलसी को भलो होनो वा पोच कहे बुरो होनो सब श्रीरघुनाथही के हाथ है क्योंकि श्री रामभक्ति रूप भूमि पै मेरी मति दूब सम सदा हरित है भक्ति पै मति सदा लवलीन है १०२ ॥

जागैंयोगीजंगमयतीसमाजध्यानधरैं डरैंउरभारी लोभमोहकोह कामको। जागैंराजाराजकाज सेवकसमाजसाज सोचैंसुनिसमाचारबड़ेबैरीबामको।जागैं बुधबिद्याहितपंडित चकितचित्तजागैं लोभीलालचधरणीधनधामके। जागैं भोगीभोगहीवियोगीरोगीशोगबशसो- वैंसुखतुलसीभरोसेएकरामके १०३ ॥

योगी अष्टांग करनेवाले जे चित्त निरोधक हैं जंगम जे शिवलिंग उपासक हैं यती संन्यासी व जैनी समाज सत्संगमें रहनेवाले ध्यान धरें जे ध्यानी हैं वा योगी आदि के समाज में जे ध्यान आपमें तत्त्वपर राखते हैं ते काम क्रोध लोभ मोहादिको भारी डर है उरमें ताते जागते हैं भाव सदा सजग रहते हैं जे राजा हैं ते राज काज कहे प्रजादि की रक्षा तसीलादि सेवक सिपाह समाजको अस्त्र वाह नादि साजिबे हेतु बड़े बैरी वाम कहे टेढ़े को स- माचार सुनि सोच वशते जागैं बुध जन पंडित बुद्धि

बिद्या हेतु जागै लोभी सदा चकित चित धरणि धन धामके लालच हेतु जागैं भोगी भोग हेतु जागैं वियोगी बिरहमें जागैं रोगी रोग वश जागैं इत्यादि सबको भय लागि है गोसाईं जी कहत जाको एक श्री रघुनाथजीको भरोसा है सोई सुखसोंसोवत है यथा ॥ जोअपराधभक्तकरकरई । रामरोषपावकसोजरई ॥ वाल्मीकीये ॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीति चयाचते ॥ अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम १०३॥

छप्पै ॥ राममातुपितु बंधुसुजनगुरु पूज्यपरमहित । साहेबसखा सहायनेह नातेपुनीतचित ॥ देशकोशकुलकर्मधर्म धनधामधरणिगति । जातिपाँतिसबभाँतिलागिराममहिंहमारपति ॥ परमारथ स्वारथसुयशसुलभरामतेसकलफल । कहतुलसिदास अबजबकबहुँएकरामतेमोरभल १०४ ॥

सबको आश भरोसा छाड़ि यावत् सम्बंध हैं सब श्रीरघुनाथ जीमें स्थित करत यथा माता पिता बंधु सुजन कहे संबंधी पूज्य कहे इष्ट परम हित कार स्वामी सखा सहायक पुनीत कहे पवित्र चितते यावत सनेह के नाते हैं देश आपनो या राज कोष कहे खजाना कुलको धर्म कर्म धन कहे

द्रव्यधामघर धरणि पृथ्वी गति कहे भरोसा जाति पांति आदि सब भांति पति कहे मर्यादा हमारी एक श्री रघुनाथै जी लागि हैं परमारथ कहे परलोक में गति स्वारथ कहे लोक सुख जग में सुयशादि यावत् फल हैं ते सकल एक श्री रघुनाथै जी सों सुलभ होइँ गोसाईं जी कहत कि चहै अब होइ चहै कबहूं होइ जब होइ तब एकरघुनाथैजी सों मेरो भलो होइ यह अन्यताको लक्षण है यथा॥ नातोनेहरामसोंकरि सबनातोनेहनेहहौं॥ यही शिव संहिता में हनुमानजी कहे यथा॥ पुत्रवत्पितृवद्रामोमातृवन्ममसर्वदा । स्यालवद्भ्रामवद्रामःश्वशुरवच्छ्वसुरादिवत् । पुत्रीवत्पौत्रवद्रामोभागिनेयादिवन्मम । सखीवत्सखिवद्रामःपत्नीवदनुजादिवत्॥ इत्यादि सब कहेहैं १०४ ॥

महाराजबलिजाउं रामसेवकसुखदायक। महाराजबलिजाउं रामसुन्दरसबलायक॥ महाराजबलिजाउं रामसबसंकटमोचन। महाराजबलिजाउं रामराजीवबिलोचन॥ बलिजाउं रामकरुणायतनप्रणतपालपातकहरण। बलिजाउं रामकलिभयबिकलतुलसिदाससराखियशरण १०५॥

पंचम चरण में करुणा यतनादि तीनि गुण कहे तिन को इहां क्रमते उदाहरण जानब यथा राजनके राजा महाराज हे श्री रघुनाथजी मैं बलि जाउं आपु करुणायतन हौ भाव करुणा गुण के स्थान हौ करुणा गुण को यह लक्षण है कि सेवक के दुःखमें प्रभु आपु दुखितहोत औ सेवकको सुखी करत यथा बिभीषण पै रावण शक्ति चलाई सो प्रभु आपु सहे बिभीषण को बचाइ लिये ताते महाराज आपु सेवक सुख दायकहौ पुनः हे महा-राज श्री रघुनाथजी मैं बलिजाउं आपु प्रणत पाल हौ प्रणत कहे शरणागत ताके पालनहार हौ यथा बिभीषण शरण आये ताको लोकहूपरलोकतेअकंटक कीन्हे ताते सुन्दर रूप आपु सब लायक हौ पुनः हे महाराजश्री रघुनाथ जी आपु पातक हरणहौ पापहरणहारे याते कि जहां पापनकरिकै काहूको दुख परा सो शरण ह्वै आपु को नाम पुकारा ताके पाप नाशकरि कलेश मिटाइ दियो यथा गज वा अहल्या उद्धार कियो ताते आपुसंकट मोचन हौ सब भांति संकटके छड़ावनहार हौ पुनः हे महा-राज श्री रघुनाथजीमैं बलिजाउं आपुराजीवलोचन हैं कमलसमनेत्र शीतलहैं वा रामराजीव बिलोचन यथा श्रीरामराम कहे परब्रह्म गुणनिधि जीव कहे जीवन पै बि कहे बिशेषि लोचन कहे दया दृष्टि राखे हो अर्थात् श्रीरघुनाथजी परब्रह्म गुणनिधिहौ

जीवनपर विशेष दयादृष्टि राखेहौ ताते बलिजाउं मैं कलियुगके भयकारिके बिकलहौं सो तुलसी दासहू को शरण में राखिये राजीव शब्दार्थ तेंतालिस के कवित्त में लिखा हैयाते इहां सूक्ष्म कहा १०५ ॥

जयताड़कासुबाहुमथनमारीचमानहर मुनिमखरक्षनदक्ष शिलातारणाकरुणा कर ॥ नृपगणबलमदसहितशंभुकोदंड बिहंडन । जयकुठारधरदर्पदलनदिनकर कुलमंडन।जयजनकनगरआनंदप्रदसुख सागरसुखमाभवन।कहतुलसिदाससुरमु कुटमणिजयजयजयजानकिरमन१०६

जो पूर्व गुण कहे सो सप्तकाण्ड सूचनिकाते तेनि षटपदमें कहे तहांप्रताप बर्णन ताते ताड़का बधते प्रारम्भकरे यथा ताड़कासुबाहुको मथनकहे नाशक औ मारीच मानहरकहे बिन फरबाणते उड़ाइसमुद्र पारडारे ऐसे श्रीरघुनाथजीकी जय होइ मुनि विश्वा मित्रकी यज्ञरक्षा करिबेमें दक्षकहे प्रवीण हैं शिलारूप अहल्या तारणहार करुणाके आकर कहे खानि हैं नृप गण समूह दुष्ट राजन को बल मद सहित शंभु को धनुष बिहंडन कहे नाश करनहारे कुठारधरपर शुरामको दर्पकहे अभिमान दलन हारे दिनकरसूर्य कुलमण्डन कहे भूषण श्री रघनाथ जी की जय होइ

जनक नगर आनंदप्रद कहे श्री जानकी जी के विवाह ते सबको सुख दिये ऐसे सुखके समुद्र सुखमा शोभाके भवन श्री रघुनाथजी की जय होइ गोसाईं जी कहत कि सुरमुकुटमणि देव शिरोमणि याते कहे देवतन की रक्षा हेतु चले ऐसे श्री जानकीरमण की जय होइ जयहोइ जय होइ इहांतक बाल अयोध्या भयो १०६ ॥

जयजयंतजयकरअनंत सज्जनजनरंजन । जयबिराधबधबिदुषबिबुधमुनिगणभयभंजन ॥ जयनिशाचरीबिरूपकरनरघुवंशबिभूषण । सुभटचतुर्दशसहसदलनत्रिशिराखरदूषण ॥ जयदंडकबनपावनकरनतुलसिदाससंशयशमन । जगबिदितजगतमणि जयतिजयजयजय जयजानकिरमन १०७ ॥

जयन्त इन्द्रपुत्र जो काक ह्वै द्रोह कियो ताके जयकर कहे जीतनहार औ अनंत कहे अनेकन अत्रि आदि सज्जनन को रंजन कहे आनन्द करनहारे श्री रघुनाथजी की जय होइ बिराध के बधबे में पंडित अर्थात् काहू अस्त्र सों नहीं मरत रहै ताको जीवत ही भूमि में गाड़ि दियो ताते बिबुध जो देवता मुनिगण कहे समूह तिनके भय डरके भंजनहारे प्रभु की

जय होइ निशाचरी सूर्पनखा की नाक कान काटि बिरूप कुरूप करनहारे ऐसे रघुवंश बिभूषणको जय होइ चौदह हजार सुभट सहित त्रिशिरा खर दूषण के दलनहारे प्रभुको जयहोइ शुक्रशापते दग्ध दण्ड कबन पवित्र करनहारे तुलसीदास की संशय कलियुग की ताको नाशनहारे जग में बिदित जगत मणि सूर्य इव प्रकाश करनहारे श्री जानकी रमणकी जय को इति कहे संपूर्ण जय जिनमेंहै ऐसे प्रभु की भूतकाल में जय होति आई बर्तमानमें जय है भविष्य में होइ १०७ ॥

जयमायाम्रगमथनगीध शवरीउद्धारण । जयकवन्धसूदनबिशालतरुताल बिदारण ॥ दवनबालिबलशालिथपन सुग्रीवसंतहित । कपिकरालभटभालुकटकपालनकृपालचित ॥ जयसियवियोगदुखहेतुकृतसेतुबंधबारिधिदमन । दशशीशविभीषण अभयप्रद जयजयजय जानकिरमन १०८

रावण प्रेरित मारीच माया कहे कपट मृगरूप आयो ताको मथन कहे नाशनहार गीध शवरी नीच योनि सम्बंधी कर्म उद्धार करि निज धाम पठावनहार प्रभु की जय होइ कबन्ध बिनशिर के राक्षस

को सूदन कहे नाश करनहार सुग्रीवके बताये बिशा
ल ताल तरु कहे वृक्षनको बिदारनहार प्रभुकीजय
होइ शालि कहे महाबली बालिको दमनकहे नाश
करि हित कहे मित्र सुग्रीवको संतकारि कपिनायक
करियापे ऐसे प्रभुकी जयहोइ औ कृपालहै चितजा-
कीताते चंचल पशुबानरनको अरु करालभट भालुन
को कटक के पालनहार प्रभु की जय होइ औजान
की जीके बियोग के दुख हेतु कृत कहे करत भये
सेतु बंधवारिधि कहे समुद्र उतरि दशशीश को कुल
सहित दमन कहे नाश करि बिभीषणको लोकहू प
रलोकते अभय प्रद कहे देनहारे श्री जानकी रमण
की तीनिउं काल में जयहोय १०८ ॥

कनककुधरकेदारबीजसुन्दरसुरमणिबर। सींचिकामधुकधेनुसुधामयपयबिशुद्धतर॥ तीरथपतिअंकुरस्वरूपयक्षेशरक्षतेहि। मरकतमयशाखासुपत्रमंजरिसुलक्षजेहि॥ कैवल्यसकलफलकल्पतरुशुभसुभावसबसुखबरिस। कहतुलसिदासरघुबंशमणितौकिहोहितचकरसरिस १०९॥

अभूत कल्प बृक्ष को रूपक कहत तहां प्रथम थान्हा चाहिये सो कहतकि कनक कुधर केदार

कनक कुधर कहे सुमेरु गिरि जो भूमि सर्व वस्तु की खानि ताको मध्य सारंस सुमेरु सोई केदार कहे थाल्हा होइ तब बीज चाहिये सो कहत बीज सुन्दर सुरमणि वरकहे श्रेष्ठ सुरमणि कहे चिंतामणि जो चिंतित फल देनहारी सोई अदग सुन्दर बीज होइ तहां सींचेते बीज जामि अंकुरित होत ताको कहत बिशुद्धतर कहे बिशेषि शुद्धहूते शुद्ध सुधाकहे अमृतमय कामधेनु के पयकहे दूधसों सींचो जाय तब अंकुर ह्वै वृक्ष होवो चाहीसो कहतकि तीर्थपति प्रयाग सब फल दायक सोई जाको अंकुर होइ पुनः स्वरूप होइ ताको रक्षक चाहीसो यक्षेश कुवेर जाके रक्षक होयं शाखापत्र चाही सोमर्कत मणि जो हरित नीलरंग सों श्याम मर्कत मणिमय शाखा होइं हरित मरकतमय सुन्दर पत्र होय तब मंजरी चाहिये सो कहत सुलक्षि कहे लक्ष्मीजी सुन्दर मंजरी होइं तब फल चाहिये सो कैवल्य कहे मुक्ति सकल फल सहित कल्प वृक्ष शुभ सुभाव अर्थात बहु कल्प वृक्षते शुभ अशुभ जोई मांगै सोई देइ तैसो सुभाव न होइ यह कल्पवृक्ष शुभ सुभाव ते सब सुखै वरसै ताहूपै गोसाईं जी कहत हे रघुवंशमणि ऐसेहू कल्पवृक्ष होइ तौ का आपके कर सरिस होइ अर्थात् नहींहोइ यह दृढ़ताऽतिशयोक्ति अलंकार है यथा ॥ सामासंश्य विचारिकै पुनिविशेषदृढ़ भाव । दृढ़ता अति

श्रयउक्तिसो बरणतरसिकसुदाव ॥ या कवित्त में रा-
जसिंहासनासीन समय की है तहां तक पच्चीस क
वित्तन में कलियुगकी भर्भरि में श्री रामनाम शर-
णागती प्रबल कहे १०६ ॥

जाइसोसुभटसमर्थपाइ रणारिनमंडै।
जायसोयतीकहायविषयबासनानछंडै
जाइधनिकबिनदानजाइनिर्धनबिनुधर्म
हि।जाइसोपंडितपढ़िपुराणजोरत्नसुक
र्महि। सुतजाइमातुपितुभक्तिबिनुतिय
सोजाइजेहिपतिनहित्त । सबजाइदास
तुलसीकहैजौनरामपदनेहनित ११० ॥

सुभट योधा समर्थ कहायकै रणभूमि पायकै
रारि कहे युद्धमें न मंडै बीरता करि युद्ध को भू-
षित न करै सो जाय कहे वृथा हैं फिर वाको कोऊ
बीर न कहैगो यती विरक्त कहाय विषयकी बासना
नछांड़ै सो बृथा जाय वाको विरक्त न कहैगो ध-
निक धनवान् कहाय उत्तम दान न दियोसो धनिक
जाय कहे वृथा है वाको सब दरिद्री कहैंगे निर्धन
जो गरीब है बिन धर्मकहे जो लौकिक धर्म छांड़ि
देयतो वाकी मर्यादा लोक में वृथा ह्वै जाय को
ऊ विश्वास न राखै पंडित बुद्धिमान् पुराण पढ़ सु
कर्म में रत नभयो सो जायकहे वृथा है वाकोकोऊ

सुबुद्धी न कहैगो पुत्र ह्वै के माता पिता की भक्ति सेवा न करै सो जाय वृथा है वाको कोऊ सपूत न कहैगो स्त्रीह्वै पतिसोंहित कहे प्रीति न राखै सो जायकहे वृथा है वाको लोग कुनारी कहैंगे तथा गोसाईं जी कहत कि जे श्री रघुनाथजी के कमलन में नित नेह न कीन्हे ताके वर्णाश्रम धर्म कर्मस-व वृथा हैं यथा रुद्रयामले ॥ येनराधमलोकेषु राम भक्ति पराङ्मुखा । जपंतपंदयाशौचं शास्त्रानाम वगाहनम्सर्वंवृथाविनायेन शृणुध्वंपार्वतिप्रिये ११० ॥

कोनक्रोधनिरदह्योकामवशकेहिनहिं कीन्हों । कोनलोभदृढफंदबाँधिग्रासनकरिदीन्हों ॥ कवनहृदयनहिंलागकठिनअतिनारिनयनशर । लोचनयुतनहिंअंधभयोश्रीपाइकवननर ॥ सुरनागलोकमहिमंडलहुकोजुमोहकीन्होजयन । कहतुलसीदाससोऊबचैजेहिराखरामराजिवनयन १११ ॥

कौन ऐसा शांतचित्त है जाके उरको क्रोधाग्नि ने निर्दह्यो कहे दाह नहीं करिदियो कौन ऐसा धैर्यमान् है जाको कामने वश नहीं कियो भावस बको वश करि लोलुप बनावत कौन ऐसा त्यागीहै जाको लोभने तृष्णा रूप दृढ़ फंद में बांधिकरि वि

न्ता रूप त्रास न दोन्हें कौन ऐसा इंद्रीजित है जा
के हृदय में अति कठिन नारी के नयन को बाण न
हीं लगो भाव सुन्दर स्त्री देखि को न आसक्त भयो
श्री द्रव्य वा राज श्रीयथा देश कोष सेना बाहना दि
हुकूमत पाइ कौन ऐसा चैतन्य है जो वर्त्तमान
नेत्रनके रहते मनते मदांध न भयो सुरलोक नाग-
लोकमहिमंडलहू में को ऐसा विवेकी है जाको मोह
ने जीति न लियो भाव सबको ममता बश करि मि
थ्या दृष्टि करि दियो गोसाईं जी कहत कि कमल न
यन श्री रघुनाथ जी जाको राखत हैं सोई ऊबरत
है भाव जो श्री रघुनाथजी की शरण ह्वै श्री राम
नाम उच्चारण करतताको एकहू बिघ्न नहीं बाधक
होत यथा नारदी पुराणे ॥ श्रीरामस्मरणाच्छीघ्रास
मस्त क्लेशसंचयः। मुक्तिंप्रयातिविप्रेन्द्रतस्यविघ्नो न
बाधते॥ श्रीरामरक्षायां ॥ पातालभूतलव्योमचारि
णः छद्मचारिणः। नदृष्टुमपिशक्तास्ते रक्षितंराम
नामभिः १११ ॥

सवैया ॥ भौंहकमानसधानसुठान
जेनारिबिलोकनबानतेबाचे। कोपकृ
शानुगुमानअँवाघट ज्योंजिनकेमनआँ
चनआँचे।लोभसबैनटकेबशह्वैकपिज्यों
जगमेंबहुनाचननाचे। नीकेहैंसाधुसबै

तुलसीपैतेईरघुवीरकेसेवकसाँचे११२ ।

टेढ़ी भौंह रूप कमान पर सुटान कहि संधान कीन्ह नारिबिलोकनि कहे चंचल दृग तिरछीकटाच्छ रूप बाण ते जे बचिगये ते प्रभुकी सेवकाई करिबे योग्य हैं पुन: गुमान कहे द्रव्य गुण विद्या जाति महत्वादिको अहंकाररूप आँवाँ में कोप रूप कृशानु कहे अग्निज्वलित आंचमें घट सरिस जिनके मन न आंचे मन क्रोध में न तप्त भये ते प्रभु की सेवकाई करिबे योग्य हैं लोभ रूपी नट के वश ह्वै कपि समान सब प्राणी जैसे जग में बहुत नाच नाचत हैं तैसे जे न नाचैं तेई रघुवीर के साँचे सेवक हैं भाव कामादि रहित ह्वै सेवकाई करै सो सांचो सेवक नहीं तो गोसाईंजी कहत कि सहज भाव में तौ सबै साधु भले हैं ११२ ॥

भेषसुबनायभलेबचनकहैंचुवाइ जा इतौनजरनिधरगाधनधामकी । कोटि कउपायकरिलालपालियत्तदेहमुखक हियतगतिरामहीकेनामकी । प्रकटैउ पासनादुरावैदुर्वासनाहिं मानसनिवास भूमिलोभमोहकामकी । रागरोषईर्षा कपटकुटिलाईभरे तुलसीसेभगतभगति चहैरामकी ११३ ॥

अन्तर में धरणी पृथ्वी धन द्रव्य धाम घरता के वृद्धि को चाहते चिन्तारूप जरनि हियेते तौ च याहू मात्र नहीं जातीहै औ ऊपरते तुलसी भालद्वा दशतिलक मुद्रा अंकितादि सुभेष बनाइ प्रेमामृतसे चुवाइ टकोरिटिकोर भलेभलेनवधाप्रेमापरादि हेतु सहितमीठो मीठीबचन बनायकैमुखतेकहतहैं तनपो षककैसेहैं जोसुखद।यकधाममें शय्या शीतोष्ण निवा रणादिव्यभोजन बसनादिकोटिनप्रकारके उपाय करि लालिकहे दुलराइ कै देहकोंपालनकरत अरु झूठहो मुखते कहत कि हमारे एक गति श्री राम ही के नाम की है जाको गुप्त राखिबे को चाहो ताउपा सना को तौ प्रकट करतेहैं कि हम श्री रामोपास कहैं औ भीतर लोभ मोह काम कीजो जन्मभूमि है दुर्वासना कुमार्गी चाह सो मानम कहे मन में निवास कहे टिकीहै ताको दुरावतकहे चोराय र-हत रागकहे काहूसों प्रीति काहूसों रोष कहें क्रोध किहे ईर्षा कहे मन में शत्रुता रखे इत्यादि कपट करि भीतर तौ कुटिलाई भरेते तुलसी ऐसे झूठे भक्त तेऊ श्री रघुनाथ जीकी भक्ति चाहत सो कैसे मिलो काहेते जा अनेकन जन्मतक जप होम योग ध्यान समाधि ब्रह्म ज्ञानादि में रत होइतौ अंतः-करण शुद्ध होइ तब श्री रामभक्ति को अधिकारीहो त यथा महा रामायणे ॥ येकल्पकोटिसततं जपहोम योगे। ध्याने.समाधिभरहोरतब्रह्मज्ञानात् ॥ तेदेवि

धन्यमनुजाहृदिवाह्यशुद्धा । भक्तिस्तदाभवतितव पिरामपादौ ॥ सदाशिवसंहितायां ॥ कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानिच ॥ पंचांगोपासनेनैवरामो भक्तिंप्रजायते ११३ ॥

कालिहहीतरुणासनकालिहहीधरणिधन कालिहहीजितौंगोरणकहतकुचालिहै। कालिहहीसाधौंगोकाजकालिहहीराजासमाज मोसेंकोऊकहाभारेमहीमेरुहालिहै। तुलसीयहीकुभाँतिघनेघरघालिआये घनेघरघालतहैंघनेघरघालिहैं। देखतसुनतसमुझतहूनसूझैसोई कबहूंकह्योनकालहूकोकालकालिहहै ११४ ॥

अब दुर्वासना को रूप कहत कि ऐसा मनोरथ करत कि मेरो तन कालिहहो तरुणकहे युवा ह्वैजाइ जामें स्त्री मोहित होइ यह कामकी कुवासना है धरणि जो पृथ्वी धन द्रव्यादि सब कालिहही होइ यह लोभकी दुर्वासना है कालिहहो शत्रु को रण में जीतौंगो यह क्रोधकी दुर्वासना है इत्यादि कुमार्ग को वासना के वचन कुचालो कहते हैं कालिहहो सब काम साधिलेउंगो राजसो समाज मेरे

काल्हिही होइगो मोसे भारे कहे भारी सबलको ऊ कहां होइगो महीं कहे मेरे ही ऐसा बलहै जा सों मेरुकहेपर्ब्बतहालतहैं अथवामेरेबलते महीपृथ्वी मेरुपर्ब्बत सब हालत भाव मोसे भारी बलवान्कौन है मैं पर्ब्बत हलावन हारहौं यह अभिमान की कुवासना है गोसाईंजी कहत कि यही कुभांति कुरीति करि भूतकाल में अनेकिन घर घाले हैं वर्तमान में अनेगिन घर घालत हैं भविष्य में अनेगिन घर घालि हैं इत्यादि सुने हैं अरुदेखतेहैं अरुसमुझतेहैं ताहूपर नहीं सूझतहै सोई कुभांतिदुर्वासना में सब कर्तव्यता शीघ्रही मानेहैं कबहूं यहन कह्यौ किकालहूको काल कहे मृत्युहू कोसमयकाल्हि है भाव अन्त समयकि सुधिभूली है दुर्वासनाते ११४ ॥

भयोनर्तिकालतिहूं लोक तुलसीसों मन्दनीदैसबसाधुमुनिमानौनसकोचुहौं। ज्ञानतनयोगहिय हानिमानैज्ञानकोम काहेकोपरेखोहौपापीप्रपंचीपोचुहौं । पेटभरिबेकेकाजमहाराजकोकहायोम हाराजहूकह्योहैप्रणातविमोचुहौं । निज अवजालकलिकालकीकरालता बिलोकिहोतव्याकुलकरतसोईशोचुहौं ११५

भूत भविष्य वर्तमाने त तीनिउंकाल में स्वर्ग मृत्यु पातालेति तीनिउं लोक में तुलसी ऐसो मति मंद नहीं भयो ऐसा कहि सब साधु हमारी निन्दा करते हैं ताको सुनि कछु सकोचु नहीं मानत हौं क्योंकि सांची कहते हैं और रघुनाथजी अपनो सेवकाई करिवे योग्य मोको नहीं जानते हैं भाव कुमार्गी नष्ट मानते हैं ताते श्री जानकीश हमको सेवकाई राखिबे में हिये ते हानि मानते हैं की हमारी सेवा योग्य नहीं है ताको मैं काहेको परे खोडनको लागुदै उरहनो काहेको देउं पापी प्रपंची कहै छली पोचु कहै बुरा तो मैं हई हौं काहते पेट भरिबेके हेतु महाराजको गुलामकहायों तोआसरा कौन है ताको कहत कि महाराजहू तो कहेउ कि हम प्रणत कहै शरणागतके क्लेश को बिमोच कहै छड़ावनहारहौं यथा वाल्मीकीये ॥ सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते। अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतं मम ॥ ऐसे प्रभुके बचननको भरोसाहै तहां कलिकालकी करालता भयंकर रूप दुखद सुभाव समुभि व्याकुल होतहौं तामें आपने अघ जाल कहै पाप समूह आपु में समुभि ताहीको शोचु करतहौं कि कैसे उबार होइगो ११५ ॥

धर्मकेसेतुजगमंगलकेहेतु भूमिभारहरिबेकोअवतारलियोनरको ॥ नीतिओ

प्रतीतिप्रीतिपालुचालिप्रभुमानलोकवे
दराखिबेकोप्रणारघुबरको । बानरबिभी
षणाकोओरकोकनावड़ोहैं सोप्रसंगसुने
अंगजरेअनुचरको । राखेरीतिआपनीजो
होइसोईकीजैबलि तुलसीतिहारोघरजा
इबाहीघरको ११६ ॥

धर्म को सेतुकहे धर्म अपार समुद्र है ताको पार जाइबो दुर्घट है ताके सेतु हैं सहजहीपार करि देत भाव सत्य शौच तप दानादि को फल शरणागतको सुलभ सिद्ध होत जग मंगलके हेतुकहे जिनके नाम के लेतही सब अमंगल नाश होत सुन्दर मंगल उत्पन्न होत औ भूमि को भार हरिबेको नरको ऐसो रूप ह्वै लोक में अवतीर्ण भयो ताके गुण कहत नीति यथा साम दाम दंड विभेद वा धीर्य संतोष बिचार नम्रतादि प्रीति यथा ॥ प्रणय प्रेम आसक्ति पुनि लग्नलाग अनुराग । नेह सहित सब प्रीति के जानब अंग विभाग ॥ यथा हम तुम एकही यह प्रणय है याकी सौम्य दृष्टि आसक्त होना आसक्ती है याकी यकटक दृष्टिसे दोऊ अहंकार की विषयहै प्रीति उमंगि नेत्र कंठ भरि आवै सो प्रेम है याकी बिह्वल दृष्टि है चण प्रति सुमिरण होना यह लग्न है याकी उत्कंठा दृष्टि है ये प्रेमलग्न दोऊ मन की

विषय है चित्तको चाह सो लागहै याको चोपदृष्टि है जा रंग में चित रँगा रहै सो अनुराग है यह को मत दृष्टि है ये लोग अनुराग दोऊ चित्त की विषय है मिलनि बोलनि में आनंद सो नेह है याकी ललित दृष्टि है चिक्कनता शोभा सहित सर्वांग व्यवहार सोप्रीति याकी आधीन दृष्टि है यह नेह प्रीति बुद्धि की विषय है इत्यादि बुध्यादिकी विषय अनुकूलहै जेहि रसको अत्यन्त भोगी ह्वै सर्वांग परिपूर्ण ह्वै जाइ ताको प्रीति कही औ प्रतीति कही विश्वास सो नीति औ प्रतीति पालिबे की चालि कहे स्वभाव है प्रभुको औ लोक वेदको मान कहे मर्य्यादा राखिबेको पनहै श्री रघुनाथ जी को तामें बानर जो सुग्रीव औ विभीषण की ओरको कनावड़ो है भाव ऐसा कुछुहारे हैं कि जिनके अवगुण जन्म पर्यंत नहीं देखेसो प्रसंग सुनि अनुचर जो मैं ताको अंगक्रोधसों जरत भाव जैसी कृपा उनपै तैसी मोपर क्योंनहीं ताते जो अपनी रीति राखि के जैसी ह्वै सकै तैसी कीजिये मैंबलि जाउं हे श्रीरघुनाथ जी तुलसी तिहारोई गुलाम है जो नदया होइ तौ वा आपने घरको लौटि जाउं जहांको गुलाम हौं जोदया होइतौ वही घर कोजाउं जहां सुग्रीव विभीषण गये भावदया करौ तौ अबही पार करौ नहीं गुलाम आपु के द्वारपरो है कबहूं तौ सुधि लेबै करिहौ यथा ॥ कौनहु जन्म

अवधबस जोई । रामपरायण सोपरि होई ११६ ॥

नाममहाराजकेनिबाहीनीकोकीजै उरसबहीसोहातमैंनलोगनिसोहातहौं । कीजैरामबारयहिमेरीश्रोरचखकोरता हिललागिरंकज्योंसनेहकोललातहौं । तुलसीबिलोकिकलिकालकीकरालता कृपालकोस्वभाव समुझतसकुचातहौं । लोकएकभाँतिकोत्रिलोकनाथ लोकबशआपनोनसोचस्वामीसोचहीसुखातहौं ११७ ॥

महाराज श्रीरघुनाथजी के नामकी निबाही जो कुछ कीजै सो नीकी बात कीजै कैसी जो सबही उर सोहात भाव मैं तौ भलाई करत हौं कि जामें सबके उर में नीक लागै परंतु लोगन को मैं नहीं सोहात हौं अर्थात् मेरी सब निंदै करते हैं हे श्री रघुनाथजी यही बार मेरी ओर चख कहे नैन कोर सों सनेह सहित कीजे भाव दया दृष्टि हेरिये ताही लागि रंक ज्यों जैसे दरिद्री द्रव्य हेतु तैसे रंक सम मैं दयादृष्टि को ललचात हौं काहेते जो सुगम काम को कुसाइति में प्रारम्भ कीजै तौ बिना विघ्न लागे न रहै तहां कुसाइतिन को शिरताज कलिकाल है

जो ऐसा पाप में लिप्त राखत जाते शुभ काम सिद्ध होतही नहीं ऐसो करालता विलोकि तामें श्री रघुनाथजी को कृपाल सुभाव समझत गोसाईं जो कहत कि मैं सकुचात हौं कि कलियुग के प्रभाव ते लोक एक भांति कोहै पाप मयोसोत्रि कहे तीनि के बश है अर्थात् काल कर्म सुभाव के औ लोक नाथ जो श्रीरघुनाथजी हैं ते लोकके बश हैं ताते आपने बने बिगारे का शोच मोको नहीं है स्वामी के शोचही करिकै सूखत जातहौं कि कलियुग प्रेरित कुमार्गी लोकके बशहैं तौ कृपालता क्यों करैंगे तौ कैसे जीवनको उद्धार होइगो यह शोच है ११७ ॥

तौलौंलोभलोलुपललातलालचीलवारबारबारलालचधरणिधनधामको। तबलौंबियोगरोगशोगभोग यातनाकेयुगसमलागतजीवनयामयामको। तौलौं दुखदारिददहतअतिनिततनतुलसीहैकिंकरविमोहकोहकामको। सबदुखआपनेनिरापनेसकलसुखजौलौंजनभयोनबजाइराजारामको ११८ ॥

तौलों धरणि धन धाम के लालच ते लालची लवार कहे झूठा बनि लोभ बशते लोलुप कहे लंपट ह्वै बार बार ललात कहे ललचात फिरत पा-

वत कुछु नहीं तबलों बियोग कहे प्रियजन को बिछोह रोग कहे ज्वर बाई खांसी आदि भोग कहे राज द्रव्य पुत्रादि नाश होना तेहि के भोग यातना कहे पीड़ा में जीवन जन्म के याम याम कहे एकैक पहर युग सम लागत गोसाईं जी कहत कि जबलों तू काम क्रोध मोह को किंकर बनो है तौलों दुख दारिद्र तेरे तनको अत्यन्त दाहत हैं औ जगमें यावत दुखहैं ते सब आपने कहे अपना को प्राप्त हैं औ यावत सुख हैं ते निरापने कहे बिराने हैं वे नहीं प्राप्त हैं इत्यादि सब दुख तब लों है जब लों डंका बजायकै श्री रघुनाथजी को दास न भयो ११८॥

तबलौंमलीनहीनदीनसुखसपनेनज हांतहांदुखीजनभाजनकलेशको । तब लोंउबैनपाय फिरतपेटौखलाय बायेमु खसहतपराभवदेशदेशको । तबलोंदया वनोदुसह दुखदारिदको साथरीकोसोइ बोओढ़िबोभूनेखेशको । जबलोंनभ जेजीह जानकीजीवनराम राजनकोरा जासातौसाहबमहेशको ११९ ॥

तबलों मलीन कहे अपावन है हीनकहे नीच है दीन कहे दुखित है जागतकी को कहे सपने में

सुखनहीं सपन भी दुखदाई देखत हैं काहेते वेजन क्लेशकेभाजनहैं जहांजाइंतहांईदुखीरहैं तौलोंडवैने कहे निरादरपाये पेटखलायेमुंहबाये देशदेशको परा भवकहे अपमानसहत फिरतहै तबलों दुसहकहे जो सहान जाइ ऐसे दुखदारिद्र को दयावनो कहे दयाको पात्र ह्वै रह्योहै भाव दुख दारिद्र दया करि वाही में वास किहे है ताते घास फूसकी साथरी पै सोइबो औ भूने भांभरे खेशको ओढ़नो इत्यादि दुख तब तक है जबतक जीह जानकी जीवन को नहीं भजत है कैसे हैं श्रीरघुनाथ जी जो राजनको राजा सोतो महेशहू को साहब है तहां महेशदेव नमें हरि भक्तन में योगिन में अग्रणीय हैं तिनको साहब कह्यो अर्थोपरि श्रीरामरूप सूचित करे ११९॥

ईशनकेईशमहाराजनकेमहाराज देवनकेदेवदेवप्राणहूंकेप्राणहौ। काल हूकेकालमहाभूतनकेमहाभूत कर्महूके कर्मनिदानहुकेनिदानहौ। निगमकोअ गमसुगमतुलसीहूसेको येतेमानशीलसिंधुकरुणानिधानहौ। महिमाअपारको हूबोलकोनवारापार बड़ीसाहिबीमेंनाथ बड़े सावधानहौ १२० ॥

ईश कहे ब्रह्मा विष्णु महेश तिनहूं को ईश क

हे स्वामी हैं ईशता देनहारे हैं यथा ॥ हरिहरिता विधिहि विधिता शिवहि शिवता जेहिंदई ॥ सो जानकी पति प्रमाण वशिष्ठसंहितायां ॥ जयमतस्याद्यखेयाव तारोद्भवकारण । ब्रह्माविष्णुमहेशादिसंसेव्यचरणांबुज ॥ स्कंदपुराणे ॥ ब्रह्माविष्णुमहेशाद्या यस्यांशेलोकसाधका । तस्मादिदेवंश्रीरामंविशुद्धंपरमं भजे ॥ अरु महाराजकहे जगरक्षक यावत् अवतार हैं तिनके महाराज कहे अवतार शिरोमणि हैं यथा भरद्वाज संहितायां ॥ अवतारवहवःसंतिकलाश्चांशाविभूतयः । रामएवपरब्रह्मसच्चिदानन्दमव्ययं ॥ देव कहे चतुर्व्यूह नारायणादि रूपन के देव कहे पूजित हैं यथा सदाशिवसंहितायां ॥ महाशंभुर्महामायामहाविष्णुश्चशक्तयः । कालेनसमनुप्राप्राराघवंपरिचिंतयेत् ॥ प्राण कहे पान अपान उदान समान व्यान तिनहूं के प्रान कहे प्रकाशक हौ काल कहे पल दण्ड दिन मास बर्ष युगादि तिनहूं के काल कहे करनहारहौ महाभूत कहे पृथिवी जल अग्नि पवन तिनके महाभूत कहे उपजावनहार हौ कर्म शुभाशुभ क्रिया फल दुख सुख ताहू के कर्म कहे भले को बुरा बुरे को भला करन हारे निदान कहे कारण यथा गुण सुभाव माया ईश्वर तिनके निदान प्रेरक हौ निगम कहे वेद तिनको अगमहौ ये तो बड़ो मान कहे महत्त्व पाइकै तेई श्रीरघुनाथजी तुलसी ऐसेन को सुलभ हैं तौ करु-

णानिधान शील समुद्र हौ काहे ते आपुकी महिमा अपार है जो वेद पुराण संहितादि में देव मुनि कवीश्वर आदिन के काहू के बोलको शक्ति नहींहै जो वारापार पाइ सकै इतनो बड़ी साहिबी पाइ कै जो दीनन पर दया दृष्टि राखत हौ तौ हे नाथ वड़े सावधान हौ १२० ॥

आरतपालकृपालजोरामजेहीसुमिरे तेहिकोतहंठाढ़े । नामप्रतापमहामहिमाअँकरेकियेखोटेउछोटेउबाढ़े । सेवकएकतेएकअनेक भयेतुलसीतिहुंतापडाढ़े । प्रेमबढ़ोप्रहलादहिकोजिनपाहनतेपरमेश्वरकाढ़े १२१ ॥

आरत कहे दुखी जननको पारन कहे उबारिबे में श्री रघुनाथजी कृपालु हैं कृपा काको कही सब जीवन के रचक हमहीं हैं यह कृपा गुणके स्थानहैं काहेते गजादि आरत हू जो जहांई सुमिरे ताको तहांई ठाढ़ मिले बिलम्बनहीं करे और श्रीरघुनाथ जीके नाम की महा महिमा है कि जाके प्रतापते यमन अजामीलजे खोटेऊ जनरहे तिनहू अंकरेकहे खरे हू गये औ वाल्मीकादि जे छोटे जीव रहेते बाढ़े कहे महामुनि ब्रह्म तुल्य भये गोसाईं जी कहत कि [illegible] सेवक होत

गये अ अरोषादि तिन सबन को प्रभु ऐसी रक्षा करे कि दैहिक दैविक भौतिकादि त्रितापन में कोऊ नहीं डाढ़े कहे जरे सब को प्रभु बचाये तिन सबन सों बड़ो प्रेम प्रह्लाद जीको है जिन पाहनकी आस्था सों परमेश्वर श्री नृसिंहजी को प्रकट करि लिये याही ते भागवतन में अग्रणीय हैं १२१ ॥

कालिकृपानकृपानकहूं पितुकालकराल बिलोकिनभागे। रामकहांसबठांउहैखंभमेंहांसुनिहांकनृकेहरिजागे। बैरीबिदारिभयेबिकरालकहेप्रह्लादहिके अनुरागे। प्रीतिप्रतीतिबढ़ी तुलसीतबतेसब पाहनपूजनलागे १२२ ॥

पुत्र पै पिताकी कृपा होत यथा लालन पालन हितोपदेश पुनः परुष बचन दण्ड देतहू में कृपा रहत इत्यादि कृपा कहूं नहीं ताते पिता हिरण्यकश्यप काल सम कराल जो मृत्यु रूप है कृपाण जो तरवारि काढ़ि ठाढ़ भयो ताको देख प्रह्लादजी नहीं भागे भाव डरते मन मुरा नहीं जब हिरण्यकश्यप बोल्यौ कि तेरा राम कहां है प्रह्लाद बोल्यौ मोमें तोमें खड्ग खंभ में सब ठाव है हिरण्यकश्यप बोल्यौ क्या खंभा में है प्रह्लाद कह्यौ हां ऐसी हांक सुनतेही नृकेहरिकहे नृसिंहजी जागिकहे प्रगट ह्वै

मनि के बैरी भक्त द्रोही हिरण्यकश्यप को उदर बिदारि कहे पेट फारि मारिडार्यो त्यहि क्रोध ते बिशेष कराल भयो जो रूप देखिभयते कोऊ देवता स्तुति न करि सक्यौ तब सबके पठाये प्रह्लादजी जाइ कहे कि महाराज शान्त होउ तब क्रोध तजि प्रह्लाद पै अनुराग करि शान्त भये यह हाल देखि सुनि प्रतीति आई तब प्रीति भई तब ते लोग सब प्रकार के पाहन कहे पत्थर पूजन लगे सब प्रकारके पाहन कहबे को यह भाव कि पाँच प्रकार ते पाषाण पूजबे को वेद की आज्ञा है एक स्वयंव्यक्त यथा श्री रंगव्यंकटाद्रि द्वितीय देवतन को प्रतिष्ठा कीन्हे यथा जगन्नाथ रामेश्वर तृतीय सिद्धन को प्रतिष्ठा कीन्हे यथा पन्हरीनाथ बालाजी चतुर्थ मनुष्यनके स्थापित कीन्हे जो गाँवन में घरमें हरिमन्दिर हैं पंचम स्वयं प्रतिष्ठित शालिग्राम शिला यथार्थ पंच के ॥ श्रीरंग व्यंकटेंसाद्यास्स्वयंव्यक्तास्समीरिताः । दिव्यंदेवप्रतिष्ठा नात्सिद्धंसिद्धैस्तुपूजितं ॥ मानुषैःस्थापितंतत्तुग्रामगृह भिदाद्द्विधाः । अर्चावतारःसुलभःपद्मा‍कर जलंयथा ॥ अर्चावतार इत्येवं कथितोत्रयथ.मति ॥ इत्यादिपंच प्रकार तौ वेदाज्ञा है जब ते नृसिंह जी उत्पन्न भये तब ते सब पाषाण को देव सम लोग मानते हैं पाँव स्पर्शादि को परहेज राखत १२२ ॥

अंतर्यामिहुतेबड़ बाहेरजामिहैंराम

जेनामलिहेते । धावतधेनुपन्हाइलवाइ ज्योंबालकबोलनिकानकियेते।आपनि बूझिकहैतुलसीकहिबेकीनबावरिबात बियेते । पैजपरेप्रहलादहु को प्रकटेप्रभु पाहनतेनहियेते १२३ ॥

अन्तर्यामी ते बाहिर यामी रूप बड़ो है भाव निर्गुणरूप ते बड़ो है सगुण रूप श्री रघुनाथजी कहे ते जे श्री राम नाम लेतही आरत जनपै रक्षा हेतु प्रभु कैसे धावत यथा बालक कहे लघु दिनको बछरू को बोल काने में परतही लवाई कहे थोरे दिन की ब्याई धेनु कहे गऊ पन्हाइ कहे थन में दूध स्रवत हुँकारि धावत तैसे प्रभु भक्तन हेतु धावत यथा ॥ भरद्वाजस्तोत्रे ॥ रामरामेतिरामेतिवदंतंविकलंभवा न् । यमदूतैरनाक्रांतंवत्संगौरिवधावति ॥ गोसाईंजी कहत कि मैं अपनी बूझि कहे समुझ ते कहत हौं बिये कहे दूसरे ते कहिबे की बात नहीं है क्योंकि बावरी बात बावरे कीसी कही शब्द वर्ण रहित संज्ञा मात्रते समुझबे योग्य है कौन बातसों कहत पैज कहे प्रतिज्ञाको अवसर परे पर प्रह्लादहु को जि- नके बचनमें प्रसिद्ध निर्गुण रूप को बोधहोत यथा महिमा त्वहिमादि ते निर्गुण होत औ प्रतिष्ठित पाषाणादि ते सगुण रूप बोध होत तहां प्रह्लादहूके

कहे ते प्रभु पाहनहीं ते प्रगट भये भाव सगुण हीं रूप सहायक भये न हियेते अर्थात् आपने भक्तहूको सहाय करिबे को हियेते न प्रगट सहाय करि सके याते निर्गुण ते सगुण रूप बड़ो है ताको प्रयोजन यह कि अर्चा अवतार सौभाविक जीवन के कल्याण हेतु प्रगट भये हैं याते प्रतिमादि अर्चा परम धर्म है १२३ ॥

बालकबोलिदियेबलिकालकोका यरकोटिकुचालचलाई । पापीहैबापबड़े परितापतेआपनीओरते खोरिनलाई । भूरिदईविषमूरिभई प्रहलादसुधाईसुधा कीमलाई । रामकृपातुलसीजनकोजग होतभलेकोभलाईभलाई १२४ ॥

बालक प्रह्लाद जी तिन को बोलाइ कै हिरण्य कश्यप ने कालको बलिदान दियो कौन भांति अग्नि में जराये जल में बोरयो पहाड़ते डारिदिये हाथी सर्पादि अनेक कुचाली कायर ने चलाई कायर कादर कहबे को यह भाव कि इस प्रकार जीव मारना कादरही को काम है ऐसा पापी बाप है जो बड़े परिताप कहे दुःख देवे प्रह्लाद के आपनी ओर ते खोरि नहीं लाई भाव उठाय नहीं राखी विषमूरि हालाहलादि भूरि कहे बहुत पियाइ दई सोई

प्रह्लाद की सुधाई तो सुधा की भलाई कहे अमृत को सारांश भयो भाव अमृत पियत ते काल पाइ नाश होत प्रह्लाद को नाश कबहूं न होइगो याही भांति औरनहूं की गोसाईं जी कहत कि जे भली भांति रघुनाथ जी में मन लगाये हैं जे भले जन हैं तिन को जग में भलो भांति कहे मर्याद सहित भलाई होत जे बुराई करत तिनहीं को बुरा होइ जात यथा अम्बरीष दुर्वासा को हाल प्रसिद्ध है १२४॥

कंसकरीब्रजबासिनपैकरतूति कुभांतिचलीनचलाई। पाण्डुकेपूतसपूतकपूतसुयोधनभोकलिछोटाछलाई। कान्हकृपालबड़े नतपालगयेखलखेचरखीसखलाई। ठीकप्रतीतिकहैंतुलसीजगहोइभलेकोभलोईभलाई १२५॥

कुभांति कहे कुरीति को करतूति कहे करणी भाव अनीति ब्रजबासिन पै कंस ने करी परन्तु जो चलाई सो चली नहीं सब विघ्न श्रीकृष्णचन्द्र निवारण किये पीछे कंसहू को मारे तैसे पाण्डु के पूत कहे धर्मात्मा हरिभक्त युधिष्ठिर अर्जुनादि तिन पै कुभांति करतूति कहे मर्याद बिगारिबे वाली करणी कपूत सुयोधन ने करी जो छलाई कहे छलविद्या से छोटा दूसरा कलिकाल भयो ताहू की चलाई न

चली काहेते नत कहे शरणागत के पालन हार
कान्ह बड़े कृपाल हैं तिनकी कृपाते खल खेचर
कहे दुष्ट खेचर खलाई कहे आपनी दुष्टताईते खीस
कहे नाश ह्वैगये इत्यादि समुझि ठीक प्रतीति कहे
आपने मनको बिश्वास तुलसी कहतहैं कि भलेहरि
दासनको जगमें भली भांतिते भलाई होतहै १२५ ॥

**अवनीशअनेक भयेअवनीजिनकेड
रतेसुरशोचसुखाहीं । मानवदानवदेव
सतावनरावणघाटिरच्योजगमाहीं । ते
मिलयेधरिधूरिसुयोधन जेचलतेबहु छत्र
किछाहीं । वेदपुराणकहैंजगजानगुमा
नगोविंदहिभावतनाहीं १२६ ॥**

अवनीश कहे राजा अवनीकहे भूमिपै अनेकन
हिरण्यकश्यपादि भये जिनके डरके शोचते देवता सू
खत रहे तिनहूं को प्रभुमिटाय दये मानव कहे
मनुष्यदानव दैत्य देवतादिनको सतावनहार राव-
णने जगमें घाटि रची घाटि कहे देवतादि कन्यन
को वरबश विवाह करिलियो यथा ॥ देव यक्षगंधर्व
नर किन्नर नाग कुमारि । जीति बरी निज बाहुबल
बहु सुन्दर बरनारि ॥ ऐसेहु रावणको प्रभुनाश किये
औ दुर्योधन जो बहुते छत्रन की छाहींमें चलतरहै
अर्थात् अनेकन छत्रधारी राजा सेवा हेतु संग रहत

रहे तिनहूं को प्रभु धरि में मिलाय दिये इत्यादि तीनि युग को हाल वेद पुराण कहत हैं वर्तमान में देखि जगमें सब जानत है कि गुमान अहंकार गोविंदको नहीं भावत ताते गुमानकरन हार नहीं रहत शीघ्रही जात है १२६ ॥

जबनैननप्रीतिठईठगश्यामसोंस्यानी सखीहठिहौंवरजी । नहिंजानौंबियोग सुरोगहैआगेभुकीतबहौंतेंहसोतरजी ॥ अबदेहभईपटनेहकेघालेसोंव्योंतकरेंबि रहादरजी । ब्रजराजकुमारबिनासुनुभृंग अनंगभयोजियकोगरजी १२७ ॥

गोसाईं जी अनन्य रामोपासक इहां ब्रजनाथ चरित कहबे को क्या प्रयोजन है कवि स्वभाव नेम रहित होत व प्रीति बंचकता कहिस्वइष्टमें प्रीतिपालकता दृढ़ करे जासमय में उद्धवजी योग उपदेश हेतु ब्रजको आये ता समय एक भ्रमर राधिका जी के समीप आयो सो उद्धवको सुनाय भ्रमर सों कहती हैं कि जा समय हमारे नयनन ने ठग श्याम सों प्रीति ठई कहे ठानी ता समय हमारी सयानी सखीने हठ करके हमको बरज्यो कि प्रीति न करो पीछे दुखदाई होइगी तबहम नहीं जानत रहींकि वियोग करिकै सोई प्रीति पीछे रोगहोइगो तब न

समुझते हम तेहि सखी सों तरजी कहे झिझकारि कै भुकी कहे सकोचित भई सोई नेहके घाले कही प्रीति मिलायेते देह पट सम भई ताको विरह रूप दरजी ब्यौंत करत है देह को टूकटूक करत है हे भृङ्ग हमारे बचन सुन ब्रजराज कुमार श्री कृष्ण बिना अनंग जो कामदेव सोई हमारे जीव लेने को गरजी भयो अब प्राण लेन चाहत है १२७ ॥

योगकथापठईब्रजकोसबसोशठचेरीकी चालचलाकी । ऊधौजूकौनकहैकुबरी जोबरीनटनागरहेरिहलाकी ॥ जाहिलगैपरजानैसोई तुलसीसोसुहागिनिनंदलला की । जानीहैजानपनीहरिकी अब बाँधियैगीकछुमोटिकलाकी १२८ ॥

ब्रजराज ने जो ब्रजको योगकी कथा कहाय पठाइ है सो सब शठचेरी कूबरीकी चलाँकीकी चालहै हे उद्धवजी कूबरीको कौन कहै कि तू शठहैकाहेतेशठहै जो नट नागर हलाकी को हेरिकै बरी भाव नट छली होत तिनमें नागर कहे चतुर तौ महा छली है औ हलाकी कहे है हलक करने वाले निर्दयी छली को हेरिके बरी तातें महाशठ है पर कहे परंतु जाके चोटलागत सोई जानत है सो कूबरीतो नंदलाल की सुहागिनि है सुहागिनि वियोगिन को

दुःखका जानै अब हमहूं हरिको ज्ञानपनो कहेज्ञा-
नमानी जानि लईकि कूबर पर राजी होतहैं तोकौन-
उकला की रचितकीन्ही काहू चीजकी मोटि करे
पीटरी पीठि पर बाँधैगी भाव काहू युक्ति सों कूबर
बनावैंगी जामें हमहू सों राजी होइं १२८ ॥

पठयो है छपद छबीले कान्हकेहू कहूं
खोजिकै खवास खासो कूबरी सि बालको
ज्ञानको गढ़ैया बिनु गिराको पढ़ैया बार
खालको कढ़ैया सोबढ़ैया उरसालको ।
प्रीतिको बधिक रसरीतिको अधिक नीति
निपुण विवेक है निदेश देश कालको । तु
लसी कहेन बनै सहेही बनैगी सब योग भयो
योगको बियोग नंदलालको १२९ ॥

भ्रमरके बहाने ऊधो जीको कहत यामें व्याज
निंदा है सखिन की उक्ति कहती है कि छबीले
कान्ह ने केहू भांति कहूं ते खोज करिके छपद प-
ठायो है भाव चारि पांवको पशू कहावत भ्रमरके तौ
छ: पांव हैं ताते महा पशु काहू की दर्दका जानै
पुनः सखी कहत कि भ्रमरनहीं है यह कूबरी ऐस
बाल की खासी खवास है भाव जैसे वह कुटिल कु
रूपहै तैसे यही निदर्दी कुरूपहै याते ज्ञानको गढ़न
हारो है भाव निर्दयी झूंठही ज्ञानकी बातैं बनाय

कै मुखते कहत है बिन गिराको बिन बिद्याको पढ़ैया मूर्ख कपठोरी करत है पुनः बारखालको कढ़ैया निर्दयी नाऊ बारन के साथ खाल काढ़िलेत है पुनः वचन रूप बरमाते उरमें छिद्र करिबेको बढ़ई है प्रीति रूप पत्ती पकरिबेको बधिकहै काहे करिकै नीति के फंदनते प्रीति स्वतंत्र नहीं रहत औ रस रीति नाश करिबेको बधिक ते अधिक कहे व्याधा समहै जो तुरतही जीवको मारि डारत तहां रस रीतिकहे श्रृंगार संयोग आलंबन उद्दीपन हाव भावादि को नाश करत काकरिकै विवेक में निपुण है विवेक ते रस रीति नाश होत है तब पाछे संतोष करि कहत कि जैसो देश है जैसो काल कहे समय है तैसे निदेश कहे उपदेश देनहारो ठीक है भाव हमारो समय ऐसेही कहन लायक है ताते भ्रमर जो हमको उपदेश देत है तासों उत्तर की बात कहे नहीं बनत है याको कहिबो सहिलेने सों बनत है काहेते अष्टांगादि योग हम स्त्रीनको अयोग्य रहै ताको योग कहे संयोग भयो भाव यदुनाथ की आज्ञा है कि योग करो औ जो हमारो योग्य रहै नंदलालको सदा संयोग तिन नन्दलालको वियोग भयो यातेसमयअनुकूल भ्रमरकहतहै ॥२९ ॥

हनूमानहृ्वै कृपाल लाड़िलेलखन लालभावतेभरतकीजैसेवकसुहायजू ।

बिनतीकरतदीनदूबरो दयावनोसोबिगा रेतेआपहीसुधारिलीजैभायजू ॥ मेरीसा हिबिनीसदाशीशपरबिलसतदेविक्योंन दासकोदेखाइयतपायजू । खीझहूमेंरी झबेकीबानिरामरीझतहैंरीझेह्वै हैंराम कीदुहाईरघुरायजू १३० ॥

हे हनुमान्जी हे लाड़िले अलबेले लषणलाल भरतभावते कहे हे शत्रुहनजी हे भरतजी सबजन कृपाल ह्वैकै सेवककी सहायकीजै का कीजै दूबरो दीन जन तुलसी दयावनो कहे दया करिबे योग्य बिनती करतहै तामें जो बिगारे भाव होइ तिनको आपही सुधारिलीजै मेरी साहिबिनी हे श्रीजानकीजी श्री रघुनाथजी पत्नी व्रतनायक हैं ताते प्रीति भावते तुम श्री रघुनाथजी के शीशपर बिलसत हो भावजी-बन धन हो यथा अगस्त्य संहिता में श्री मुखबचन शिवजी से कहे ॥ आह्लादिनींपरांशक्तिंस्तूयाःसात्व तसंमतां । तदाराध्यस्तदारामस्तदाधीनस्तयाबिना॥ तिष्ठामिनक्षणांशंभोजीवनंपरमंमम ॥ हे देविदासको क्यों नहीं पाय देखाइयतहो भाव जोआपुकृपाकरि दरश देहो तो श्री रघुनाथ जी आपही प्रसन्न ह्वै दरश देइंगे कदाचित्कहो कि श्री रघुनाथजी न प्र-सन्न ह्वै हैं ताको कहत कि उनको तो रीझिबे को

सुभाव ही है ताते खीझतहू में श्रीरघुनाथजी रीझ-
ल हैं भाव जापै क्रोध करि मारतहूहैं ताको उत्तम
गति देत ताते श्री रघुनाथ जी की दुहाई है आपु
संदेह नकरौ श्री रघुराय जू रीझे ह्वै हैं अथवा
जाको मैं दास कहावत हौं सो मेरी साहिबिनी श्री
तुलसी जी जो प्रभु के शीश पर सदा बिलसत है
देवि आपु दास को पांव क्योंनहीं देखाइयत पुनः
पूर्ववत् १३० ॥

बेषबिरागकोरागभरो मनमायकहौं सतिभावहौंतोसों । तेरेहिनाथकोनाम लैबेचिहौं पातकीपामरप्राननिपोसों । येतेबड़ेअपराधीअघीकहतैं कहुंअंबकी मेरो तुमोसों । स्वारथकोपरमारथकोप- रिपूरणभोफिरिघाटिनहोसों १३१ ॥

माता सों बालक निछल रहत याते गोसाईं जी कहत हैं माय श्री जानकी जी मैं तोसों सतिभाय ते कहत हौं कि वैरागको तौ ऊपरते बेष मृगचर्म कमंडलादि धारण धातु पात्र वसन रहित त्यागी बनो हौं औमन में रागभरोहै भाव धरणि धन धाम में प्रीति किहे हौं काहे ते तेरेही नाथको अर्थात् श्री जानकी नाथ को नाम लै बेचि कहे द्रव्य हेतु नाम लैकै पुजायके हौं कहे मैं जो पातकी पामर

कहे मूढ़ सो प्राणन को पोसों कहे पालत हौं तहां पेट हेतु स्वामी को नाम लेनो यह बड़ो अपराध है ताको करने वाला इतनो बड़ो अपराधी ताते अघी हौं अर्थात् श्री रघुनाथ जी को कसूरवंद हौं ला भयते तेरी शरण हौं ताते हे अंब अब मोसों तैं कहु मोको कि तैं मेरो है भाव मोको आपनो किं-कर करि लीजै तौ स्वार्थ परमार्थ कहे लोकहू परलोक को निबाह सब पूरण होइगो फिरि घटि न होइगो भाव श्री रघुनाथ जी कछु कम न करि सकैंगे १३१ ॥

जहां बालमीकि भये व्याधते मुनीन्द्र सा धु मरा मरा जपे सुनि रिषि सात की । सीय को निवास लव कुश को जनम थल तु लसी छुवत छांह ताप गरे गात की । विटप महीप सुरसरित समीप सोहैं सीताबट पेख त पुनीत होत पातकी । बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि अंकित जो जानकी चरण जलजात की १३२ ॥

वाल्मीकि आश्रम के चरित्र सूक्ष्म प्रताप मात्र कहते हैं जहां जेहि भूमि में सप्त ऋषिन को सि-खावन सुनि यथा बाल्मीकि प्रचेता के पुत्र हैं ठगन की संगति ते जीव हिंसा की वृत्ति ह्वै गई काहू समय

सप्त ऋषिन को मारने पर आरूढ़ भये सप्तऋषि पूछे कि घरवालेन ते पूछौ कि हमारे पापमें शामिल हो की पूछेपर कोऊ न शामिल भयो तब बाल्मीकि पूंछे कि मेरा उद्धार बताओ सप्तऋषि बोले कि राम नाम जपौ बाल्मीकि कहे कि मोसों नहीं बनैगो तब कहे कि मरा मरा जपौ प्रयोजन यह कि रकार राम रूप परब्रह्म है मकारजीव रूपहै मध्यकी अकार दोऊ को संवंध करावन हारीहै श्रीरामानुज मंत्रार्थंयथा ॥ रकारार्थोराम:सगुणपरमैश्वर्यजलधि-र्मकारार्थोजीव:सकलविधिकैंकर्यनिपुण: ॥ तयोर्मध्याकारोयुगुलमथसम्बंधमनयो रनन्यार्हंब्रू तेत्रिनिगमसुसारोयमतुल: ॥ ताते प्रथम मकार उपदेश करि जीव स्वरूपा ज्ञान कराये पीछे ईश्वर रूप रकार को ज्ञान कराये याते मरा मरा कहे उलटा नाम जपि कै ब्याधाते मुनीन्द्र बाल्मीकि मुनिन में श्रेष्ठ साधु हरि भक्त भये कौन भूमिमें जहां श्री जानकीजीको निवास औ लवकुश को जन्मस्थल है गोसाईं जी कहतकि वृचनको राजा सुरसरि तेओ गंगाजीताके समीप कहे किनारे पर सोहत हैश्री सीताबट करि प्रसिद्ध है जाके पेखत कही दर्शमात्रते पातकी जन पुनीत होत औ जाकी छांह के छुवतही दैहिक दैविक भौतिकादि तापै गात की गरत कहे मिटि जात हैं सो भूमि श्री जानकी जी के चरण कमलन सों अंकित सो बारि पुर दिगपुर केबीच में बिलसत

है काशी प्रयाग के बीच गंगाजी के किनारे सीता मढ़ी करिके प्रसिद्ध है १३२ ॥

मरकतबरनपरनफलमानिकसे लसैं जटाजटजनुरूखवेषहरुहै । सुखमाको ढेरुकैधौंसुकृतसुमेरुकैधौंसम्पदा सकल मुदमंगलकोघरुहै । देतअभिमतजोसमे तप्रीतिसेइयेप्रतीतिमानितुलसीबिचारि काकोथरु है । सुरसरिनिकटसोहावनी अवनिसोहैरामरमनीको बटकलिकाम तरु है १३३ ॥

अब बटवृक्ष की शोभा अरु माहात्म्य कहत मर्कत मणिवत् हरित वर्ण के चीकने चमक दार पर्ण कहे पत्र हैं औ माणिक जो लालमणि तैसे सुन्दर फल हैं लसैं जटाजूट कहे बरोहें विराजमान मानों रूख वृक्ष बेषधर हर कहे महादेव हैं किधौं सुखमा कहे शोभा को ढेर है तहां शोभाके नवअंग हैं यथा द्युति लावण्य स्वरूप सोई सुन्दरता रमणीय कान्ति मधुर मृदुता बहुरि सुकुमारता गनीय तहां हरित नवीने दलन में चन्द्रसी ज्योति सो द्युति है बरोह की फुनगी में मोती कैसो पानी झलक सो लावण्यताहै सौभाविक भूषितसों देखात सोस्वरूपता है सर्वांग सुठौर बनो सो सुन्दरता है देखतहू अन-

देखो सो शोभा सो रमणीकता है लालन बदलन में मोने को सी ज्योति सो कांति है जाके देखतमें तृप्ति न होइ सो माधुरी है अरुण दलन में मृदुता है वरोह फुनगी में सुकुमारता है इत्यादि शोभा के से ढेर हैं अब माहात्म्य कहत किधौं सुकृत रूप सोने को पर्बत है किधौं धरणि धन धाम भूषण वसन बाहनादि सब प्रकार की संपदा औ मुद कहे मानसी आनंद मंगल कहे प्रसिद्ध उत्सवादि को घरु है पुनः यह बट बृक्ष काको घरु है तहां नित्य तौ शंकर को नैमित्य श्रीजानकी जी को ऐसा वि-चारि गोसाईंजी कहत कि जो प्रतीति मानि प्रीति समेत सेइये तौ अभिमत कहे बांछित फल देतहैं गंगाजीके निकट सोहावनी भूमि में रामरमणी श्री जानकी जीको बटवृक्ष कलियुगमें कल्पवृक्षहै १३३॥

देवधुनीपासमुनिबासश्रीनिवासजहां प्राकृतहूबटबूटबसतपुरारिहैं । योगजप यागकोबिरागकोपुनीतपीठि रागिनपै सीठिडीठिबाहरीनिहारिहैं। आयसुआ देशबाबूभलोभलोभावसिद्ध तुलसीबि चारियोगीकहतपुकारिहैं । रामभगतन कोतौकामतरुतेअधिकसियबट सेयेकर तलफलचारिहैं १३४ ॥

एक तौ प्राकृतहू बटके बूट कहे वृक्ष में पुरारि जो महादेवजी ते सौभाविक बसते हैं दूसरे देवधुनी श्रीगङ्गाजीके पास तीसरे महामुनि श्रीबाल्मीकिजी को बासस्थान चौथे श्रीजानकोजीको निवास है ता भूमिवृक्ष की महिमा वेदहू को अगम है तहां पर योग जप यज्ञ वैराग्यादि सिद्ध करिबे को पुनीतपीठ कहे पवित्र भूमि है औ रागी कहे जिनके मन में काम लोभ मोहादि पक्षी रूप बसे हैं तिनपै सोठि कहे कटु दृष्टि सो बहरी बाज सो निहरत है भाव मोहादि नाशक है औ सुंदरे भावको सिद्धदायक है ऐसा माहात्म्य योगी जन विचारिकै कहते हैं गोसाईंजी कहत आज्ञा को आदेश कहे पूरण करन हारे बाबू भले भले तहां बसत हैं औ श्रीरघुनाथ जीके भक्तन को तौ कल्पवृक्ष ते अधिक है भाव कल्पवृक्ष तीनि फल देत औ श्रीजानकीजीको बटकी सेवा कीन्हेते चारिउ फल करतल में सुगामा आवत अर्थ धर्म काम मोक्षहू वह कामार्थ धर्मही देत १३४ ॥

जहांबनपावनोसहावने विहंगमृगदे खिअतिलागतअनंदखेतखूंटसो । सीता रामलखणनिवासबासमुनिनकोसिद्धसा धुसाधकसबैविवेकबूटसो । झरनाझरत झारशीतलपुनीतबारिमंदाकिनि संजु

लसहेशजटाजूटसो । तुलसी जो रामसों सनेहसांचो चाहियेतो सेइयेसनेहसों विचित्रचित्रकूटसो १३५ ॥

जहां जेहि चित्रकूटको वनपावन कहे पवित्र है काहे ते जहां श्री राम जानकी सदा विहारकरते हैं तहां के पच्ची अरु मृगा सुहावने कहे शोभाय मान हैं पुनः क्षेत्र कैसा है जो देखत में आनन्द खेत को खूंट कहे सींव में ड़सी लागत काहे ते जहां श्री सीता राम लक्ष्मण को निवास है अरु अत्रि आदि मुनिन को बास या प्रभाव ते अणिमा-दिक प्राप्त वाले सिद्ध शान्तचित्त वाले साधु शम दमादि साधना वाले साधकादि यावत् चित्रकूटमें रहत ते सबै बिबेक के ऐसे बूट कहे हरितवृक्ष ज्ञान कैसे ह्वै रहे यावत् झरना झरत झार कहे सबन में शीतल स्वादिष्ट पवित्र बारि कहे जल बहत है अरु तहां मन्दाकिनी नदी जामें मञ्जुल कहे उज्ज्वल निर्मल जल बहत जो महेश के जटाजूट सों प्रकट है अर्थात् गंगाजी की धारा है गोसाईं जी कहत कि श्री रघुनाथ जीसों जो सांचो सनेह को चाहौ तौ मणि रचित बिचित्र जो चित्रकूट है ताको सनेह सों सेइये १३५ ॥

मोहवनकलिमलपलपीन जानिजि यसाधुगाइविप्रनके भयकोनेवारिहै ।

दीन्हीहैरजायरामपाइ सोसहाय लाल
षराससमर्थवीरहेरिहेरिमारिहै । मंदाकि
नीमंजुलकमानश्रसि वानजहांवारिधार
धीरधरिसुकरसुधारिहै । चित्रकूटअचल
श्रहेरीबैठ्योघातमानोंपातकके्व्रातघोर
सावजसंहारिहै १३६ ॥

मोहरूपी बन में कलिमल कहे कलियुग के पाप
बाघ से पल कहे मांस ते पीन नाम मोटे परेते साधु
रूपीगाइ ब्राह्मणके भयदायक जानि तिनके मारिबे
को श्री रघुनाथजी रजायदये चित्रकूट कोसो आज्ञा
पाई अरु लषण लाल सहाय कहे साथी भये जे
समर्थ वीर हैं हेरि हेरि मारैंगे तिनके बलते चित्रकूट
ने मंजुल मन्दाकिनी ऐसी कमान औ जलकीधारा
ऐसी वाणस्वकर आपने हाथनसों सँभारि धीर्य्यमान
ह्वैचित्रकूट अचल अहेरी कहे शिकारी मानों घात
परबैठा है व्रातकहे समूह पातकरूप घोरसावज व्याघ्र
बाराहादिकन को संहारि है भाव रघुनाथ जीको
आज्ञा ते पापनको शीघ्रही नाशकरतहै यह चित्रकूट
को माहात्म्य कहे १३६ ॥

लागिदवारिपहारढहीलहकीकपि
लंकयथाखरखोकी । चारुचुवाचहुंओ

रुचली लपटैं झपटैं सोतमीचरतो को । क्यों कहिजात महासुखमा उपमा तकि ताकत हैं कबिकोकी । मानों लसीतुलसीहनुमानहिये जगजीतिजरायकीचौकी॥१३७॥

बसन्त ऋतु में पलाशादि वृक्ष फूले सहित पहाड़ की शोभा कैसी है यथा दवारि कहे दावानल सी लागो पहाड़ ढहो कहे शोभित भई अथवा कपि हनुमान्‌जी यथा लंका को खर खाकी कहे फूंकि दये तेलहकी कहे टघिले सोना सों चारु कहे सुन्दर चुवा कहे झरना चारिहूं ओर ते चलत मानों सोई सोना बहिचलो औ फूलन की ज्योति मानों अग्नि की लपटै हैं अरु भ्रमर उड़त वा फूलन में श्यामता है सो तो की कहे छोटे छोटे तमीचर कहे निशाचर मानों झपटि रहेहैं जरतमें वा बुझावबेहेतु इत्यादि उपमा को निरादर करत काहे ते कि बन की शोभा मंगलीक है तहां दावानल की उपमा अमंगल यह दूषण है बन की सुखमा कहे शोभा महा अद्भुत है ता कहे ताको ताकिकै उपमा क्यों कहिजात ऐसा कवि को है कत कहे कहांहै जाके ऐसी बुद्धिहै गोसाईंजी कहतकि जगजीतिकी जराय कहेमणि जटित चौकी श्रीरघुनाथ जीकी दई हनुमान्‌जीके उरमें लसी कहे शोभित है भाव दिग्विज-

यको तकमाहै इहां पर्वत हनुमान्जी हैं फूलो बन सोई चौकी है १३७॥

देवकहैंअपनीअपनाअवलोकनतीरथराजचलोरे। देखिमिटैंअपराधअगाधनिमज्जतसाधुसमाजभलोरे । सोहसितासितकोमिलिबो तुलसीहुलसैहियहेरिहलोरे। मानोंहरेतृणचारुचरैंबगरेसुरधेनुकेधौलकलोरे १३८॥

अब प्रयाग जी को माहात्म्य कहत कि अपनी अपना आपुसमें देवता कहते हैं कि तीर्थराज प्रयाग को अवलोकन कहे देखन चलो काहेते जाके देखत ही दर्शनमात्र ते अगाधनि जाकी थाह नहीं ऐसे अपराध मिटिजातहैं जहां भलेभले साधुनको समाज मज्जत कहे स्नानकरत है सित कहे गौर गंगाजी अ सित कहे श्याम यमुनाजी दोऊधारा मिलि कै शोभित ताके हलोरे देखि तुलसी को हिये ते हुलास आनंद उठत है काहे ते मानों सुरधेनु के कलोरे नवीनी धेनु धौलरंगको समूह बगरेकहे फैले हरित तृण चरत हैं तहां गंगाजीके हलोरा कामधेनु की कलोरीहैं सो ऊपरहै यमुनाजी की तरंगै हरित तृण समतरे हैं भाव एकएक हलोरा कामधेनुहै१३८॥

देवनदीकहंजोजनजान कियेमनसाकु

लकोटिउधारे । देखिचलैंभगरैंसुरनारि सुरेशबनाइबिमानसंवारे । पूजाकोसाजबिरंचिरचैंतुलसीजेमहातमजाननहारे ओककीनीवपरीहरिलोक बिलोकतगंगतरंगतिहारे १३९ ॥

अब गङ्गाजीको प्रताप माहात्म्य वर्णन है देव-नदी कहे श्री गङ्गाजी के स्नान हेतुजो जन जाने को मनोरथ किये ते अपने कुलके कोटिन जीवन को उद्धार करि दिये जब चले ताको देखि सुरनारी ताके बरिबे हेतु आपुस में भगरा करत अरु सुरेश जो इन्द्र ते आपने लोक को लावबे हेतु बनाइ कै बिमान सँवारि साजि राखे अरु चन्दन फूल धूपदीपादि पूजा करिबे हेतु सब साज रचिकै ब्रह्मा धरि राखत काहेते गोसाईं जी कहत कि गंगाजी को माहात्म्य जानते हैं कौन माहात्म्य कहत हे गङ्ग तिहारे तरंगन के बिलोकत कहे देखत ही हरि के लोकमें ओककहे घरकी नेउ परतहै भाव हरिधाममें बास पावत यह जानि वा जीवके पूजा हेतु ब्रह्मा आगे ठाढ़ो रहत १३९ ॥

ब्रह्मजोव्यापकवेदकहैंगमनाहिंगिरागुणाज्ञानगुनीको । जोकरताभरताहरता

सुरसाहिबसाहिबदीनदुनीको । सोईभयोद्रवरूपसहीजुहै नाथविरंचिमहेशमुनीको। मानिप्रतीतिसदातुलसीजलकाहेनसेवतदेवधुनीको १४० ॥

जोब्रह्म सबमें व्यापकहै जाकोवेदऐसा कहतेहैं कि जेगुणी जन हैं तिनको ज्ञान करि देखिबेको गुणकरि जानबे को बाणी करि कहबे की गम्य काहूको नहीं है जो करता उत्पत्ति करन हार भरता पालनहार हरता संहार करनहार है औ जो सुर कहे देवनको साहेब दीन दुनिया को साहेब सोई ब्रह्म द्रवरूप जलरूप सही कहे सांचो सोईहै जो ब्रह्मा महादेव मुनीश्वन को नाथ है सोई जलरूप भयो है ऐसो प्रतीति मानिकै हे तुलसी देव धुनी श्री गंगाजी के जलको सदा काहे नहीं सेवत हैं १४० ॥

बारितिहारोनिहारिमुरारिभयेपरसेपदपापलहौंगो । ईशह्वै शीशधरौं पैडरौं प्रभुकीसमताबड़दोषकहौंगो। बरुबारहिबारशरीरधरों रघुवीरकोह्वैतवतीररहौंगो । भागीरथीबिनवौंकरजोरिबहोरिनखोरिलगैसोकहौंगो १४१॥

हेश्री गङ्गाजी तिहारो वारि कहे जलको निहा-

रिकै मुरारि कहे मुरआदि दैत्यनके मारिबेको सम-र्थ भये परंतु पांयन में धारण कियेपै मैं पांयन में धारण करिबे में बड़ो पापलहौंगो ताते पांयन मैं न धारण करौंगो अरुईश कहे महादेव शीश में धारण करि समर्थ भये सोमैं शीश में भी न धारण करौंगो क्योंकि शिव प्रभु हैं तिन की स-मता होवो यह बड़ो दोष है तामें दाह पावौंगो ताते बरुकु बारहुबार देह धारण करौं तामें श्री र-घुवीर को गुलाम ह्वैके तव कहे तुम्हारे तीर सदा रहौंगो हे भागीरथी हाथ जोरिकै बिनती करतहौं जामें पुनः खोरि कहे दोषन लागै सोई बात आप सों कहौंगो भाव आपके तट बास करि श्री रघु-नाथ जी को भजौं यह कृपाकरि दीजिये औरनहीं चाहहै १४१ ॥

लालचीललातबिललात द्वारद्वारदीन बदनमलीनमनमिटैनबिसूरना । ताकत सराधकैविवाहकैउछाहकछूडोलै लोल बूझतशबदढोलतूरना । प्यासेनपावहिं वारिभूखेनचनकचारिचाहतअहारतप हारदार भूरना । शोककोअगारदुखभा रभरोतौलोंजनजौलौंदेवीद्रवैनभवानीअ न्नपूरना १४२ ॥

दरिद्र की प्रबलताते लालची ह्वै ललात कहे ललचात भूखते बिललात कहे व्याकुल द्वारद्वार मांगत फिरत दीनता ते बदन कहे मुख मलीन अरु मनकी बिसूरना कहे भोजन चाहना नहीं मिटत है ताते जहां श्राद्ध विवाह वा कछु उत्साह होततहां भोजन हेतु ताकत फिरत हैं लोल कहे चंचल ह्वै डोलत जहां ढोल तूरना कहे तुरही को शब्द सुनत तहां बझताफिरत कि इहां कौन कामहै प्यासे भये पर बारि कहे पानी नहीं पावत भूख लगे पर और की कहे चारि चना नहींपावत ते जन अहार तौ पहार कहे बहुत चाहत परंतु धूरि पर ढूंढ़े एक दालि भी नहींपावत हैं शोक कहे शोच मानसी कलेश के अगार घरइ हैं जामें समूह शोक भरा है दुखकहे दैहिक दैविक भौतिकादि को बोझाबड़ा भारी है सोजन तबलौं अबलौं देविन में भवानी अन्नपूर्णा द्रवत कहे कृपा नहीं करती हैं भाव कृपा भये पर दुखदारिद्र नहींरहत देवी संज्ञामात्रभवानी रुद्राणी अन्नपूर्णा लोकिकरूप काशी जीमें है १४२ ॥

भस्मअंगमर्दनअनंगसंततअसंगहर । शीशगंगगिरिजाअर्धंगभूषणाभुजंगवर । मुंडमालविधुबालभालडमरूकपालकर । विबुधवृंदनवकुमुदचंदसुखकंदशूलधर ।

त्रिपुरारिचिलोचनदिग्बसन विषभोजन भवभयहरणा। कहतुलसिदाससेवतसुलभशिवशिवशिवशंकरशरणा १४३॥

अब शिवजी को प्रताप माहात्म्यकहत कि अंगमें चिता की भस्म लगाये पै अपावन नहीं होत औ शिरमें गंगा ऐसी पावन धारण ते अधिक पावनता नहीं काम रहित कैसे जो अनंग के मदन कहे जीतनहार हैं औ कामासक्त कैसेजो गिरजा को सदा अर्द्धांगही में राखत संतत कहे सदैव असंग रहत संगकाहूको नहींराखत पुनः संगति में कैसे राखत जे कुटिल स्वभाव के सर्प तिनके भूषण कियेहैं पुनः हर कहे जगके संहारक हैं पुनः बरकहे श्रेष्ठ रक्षक हैं पुनः कराल वेष कैसो बनाये जो मुंडमाल धरे पुनः बिशाल वेष कैसो जो बाल विधुभाल दुइज को चन्द्रमा माथे पै शोभित पुनः डमरू लिहे जामें पावननाद वेद भरो है पुनः कपाल लीन्हें जामें अपावन बस्तु भरी पुनः देव रूप नव कोकाबेलिन को मोददायक चन्द्रमा है पुनः धनादि सुख वृक्ष उपजावन को कन्द कहे मूल हैं वा सुख जल वर्षन को मेघ हैं पुनः त्रिताप नाशिवे को त्रिशूल धारण किहे हैं त्रिपुर दैत्य के अरि हैं जिनके तीनि लोचन हैं दिग्वसन कहे दिगम्बर हैं जामें सब जरे जात रहैं ऐसो विष ताको भोजन करि गये काहे ते

भंव जो संसार ताके भय हरणहार हैं ऐसे समर्थ हैं तिनको गोसाईं जी कहत कि सेइबे को सुलभ हैं काहेते शिव शिव शिव तीनहीं बार कहे प्रसन्न ह्वै सर्वस देत ऐसे शंकर की शरणहौं भाव काशी जी में परा हौं ताते कलियुग सों उबारि श्रीराम भक्ति दीजे १४३ ॥

गरलअशन दिग्वसनव्यसनभंजनजन रंजन। कुंदइंदुकर्पूरगौरसच्चिदानंदघन॥ विकटवेषउरशेषशीशसुरसरितसहजशुचि। शिवअकामअभिरामधामनितरामनामरुचि॥ कंदर्पदर्पदुर्गमदमनउमारमनगुणभवनहर। त्रिपुरारित्रिलोचनत्रिगुणपरत्रिपुरमथनजयत्रिदशवर १४४॥

गरल अशन कहे जहर है जिनके भोजनदिशा हैं वसन और वसन नहीं धारैं भाव तन पोषक नहीं हैं व्यसन कामासक्ती ताके भंजन कहे नाश कर्ता अरु जन जो दास तिनके रंजन कहे आनंद दाता कुन्दसे कोमल इन्दु से सुखद शीतल कर्पूर सम सुगन्धित गौरांग हैं अरु सत चित आनंद के घनकहे समूह हैं विकट कहे भयंकर वेष चिता भस्म कपाल माल उरमें शेषनाग लपेटे शीशपै सुरसरित गङ्गाजी सो सहजही में शुचिकहे पवित्र हैं

शिव कहे कल्याण रूप अकाम कहे काहू वस्तुकी कामना नहीं अभिराम कहे आनंद के धामहैं का हेते आनंद मई श्रीरामनाम में रुचि है कंदर्प काम के दर्प अभिमान जो दुर्गम रहै ताको दमन कहे नाश कर्ता उमा के रमण हर कहे पाप दुःखके हर्ता दिव्य गुणन के धाम हैं त्रिपुर के अरि हैं कै त्रिपुर के मथन कहे नाश कर्ता हैं तीनि हैं लोचन ताते तीनि जो गुण रज सत तम ताको बेकार देखि के पारभये त्रिदश जो देवता तिनमें वर कहे श्रेष्ठ ऐसे शिवकी जय होइ १४४ ॥

अर्धअंगअंगनानामयोगीशयोगपति। विषमअशनदिगवसननामविश्वेश विश्वगति॥ करकपालशिरमालव्यालविषभूतिविभूषण॥ नामशुद्धअविरुद्धअमरअनवद्यअदूषण॥ विकरालभूतवैतालप्रियभीमनामभवभयदमन। सर्वविधिसमर्थमहिमाअकथतुलसिदाससंशयशमन १४५॥

अर्द्ध अंगमें तौअंगना पार्बती हैं औ नाम योगीश योगिन के पतिहैं विषम भांग धतूरादि अशन कहे भोजन हैं दिगवसन दिगम्बर हैं औ नाम है विश्वेश्वर विश्वको जिनकी गति है समय पर स-

हाथ करत । हाथ में कपाल लिये गरेमें शिरन की माला अरु विषकी श्यामता अंगमें सर्प अरु बिभूति यही भूषण हैं नाम उच्चारण में शुद्ध वा पवित्र अविरुद्ध वर्ण मैत्री वा शिवनाम लेनेमें विरोधनहीं वेद धर्मते अमर मृत्यु रहित हैं अनवद्य कामादि दोष रहित हैं अदूषण अवगुण रहित विशेष कराल भूत बैतालहिं प्रिय भव जो संसार ताके भयके दमन न शक्त हैं जिनको भीम भयंकर नाम लोकहू पर-लोक सुखद सब प्रकार समर्थ है जिनकी महिमा अकथ है कोऊ कहि नहीं सक्ते शिव तुलसीदास सब प्रकार की भय हरणहार हैं १४५ ॥

भूतनाथभयहरणभीमभयभवनभूमि धर। भानुमन्तभगवंतभूतिभूषणभुजंगबर भव्यभावबल्लभभवेशभवभारविभंजन । भूरिभोगभैरवकुयोगगंजनजनरंजन ॥ भारतीबदन विषअदनशिवशशिपतंगपावककनयन । कहतुलसिदासकिनभजसि मनभद्रसदनमर्दनमयन १४६ ॥

जो सो भाविक भयावन ऐसे भूतन के तो नाथ हैं पै सज्जनन के भय हर्ता हैं औ दुष्टन हेतु भीम कहे भयंकर जो भयके भवनै हैं औ भूमि के धारण तो हैं भानुमन्त कहे प्रताप गण हैं भगवन्त कहे

षट्ऐश्वर्य युक्त हैं यथा महारामायणे ॥ ऐश्वर्यंच धर्मंचयशसाचश्रियैवच ॥ वैराग्यमोक्षषट्कोशैः सं जातोभगवान्हरिः ॥ विभूति अरु श्रेष्ठ भुजंग सोई भूषण हैं भव्य कहे मंगलकी मूर्त्ति हैं भावहै वल्लभ कही प्रिया जिनको भवश भव संसार ताके ईश हैं भव भार जो जन्म मरणादि के भंजन हारहैं भूरि कहे बड़ा है भोग जिनको जाके भय करिकै रवकहे रोदन कीन्हो है पार्वती कुयोग कहे राजद्वार विवाद शत्रु व्याघ्रादि संकट के गञ्जनहार हैं जनके रंजन कहे सुखद हैं विषको अदन कहे भक्षण किहे ताहू पै मुखमें भारती है भाव सिद्ध बचन है शिव कहे कल्याणरूप शशि वामनेत्र पतंग सूर्य दक्षिण नेत्र शीश में पावक नेत्रहैं गोसाइँ जी कहत हेमन काम नाशककल्याण भवन शिवको क्योंनहीं भजत है१४६॥

नाँगोफिरैकहैमांगनोंदेखिनखांगोक हूजनिमांगियेथोरो।राँकनिनाकपतीरिक्ष करैतुलसीजगजोजुरैयाचकजोरे।नाक सवाँरतआयोहौंनाकहि नाहिंपिनाकि हिनेकुनिहोरे।बिरञ्चिकहैगिरिजासि खवोपतिरावरोदानिहैबावरोभोरे १४७

ब्रह्माजी की उक्ति पार्वती प्रति कि शिवजी प्रभु तौ नांगे फिरतहैं अरु मांगने वालेन को देखि

कहत कि हमारे कुछु खांग नहीं है थोड़ो जानि मांगियो भाव हमको नांगो देखि संदेह न किह्यो गोसाईं जी कहत कि जग में याचक जहांतक चोरे जुरे तिन रांकनि कहे गरीबन पै रीझिनाकप इन्द्र कहे बनावत तिनके हेतु नाक कहे इन्द्र पुरी नई नई संवारत मेंहों नाकाह आया भाव मेरे नयुनन में दमभयो अरु पिनाकी जो शिव तिनके नेकु निहोरे नहीं भाव शिव को अतर को परवाहि नहीं यह विरंचि कहत कि हे गिरिजा तुम सिखावत क्योंनहीं रावरो पति बावरो भोरो दानिहै बावरो याते कहे कि नीकी बुरी बात नहीं विचारत यथा भस्मा सुर को बरदान दैदिये पीछे वहो जीवको गाहक भयो भोरे याते कहे कि बुरी को भली थोरी को बहुत समुझत यथा गुणा निधि विप्र मूर्त्ति पर चढ़ि ऊपर ते कछु पदार्थ उतारे ताको आत्म समर्पणमानि मुक्ति दिये अरु चारि चाउर पातोपर रीझत हैं यह थोड़े को बहुत मानना है १४७॥

**विषपावकव्यालकरालगरे शरणा गततौंतिहुंतापनडाढ़े। भूतबैतालसखा भवनामदलैपलमेंभवकेभयगाढ़े। तुल सीशदरिद्रशिरोमणिसों सुमिरेदुखदारि दहोहिंनठाढ़े। भौनमेंभांगधतूरोईआं

गननांगेकेआगेहैंमांगनेबाढ़े १४८ ॥

आपु कैसे हैं जो नेत्रन में अग्नि धारे गरे में विष अरु करालसर्प धारण कीन्हे भाव समग्र सौंज जरावन हारी है परंतु जो शरणागत आवत ताको ऐसेशीतल ह्वै रक्षा करत कि तीनिहुंतापै नहीं डाढ़ै नहींजराइ सकतहैं जैसीभाविक भयावनहैं ऐसे भूतबैताल ते तौसखा हैं अरुजिनको नामहू भवहै परंतु गाढ़ कहे कठिन भवसागरके भय को हरतहैं तुलसीश जोशिव जोतेदेखबेमें तौदरिद्र शिरोमणिसे लागतभाव घरमें बिभूतिही है और कुछु नहीं है अरु जो कोऊ शिव जीको सुमिरत ताके पास दुख दरिद्र ठाढ़ नहींहोत डरत है भौनमें भांग भरी आंगन में धतूर के वृक्ष लगे अरु बसन हीन नांगेहैं तिनके आगे मांगनेबाढ़ै कहे जबदेखियेतबमांगनेवालनकीभीरैभरीहैं १४८ ॥

शीशबसैबरदाबरदानि चढ़ेउबरदा घरन्योबरदाहै । धामधतूरोबिभूतिकोकूरोनिवासतहांसबलैमरदाहै । ब्यालीकपालीहैख्यालीचहूंदिशभांगकेटाटिन कोपरदाहै । रंकशिरोमणिकाकिणि भाकबिलोकतलोकपकोकरदाहै १४९

वरदानि जो शिवजी तिनके शीशपर जो बसीहैं गंगाजी तेऊ बरदाता हैं जापर चढ़े हैं नंदीश्वर तेऊ

बरदाता हैं घरणी जो पार्वती सोऊ बरदाता हैं धाम कहे घरमें धतूर के वृच्छ लगे औ विभूति को ढेर लगोहै बिशेषि निवास तहांई है जहां सबनाम मृतक लैकै मर्दित कीन्हें हैं अर्थात् चिता भूमि व्याली कपाली कहे सर्प मुण्डमाल ख्यालीकहे सौ-भाविक धारण किहे हैं धाम में चारिहू दिशि भां-गड़ो की टाटिन को परदा है आपु तौ ऐसे हैं परंतु रंक कहे दरिद्री शिरोमणिन को काकिणी भाक कहे बलिष्ठ करते हैं कौन भांति जापै दया दृष्टि बिलोकते हैं ताको लोकपति करि देतेहैं का-किणी यथा दीनदयाल औ रामलाल द्वौ में कौन ऋणी कौन धनी है यथा अ० क० च० ट० त० प० य० शादि अष्ट बर्गमें दीनदयाल नामको प्रथमाक्षर तबर्ग में है सो पंचम बर्ग है पंचको दून दश भये रामलाल यबर्ग में है सो सातवां बर्ग है सातबर्ग मि लाये दश सात सत्रह भये आठको भाग दिये एक काकिणी बची पुनः रामलाल को सतवां वर्ग सात दुनी चौदा भये तामें दीनदयाल के पांच मिलाये चौदह पांच उन्नीस भये आठ को भाग आठ दुनो सोरह तीनि काकिणी बचीं यह काकिणी बहुत है ताते रामलाल ऋणी है स्वार्थ देनेहार है क्योंकि दीनदयाल की एक काकिणी थोड़ी है ताते धनी है स्वार्थ पावनहार है थोड़ी काकिणी बली होत इत्यादि काकिणी जो निर्बली होइ तौ शिवजीकी

दया ते सबल होत काकिणी प्रमाण मुहूर्त्तचिंतामणी ॥ पद्मद्वयकसुतेर्शदि भितमसौंग्राम:शुभोनाम भात् स्ववर्गाद्विगुणां विध यपरवर्गाढ्यंगजै:शेषितं । काकिण्यस्त्वनयोश्च त द्वितरतोयस्याधिका:सोर्थदोऽथ द्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराधोनांहितंपूर्ववत: १४६ ॥

दानिजोचारिपदारथकोत्रिपुरारितहूपुरमेंशिरटीको । भोरोभलोभलभायकोभूखोभलोईकियेसुमिरेतुलसीको। ताबिनग्रासकोदासभयोकबहूंनमिट्योलघुलालचजीको। साधोकहाकरिसाधनतेजोपैराधोनहींपतिपारवतीको १५०

अर्थ धर्म काम मोक्षादि चारिउ पदार्थके दानि जेते तीनिहूं लोक में हैं तिनमें टीको कहे शिरोमणि हैं त्रिपुरारि औ भलो भोरो है भाव थोरे में प्रसन्न होत पुनः भले भावके भूखे हैं भाव जो अर्चा विधि न बने औ भाव ते करे तहूं प्रसन्न होत जो तुलसी हू ऐसो को सुमिरते भलाई कियो है ता शिवजी को सुमिरे बिना लोभ वश आश को दास भयो ताते लघु लालच कहे थोरेहू सुख के हेतु चाह नहीं मिटत तौ सब साधन करि कौन प्रयोजन साध्यो जोपै पार्वतीके पति को आराध्यो कहे सेयो नहीं तौ सब साधन वृथा हैं १५० ॥

जातजरे सबलोकबिलोकितिलोचनसो
बिषलोकिलियोहै । पानकियो बिषभूष
साभोकरुणावरुणालयसांईहियोहै । मे
रोईफोरिबेयोगकपारकिधौंकछुकाहूल
खाईकियोहै । काहेनकानकरौंबिनती
तुलसीकलिकालबिहालकियोहै १५१

जो सिंधु मथे हलाहल निसरो ताके तेज ते सब लोक जरे जातरहैं ताको बिलोकि कहे देखिकै दयाबीरता करि सोईबिषको त्रिलोचन आपही लोकि लियो भाव बिष तेज फैलने न पायो शीघ्रही पान करि गयो सोई बिषकी श्यामता कंठ में भूषित भई ऐसे समर्थ शंकरसाईं को हियो करुणा रूप जल पूरित बरुण को आलय कहे समुद्र है परंतु मेरोई कपार फोरिबे योग्य है काहेते अभाग्य भरो है किधौं मेरी खोटाई काहूने आपुसों कछुलखायदियो है जो तुलसीको कलिकालने कामादिलगाइबिहाल कियो सो मेरी बिनतीको काहेनहीं कान करत हो भाव करुणाकरि मेरी सहाय क्योंनहींकरतहो १५१॥

खायोकालकूटभयोअजरअमरतनभव
नमसानगथगांठरीगरदकी । डमरूकपा
लकरभूषणकरालब्यालबावरबड़ेकीरी

भवाहनबरदको । तुलसीविशालगोरे
गातबिलसतभूति मानोंहिमगिरिचारु
चांदनीशरदकी । अर्थधर्मकाममोक्षबस
तबिलोकनिमेंकाशीकरामातयोगीज्ञा
गतमरदकी १५२॥

शिवजी ऐसे समर्थहैं किजो शीघ्रही मृत्यु दाय-
क कालकूट बिषताको खायगये सो बिपरीत फल
दियो कि जरा मरण रहित तन भयो औरीति र-
हस्य कैसो है जो मशान में भवन कहे घरहै बिभूति
की गठरी सोई गथ कहे द्रव्य है डमरुको बाजा
कपालही पात्रकर में धारना कराल व्याल कहे
भयंकर सर्पही जिनके भूषण हैं ऐसे बड़े बावरे हैं
जो सब वाहन त्यागि एक बरदही वाहनपर रीझे
हैं गोसाईं जी कहत कि बिशाल सुन्दर गौर अंगपर
बिभूति कैसी बिलसत मानों हिमाचल गिरिपर शर-
द ऋतु की चांदनी फैली है अरु दानी कैसेहैं जि-
नकी बिलोकनि कहे दया दृष्टि में अर्थ धर्म काम
मोक्ष चारिहू फल बसत हैं मरद कहे जिनको बच-
न सदा सांचा है ऐसे शिवयोगी की करामाति रूप
काशी जागत कहे वेद पुराण में प्रकाशित है कि
कोऊ जीव तन त्यागत ताकी राम तारक मंत्र उ-
पदेश ते मुक्ति होत सो [illegible] कहे १५२॥

पिंगलजटाकलापमाथेपैपुनीतआप पावकनयनाप्रतापभ्रूपरबरतहैं । लोयन बिशालसालसोहैं बालचंद्रभालकंठका लकूटब्यालभूषणधरतहैं । देतनअघात रीझिखातपातआककेही भोरानाथयो गीजबओढरढरतहैं । सुन्दरदिगंबरबिभू तिगातभांगखातरूरे शृंगीपूरेकालकंट कहरतहैं १५३ ॥

पिंगल कहे श्वेत किंचित्अरुण मिश्रित अर्थात् भूरा जटाकलाप कहे समूह माथपै पुनीत आप कहे जल गंगा जी विराजमान पावक अग्नि में नयन को प्रताप भ्रूकहे भौंहन पर माथमें बरत है लोयन कहे नेत्र दोऊ विशाल लालवर्ण के शोभित भालपर बालक द्विज को चंद्रमा बिराजमान कालकूट विष की श्यामता कंठमें झलकत ब्यालकहे सर्पनकेभूषण अंगमें धारणकिहेआप तौ आक कहे मदार के पत्ता खाते हैं परन्तु भोरानाथ योगी जब जापै रीझि कै ओढर ढरतहैं तब देतमें अघात नहीं सुन्दर स्वरूप दिगम्बर अंगमेंबिभूति बिराजमान सदाभांगही आहार रूरेकहे भलीभांति मृगशृंगको बजावत ऐसेोअमंगल वेष परन्तु कृपाकरि पूरे कालकंटक कहे कुसमय के विघ्न अर्थात् क्रूर ग्रह दशा कुशाइति नष्ट कर्म की

उदय अस्त मृत्यु आदि स्वाभाविक हरतहैं १५३ ॥

देतसंपदासमेतश्रीनिकेतयाचकनिभव नविभूतिभाँगवृषभवहनुहै । नामबामदे वदाहिनोसदाअसंगरंगअर्द्धंगअंगनाअनं गकोमहनुहै । तुलसीमहेशकोप्रभावभा वहीसुगम अगमनिगमहूकोजानिबोगह नुहै।वेषतौभिखारीकोभयंकररूपशंकर दयालदीनबंधुदानिदारिददहनुहै १५४॥

यामें अद्भुत प्रताप है संपदा कहे द्रव्य भोजन बस्त्र राज स्त्री पुत्र पौत्रादि सर्वांग सुखसहित जन्म पर्यंत अंतकाल में श्री निकेत कहे बैकुण्ठ अर्थात् मुक्ति तौ याचकन को देत हैं अरु धन नाते भवन में भाँग अरु बिभूति मात्र है बाहन जाके बरद है नाम तो बामदेव है अरु रहत सदा सबके दाहिने हैं मन तौ असंग रंग में रंगा उदासीन रहत अरु अर्द्धांगमें अंगना जो पार्वती को लिहे हैं अरु अनंग जो कामदेव ताको महनु कहे नाश कर्त्ता हैं गोसाईं जी कहत हैं कि ऐसी महेश को प्रभाव अगम है जो निगम कहे वेदहू को जानिबे को गहनु कहे कठिन है सो एक प्रेम भावही करिकै सुगम है रूप तौ शंकरजी को भयंकर है जो कपाल माल सर्प चिताभस्म भूषित अरु स्वभाव दीननपर सदा दयालु

हैं अरु वेष तौ भिखारि कैसो है अरु दानि कैसे हैं जो दरिद्र को दहनु कहे नाश करता हैं १५४ ॥

चाहैनअनंगअरिएकौअंगमांगनेको देबोईपैजानियेस्वभावसिद्धबानिसों।बारिबुन्दचारित्रिपुरारिपरडारियेतौ देतफलचारिलेतसेवासांचीमानिसों। तुलसीभरोसोनभवेशभोरानाथकोतौ कोटिककलेशकरोमरोछारछानिसों । दारिददमनदुखदोषदाहदावानलदुनीनदयालुदूजोदानिशूलपानिसों १५५ ॥

पूजाके अंग यथा ॥ आसनंस्वागतंपाद्यमर्घंसाचमनीयकं। मधुपर्काचमनंस्नानंवस्त्रंचभरणानिच१॥ सुगन्धंसुमनोधूपंदीपंनैवेद्यवंदनं ॥ इति षोडशोपचार में एकौ अंग मांगन सों नहीं चाहत अनंग अरि जो शिवजी तिन को सहजही में बानि कहे स्वभाव सिद्ध है कि देबोई जानिये भाव देबोई भावत है कौन भांति जो बारि कहे जलके चारिहू बुन्द त्रिपुरारि पर डारिये भाव कुभाव कैसहू ताको सांची सेवा मानिकै चारिहू फल देत गोसाईं जी कहत हैं कि भव जो संसार ताके ईश जो भोरानाथ हैं जे थोड़ी सेवा में रीझि बहुत देत तिन को भरोसो न करे तौ कोटिन कलेश करि छार जो मारगकी धूरि

ताको छानि कहे ढूंढ़ि मरो पूरो प्रयोजन न होइ गो जहां मेला लागत तहां पीछे को कंगाल मार्ग की धूरि छानि ढूंढ़त कछु गिरो परो द्रब्य पावत हैं तैसे अपर देव सेवा को फल है अरु दारिदको दमन कहे नाशन हार औ दुःख जो तीनिउताप दोष जो काम क्रोधादि बनरूप दाहिबे को दावानलसम शूल पाणि सम दयालु दानी दुनिया में दूजो नहीं है एक शंकरही हैं १५५ ॥

काहेकोअनेकदेवसेवतजागैमशान खोवतअपानशठहोतहठिप्रेतरे । काहे कोकोटीउपाइकरतमरतधायधायाचतनरे शदेशदेशकेअचेतरे । तुलसीप्रतीतिबिनु त्यागेतैप्रयागतनुधनहींकेहेतुदानदेतकु रुखेतरे । पातद्वैधतूरकेद्वैभोरेकैभवेशसो सुरेशहीकीसंपदासुभायसोनलेतरे१५६

अनेकन देवतन को काहेको सेवतहै भाव प्रथमतौ विघ्न करत कदाचि विधिपूर्वक पूजाबनी तौ किंचित् वस्तुदेतहैं अरु भूतनकी सिद्धी हेतु मशान जागत सो अपान कहे अपनो शुद्ध स्वरूप काहेको खोवत जो हठ करिकै आपही प्रेत होतहै रे अचेत काहेको कोटिन उपायकरत धायधाय मरत देश देशनके नरेशनको याचत फिरत है गोसाईं जी

कहत हैं कि बिना प्रतीति जो प्रयागहू में तनुत्यागे तौ काह भयो यद्यपि तीर्थराज सब फल दायक है सो विश्वास वाले को है अरु धन पाइबे हेतु द्रव्य होको दान कुरुक्षेत्र में काहेको देतहैं भाव द्रव्य दान हेतु काहेको ढूंढ़िये द्वै पात धतूरेके दैकै भव संसारके ईश भोरानाथ को भोरे कैके अर्थात् बौराय कै तिनसों सुरेशको संपदा इन्द्र पदवीसुभाय कहे सहजही सों काहे नाहीं लेतहैं भाव जो थोड़ा परिश्रम किहे बड़ा काम होय तौ बड़ो परिश्रम न करै १५६ ॥

संघटगयंदबाजिराजिभलेभलेभटधननधामनिकरकरनिहूंनयूजैकाय । बनितांबिनीतपूतपावनसोहावनओ बिनयबिबेकबिद्यासुभगशरीरवय । यहांऐसोसुखपरलोकशिवलोकओकताकोफलतुलसीसोसुनोसावधानह्वय । जानेबिनुजानेकैरिसानेकेलिकबहुंक शिवहिंचढायेह्वैहैंबेलकेपतौवाहय १५७ ॥

गयंद जो हाथिनको संघट कहे भीर बाजीजो घोड़ा तिनको राजी कहे पांति बँधीहै औ भलेभले भटकाहे योद्धा औ धन समूह धाम कहे सुंदर घर इत्यादि निकर कहे समूह करणी को काऊ नहीं

पूजै काहे नहीं जानि पावत कि कहांते भई है पुनः बनिता जो स्त्री बिनीतकहे प्रिय वचनी पुत्र पवित्र सुधर्मी सुहावन कहे मनको सुखद है आपु विनय कहे नम्रतायुत विवेक सहित विद्या सुभग कहे निरुज शरीर इत्यादि सुख यहां कहे यहिलोक में देत औ परलोक में शिवलोकमें ओक कहेस्थान बास पावत है ताको फल सावधान ह्वैके तुलसी सो सुनो जानि कै वा बिना जाने किधौं रिसाइकै वा खेलवारमें इत्यादि काहू भाँतिते कबहूं शिवजी पै बेलके टूटे पतौवा चढ़ाये ह्वै है ताते यह ऐश्वर्य भयो है १५७ ॥

रतिसीरवनिसिंधुमेखलाअवनिपत्ति अवनिपअनेकठाढ़े हाथजोरिहारिकै । संपदासमाजदेखिलाजसुरराजहूके सुख सबबिधिबिधिदीन्हेहैंसँवाँरिकै । यहां ऐसोसुखसुरलोकसुरनाथपद ताकोफल तुलसीसोकहैगोबिचारिकै । आकके पतौवाचारिफूलकेधतूरेके द्वै दीन्हेंहोइ हैबारकपुरारिपरडारिकै १५८ ॥

रति सम सुन्दरि रवनि कहे स्त्री सिंधुहै मेख-ला कहे घेरे तावत् पृथ्वीको पति चक्रवर्ती जाके आगे अवनिप जो राजा अनेकन हारिकै हाथ जोरे

ठाढ़े हैं जाकी संपदा समाजको विभवदेखिकै सुरराज जो इंद्र तिनहूंके लाज होतहै काहेते सर्बबिधि कोसुख विधिने सँवारिकै दीन्हो है ऐसो सुख तौ इहांइहि लोकमेंहै अंतसमय सुरलोकमें सुरनाथ इंद्र पदवीकोपावत ताको फल तुलसी बिचारिकै कहैगो मोसुनौआक मदारके चारिपतौवा वा चारि फूल वा दुइफूलधतूरके कबहूं एकबार त्रिपुरारिपरडारिदीन्हे ह्वै है ताते यह ऐश्वर्य भयो है १५८ ॥

देवसरिसेवौबामदेवगाउंरावरेहीनाम रामहीकेमांगिउदरभरतहौ । दीबेयोग तुलसीनलेतकाहूकोकछुकलिखीन भलाईभालपोचनकरतहौ। येतेपरहूकोऊ जोरावरेहोइजोरकरै ताकोजोरदेवदीन द्वारेगुदरतहौ । पाइकैउराहनोउराहनो नदीजेमोहिंकालिकालाकाशीनाथ कहेनिवरतहौ १५९ ॥

एक समय शिव उपासक पंडित गोसाईं जीकी महिमा देखि सहि न सके तब अनेक उपद्रव करे जब एकौन चलो तब हारिकै गोसाईं जी सों विनती करि कह्यो कि हमको मांगन देहु यहकि तुम काशी जी से चले जाउ तब यह कवित्त बनायशिव मंदिर में लगाय चित्रकूट को चले गये जब वे लोग

शिव मंदिर को गये तब पट बंद देखे भीतर ते बाणी भई कि तुमने भागवतापराध कियो है सब मरिजाहुगे तब सब दौरि गोसाईं जी को लाये सो कहत कि हे बामदेव जी रावरे कह आपके गाउं काशी को औ देवसरि श्री गंगाजी को सेवन करत हौं अरु श्री रामनाम लैके मांगके पेट भरत हौं भाव औरको आशा नहीं है जो तुलसी देवे योग्य नहीं है तौ मैं काहूको कछु लेतहूतौ नहीं हौं जो मेरे भाल कहे माथ में भलाई करनी नहीं लिखो है तौ काहूको पोचकहे बुराईभी नहीं करत हौं येतेहू पर बे प्रयोजन जो कोऊ रावरेको ह्वै कै अर्थात् आपुको सेवकादि कोऊ मेरे ऊपर जोर करै ताको हाल दीन जनजो मैं हौं सोहे देव शंकर जी आपुके द्वार पर गुदरत कहे आपुसों जाहिर करत हौं काहेते मैं आपुको जनावत कि मैं श्री रघुनाथ जी को किंकर हौं मेरा हाल जानिकै कदाचि श्री रघुनाथ जी आपु सोंकहैं कि हमारे सेवकको संकट तुम्हारे सेवकन ते भयो तुम क्यों न सहाय भये ऐसा उराहनो श्री रघुनाथ जी सों पाइकै फिरिआपुमोको उरहनो न दीजो कितूने हमसों काहे नहीं कहा ताते हे काशीनाथ कालिकाला कहे कधी काल यह बात परे ताहेतु हौं कहे मैं कहेहौं निवरत हौं अर्थात् कहिकै छुट्टी लेत हौं भाव आपने स्वामीसोंअर्जकरौंगो तौ आपपै बदनामीआवैगी१५६॥

चेरोरामरायकोसुयशसुनितेरोहरपाइ तरआइरह्योंसुरसरितीरहौं । वामदेवराम कोसुभावशीलजानियतनातोनेह जानि यतरघुवीरभीरहौं । अधिभूतवेदनविषम होतभूतनाथतुलसीबिकलपाहिपचतकु पीरहौं । मारियेतौअनायासकाशीबा सखासफलज्याइयेतौकृपाकरि निरुज शरीरहौं १६० ॥

हे हर मैं श्री रामराय को चेरो गुलाम हौं सो काशी जी में मुक्तिदायकहौं ऐसा सुयश वेद पुराण में सुनि आप के पांयन तर शरणागत सुरसरि जी गंगा जी के तीर काशी जी में आइकै रह्यों आपुके भरोसे ते हे वामदेव श्री रघुनाथजीको स्वभाव अरु शील आपु जानतहौ कि भक्तन के सदा सहायक हैं ऐसे स्वामी को मैं सेवक हौं यह नातो ताको ने[illegible] सोऊ आपु जानत हो कि प्रभु भक्त वत्सल हैं ताते मेरे बने बिगरे की भीर कहे फिकिरि श्रीरघु-नाथ ही जीकोहै ऐसा जानिकै हे भूतनाथ भूतकहे अधिभूतागणनते अर्थात् भैरवादिकन करिकै वापंच भूतन करि कै वेदन कहे दुःख बिषम कहे कठिन होततेहि कुपीर करिकै पचत कहे श्रमित बिकल हू तुलसी जी मैं सो पाहि कहे आपुकी शरण हौं

काहेते आपु भूतन के नाथ हौ तहां भूतन करि कै जो बाधा होइ सो आपु को रक्षा करिबे को चाही ताते यह आपुते मांगतहौं कि जो मारिये तौ खास काशीवास में मृतक को जो फल जो श्री राम धाम की प्राप्ति सो अनायास पावौं अरु जो जियाइये तौ कृपाकरि ऐसा कीजै जामें निरुज शरीर कहे रोगरहित देह रहै एक समय काशी के कोतवाल भैरवजी देख्यो कि हमारी पुरी में यह आपना हुकुम चलावत है ताही ईर्षाते कोपकरि बाहुपीर पैदा किये तब गोसाईंजी हनुमान्‌जीको स्मरणकरे तुरन्त हनुमान्‌जी भैरवको डाटिदिये पीड़ा मिटि गई ताही समय ये कवित्तन ते शिवजीसों प्रार्थना करत १६० ॥

जीवेकीनलालसादयालुमहादेवमो हिं मालुमहैतोहिंमरिबेईकोरहतुहौं । कामरिपुरामकेगुलामनि कोकामतरु अवलंबजगदंबसहितचहतुहौं। रोगभयो भूतसोकुसूतभयोतुलसीको भूतनाथपा हिपदपंकजगहतुहौं।ज्याइयेतौजानकी जीवनजनजानिजिय मारियेतौमांगी मीचुसुधियेकहतहौं १६१ ॥

हे दयालु महादेव जी मोहिं जीबेकी लालसा

नहीं है यह बात तुमको मालूम है कि तुलसी म-
रिबेहो को काशीजीम रहत है काहेते काशी जी
में मरे सौभाविक मुक्तिपावोंगो दूसरे कलि प्रेरित
विघ्न कर्ता कामताके आपुरिपुहैं तौ इहां कामक्यों
विघ्न करैंगो पुनः जे श्री रामके गुलाम हैं तिनको
आपु कल्पबृच्छ हौ भाव सब फलदायक हौयाते
जगदंब जो श्री पार्वती जी सहित आपुको अवलंब
कहे भरोसा चाहत हौं ताहूपर भैरवादि कोपकिये
तेहि प्रेरित भूत बाधाते मेरे रोग भये तौ आपुकी
पुरीको बास तुलसीको कुसूत कहे अरभ्यो सूतभयो
जाको गाहक कोऊनहीं भाव आपने स्वामी की
पुरी छांड़ि आपुकी पुरीमें बसे आपुहीके सेवक दुःख
देतेहैं तौ अब आपने स्वामी सौं कौन मुंहुंलाइदा-
दिकरौं ताते जिन ते मोको बाधाहै तिन भूतन के
आपु नाथ हौ याते पाहि कहे शरण ह्वै आपुही
के पद पंकज गहत हौं कि जो जियाये तौ श्री
जानकी जीवन को जन जानि कै मोको जियाइये
भावनिर्विघ्न राखिये अरु जो मारिये तौ मीचु जो
मौत सो मुहँ मांगी पावौं यह बात मैं सुधिये कहे
सहजही कहतहौं यामें कछु दुघट नहीं १६१ ॥

भूतभवभवतिपिशाचदूतप्रेतप्रियआप
नो समाजशिवआपुनीकेजानिये । ना
नावेषवाहनविभूषणाबसनबासखानपा

नबलिपूजाविधिकोबखानिये । राम केगुलामनिकीरीतिप्रीतिसूधीसबसब सोंसनेहसबहीकोसनमानिये । तुलसी कीसुधरैसुधारेभूतनाथहीके मेरेमाय बापगुरुशंकरभवानिये १६२ ॥

हे भव महादेव जी हे भवति पार्वती जी आप दोऊजने को भूत पिशाच प्रेतही दूतप्रिय हैं तेहि आपनो समाज को हाल हे शिव जी आपनी की भांति जानत हौकि नाना कहे अनेक वेशयथा कपाली दिगंबर जंगमादि जिनके अनेक वाहन खरशूकर श्वान शृगालादि अनेक भूषण मुंड माल सर्प विभूति अनेक भांति वसन कखाय आरद्र बाघंवरादि वास चिता भूमिखान कहे भोजन भांग धतूर मांसादि पानसुरा रुधिरादि जीव वलिदानादि पूजाकी विधिको बखान करै इत्यादि सब समाजको हाल प्रसिद्ध है शिव संहिता में शिवजी आपही कहे शिवा प्रति यथा शिवउवाच ॥ मद्भक्ताअपि वामोरु तमउद्रिक्तचेतस: ॥ अधोऽधोगतिमायांति निंद्याज्ञानमयोमुने ॥ कामक्रोधभयोद्वेगहिंसामिथ्यादिकर्मण: ॥ मदिरामांससर्वाशोरामवैमुख्यकारणम् ॥ तामसीत्वंतुशक्तिर्मे सर्वदामदिराशना ॥ मांस मैथुनहिंसादि विहाराजनमोहिनी ॥ तथैवतवभक्ताश्चमांसमैथुनमद्यपा: ॥ मिथ्यामोहवशामूढा मानि

न:पशुहिंसका: ॥ शौचाचारविहीनाश्च भूतप्रेतपिशा
चका: ॥ वेतालाराक्षसायक्षा:क्रूरा:सिंदूरचिह्निता: ॥
शूद्राश्चांडालगौडाश्च भेदभिल्लाश्चपुष्कशा: ॥ कु
विंदाश्चर्मकाराश्च येचान्येहीनजातय: ॥ तेषांत्वं
परमादेवीतामसीनांतम:प्रिया ॥ स्वभावएषतेगौरि
दुर्निवार्य्यामयापिच ॥ इत्यादि स्वभाव वाले शिव
पार्वतीके प्रिय सेवक हैं अरु रामके जे गुलाम हैं अ-
र्थात् राम भक्त तिनकी रीति प्रीति सब सूधी है
यथा ॥ कोमलचितदीननपरदाया । मनक्रमवचमम
भक्तअमाया ॥ प्रमाणं महारामायणे शिववाक्यं ॥
शांता:समानमनसश्च सुशीलयुक्तास्तोषक्षमागुणदया
ऋजुबुद्धियुक्ता: ॥ विज्ञानज्ञानविरति:परमार्थवेत्ता
निर्धामकोऽभयमन:सचरामभक्त: ॥ ऐसी रीतिहरि
भक्तन की सीधी ताते सबसों सनेह राखत अरुसब
को सन्मान करत भाव यहकि हमारी रीति रहस्य
सूधी अरु हे शिवजी आपके सेवकनकी रीति रहस्य
टेढ़ी तो स्वाभाविक बैर भयो तो मेरो निर्बाह कैसे
होइगो याते आपसों अर्जकरत हौं कि आप भूतनके
नाथ हौ ताते आपही के निबाहे तुलसीकी सुधरैगी
काहेते मेरे बाप अरु गुरु आपही शंकरजी हौ अरु
माता पार्वतीजी हैं ताते आप भूतन को हटकिदेहौ
तौ मेरे ऊपर विघ्न न करैंगे तौ मेरो निर्वाहहै १६२ ॥

गौरीनाथभोलानाथभवतभवानीनाथ

विश्वनाथपुरफिरिआनकलिकालकी ।
शंकरसेनरगिरिजासीनारि काशीवासी
वेदकहीसहीशशिशेखरकृपालकी । छ
मुखगणेशतेमहेशतेपियारेलोगविकल
विलोकियतनगरीविहालकी । पुरीसुर
वेलिकेलिकाटतकिरातकलि निठुरनि-
हारियेउघारिडीठिभालकी १६३ ॥

गौरीनाथ कहे सर्वोपरि गुरु हौ भोरानाथ कहे अति दानीहौ भवानीनाथ कहे अरिमर्दनहौ भवत कहे भव के अंत कर्त्ता ऐसे विश्वनाथ जगके रचक तिनकी खास पुरी काशीजी में कलिकाल की दुहाई फिरी भाव प्रचंड अदल भयो कैसी काशी पुरी है जहां के बासी नर शंकर से कहे पुरुष सब शंकर रूप हैं औ नारी गिरिजासी कहे पार्वती रूप हैं ऐसी बाणी वेद कहत तापर शशिशेखर कृपाल जो महादेव तिनकी सही कहे मोहरी दस्तखतहै ता काशी के बासी महेशको षट्मुख गणेश ते अधिक पियारे हैं ते लोगन को बिकल बिलोकियतहै काहेते नगरी काशी को कलिकाल ने अधर्म प्रबल करि पुरबासिन को बिहाल करि दीन्ही कौन भांति सब फलदायक कल्प लता रूप काशी पुरीको किरात रूप कलियाल निर्दयी काटत है भाव धर्म कर्म

नाशकिहे देतहै तापैक्रोधकरि भालकीआंखिउघारि
अग्निमें दृष्टिसों निहारिये जामैंभस्म ह्वैजाय १६३ ॥

ठाकुरमहेशठकुराइनि उमासीजहांलो
कवेदहूबिदितमहिमाठहरकी । भटरुद्रग
गापतगणपतिसेनापतिकलिकालकीकु
चालकाहूतौनहरकी। बसीविश्वनाथकी
विषादबड़ोबाराणसीबूभियेनऐसीगति
शंकरशहरकी । कैसेकहैतुलसीवृषासुर
केवरदानिबानिजानिसुधातजिपियनि
जहरकी १६४ ॥

महेश ऐसे जहां के ठाकुर उमा पार्वती ऐसी
जहां की ठकुराइनि जेहि ठहर कहे ठांवकी महिमा
लोक वेदहू में बिदित है कि काशीजी में कोऊ
जीव मरत ताकी मुक्ति होत औ प्रलयकारक बीर-
भद्र ऐसे भट जहां रुद्र के गण हैं सेनापति षड़ा
नन अरु गणेश ऐसे ऐसे सो काशी में कलिकाल
ने कुचाल चलाई ताको काहू तौ न हर की कहे
मने न करी ताते विश्वनाथहू की वाराणसी में
बड़ो बिषाद आनि बसो यह अनुचितहै कि शंकर
ऐसे समर्थ के शहरकी ऐसी गति न बूभिये न
चाहिये तामें मान मूर्खता करत कि ऐसी हाल

क्यों न होइ परंतु बड़े की बात कहना अनुचित है ताको तुलसी कैसे कहै कि सुधा तजि जहर पीवे की बानि कहे स्वभावही शंकर को जानि परत है कि वृषासुर जो भस्मासुर ताके बरदानीहैं भावबिना बिचारे बरदान दै पीछे आपही को भागने को परो तौ कलिकाल को सन्मान करि पुरी को विहाल कराइबो कछु आश्चर्य की बात नहीं है यह कहिबो मानमर्षता है १६४ ॥

लोकवेदहूँविदितबाराणसीकीबड़ा
ईबासीनरनारिईशअम्बिकास्वरूपहैं ।
कालनाथकोतवालदण्डकारिदण्डपा-
णिसभासदगणपसेअमितअनूपहैं ।तहां
ऊंकुचालिकलिकालकीकुरीतिकैधौं
जानतनमूढ़इहांभूतनाथभूपहैं । फलैफ
लैफैलैखलसीदैंसाधु पलपलबातीदीप
मालिकाठठाइयतसूपहैं १६५ ॥

बाराणसी काशीजी की बड़ाई लोक बेदहू में विदित सब जानत हैं कि जहां स्वाभाविक जीवन को मुक्ति देनहारी है अरु जहां के बासी नर ते ईश कहे शिव रूप हैं औ नारी ते अंबिका कहे पार्वती रूप हैं औ कालनाथ जो भैरवसे जहां के कोतवाल हैं ते [illegible] दण्ड करिबे

हेतु पाणि जो हाथ तामें दण्ड लीन्हे हैं अरु सद्सभा कहे न्याय करने वाले गणपति सरीखे अनेकन अनूप हैं जिनकी समता को दूसरो नहीं है तहांऊ काशीजी में कलिकालकी चलाई कुचाल कहे जुवा चोरी ठगी परनारी वेश्यादि रत असत् बार्ता हिंसा में प्रीति इत्यादि सौभाबिक सब करत हैं औ कुरीति कहे वेद लोक मर्याद त्यागे यथा देवता साधु गुरु तीर्थ सत्कर्म निरादर माता पिता त्यागादि कलियुग निश्शंक करि रह्यो है कैधौं मूढ़ यह जानते नहीं हैं कि यहां के भूप भूतनाथ महादेव हैं तिनको प्रभाव नहीं जानत काहे ते ऐसो अनीति चलाये हैं कि खल जे हैं कुमार्गी ते फैलत कहे बढ़त फूलत फलत कहे जो मनोरथ करत सो सफल होत अरु साधुजे हैं सुमार्गी ते पल पल प्रति संदत कहे दुःखित होत सो यही मसला ठहरो कि दीपमालिका की राति को घृत तैल तौ खाइ दिया बाती ठेठावजाइ सूपकुमा-र्गता करै खल दुख पावै साधु १६५ ॥

पञ्चकोशपुण्यकोस्वारथपरारथको जानिआपआपनेसुपासबासदियो है । नीचनरनारिनसँभारिसकेआदरलहतफ लक्रादरबिचारिजोनकियोहै । बारीबा

रारासोबिनुकहेचक्रचक्रपाणि मानि हितहानिसोसुरारिमनभियोहै । रोषमें भरोसोएकआशुतोषकहिजात विकल बिलोकिलोककालकूटपियोहै १६६॥

काशीपुरी में कलिकाल कुचाल चलाई शिवजी क्यों न हटके यह सन्देह पूर्व कवित्त में किये रहे ताको समाधान करत कि हे शिव जी आप को खोरि नहीं है यह लोगन के कर्मन के फल हैं काहेते असी वरुणा पर्य्यन्त सुरसरितट पंचकोशांतर काशी चेत्र पुण्य को कोष कहे खजाना है ताते स्वारथ जो लोक सुख परारथ परमारथ जो परलोक सुख सो इहां सौभाविक सिद्धि होइगी ऐसा सुपास आपजानि लोगन को इहां बासदिये आपने ऐसा आप को आदर ताको इहांके नरनारि नीच सँभारि न सके कि शंकर ऐसे दयालु हैं कि हम ऐसे तुच्छ जीवन को इहां बासदिये जाते सब बात हम को प्राप्तभईयह विचारतजि जातिविद्यामहत्वमेंअपनपौ मानि शुद्धधर्म में कादर बिना विचार अभिमान करै ताको फल लहत कहे पावत हैं तहां कर्म फल पाइबो सही माना तहां सबलको अरु मित्र को काम बिगारिबे में भय तौ चाहियेकाहेते सबल के दण्डको शोच होत मित्र के गिल्ला को संकोच होत ताको दृष्टांत देखावत कि देखो जा समय

काशीराज मिथ्या वासुदेव बनि द्वारका को चढ़ि गयो ताके मारिबे हेतु श्रीकृष्ण सुदर्शन को आज्ञा दीन्हें सो सब सेना भस्म करि पीछे काशीपुरी को भी भस्मकरि दियो सो कहत कि चक्रपाणि जोभग-वान् तिनको आज्ञा बिना चक्रने वाराणसीकोबारी कहे जराइदई तामें कछु भगवान् को खोरि नहीं रहै ताहू पै भगवान् बिचारे कि हमारे हितकार शं-कर को हानि भई यह बिचारिकै इतने बड़े मुरा-रि तेऊ हित संकोच ते डरे तहां कलिकाल भूत रूप सो भूतनाथ को पुरीमें विघ्न करत क्यों नहीं डरत है ताते सजाय देबे योग्य है अरु हे शिव जी जो पुरवासिन के पापन करि आपु क्रोधित हैं तामें एक भरोसा है कि आपु आशुतोष शीघ्रही प्रसन्न होन वाले कहावतहौ काहेते लोकको बिकल बिलोकि कै कालकूट विषको पान करि पचाइ डारे ताते लोक सुखी भये तैसे पुरवासिन के अपराध करि जो क्रोध है ताको पचाय लोगन को सुखीकोजै जो कलियुग विघ्न करै तौ सजाइ पावै १६६ ॥

रचतविरंचिहरिपालतहरतहर तेरे हीप्रसादजगअगजगपालिके । तोहिमें बिकासविश्वतोहिमेंबिलास सबतोहिमें समातमातुभूमिधरबालिके । दीजैअव

लंबजगदम्बनबिलंबकीजे करुणातरं गिनिकृपातरंगमालिके । रोषमहामारी परितोषमहतारी दुनिदेखियेदुखारी मुनिमानसमरालिके १६७ ॥

काहू समय महामारी परी ताके निवारिबे को अधिकारी जानि पार्वतीजी को आदि शक्ति मानि स्तुति करत कि भूमिधर हिमाचलगिरिकी बालिके हे पार्वती जी मातु अग जग जो स्थावर जंगम-मय जो जगत् है ताके पालन हारीही काहेते ब्रह्मा रचत उपजावत हरि पालन करत हर संहार करत सो आपही के प्रसादते भाव सबमें जो शक्ति है सो आपही को रूप है औ विश्व जो संसार सो तुमहीं में बिकास कहे उपजत तुमहीं में विलास कहे पालन होत तुमहीं में समात कहे लय होत भाव जगको आधार त्रैगुणात्मक माया आपुही को रूप है ताते हे जगदम्ब मातु जगको अवलंब दीजै रचा करिबे में बिलंब न कीजै काहेते करुणा कही जो परदुःख देखिके आपुदुखीह्वै वाको दुःखहरिबेकी इच्छा करै सो करुणा तरंगिनि कहे करुणा जल पूरित नदीहौ अरु कृपा कही निर्हेतु रचा करै कि सबके रचक हमहीं हैं ऐसी कृपा रूप तरंगन की आपु मालाहौ भाव सदा कृपा उठत है ते तुम वर्तमान हौ तहां महामारी रोष किहे जगको खाये

जात अरु जगकी महतारी ह्वै आपुके परितोष कहे संतोष बना है हे मुनिमान सम्रालिके दुनौ जो दुनिया ताको दया दृष्टि ते देखिये तौ सब महादुखारी हैं ताते रचा कीजिये १६७॥

निपटबसेरेअघअवगुणघनेरेनरनारि ऊअनेरेजगदंबचेरीचेरेहैं। दारिददुखारीदेखिभूसुरभिखारी भीरुलोभमोहकामकोहकलिमलघेरेहैं। लोकरीतिराखिरामसाखीबामदेवजानि जनकीबिनतिमानिमातुकहिमेरेहैं। महामारीमहेशानिमहिमाकीखानिमोदमंगलकीराशिदासकाशीबासीतेरेहैं १६८॥

यद्यपि पुरके बसेरे नर नारीऊअनेरे कहे अनीति में रत हैं ताते अघ जो पाप अरु अवगुणघनेरकही बहुत हैं तथापि हे जगदम्बपुरबासी आपुके चेरी चेरे हैं हे देविसबलोग दरिद्र करिकै दुखारीहैं ते भूसुर ब्राह्मणअरु भिखारिन को देखि कैभीरु कहे डरत किकछु मांगे न भाव धर्मते बिमुख ताते काम क्रोध लोभ मोह कलिमल जो पाप इत्यादि सब घेरे हैं तिन की रचा करनी आपु को उचित है देखिये श्री रघुनाथजी लोकरीति राखे अर्थात् आपने पुरबासिन को ऐसे पाले कि जन्मभरि सुखीराखे यथा

दैहिकदैविकभौतिकतापा।रामराजनहिंकाहूव्यापा ॥ पुनः अन्त काल परे धाम को साथै लैगये यहिबात के साखी बामदेव शिवजोहैं अस जानिये हे महेशानि आपु महिमा की खानि हौ अर्थात् अधमन को उद्धार करत हौ अरु मोद जो मानसी आनन्द है मंगल जो लोक उत्सव ताकी राशि हौ तौ काशी बासी तौ तेरे दास हैं ताते जनकी विनती मानि हे मातु महामारी सों कहिदीजै कि काशी बासी लोग मेरे दास हैं इनकोन सतावो १६८ ॥

लोगनकोपापकैधौं सिद्धसुरशापकै धौं कालकेप्रतापकाशीतिहूंतापतईहै। ऊंचेनीचेबीचकेधनिकरंकराजारायह ठनिबजायकरिडीठिपीठिदईहै। देवता निहोरेमहामारिन्हसोंकरजोरे भोरानाथजानिभोरेआपनीसीठईहै । करुणा निधानहनुमानबीरबलवानयशराशिजहांतहांतैंलूटिलईहै १६६ ॥

पुरबासी लोगन को पाप उदय है कैधौं सिद्धन की व देवतन की शाप भई है कैधौं कलिकाल के प्रताप ते काशी पुरीके बासी दैहिक दैविक भौतिकादि तीनिउ तापन करि तईं कहे तप्त भये हैं काहे ते ऊँचे जे ब्राह्मणादि नीचे जे शूद्रादि बीच

के क्षत्री वैश्यादि धनिक साहूकारादिक गरीब राजा मण्डलेश्वरराय छोटेराजा इत्यादि हठकरि बजाय कहे खुलिकै जहां दृष्टि चाही तहां पीठिदई भाव दानादि धर्म ते विमुख भये ता अधर्म बलपाइ अरु भोरानाथ को भोरे कहे बौरहे जानिकै महामारी आपनीसी आपनी चाही बात ठई कहे ठानी है भाव प्रचण्ड ह्वै आपनो प्रताप फैलाये ताके निवारण हेतु देवन सों निहोरा किये कोऊ रक्षा न करि सक्यो अरु महामारिन सों करजोरे सोऊक्षमा न भई ताते हे करुणा निधान बीर बलवान् श्री हनुमान्जी जहां दुर्घट काम काहू को बनावो न बनो तहां यश की राशि तैंहीं लूटि लई है भाव सिन्धु नांघिबो सजीवनि आनिबो आदि तैसी काशी की रक्षा करि यहां भी यश लूटि लीजै एक समय काशीजी में महामारी परी आधा शहर मरिगयो तब गोसाईंजी सों पुकारे तब गोसाईंजी पार्वती शिवादिकी बिनतीकरेजब काहूने सहायन कियोतब हनुमान्जीसों स्तुतिकरे तुरन्तबाधा मिटिगई१६६ ॥

शंकरशहरसरनारिनरवारिचरविक-लखौमहामारिमहामाजाभईहै । उछर-तउतरातहहरातमरिजात भभरिभगातज-लथलमीचुमईहै । देवनदयालमहिपा

लनकृपालचितवाराणसीबाढ़त अनी तिनितनईहै । पाहिरघुराजपाहिकपि राजरामदूतरामहूकी बिगरीतैंहींसुधारि लईहै १७०॥

आषाढ़ में प्रथम पानी बर्षै भूमि को विकारले ताल में गये ताके फेना में घाम लागे ते जहर तुल्य ह्वैजात ताको माजा कहत ताके स्पर्श ते जलचर व्याकुल ह्वै मरिजात सो कहत कि शंकर शहर काशी सोई सरकहे तड़ागहै तहां महामारी माजा भई तामें पुरबासी नरनारि बारि कहे जल ताके चर मीनादि सम बिकल भभरि घबराय कै भागतउछरत उतरातहहरिकहे हायहाय करि मरि जातहैं काहेते जलहू थल मृत्युमयी ह्वैगई वा थल जो भूमि सोई भूमि जलहै सो मृत्युमयी ह्वैगई है काहेते वाराणसी कहे काशीमें अनीति नित नई बढ़त जातहै ताहीते देवताभी दयाल नहीं होत औ महिपाल जो राजा तेऊ कृपाल चित्तनहीं नित दण्डदायकहैं ताते हे रघुराज पाहिकहे आपुकी शरणहौं हे कपिराज श्रीरामदूत श्रीहनुमान् जी आपुकी शरणहौं काहेते जहाँ श्रीरघुनाथहूजी को काम बिगरो तहां तुमहीं सुधारिलई भाव श्रीजानकीजीकी खबरिलाये संजीवनिलाये इत्यादि १७०॥

एकतौकरालकलिकालशूलमूलतामें
कोढ़मेंकीखाजुसीशनीचरोहैमीनकी ।
वेदधर्मदूरगयेभूपचोरभूपभये साधुसिद्ध
मानजनविषेपापपीनकी । दूबरेकोदूस
रोनद्वारराममयाधामरावरेईगतिबलवि
भवबिहीनकी । लागैगीपैलाजवाबिरा
जमानविरदहि महाराजआजुजोनदेतदा
दिदीनकी १७१ ॥

एक तौशूल कहे दुःखको मूल कलिकालही कराल है ताहूमें कोढ़मेंकीसो खाजुमीन राशिपै शनीचरो कहे शनीचरकी दशा मीन राशिपर जब होत तब महा उपद्रव होतयथाजातकाभरणे । भवेद्दशायांननु भानुसूनोर्मीनोपपातस्यचमानवानां । नानापुरग्रामध नांगनाभ्यः सुखंतथोत्साहविहीनताच ॥ अथवा मीनराशिपै शनीचर आयोहै तहां जब कन्या मिथुन धन मीन इन राशिनपै शनिश्चर आवत तब महा उपद्रव राजनको नाश रुधिरते भूमि पूरित यहमयूर चित्रमें नारदजी का बचन है यथा मैथुनस्त्रीधनुर्मी नाराशौमंदोयदाभवेत् । तदाभूपाविनश्यंतिपृथ्वी शोणितपूरिता ॥ तहांमीनपैशनीचर कहिबेते गणित करि यह सूचितहोत कि सोरहसै पैंतिस प्रारंभते

छत्तिस सैंतिस कुछ दिनतक शनीचर मीनराशि पर रहाहै इतनहीं संवतन को यह ग्रंथबनाहै मानस रामायणके पोछे प्रथम यहै ग्रंथ बनायेहैं सोकहत कि वेदको जो धर्महै सत्य शौच तप दानादिते सब लोकचाल ते दूरिगये असचोरजेहैं असत्य अपावनता हिंसादि तिनको राजा जो अधर्महै सोई राजा भयो भाव अधर्मको प्रचार भयो तातेसाधुजे साधक जनहैं अरुसिद्ध मानजनके उरमें पापपोन कहे पुष्ट होबेको बिये कहे बीज होत भयो भाव अधर्मपाप को बीजहै तौ सुकृति करि दूसरे लोगन को दूसरो द्वारनहीं है हे श्रीरघुनाथजी दया धाम योगादि बल अरु तपादि बिभव करिकै हीननको रावरेही गतिहै ताते हे महाराज जो आजु दीननको दादि- नहीं देतेहौ तौ वह जो बिराज मानआपुकोबिरद है ताको निश्चय करिकै लाजलागैगी भावबिरद बर्णन करत लोग लज इँगे याते दीन कोदादिदीजै १७१ ॥

राममनाममातुपितुस्वामिसमरथहितु आशारामनामकोभरोसोराम नामको । प्रेमरामनामहींसोंनेमरामनामहीकोजा नोंनमरमपददाहिनोनबामको । स्वारथ सकलपरमारथकोरामनाम रामनामही नतुलसीनकाहूकामको । रामकीशपथ

सर्बसमेरेरामनाम कामधेनुकामतरुमोसे छीणछामको १७२ ॥

मेरे श्रीरामनामही माता पिता हैं श्रीराम नाम हीसमर्थ स्वामीऔ हितकारहैं सब मनोरथपूर्ण होने की आश श्रीराम नामही कीहै सबसों रक्षा करिबे को भरोसा श्रीराम नामही कोहै प्रेमप्रीति श्रीराम नामही में श्रीराम नामही जपिबेको नेमहै दाहिन बाम कहे आस्तीक नास्तीक मारगमें पग कहे चलि बेको मर्म कछु नहींजानतहौं स्वारथसकल भांति को लोकमें औरपरमारथ कहे परलोकको श्रीराम नामहीहैगोसाईंजी कहतकिजो श्रीरामनाम करिकै हीनहैं सोकाहू कामको नहींहैं याते सर्बसमेरे श्री राम नामही है श्रीरघुनाथजी की शपथ खाइकै यह बात कहत हौं कैसो है श्रीरामनामजो मोसे छीण कहे दूबरेन को छाम कहे हलके नीचन को कामधेनु कल्प वृक्ष समान है १७२॥

मारगमारिमहीसुरमारिकुमारगको टिककैधनलीयो। शंकरकोपसोपाप कोदामपरीक्षितजाहिगोजारिकैहीयो। काशी में कंटकजेतभयेतेगेपाइअघाइ कैआपनोकीयो। आजुकिकाल्हि

परोंकिनरों जइजाहिंगेचाटिदेवारिको दीयो १७३ ॥

जे कुमार्गी जन हैं ते मारग में राहगीरन को मारि औ ब्राह्मणन को मारि और कोटिन भांति कुमारग करिकै जे धन लीन्हे इत्यादि पापकेही- न्हें दाम जोहै धन सो शंकर के कोप करिकै परी- छित कहे प्रसिद्ध उन कुमार्गिन को हियो जराय कै सब धन जायगो भावराज दंड चोर दंड अग्नि दंड इत्यादिते हृदय तप्त सहित धन गयो काहेते जेते कंटक विघ्न कर्ता काशी जीमें भयेते आपने कीन्हे जो पाप ताको फल दुःख अघाय पायकै गये कहे नाश भये ताही भांति वर्त्तमान में कु- मार्गी हैं ते आजु वा काल्हि व परों व नरों भाव चारिही दिन में देवारीकै सो दिया चाटिकै जरि जाहिंगे यथा पावस में मशा डंशादि उपद्रवीजीव बाढ़े हैं तिनको वादा देवारी तक है जहां देवारी को दिया चाटे तहां हिमकी प्रबलतासे नाश भये यहां पाप उदय होनादेवारी को दीप है शंकर का कोप हिम है १७३ ॥

कुंकुमअंगसुरंगजितो मुखचन्द्रसोंच- न्द्रसोंहोड़परीहै । बोलतबोलसमृद्धिचुवै अवलोकतशोचविषादहरीहै । गौरीको

संगबिहंगिनिबेष किमंजुलमूरतिमोद
भरीहै । पेखिसप्रेमपयानसमयसबसो
चबिमोचनछेमकरीहै १७४ ॥

कबहूं यात्रा समय छेमकरी चील्ह देखिपरी है ताकी प्रशंसा करत हैं कि कुंकुम रोरी व केशरि व कुंकुम पीतरंग सुगन्धित एक औषधी होत सो कहत कि छेमकरीने आपने अंग के रंगते कुंकुमकी सुन्दर रंग को जीति लियो अरु मुखचन्द्रते अरु प्रसिद्ध चन्द्रमा ते झोड़ कहे बाद पड़ो भाव हम सुभग हैं अरु मधुर बोल के बोलतही समृद्धि जो समूह धनसो चुवत कहे बर्षत है अरु अवलोकत कहे दर्शन मात्र ते मनको शोच अरु बिषाद कहे दुःखसों सब हरलेत है ताते मंजुल कहे सुन्दर मूरति मोद कहे आनन्दभरी किधौं बिहंगिनि कहे पक्षिनि बेष किये श्रीगंगाजी हैं किधौं गौरी कहेपार्बतीजीहैं काहेते पयान समय सहित प्रेम पेखि कहे देखिकै चलिये तो सब प्रकार को जो शोचहै ताको बिमोचनकहे छोड़ावनहारी छेमकरीहै १७४॥

मंगलकीराशिपरमारथकी खानिजा-
निबिरंचिबनाईबिधिकेशवबसाईहै। प्र
लयहूकालराखी शूलपाणिशूलपरसो

चुबशानीचसोऊचहत्तखसाईहै । छाँड़ि क्षितिपालजोपरीक्षितभये कृपालभलो कियोखलकोनिकाईसोनशाईहै । पाहिहनुमानकरुणानिधानरामपाहिकाशीकामधेनुकलिकुहतकसाईहै १७५॥

मंगल जो लोक उत्सव ताकी राशि ढेरी है औ परमार्थ जो परलोक मुक्ति ताकी खानि कहे उत्पत्ति को भूमि है ऐसा जानि ब्रह्माने विशेष रचिकै बनाई पुरी प्रसिद्ध करी ताको केशव भगवान् ने बसाव पालन कीन्हो ताको प्रलयहू काल में शूलपाणि शंकरजीने त्रिशूल पर राखीभाव रक्षा कीन्हो भाव त्रिदेव पालित पुरी को नीच कलिकाल मृत्यु बशते खसाई चहत भाव काशी जी को गिरावा चाहत सुधर्महीन करो चाहततातें दण्डदेबे योग्य है क्योंकि नीच डाटबिना नहीं मानत है देखिये क्षितिपाल परीक्षित ने कलिकालको मारतते छांड़ि दियो कृपाल ह्वै खल कहे दुष्ट को भलो कियो तेहि निकाई को कलिकाल ने नशाइ दई भाव ऐसा प्रबन्ध बाँधि दियो कि ऋषि शाप ते मृत्युवश भये ऐसा कलिकाल कसाई सम काशी रूप कामधेनु को बधकरत ताते कुहत कहे कहरत है ताको हे श्री रघुनाथ जी करुणा

निधान हे श्रीहनुमान्‌जी याहि कहे आपुकी शरण हैं रक्षाकी कीजिये १७५ ॥

विरचीविरंचिकीबसति विश्वनाथ कीजोप्राणहूंतेप्यारीपुरी केशवकृपाल की । ज्योतिरूपलिंगमयीअगणितलिं गमयीमोक्षबितरनिबिदरनिजगजालकी देवीदेवदेवसरिसिद्धमुनि बरबासलोप तिबिलोकत कुलिपि भोंड़ेभालकी । हाहाकरे तुलसी दयानिधान रामऐसी काशीकी कदर्थनाकराल कलिकाल की १७६ ॥

बिरंचिकी विरची कहे बनाई विश्वनाथ महा-देवकी पुरी बसी है वा विश्वनाथ को बास स्थान है औ केशव जो भगवान् कृपालहैं तिनको प्राणहूंते अधिक प्यारी है पुनः पंच कोशान्तर्गत जो क्षेत्रहै सो सूक्ष्म रूप ते ज्योति लिंग मयी है स्थूल रूप ते विश्वेश्वरादि अनेकन लिंग मयीहै भाव सब भूमि लिंगन सों पूर्ण है अरु मोक्ष बितरनि कहे मुक्तिदेन हारीहै औ जगजाल जो मोहादि जगत् प्रपंचताकी बिदरनि कहे नाश करन हारी है जहां अनेकन देवी अनेकन देवता देवसरि श्रीगंगाजी सिद्धमुनि

ऐसे बर कहे अन्नपून को बासहै जाके विलोकत कहे दर्शनमात्र ते भोड़े जेमैलेजननके भालमेंकुलिपि कहे कुभाग्य की पांति के अक्षरन को लोप करत भाव कुभाग्य मिटाय सुभाग्य लिखि देतऐसी काशी पुरी कीऊदर्थना कहे दुर्दशा कराल कलिकाल ने कीन्ही है हे दयानिधान श्री रघुनाथजी तुलसी हाहा कहे विनती करत है कि काशीजीकी रक्षाकीजिये १७६ ॥

आश्रमबरणकलिबिबस बिकलभ येनिजनिजमर्य्यादमोटरीसिडारदी। शं करसरोषमहामारिहीतेजानियत साहि बदोषेईदुनीदिनदिनदारदी। नारिनर आरतपुकारतसुनैनकोऊ काहूदेवतनि मिलिमोटीमूठीमारदी। तुलसीसभीतपा लसुमिरेकृपालरामसमयसु करुणासरा हिसनकारदी १७७ ॥

आश्रम जो ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास वर्ण जो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र तेसब कलियुग के विवश कामादिकी प्रबलता ते विकल ह्वै आपनी आपनी जो लोकवेद मर्यादाताकी मोटरी शीश कैसो भार लोग सब डारिदेते भये भाव आपने धर्म

कर्म की श्रद्धा रहित भये ऐसा जानि परत कि लोगनको कुमारग चालते शंकरौजी सरोषहैं काहते जानियत है कि महामारी प्रचण्ड परी तातें जो साहब शंकरहू सरोष भये तौ दुनी कहे दुनिया दिन दिन प्रति दारदी कहे दरदवंदी काहेन होइ नरनारी सब आरत कहे दुखित, ह्वै पुकार करत ताको कोऊ नहीं सुनत किलोगन को दुख मिटावै का समुझि परतकि कोऊ देवतन मिलिकै मोटोमूठी कहे कराल जादूमारि दीन्हीहै जब कोऊसहायकन भयो तब सभीतनको पालने वाले जो श्रीरघुनाथजी तिनको तुलसीसुमिरे तब कृपाल श्रीरघुनाथजीसमय विचारिनि कि अब कोऊसहायक नहींहै तबआपनी करुणाको सराहनाकरिकै भाव गाढ़े समयकोसहा-यकहमारी करुणाहै ऐसा कहि करुणाको सनक्यारि दीन्ही भावकरुणाकरिसबकेकलेश हरेयहिकवित्तको अभिप्राय यह है कि श्रीरघुनाथजीके समान करुणा निधान दूसरो नहीं है १०७ कवित्त ॥ मेदुराभ्रभात्म श्यामपीतचैलबिदु दामर्मूर्धिरत्नकोटकांणकारकेस भा लहे । शर्दपूर्णचन्द्रमास्यवंकभ्वावुजचग्रीव बृषभांश पानिपानशायकोरलन्दहे । गूढ़यंत्रुन्यायतोरनाभि जैतदुद्धरेखरोमराजिमुक्तदामभानुजाप्रियावहे । म ध्यलपजानुजंघकोमलांघ्र्यपार सिंधुरूपकोशलेशबेज-नाथतंनमामहे १ पूर्वलखनऊबंकीजीलेग्राममानपुर पितुकोधाम । अवधजन्मभूप स बास गुरुकरुणासिंधु

फकीरेराम ॥ उनइससैअड़तिस शुभसंवत भाद्रशुक्ल पूर्णवगुरुवार । कवितरत्नदीपिकाययामतिगुरु करुणा सोंभईतयार २ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिता कवित्तावलीरत्नदीपिकासमाप्ता ॥

——※——

यह किताब स्थान लखनऊ मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी ॥

इस पुस्तक को पण्डित रामबिहारी व पण्डित रामसेवक व पण्डित बंदीदीन व पण्डित कृष्णबिहारी ने शुद्धकिया